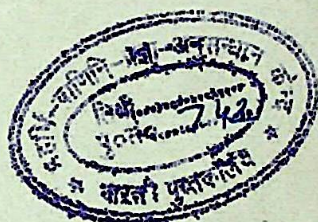


परिष्कृत हिन्दी व्याकरण





परिष्कृत हिन्दी व्याकरण



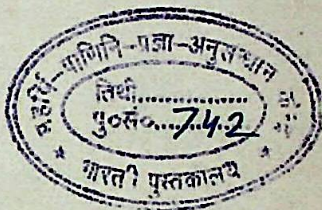
डा० बदरीनाथ कपूर
एम० ए०, पी-एच० डी०

मीनाक्षी प्रकाशन
मेरठ  नयी दिल्ली

मीनाक्षी प्रकाशन
बेगम ब्रिज, मेरठ।
◈
४-अन्सारी रोड, दरियागंज,
नयी दिल्ली।

मूल्य : पच्चीस रुपये मात्र

मीनाक्षी मुद्रणालय मेरठ में मुद्रित।



भारतीय
आचार्य एवम् गुरु-परम्परा
के
जाज्वल्यमान कीर्ति-स्तम्भ
आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र
को
अत्यन्त नम्रतापूर्वक
समर्पित



दो शब्द

यदि भाषा 'बहता नीर' है तो व्याकरण उसका 'तटवंध'। जिस प्रकार तटवंध जलधारा का नियमन करता है उसी प्रकार व्याकरण भाषा का। तटवंध यदि जलधारा को मर्यादा तोड़ने से रोकता है तो व्याकरण भी भाषा को मर्यादा का उल्लंघन करने से रोकती है। जलधारा और भाषा यदि दोनों प्राकृतिक अजस्रता की प्रतीक हैं तो तटवंध और व्याकरण उन्हें मर्यादित करने के मानवीय अध्यवसाय के। यदि धारा कुपित अवस्था में धन-जन की हानि करती है तो भाषा भी अराजक स्थिति में विचार-सम्पत्ति को विशृंखलित करती है। यदि धारा की अराजकता के बावजूद भी तटवंध का महत्त्व अक्षुण्ण रहता है तो भाषा की अराजकता के बावजूद भी व्याकरण की उपयोगिता कम नहीं होती।



'प्रायः लोग इस बात को भूल जाते हैं कि साहित्यिक (शिष्ट) भाषा सभी देशों और कालों में लेखकों की मातृभाषा अथवा बोलचाल की भाषा से थोड़ी-बहुत भिन्न रहती है और वह मातृभाषा के समान, अभ्यास से ही आती है। ऐसी अवस्था में, केवल स्वतन्त्रता के आवेश से वशीभूत होकर शिष्ट भाषा पर विदेशी भाषाओं अथवा प्रान्तीय बोलियों का अधिकार चलाना एक प्रकार की राष्ट्रीय अराजकता है। यदि स्वयं लेखकगण अपनी साहित्यिक भाषा को, योग्य अध्ययन और अनुकरण से शिष्ट, स्पष्ट और प्रामाणिक बनाने की चेष्टा न करेंगे तो वैयाकरण 'प्रयोगशरण' का सिद्धान्त कहाँ तक मान सकेगा ?'[1]

उक्त विचार हिन्दी व्याकरण के मूर्धन्य वैयाकरण पं० कामताप्रसाद गुरु ने कोई साठ वर्ष पहले व्यक्त किए थे। लगता है हम लोग महापुरुषों के अनुभवों से सीख लेने के अभ्यस्त नहीं। उपेक्षा-वृत्ति से हम अपने लिए कितने झमेले खड़े करते हैं और इस प्रकार अपनी कितनी हानि भी करते हैं, दुर्भाग्य से इसका हमें जल्दी भान भी तो नहीं होता। संयम और नियम जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक ही नहीं अपरिहार्य भी होते हैं। हमारे देश में सैंकड़ो बोलियाँ हैं, दरजनो राज्य-भाषाएँ हैं

[1] पं० कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, भूमिका, पृ० १०, प्रथम संस्करण।

और कई एक विदेशी भाषाएँ भी यहाँ बोली-समझी जाती हैं। यदि सभी लोग मनमाना आचरण करें तो आखिर कहाँ ठिकाना लगेगा ! ऐसा नहीं कि बोलियों अथवा अन्य भाषाओं से हिन्दी को कुछ नहीं लेना चाहिए। लेना चाहिए; हिन्दी ने लिया भी है और ले भी रही है। वह लेती भी रहेगी इसमें भी सन्देह नहीं। जीवित भाषाएँ अन्य भाषाओं से शब्द भी ग्रहण करती हैं और प्रयोग-विधाएँ भी, क्योंकि इससे उनका शब्द-भण्डार भी उन्नत होता है और अभिव्यंजना-शक्ति भी विकसित होती है। परन्तु इसकी भी एक सीमा होती है। जिस प्रकार प्रकृति-विरुद्ध कोई वस्तु ग्रहण करने से अपच हो जाता है ठीक वैसे ही विदेशी शब्दों एवम् प्रयोगों के अंधानुकरण से भाषा भी रुग्ण हो जाती है। बाहरी तत्त्व अलंकार के रूप में ही होने चाहिए, लादी के रूप में नहीं। भारतीय परम्परा में भाषा को देवी माना जाता है अतः हमारे लिए वह पवित्र भी है और पूज्य भी। वह पवित्र है इसलिए उसे दूषित नहीं करना चाहिए; वह पूज्य है इसलिए उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। हमें सदा स्मरण रखना चाहिए कि अधिकार के प्रति जागरूक तथा कर्तव्य के प्रति निष्ठावान् होने से ही काम सरता है। भाषा के सम्बन्ध में यह बात सोलहो आने सत्य है।



प्रस्तुत व्याकरण को लिखने की प्रेरणा मुझे पं० कामताप्रसाद गुरु के 'हिन्दी व्याकरण' से ही मिली। गुरु जी ने 'हिन्दी व्याकरण' की भूमिका में अपने व्याकरण-सम्बन्धी ज्ञान तथा अनुभवों का बड़ा सुन्दर लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। उन्होंने बड़ी ईमानदारी से स्वीकार किया है :

'यह व्याकरण, अधिकांश में, अँगरेज़ी व्याकरण के ढंग पर लिखा गया है.... (परन्तु) हिन्दी भाषा के लिए वह दिन सचमुच बड़े गौरव का होगा जब इसका व्याकरण 'अष्टाध्यायी' और 'महाभाष्य' के मिश्रित रूप में लिखा जाएगा, पर वह दिन अभी बहुत दूर दिखाई पड़ता है।'[1]

पन्द्रह-बीस वर्ष पहले उक्त तथ्य मेरे ध्यान में आया था। उन दिनों काशी में 'अष्टाध्यायी' के माध्यम से संस्कृत व्याकरण की शिक्षा देने का कार्य आचार्य ब्रह्मदत्त 'जिज्ञासु' कर रहे थे। मैं उनके पास गया। वे प्रशिक्षण-शिविर के आयोजन में व्यस्त थे। उन्होंने अपने 'त्रैमासिक प्रशिक्षण शिविर' में भरती हो जाने के लिए कहा। फिर कुछ ही दिनों बाद उनका 'शिविर' प्रारम्भ हुआ। मैं तीन महीने तक नियमित रूप से वहाँ जाता रहा। 'अष्टाध्यायी' के कोई एक हजार सूत्रों का अर्थ करना सिखलाया गया। फिर परीक्षा हुई। मेरा परीक्षा-फल चमत्कारिक था—

[1] वही, भूमिका, पृ० ३–४

सबसे अधिक अंक। चमत्कारिक इसलिए कि मेरे सहपाठियों में से कई संस्कृत से एम० ए० तथा पी-एच० डी० भी थे जबकि मुझे संस्कृत नाम को ही आती थी। भाषा और शब्दों के प्रति मेरी रुचि संस्कारगत थी ही, अब 'अष्टाध्यायी' की पद्धति ने भी मुझे कुछ बाँध-सा लिया। गुरू जी की आकांक्षा की पूर्ति करने की अंतःप्रेरणा हुई और फिर मैं इस कार्य में प्रवृत्त हो गया। आज इसका फल आपके सामने है। इस पद्धति को अपनाने से हिन्दी व्याकरण के स्वरूप मे यदि कुछ सुधार हुआ हो तो उसका पूरा-पूरा श्रेय पं० कामताप्रसाद गुरु एवम् पं० ब्रह्मदत्त 'जिज्ञासु' को है, मुझे नहीं। मैं तो निमित्त मात्र हूँ। ईश्वर को जिससे जब जैसा कार्य करवाना होता है करवा ही लेता है।

इस पद्धति का स्वरूप ही कुछ ऐसा है कि भाषा की प्रकृति के दर्शन आप से आप होते चलते हैं। सम्भवतः यही पद्धति हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुकूल भी है। हमारे अनेक भाषाशास्त्री इधर विदेशी व्याकरणों के आधार पर नए-नए व्याकरण लिखने में या स्कूली व्याकरण लिखने मे परिश्रम कर रहे हैं, वे यदि इस पद्धति को अपनाएँ तो मैं समझता हूँ कि कुछ ही वर्षों के प्रयास से वे हिन्दी व्याकरण का मानक स्वरूप स्थिर करने में सफल हो सकते हैं। इस पद्धति में स्पष्टता भी है, रोचकता भी और गणितीय प्रश्नों के हल करने का-सा मज़ा भी। मैंने कोई असम्भव कार्य कर दिखलाने का प्रयास नहीं किया, हाँ, अपने को भाषा की प्रकृति देखने-समझने में अवश्य लगाए रखा है। इस व्याकरण में ऐसे अनेक नियम हैं जिन्हें बीसियों बार लिखना तथा दुहराना पड़ा है और सम्भव है तिस पर भी वे त्रुटिपूर्ण रह गए हों। पूरे का पूरा व्याकरण भी मुझे अनेक बार नए सिरे से लिखना पड़ा है। इस पद्धति का ही कुछ चमत्कार या आकर्षण था जो मुझे अपनी ओर खींचता था और मैं था कि दस-दस और पन्द्रह-पन्द्रह घंटे नित्य इसमें खोया-सा रहता था। सच तो यह है कि यह क्रम अब भी चल रहा है। ऐसा नहीं कि कभी उकताहट या खिजलाहट नहीं हुई, हुई; परन्तु जब कोई नया नियम पकड़ में आता-सा दिखाई पड़ता तो सारी उकताहट-खिजलाहट हवा हो जाती, मन अनिर्वचनीय आनन्द से भर जाता और मैं फिर दुगने उत्साह से अगले नियम के तंतुओं के संयोजन में जुट जाता।

पं० कामताप्रसाद गुरु की यह इच्छा भी थी कि वे स्वयं 'कारकों और कालों का विवेचन संस्कृत की शुद्ध प्रणाली के अनुसार करते।'[1] परन्तु वे ऐसा न कर सके। इस व्याकरण में कारकों और कालों का विवेचन संस्कृत की पद्धति के अनुरूप ही किया गया है।

'वाच्य' हिन्दी में जितना अधिक सरल और स्पष्ट है उतना ही अधिक हमारे वैयाकरणों ने उसे उलझाया है। पाठक देखेंगे कि 'वाच्य' में कहीं पेचीदापन है

[1] वही, भूमिका, पृ० ४।

ही नहीं ।

व्याकरण सम्बन्धी जितनी भी विवादास्पद बातें मेरे सामने आईं उन सबका समाधान प्रस्तुत करने का मैंने प्रयत्न किया है। समाधान तर्क पर खरा उतरे, मैंने इस सम्बन्ध में भी सावधानी बरती है। भूलें हर किसी से होती हैं, मैं ही उनसे कैसे बच सकता हूँ।

इस पुस्तक का सुधार-संशोधन आचार्य प्रवर पं० विश्वनाथ मिश्र द्वारा हुआ है। सच तो यह है कि सच्चे गुरु के रूप में उन्होंने अपने तपोबल से पत्थर को पारस बना दिया है। यह पुस्तक उन्हें सादर समर्पित है। राष्ट्रभाषा-पतंजलि श्रद्धेय स्वामी निगमानन्द जी एवम् परम-पूज्य स्वामी डा० सर्वदानन्द जी ने भी मुझे अनेक बहुमूल्य सुझाव दिए हैं, इनके प्रति नतमस्तक होना भी मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। शब्दर्षि बाबू रामचन्द्र वर्मा को भी इस अवसर पर मैं कैसे भूल सकता हूँ। उनके आशीर्वाद से ही तो यह कार्य सम्पूर्ण हुआ है। अपनी शब्दगोष्ठी के सदस्यों के अनवरत सहयोग से भी मेरा कार्य सरल हुआ है। श्री शिवनाथ प्रसाद बेरी, डा० व्रजमोहन जी एवम् श्री शिवनाथ राघव शब्द-गोष्ठी के प्राण रहे हैं।

मैं यहाँ उन वैयाकरणों के प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनके ग्रन्थों से मैं लाभान्वित हुआ हूँ। उनमें से प्रमुख हैं आचार्य किशोरीदास वाजपेयी एवम् राष्ट्रभाषा-पतंजलि स्वामी निगमानन्द जी। हिन्दी जगत् वाजपेयी जी तथा निगम बाबा की सेवाओं से कभी उऋण नहीं हो सकता।

अन्त में अपने उदार पाठकों से। इस ज्ञान-यज्ञ में उनकी भी तो आहुति चाहिए। जो त्रुटियाँ, भूलें अथवा विसंगतियाँ उन्हें दिखाई पड़ें, उनसे मुझे वे अवश्य परिचित कराएँ। मैं उनके सुझावों का सदुपयोग भी करूँगा और उन्हें धन्यवाद भी दूंगा।

—बदरीनाथ कपूर

शब्दलोक
४७ लाजपत नगर
वाराणसी–२

विषय-सूची

पहला प्रकरण

व्याकरण • भाषा • वाक्य • शब्द

१. किसी भाषा के बोलने तथा लिखने के नियमों की व्यवस्थित पद्धति को 'व्याकरण' कहते हैं।

२. विचार-विनिमय तथा चिन्तन-मनन के उस माध्यम को 'भाषा' कहते हैं जो वाग्-ध्वनियों एवम् तत्सम्बन्धी संकेत-चिह्नों पर अवलम्बित होता है।

३. भाषा के सार्वदेशिक विशेषतया संस्कृत रूप को मानक भाषा या परिनिष्ठित भाषा कहते हैं एवम् क्षेत्रीय विशेषतया प्राकृत रूप को बोली।

४. भाषा की ऐसी इकाई को 'वाक्य' कहते हैं जिसके द्वारा कोई बात कही गई हो; जैसे—

पानी बरस रहा है।
वह दिल्ली में रहता है।
तुमने क्या खाया ?
मैंने कुछ नहीं खाया।
तुम वहाँ गए थे न ?
हाँ, मैं वहाँ गया था।

उक्त सभी वाक्य हैं।

५. प्रयोजन के आधार पर वाक्यों के सात भेद हैं—

(१) विधानसूचक,
(२) आज्ञासूचक,
(३) प्रश्नसूचक,
(४) विस्मयादिसूचक,
(५) इच्छासूचक,
(६) सन्देहसूचक,
(७) संकेतसूचक।

६. उस वाक्य को 'विधानसूचक'[1] कहते हैं जिसमें कोई तथ्य या विवरण प्रस्तुत किया गया हो अथवा कोई सूचना दी गई हो; जैसे—

घोड़ा दौड़ रहा है। (तथ्य)
कल बहुत पानी बरसा। (विवरण)
राम कल आएगा। (सूचना)

७. उस वाक्य को 'आज्ञासूचक' कहते हैं जिसमें किसी को किसी काम में प्रवृत्त करने के लिए आदेश या निदेश किया गया हो; जैसे—

चले जाओ यहाँ से। (आदेश)
कल वहाँ चले जाना। (निदेश)

८. उस वाक्य को 'प्रश्नसूचक' कहते हैं जिसमें किसी से कुछ पूछा जाए और फलतः जिसके उत्तर की अपेक्षा हो; जैसे—

तुम क्या कर रहे हो ?
वहाँ तुम कब ज़ाओगे ?
तुमने खा लिया ?[2]

९. 'प्रश्नसूचक' वाक्य की पहचान वाक्य में प्रयुक्त किसी प्रश्नसूचक सर्वनाम, संज्ञा-विशेषण या क्रिया-विशेषण से, क्रियापद पर दिए जानेवाले ज़ोर से तथा लिखित वाक्य में उसके अन्त में रखे जानेवाले प्रश्नचिह्न से होती है; जैसे—

तुम क्या करोगे ? (प्रश्नसूचक सर्वनाम)
तुम कितने पैसे लोगे ? (प्रश्नसूचक संज्ञा-विशेषण)
तुम कब जाओगे ? (प्रश्नसूचक क्रिया-विशेषण)
तुमने खा लिया ? (क्रियापद पर ज़ोर से)

[1] 'विधान' का अर्थ है—शासन। इस शब्द का प्रयोग अनेक वैयाकरणों ने किया है इसीलिए इसे यहाँ भी लिया गया है। वस्तुतः इस शब्द से ठीक-ठीक आशय व्यक्त नहीं होता। परन्तु जब तक कोई उपयुक्त शब्द नहीं सुझाया जाता, तब तक इसी का प्रयोग चलाया जा सकता है।

[2] अनेक विद्वानों का मत है कि प्रश्न-चिह्न का प्रयोग सर्वत्र अपेक्षित नहीं। उनकी दृष्टि में वाक्य में प्रयुक्त प्रश्नसूचक शब्द ही इस तथ्य का पूर्ण परिचायक होता है कि वाक्य प्रश्नसूचक है। बात ठीक है। ऐसी अवस्था में प्रश्नचिह्न न लगाया जाए तो कोई हर्ज नहीं। परन्तु जब वाक्य में कोई प्रश्नसूचक शब्द न हो तो इसका लगाया जाना आवश्यक है।

१०. ऐसे वाक्य को 'विस्मयादिसूचक' कहते हैं जिसमें विस्मय या आवेश की सहसा या उत्कट रूप से अभिव्यक्ति हुई हो; जैसे—

कैसा सुन्दर दृश्य है ! (विस्मय)
अरे, उसे गोली लगी ! (विस्मय)
फेंको उसे कमरे से बाहर ! (आवेश)
गला घोंट दूँगा उसका ! (आवेश)

११. 'विस्मयादिसूचक' वाक्य की पहचान वाक्य में प्रयुक्त विस्मयादिसूचक शब्द या चिह्न[1] तथा विशेष स्वर-प्रवाह से होती है ।

१२. ऐसे वाक्य को 'इच्छासूचक' कहते हैं जिससे इच्छा या अभिलाषा व्यक्त होती हो; जैसे—

ईश्वर तुम्हारी उमर लम्बी करे ।
तुम पर कभी आँच न आए ।
भगवान् उसका भला करे ।

[टिप्पणी—'राम पुस्तक खरीदना चाहता है ।' यह वाक्य 'विधान-सूचक' है । इसमें तथ्य का प्रस्तुतीकरण किया गया है । दूसरे इस वाक्य में 'शब्द' विशेष द्वारा इच्छा व्यक्त की गई है । वाक्य-रूप इच्छासूचक नहीं है ।]

१३. ऐसे वाक्य को 'सन्देहसूचक' कहते हैं जिससे किसी बात का अनिश्चय प्रकट होता हो; जैसे—

वह आया होगा ।
इन दिनों वहाँ पानी बरसा होगा ।

1 विस्मयादि वाक्य के अन्त में तो विस्मयादि चिह्न सामान्यतया रखा ही जाता है परन्तु कुछ लोग वाक्य के आरम्भ में विस्मयादि शब्द प्रयुक्त होने पर उसके बाद भी उसे रखते हैं; जैसे—

अरे ! उसे गोली लगी !

सामान्यतया उक्त स्थिति में विस्मयादिसूचक शब्द के बाद अल्पविराम ही रखा जाता है परन्तु जब वक्ता या लेखक विस्मयादि शब्द ही प्रयुक्त करके रुक जाए तब उसके बाद विस्मयादि चिह्न का प्रयोग अवश्य होता है; जैसे— अरे !

दूसरे यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विस्मयादिसूचक वाक्य में प्रश्न की भी विवक्षा हो सकती है; जैसे—

—उसे गोली लगी !
—हाँ ।

१४. ऐसे वाक्य को 'संकेतसूचक' या 'हेतुहेतुमत्' कहते हैं जिससे इस बात का संकेत होता है कि किसी काम का होना या न होना किसी अन्य कार्य या बात पर अवलम्बित होता है; जैसे—

अगर पानी बरसा तो मैं आऊँगा।
वह नहीं आया तभी तो मुझे जाना पड़ा।

१५. जब 'आज्ञासूचक' वाक्य निषेधकारक होता है तब उसे निषेधात्मक आज्ञासूचक वाक्य कहते हैं; जैसे—

तुम मत जाओ। (निषेधात्मक आदेशसूचक)
आप न जाना। (निषेधात्मक निदेशसूचक)

१६. 'आज्ञासूचक' के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकार के वाक्य जब नकारबोधक अर्थ के सूचक होते हैं तब उन्हें नकारात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे—

पानी आज नहीं बरसा। (नकारात्मक विधानसूचक)
वह डूब नहीं मरा! (नकारात्मक विस्मादिसूचक)
कहीं दिन डूब न जाए। (नकारात्मक इच्छासूचक)
क्या वह वहाँ नहीं गया था? (नकारात्मक प्रश्नसूचक)
वह नहीं आया होगा। (नकारात्मक सन्देहसूचक)
पानी न बरसा तो फ़सल भी नहीं होगी। (नकारात्मक संकेतसूचक)

१७. जिस वाक्य से वक्ता या लेखक की बात पूरी-पूरी व्यक्त न हो उसे अधूरा वाक्य कहते हैं; जैसे—

(१) आपके सब काम हमसे अच्छे होते हैं। [आपके सब काम वस्तुतः हमसे अच्छे नहीं बल्कि हमारे कामों से अच्छे होते हैं।]
(२) शराब पीना विष से भयंकर है। [या तो होना चाहिए—शराब पीना विषपान से भयंकर है; अथवा होना चाहिए—शराब विष से भयंकर है।]

१८. यदि सन्दर्भ से अधूरे वाक्य का भी अर्थ स्पष्ट हो तो उसे (लघु) वाक्य ही कहते हैं; जैसे—

—क्या वहाँ जाओगे?[1]
—हाँ, जाऊँगा।[2]

[1] प्रस्तुत वाक्य में 'तुम' कर्ता लुप्त है अतः वाक्य अधूरा है। परन्तु वक्ता जिससे कह रहा है वह (मध्यम पुरुष) तो उसके सम्मुख ही है अतः संदर्भ से ज्ञान हो जाता है कि 'तुम' वाक्य में छिपा हुआ है।

[2] 'हाँ, जाऊँगा' भी (लघु) वाक्य है, क्योंकि संदर्भ से स्पष्ट है कि इसका आशय है—'हाँ, मैं जाऊँगा।' हिन्दी की प्रकृति तो लाघव सिद्धान्त को इस सीमा तक स्वीकार करती है कि उक्त प्रसंग में केवल 'हाँ' या केवल 'जाऊँगा' कहने से भी आशय व्यक्त हो जाएगा। अतः 'हाँ' और 'जाऊँगा' भी यहाँ (लघु) वाक्य ही हैं।

१९. रचना-सम्बन्धी दोष अथवा अर्थ-सम्बन्धी संशय या अस्पष्टता होने पर वाक्य असाधु माना जाता है; जैसे—

(क) रचना-सम्बन्धी दोष

उसकी कुछ समझ में न आया।[1]

(ख) अर्थ-सम्बन्धी संशय

आपके पास पढ़ने का आदेश देने के लिए अपना रेडियो हो सकता है।[2]

(ग) अर्थ-सम्बन्धी अस्पष्टता

वह पति के प्रति पीड़ाग्रस्त हो उठी।[3]

२०. जो वाक्य व्याकरण के नियमों अथवा भाषा की सहज प्रकृति के विरुद्ध हो, उसे अशुद्ध वाक्य कहते हैं; जैसे—

लड़की आता है।[4]

में मेरे घर जाऊँगा।[5]

२१. वाक्य की रचना जिन अर्थवान् ध्वनि-समूहों से होती है उन्हें 'शब्द' कहते हैं; जैसे—

राम राजा है।

मोहन घर गया।

कल पानी बरसेगा।

राम, राजा, है, मोहन, घर, गया, कल, पानी, बरसेगा—सभी शब्द हैं।

[1] प्रस्तुत वाक्य में 'कुछ' शब्द को ठीक स्थान पर न रखने से दोष आ गया है। वाक्य का साधु रूप तो है—

उसकी समझ में कुछ न आया।

[2] प्रस्तुत वाक्य से यह संशय होता है कि रेडियो आपको आदेश देने के लिए है अथवा इसलिए है कि आप उसके द्वारा दूसरों को आदेश दें।

[3] इस वाक्य से तो पता ही नहीं चलता कि लेखक आखिर कहना क्या चाहता है।

[4] वाक्य का शुद्ध रूप है—

लड़की आती है।

[5] यह वाक्य बंगला भाषा की प्रकृति के तो अनुकूल है परन्तु हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल नहीं। हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल इसका रूप होगा—

मैं अपने घर जाऊँगा।

२२. सामान्यतया शब्द नाम, गुण या क्रिया के सूचक होते हैं परन्तु जो शब्द नाम, गुण या क्रिया के सूचक तो नहीं होते परन्तु वाक्य-रचना में अवश्य सहयोगी होते हैं उन्हें सहायक शब्द कहते हैं; जैसे—

आज ही राम ने मोहन और श्याम को स्टेशन से घर तक पहुँचाया।

शब्द—आज, राम, मोहन, श्याम, स्टेशन, घर, पहुँचाया।

सहायक शब्द—ही, ने, और, को, से, तक।

[टिप्पणी—संज्ञा, सर्वनाम, संज्ञा-विशेषण तथा क्रिया-विशेषणों की गिनती शब्दों में; और विभक्तियों (परसर्गों), उपसर्गों, प्रत्ययों, निपातों, योजकों तथा विस्मयादि शब्दों की गिनती सहायक शब्दों में होती है।]

२३. साधु एवम् शुद्ध वाक्य से अभिप्राय केवल शब्दों अथवा शब्दों और सहायक शब्दों के ऐसे समूह से होता है जिसके द्वारा कोई पूरी बात कही गई हो तथा जो व्याकरण के नियमों के अनुरूप और भाषा की सहज प्रकृति के अनुकूल हो।

२४. स्रोत या उद्गम के विचार से शब्दों के तीन भेद हैं—आकर, आगत, और देशज या देश्य।

२५. पूर्व भाषिक परम्परा से प्राप्त शब्दों को आकर, अन्य भाषाओं से प्राप्त शब्दों को आगत, और समय-समय पर जो शब्द गढ़ लिए गए हों उन्हें देशज (देश्य) कहते हैं; जैसे—

आकर—माला, राजा, कमल, ग्राम, गाँव, ढोल, डोला।

आगत—किस्मत, दरिया, रेडियो, टिकट, पेन।

देशज (देश्य)—गड़प, घोंघा, चुटकी, टनाटन, दनादन, घोटाला।

२६. आकर शब्दों के दो भेद तत्सम (उसके समान) और तद्भव (उससे उत्पन्न) होते हैं।

२७. हिन्दी में तत्सम रूप में चलनेवाले शब्द संस्कृत के ऐसे नामपद हैं[1] : (क) जो आज भी प्रथमांत एकवचन रूप में चल रहे हैं अथवा (ख) जिनके प्रथमांत रूप का अन्त्य म् व्यंजन या विसर्ग लुप्त हो चुका है; जैसे—

(क) प्रथमांत एकवचन रूप

लता, इच्छा, माला, कृपा, नदी, पिता, राजा, कर्ता, माता, योद्धा, आत्मा, नेता, भ्राता ।

(ख) अन्त्य व्यंजन या विसर्ग लुप्त रूप

कमल	<	कमलम्	अन्त्य म् व्यंजन लोप
पुस्तक	<	पुस्तकम्	अन्त्य म् व्यंजन लोप
सूर्य	<	सूर्यः	अन्त्य विसर्ग लोप
सेतु	<	सेतुः	अन्त्य विसर्ग लोप

२८. संस्कृत के ऐसे शब्द विशेषतया नामपद जो मूलतः हल् चिह्न से युक्त हैं परन्तु हिन्दी में जिन्हें अधिकतर लोग बिना हल् चिह्न के भी लिखते हैं, तत्सम माने जाते हैं; जैसे—

जगत	<	जगत्
वृहत	<	वृहत्
तद्वत	<	तद्वत्
पश्चात	<	पश्चात्
महान	<	महान्
भगवान	<	भगवान्
गुणवान	<	गुणवान्

२९. जिन तत्सम शब्दों में 'ड' के स्थान पर हिन्दी में 'ड़' लिखा जाता है वे तत्सम ही हैं क्योंकि 'ड़' वैदिक 'ळ'[2] ध्वनि का ही विकसित रूप है; जैसे—

पीड़ा	<	पीडा
क्रीड़ा	<	क्रीडा

[1] संस्कृत भाषा में शब्दों के दो मुख्य विभाग किए गए हैं—'नाम' और 'आख्यात' । हिन्दी ने संस्कृत के 'नाम' तत्सम और तद्भव दोनो अपनाएं हैं परन्तु 'आख्यात' (धातु) तद्भव रूप में ही ।

[2] वैदिक संस्कृत में दो स्वरों के बीच 'ड' का उच्चारण 'ळ' होता था । मराठी, तमिल आदि भाषाओं में आज भी ळ का उच्चारण 'ड़' से मिलता-जुलता होता है ।

३०. आकर तत्सम प्रथमांत एकवचन नामपदों के अन्त्य म् व्यंजन अथवा विसर्ग के लोप के अतिरिक्त जब किसी अन्य वर्ण का लोप, परिवर्तन व्यत्यय या आगम होता है तो उसे तद्भव कहते हैं; जैसे—

नामपद तद्भव रूप		नामपद तत्सम रूप	
काठ	<	काष्ठम्	(वर्णलोप, ष्)
गुफा	<	गुहा	(वर्ण परिवर्तन, ह् का फ्)
चिन्ह	<	चिह्नम्	(वर्ण व्यत्यय, ह् न् का न् ह्)
महतारी	<	मातृ	(वर्ण ह् का आगम)

३१. हिन्दी के तद्भव धातु संस्कृत के धातुओं तथा नामपदों के विकारी रूप होते हैं; जैसे—

हिन्दी धातु		संस्कृत धातु
खा	<	खाद्
पढ़	<	पठ्
छेद	<	छिद्
चढ़	<	चट्
काढ़	<	कृष्ट्
लिख	<	लिख्
चल	<	चल्
मिल	<	मिल्
सान	<	मिश्रण्
		संस्कृत नामपद
बटोर	<	वर्तुल
लड़	<	रण
ढाँक	<	स्थग

३२. आगत शब्दों के भी दो भेद तत्सम तथा तद्भव होते हैं; जैसे—

	तत्सम	तद्भव
फारसी	जरूरत	जरूरत
	गर्म	गरम
अँगरेजी	मिनिट	मिनट
	लैन्टर्न	लालटेन
रूसी	स्पुतनिक	—

३३. आगत शब्द यदि विदेशी भाषाओं से लिए गए हों तो उन्हें विदेशी और यदि क्षेत्रीय भाषाओं से लिए गए हों तो उन्हें क्षेत्रीय कहते हैं; जैसे—

विदेशी : रेडियो, पेन, इंजन, कलम, कमर, कमाल, स्पुतनिक।

क्षेत्रीय : गल्प, इडली, डोसा।

३४. देशज (देश्य) शब्दों के तीन भेद हैं—अनुकरणवाची, आकस्मिक और निर्मित।

३५. ध्वनियों तथा शब्दों के अनुकरण पर बने शब्दों को 'अनुकरणवाची' कहते हैं; जैसे—

ध्वनियों के अनुकरण पर बने शब्द :

खट, टन, धम, सी।

शब्दों के अनुकरण पर बने शब्द :

वान[1] (पान के अनुकरण पर), वानी[2] (पानी के अनुकरण पर)।

३६. ऐसे शब्द जिनके उद्गम का स्रोत अज्ञात हो उन्हें 'आकस्मिक' कहते हैं; जैसे—

भीड़, झाग, झक, चोचला, आड़ू, लट्टू।

३७. ऐसे शब्द जो अन्य शब्दों के योग से अथवा उपसर्ग प्रत्यय आदि की सहायता से बनाए गए हों उन्हें 'निर्मित' कहते हैं; जैसे—

(१) भाव-ताव [संस्कृत भाव+तद्भव ताव]
(२) स्वीकारना [संस्कृत स्वीकार+तद्भव ना (प्रत्यय)]
(३) अनपढ़ [अन (उपसर्ग)+पढ़ (धातु)] X
(४) घिराव [घेर (धातु) +आव (प्रत्यय)]
(५) तालाबन्दी [ताला (तद्भव)+बन्दी (फ़ारसी)]

[1] पान-वान। (इत्यादि अर्थ में)
[2] पानी-वानी। (इत्यादि अर्थ में)

३८. निर्मित शब्द यदि किसी एक स्रोत के शब्दों, प्रत्ययों, उपसर्गों आदि के योग से तथा उसी भाषा के नियमों के अनुसार बनाए गए हों तो उन्हें उस स्रोत के शब्द भी कह सकते हैं; जैसे—

निर्मित आकार शब्द

लोकसभा, राष्ट्रपति ।

निर्मित तद्भव शब्द—

झाड़-फूंक, नंगा-झोली ।

निर्मित देशज (देश्य)—

दनादन, पटाका ।

निर्मित विविध—

कम्पनी बाग, चार मीनार, तिलक रोड,

आधारित, साहित्यिक, मानक, सीमित (ये चारो शब्द संस्कृत व्याकरण के नियमों से सिद्ध नहीं होते) ।

दूसरा प्रकरण

वर्ण • वर्ण-चिह्न

३९. शब्दों की रचना वाग्-ध्वनियों से होती है।

४०. लघुतम वाग्-ध्वनि को 'वर्ण' कहते हैं।

४१. किसी भाषा में जितने वर्ण प्रयुक्त होते हैं उनके समूह को 'वर्णमाला' कहते हैं।

हिन्दी की वर्णमाला[1]

स्वर : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ
ए, ऐ, ओ, औ, ं (अनुस्वार),
: (विसर्ग) =१३

[1] 'हिन्दी की वर्णमाला' का ठीक नाम 'देवनागरी वर्णमाला' है। देवनागरी वर्णमाला में संस्कृत भी लिखी जाती है और हिन्दी भी। संस्कृत में ॠ और ऌ ये दो स्वर अधिक हैं परन्तु ड़ और ढ़ ये दो व्यंजन नहीं हैं। ड़ और ढ़ वस्तुतः वैदिक वर्णों ळ और ळ्ह के विकसित रूप हैं। अनुस्वार और विसर्ग को संस्कृत में स्वरों और व्यंजनों से भिन्न माना जाता है और उन्हें 'अयोगवाह' कहते हैं। अयोगवाह का अर्थ है—योग न होने पर भी जो साथ बहे। वस्तुतः ये दोनो हैं भी कुछ अर्थों में स्वरों तथा व्यंजनों से भिन्न ही। परन्तु हिन्दी में चिरकाल से 'बारहखड़ी' में अनुस्वार तथा विसर्ग की गिनती होती चली आ रही है। इन दोनो को स्वरों के वर्ग में रखने से कोई हर्ज तो नहीं, परन्तु हैं ये दोनो से ही अलग। इस तथ्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए। स्वरों तथा व्यंजन वर्णों तथा उनके संकेत-चिह्नों के विवेचन के अनन्तर इनका विवेचन किया गया है। दूसरे बारहखड़ी में 'ऋ' की गिनती नहीं की जाती थी। हिन्दी क्या संस्कृत में भी अब 'ऋ' का मूल उच्चारण नहीं होता। यही बात 'ष' व्यंजन के भी सम्बन्ध में है। हिन्दी में संस्कृत के ऐसे अनेक तत्सम शब्द चलते हैं जिनमें ऋ और ष वर्ण प्रयुक्त होते हैं। परम्परा की रक्षा के लिए लिखित रूप का प्रायः संसार की सभी भाषाओं में निर्वाह किया जाता है। अँगरेज़ी भाषा में भी 'क्नाईफ' लिखते हैं और बोलते 'नाईफ' हैं और 'जड्ज' लिखते हैं परन्तु बोलते हैं 'जज'।

व्यंजन :	क,	ख,	ग,	घ,	ङ,	
	च,	छ,	ज,	झ,	ञ,	
	ट,	ठ,	ड,	ढ,	ण,	
	त,	थ,	द,	ध,	न,	
	प,	फ,	ब,	भ,	म,	
	य,	र,	ल,	व,	श,	
	ष,	स,	ह,	ड़,	ढ़	=३५

४२. जो चिह्न किसी वर्ण का सूचक मान लिया जाता है उसे वर्ण-चिह्न[1] कहते हैं।

४३. वर्ण-चिह्नों के समूह को 'वर्ण-चिह्न माला' या 'लिपि' कहते हैं।

हिन्दी की लिपि

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ
ए, ऐ, ओ, औ, ं (अनुस्वार), : (विसर्ग)
क, ख, ग, घ, ङ,
च, छ, ज, झ, ञ,
ट, ठ, ड, ढ, ण,
त, थ, द, ध, न,
प, फ, ब, भ, म,
य, र, ल, व, श,
ष, स, ह, ड़, ढ़

[टिप्पणी : अ, आ, ओ, औ तथा ण वर्ण-चिह्न मराठी से आए हैं और उन्होंने नागरी वर्ण-चिह्नों अ, आ, ओ, औ तथा ण को प्रयोग से हटा सा दिया है। 'झ' और 'ल' के स्थान पर मराठी के झ और ल वर्ण-चिह्न भी प्रयुक्त होते हैं।]

[1] हर भाषा में दो तथ्य समान रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। उनमें से एक यह है कि किसी भाषा में जितने वर्ण होते हैं उतने वर्ण-चिह्न नहीं होते और दूसरे यह कि कुछ वर्ण-चिह्न एक से अधिक वर्णों के सूचक भी होते हैं। इस प्रकार के दोष हिन्दी (नागरी) वर्णमाला में भी हैं, जिनका उल्लेख आगे यथास्थान होगा।

४४. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास मुख-विवर के कंठ, तालु आदि स्थानों से निर्बाध निकलता हो उन्हें 'स्वर' कहते हैं।

स्वर वर्ण : अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ
ए, ऐ, ओ, औ

४५. जिन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास मुख-विवर के कंठ, तालु आदि स्थानों से बाधित होकर निकलता हो उन्हें 'व्यंजन' कहते हैं।

व्यंजन वर्ण : क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
य, र, ल, व, श
ष, स, ह, ड़, ढ़

४६. हिन्दी वर्णमाला का प्रत्येक व्यंजन वर्ण-चिह्न वस्तुतः अकारान्त व्यंजन वर्ण का सूचक है।[1]

४७. हल्-चिह्न (्) युक्त व्यंजन वर्ण-चिह्न से अ स्वर रहित व्यंजन-वर्ण का सूचन किया जाता है; जैसे—

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्,
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्,
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्,
त्, थ्, द्, ध्, न्,
प्, फ्, ब्, भ्, म्,
य्, र्, ल्, व्, श्,
ष्, स्, ह्, ड़्, ढ़्,

[1] स्वर वर्ण की सहायता के बिना व्यंजन वर्णों का उच्चारण सम्भव नहीं अथवा कम से कम सहज नहीं। किसी भी व्यंजन वर्ण के उच्चारण से पहले या बाद में स्वर वर्ण की सहायता आवश्यक होती है। सामान्यतः केवल किसी व्यंजन वर्ण का उच्चारण करते समय आप से आप अ स्वर वर्ण का उच्चारण उसके बाद हो जाता है अतः क व्यंजन वर्ण-चिह्न क् व्यंजन वर्ण और अ स्वर वर्ण के योग का चिह्न है। ह व्यंजन वर्ण-चिह्न ह् व्यंजन वर्ण और अ स्वर वर्ण के योग का चिह्न है।

४८. उच्चारण स्थान के विचार से स्वर वर्ण अ और आ कंठ्य, इ और ई तालव्य, उ और ऊ ओष्ठ्य, ऋ मूर्धन्य, ए और ऐ कंठतालव्य एवम् ओ और औ कंठोष्ठ्य हैं।

४९. उच्चारण-काल के विचार से अ, इ, उ, और ऋ ह्रस्व तथा आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ और औ दीर्घ स्वर हैं।

५०. दीर्घ स्वर वर्ण के उच्चारण में ह्रस्व स्वर वर्ण के उच्चारण-काल की अपेक्षा दुगना काल (समय) लगता है।

५१. इ, ई, ऋ, ए तथा ऐ स्वर वर्णों के उच्चारण में जिह्वा का अग्र भाग सक्रिय होता है इसलिए उन्हें 'अग्र' स्वर कहते हैं।

५२. अ स्वर वर्ण के उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग सक्रिय रहता है इसलिए उसे 'मध्य' स्वर कहते हैं।

५३. आ, उ, ऊ, ओ तथा औ के उच्चारण में जिह्वा का पश्च भाग सक्रिय होता है इसलिए उन्हें 'पश्च' स्वर कहते हैं।

५४. मुखद्वार के अत्यल्प खुलने के विचार से इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ को संवृत स्वर और अत्यधिक खुलने के विचार से 'आ' को विवृत स्वर कहते हैं।

५५. मुखद्वार के संवृत स्वरों की अपेक्षा कुछ अधिक खुलने के विचार से ए तथा ओ को अर्ध-संवृत स्वर कहते हैं।

५६. मुखद्वार के विवृत स्वर स्वर की अपेक्षा कुछ कम खुलने के विचार से अ, ऐ तथा औ को अर्ध-विवृत स्वर कहते हैं।

५७. होठों की गोलाई के विचार से उ, ऊ, ओ तथा औ को वृत्ताकार तथा अन्य स्वर वर्णों को अवृत्ताकार कहते हैं।

५८. तद्भव तथा देशज शब्दों में 'ऐ' वर्ण-चिह्न 'अइ' के समान उच्चरित होता है यदि उसके परे य् व्यंजन वर्ण हो; जैसे—

(१) मैया =म्+ऐ+य्+आ
=म्+ऐ(अ+इ)+य्+आ
=भइया

(२) लैया =लइया

(३) दिखवैया=दिखवइया

५६. तत्सम शब्दों में 'ऐ' वर्ण-चिह्न के परे यदि व, ल अथवा संयुक्त व्यंजन हो तो 'ऐ' का उच्चारण 'अइ' के समान भी होता है; जैसे—

दैव =दइव

कैलास=कइलास

ऐक्य =अइक्य

६०. तद्भव तथा विदेशी शब्दों में 'औ' वर्ण-चिह्न का उच्चारण 'अउ' होता है यदि उसके परे 'आ' स्वर या 'व' व्यंजन वर्ण हो; जैसे—

कौआ =कउआ

कौवाली=कउवाली

कौआ तद्भव है और कौवाली विदेशी (फ़ारसी) शब्द है।

६१. 'ऋ' स्वर वर्ण आकर तत्सम शब्दों में ही आता है।

६२. 'ऋ' अब शुद्ध स्वर नहीं। इसका उच्चारण रि (र्+इ) होता है; जैसे—

(१) कृपा=क्+ऋ+प्+आ

=क्+ऋ(रि)+प्+आ

=क्रिपा

(२) ऋषि=रिषि

(३) वृक्ष =व्रिक्ष

६३. तद्भव तथा देशज शब्दों में अकारान्त व्यंजन वर्ण-चिह्न के 'अ' का उच्चारण ह परे रहने पर ह्रस्व ए के समान बहुधा होता है; जैसे—

(१) कह =क्+अ+ह्+अ (अपूर्णोच्चरित)

=क्+अ(ह्रस्व ए)+ह्+अ (अपूर्णोच्चरित)

(२) गहना=ग्+अ+ह्+अ (अपूर्णोच्चरित)+न्+आ

=ग्+अ(ह्रस्व ए)+अ (अपूर्णोच्चरित)+न्+आ

(३) पहल=प्+अ्+ह्+अ+ल्+अ (अपूर्णोच्चरित)

=प्+अ(ह्रस्व ए)+ह्+अ+ल्+अ (अपूर्णोच्चरित)

तत्सम शब्द में नहीं

कलह=क्+अ+ल्+ह्+अ (अपूर्णोच्चरित)

६४. ह्रस्व ए स्वर वर्ण का उच्चारण काल ए स्वर वर्ण की अपेक्षा आधा-सा होता है।

६५. विदेशी शब्दों में ह्रस्व ए वर्ण-चिह्न के लिए भी ए वर्ण-चिह्न का ही प्रयोग होता है; जैसे—

प्रेस=प्+र्+ए+स्+अ (अपूर्णोच्चरित)
=प्+र्+ए(ह्रस्व ए)+स्+अ
पेन=प्+ए+न्+अ (अपूर्णोच्चरित)
=प्+ए(ह्रस्व ए)+न्+अ

६६. बोलियों में ह्रस्व ओ का भी उच्चारण होता है जिसका उच्चारण-काल 'ओ' वर्ण की अपेक्षा आधा-सा होता है।

६७. ह्रस्व ए तथा ह्रस्व ओ स्वर वर्णों के लिए नागरी वर्णमाला में स्वर वर्ण-चिह्न नहीं हैं।[1]

६८. विदेशी शब्दों में वृत्ताकार आ स्वर वर्ण जैसे उच्चारण के लिए ऑ वर्ण-चिह्न अपनाया जाने लगा है; जैसे—

कालेज = कॉलेज
बाल = बॉल

६९. स्वर वर्ण का उच्चारण करते समय यदि कुछ श्वास प्रयत्नपूर्वक नासिका से भी निकाला जाए तो उस स्वर वर्ण को अनुनासिक कहते हैं।

७०. स्वर वर्ण-चिह्न को अनुनासिक रूप देने के लिए उसके ऊपर चन्द्रविन्दु लगाते हैं और यदि स्वर वर्ण-चिह्न के ऊपर घुंडी (मात्रा का ऊपरी चिह्न) हो तो छपाई की सुविधा के विचार से केवल विन्दु लगाते हैं; जैसे—

अ = अँ (अनुनासिक रूप)
इ = इँ ,,
उ = उँ ,,
ऊ = ऊँ ,,
ए = एँ ,,
ई = ईं ,,
ऐ = ऐं ,,
ओ = ओं ,,
औ = औं ,,

[टिप्पणी—ऋ का अनुनासिक रूप दिखाई नहीं पड़ता।]

[1] कुछ विद्वान् ह्रस्व ए के लिए ए॒ तथा ओ के लिए ओ॒ वर्ण-चिह्नों का प्रयोग अवश्य करते हैं।

तालिका : स्वर वर्ण

	स्वर	उच्चारण-स्थान से	उच्चारण-काल से	जिह्वा की सक्रियता से	मुखद्वार के खुलने से	होठों की आवृत्ति से
१.	अ	कंठ्य	ह्रस्व	मध्य	अर्धसंवृत	अवृत्ताकार
२.	आ	कंठ्य	दीर्घ	पश्च	विवृत	अवृत्ताकार
३.	ऑ	कंठ्य	दीर्घ	पश्च	विवृत	वृत्ताकार
४.	इ	तालव्य	ह्रस्व	अग्र	संवृत	अवृत्ताकार
५.	ई	तालव्य	दीर्घ	अग्र	संवृत	अवृत्ताकार
६.	उ	ओष्ठ्य	ह्रस्व	पश्च	संवृत	वृत्ताकार
७.	ऊ	ओष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	संवृत	वृत्ताकार
८.	ऋ	मूर्धन्य	ह्रस्व	अग्र	संवृत	अवृत्ताकार
९.	ए	कंठतालव्य	दीर्घ	अग्र	अर्धसंवृत	अवृत्ताकार
१०.	ऐ	कंठतालव्य	दीर्घ	अग्र	अर्धविवृत	अवृत्ताकार
११.	ह्रस्व ए	कंठतालव्य	ह्रस्व	अग्र	अर्धसंवृत	अवृत्ताकार
१२.	ओ	कंठोष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	अर्धसंवृत	वृत्ताकार
१३.	औ	कंठोष्ठ्य	दीर्घ	पश्च	अर्धविवृत	वृत्ताकार
१४.	ह्रस्व ओ	कंठोष्ठ्य	ह्रस्व	पश्च	अर्धसंवृत	वृत्ताकार

७१. क्, ख्, ग्, घ्, ङ् तथा ह् उच्चारण-स्थान के विचार से कंठ्य व्यंजन हैं।

७२. च्, छ्, ज्, झ्, ञ् और श् उच्चारण-स्थान के विचार से तालव्य व्यंजन हैं।

७३. ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड़्, ढ़् और ष् उच्चारण-स्थान के विचार से मूर्धन्य व्यंजन हैं।

७४. ष् का उच्चारण-स्थान अब श् के समान तालु होता है।

७५. त् थ्, द्, ध् और न् का उच्चारण हिन्दी में दंत्य-वर्त्स्य[1] है जब कि संस्कृत में दंत्य।

७६. र्, ल् और स् हिन्दी में वर्त्स्य व्यंजन हैं जबकि संस्कृत में स् दंत्य व्यंजन है तथा र् और ल् अंतःस्थ।

७७. प्, फ्, ब्, भ् और म् ओष्ठ्य व्यंजन हैं।

७८. व् वर्ण का उच्चारण-स्थान संस्कृत में दंत्योष्ठ्य है परन्तु हिन्दी में द्वयोष्ठ्य होता है; जैसे—

वार, विवाह, विघ्न, वात
गाँव, पाँव, स्वर, श्वास

७९. जिन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय स्वरतंत्री में झंकार[2] उत्पन्न हो उन्हें घोष और अन्य व्यंजन वर्णों को अघोष कहते हैं।

व्यंजन वर्ण

अघोष	घोष
क्, ख्	ग्, घ्, ङ्
च्, छ्	ज्, झ्, ञ्
ट् ठ्	ड्, ढ्, ण्
	ड़्, ढ़्
त्, थ्	द्, ध्, न्
प्, फ्	ब्, भ्, म्
ष्, श्, स्	य्, र्, ल्, व्, ह्

[1] वर्त्स ऊपरी मसूढ़े को कहते हैं। जिन वर्णों का उच्चारण करते समय जीभ ऊपरी दाँतों और मसूढ़ों के सन्धि-स्थल को छूती है उन्हें दंत्य-वर्त्स्य कहते हैं।

[2] कंठ-नलिका पर उँगली रखने से झंकार का पता लग जाता है।

८०. जिन व्यंजन वर्णों के उच्चारण के समय श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले उन्हें अल्पप्राण[1] और जिनके उच्चारण में अधिक मात्रा में निकले उन्हें महाप्राण कहते हैं; जैसे—

अल्पप्राण	महाप्राण
क्	ख्
ग्	घ्
ङ्	
च्	छ्
ज्	झ्
ञ्	
ट्	ठ्
ड्	ढ्
ण्	
त्	थ्
द्	ध्
न्	
प्	फ्
ब्	भ्
म्	
य्	
र्	
ल्	
व्	
	ष्
	श्
	स्[2]
	ह्
ड़्	ढ़्

[1] 'प्राण' का अर्थ श्वास ही होता है।

[2] स्वामी निगमानन्द जी ने 'स्' को अल्पप्राण बतलाया है। —हिन्दी का मौलिक व्याकरण, पृ० ११।

८१. अघोष अल्पप्राण क्, च्, ट्, त् और प् के क्रमशः ख्, छ्, ठ्, थ् और फ् अघोष महाप्राण एवम् घोष अल्पप्राण ग्, ज्, ड्, ड़्, द् तथा व् के क्रमशः घ्, झ्, ढ्, ढ़्, ध् तथा भ् घोष महाप्राण रूप माने जाते हैं।

८२. ल् व्यंजन वर्ण के उच्चारण के समय श्वास जिह्वा के पार्श्वों से निकलता है इसलिए उसे पार्श्विक व्यंजन वर्ण कहते हैं।

८३. श्, ष्, स् और ह् व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास संघर्षण करते हुए निकलता है इसलिए उन्हें संघर्षी व्यंजन[1] कहते हैं।

८४. ङ्, ञ्, ण्, न् और म् इन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय कुछ श्वास आप से आप नाक से भी निकलता है इसलिए उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं।

८५. अनुनासिकता ऐच्छिक एवम् प्रयत्नज होती है और नासिक्यता सहज।[2]

८६. जिन व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्र भाग मुख के किसी अवयव को स्पर्श करता है उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श व्यंजन

क्,	ख्,	ग्,	घ्,	ङ्,
च्,	छ्,	ज्,	झ्,	ञ्,
ट्,	ठ्,	ड्,	ढ्,	ण्,
त्,	थ्,	द्,	ध्,	न्,
प्,	फ्,	ब्,	भ्,	म्,
र्[3],	ल्[3],	ड़्,	ढ़्	

[1] संघर्षी व्यंजनों को ऊष्म भी कहते हैं। ऊष्म का अर्थ है—गरम। संघर्षण के फलस्वरूप श्वास कुछ गरम हो जाता है इसीलिए उन्हें ऊष्म कहते हैं।

[2] स्वर अनुनासिक होते हैं और व्यंजन नासिक्य। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण के लिए विशेष प्रयास करना पड़ता है। नासिक्य व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय श्वास आप से आप नाक से निकलता है।

[3] र् और ल् हिन्दी में स्पर्श व्यंजन ही हैं यद्यपि संस्कृत में अंतःस्थ। श्, ष्, स् तथा ह् का उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग मुख के किसी अंग को नहीं छूता अतः वे स्पर्श व्यंजन नहीं।

८७. च्, छ्, ज्, एवम् झ् व्यंजन वर्णों का उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्र भाग मुख-विवर के किसी स्थान का स्पर्श भी करता है तथा श्वास भी संघर्षण करते हुए निकलता है, इसलिए उन्हें स्पर्श-संघर्षी व्यंजन वर्ण कहते हैं।

८८. य् और व् व्यंजन वर्णों को अंत:स्थ[1] कहते हैं।

८९. ड़् और ढ़् व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा झटके से ऊपर जाती है इसलिए उन्हें उत्क्षिप्त[2] व्यंजन कहते हैं।

९०. र् व्यंजन वर्ण का उच्चारण करते समय जिह्वा में प्रकम्पन होता है इसलिए उसे प्रकम्पी व्यंजन कहते हैं।

९१. न्, म्, ल् तथा व् व्यंजन वर्णों के महाप्राण रूप भी होते हैं परन्तु वर्ण-माला में इनके लिए स्वतन्त्र वर्ण-चिह्न नहीं हैं।

९२. न्, म्, ल् तथा व् व्यंजन वर्णों के महाप्राण रूप संयुक्त व्यंजन वर्ण-चिह्नों की सहायता से क्रमशः न्ह्, म्ह्, ल्ह् तथा व्ह् लिखे जाते हैं; जैसे—

न्ह्; कन्हैया = क् + न्ह् + ऐ + य् + आ
= क न्है या

म्ह्; तुम्हारा = त् + उ + म्ह् + आ + र् + आ
= तु म्हा रा

ल्ह्; कुल्हाड़ा = क् + उ + ल्ह् + आ + ड़् + आ
= कु ल्हा ड़ा

व्ह्; व्हाया = व्ह् + आ + य् + आ
= व्हा या

९३. ळ् वर्ण मराठी, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं में ही प्रयुक्त होता है तथा इसका उच्चारण 'ड़्' से मिलता-जुलता होता है।

[1] अंत:स्थ का अर्थ है—बीच का अर्थात् स्वरों और व्यंजनों के बीच का। स्पर्श व्यंजनों का उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्र भाग किसी न किसी मुखांग को स्पर्श करता है और स्वरों का उच्चारण करते समय उनसे दूर रहता है। परन्तु य् और व् का उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्र भाग मुखावयव को न तो छूता ही है और न उनसे दूर ही रहता है इसीलिए उन्हें अंत:स्थ कहते हैं।

[2] उत्क्षिप्त का अर्थ है—ऊपर फेंका हुआ।

९४. बोलियों में ख् वर्ण-चिह्न के लिए 'ष्' का भी प्रयोग होता है; जैसे—
अब अभिलाषु[1] एकु मन मोरे।
पूजिहि नाथ अनुग्रह तोरें। [रामचरितमानस—२/२/७]

९५. ङ्, ञ्, ण्, ड़् तथा ढ़् वर्णों का प्रयोग शब्दों के आरम्भ में नहीं होता।

९६. क़्, ख़्, ग़्, ज़् और फ़् व्यंजन वर्णों का प्रयोग केवल आगत (विदेशी) शब्दों में होता है।

९७. क़् जिह्वामूलीय, अल्पप्राण अघोष तथा स्पर्श व्यंजन है।

९८. ख़् जिह्वामूलीय, महाप्राण[2] अघोष तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है।

९९. ग़्, जिह्वामूलीय, अल्पप्राण घोष तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है।

१००. ज़् वर्त्स्य, अल्पप्राण घोष तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजन है।

१०१. फ़् दंत्योष्ठ्य, अल्पप्राण अघोष तथा स्पर्श-संघर्षी व्यंजत्त वर्ण है।

तालिका : व्यंजन वर्ण

व्यंजन वर्ण	स्थान के अनुसार	प्राण के अनुसार	घोष के अनुसार	विशेष
क्	कंठ्य	अल्पप्राण	अघोष	स्पर्श
ख्	,,	महाप्राण	,,	,,
ग्	,,	अल्पप्राण	घोष	,,
घ्	,,	महाप्राण	,,	,,
ङ्	,,	अल्पप्राण	,,	स्पर्श तथा नासिक्य
च्	तालव्य	,,	अघोष	स्पर्श-संघर्षी
छ्	,,	महाप्राण	,,	,,
ज्	,,	अल्पप्राण	घोष	,,
झ्	,,	महाप्राण	,,	,,
ञ्	,,	अल्पप्राण	,,	स्पर्श नासिक्य
ट्	मूर्धन्य	,,	अघोष	स्पर्श
ठ्	,,	महाप्राण	,,	,,

[1] इसे अभिलाखु पढ़ा जाता है।

[2] ख़् को अनेक विद्वान् अल्पप्राण ही मानते हैं। क़् की अपेक्षा ख़् के उच्चारण के समय श्वास निश्चित रूप से अधिक मात्रा में निकलता है अतः उसे महाप्राण मान लेना ही ठीक प्रतीत होता है।

व्यंजन वर्ण	स्थान के अनुसार	प्राण के अनुसार	घोष के अनुसार	विशेष
ड्	मूर्धन्य	अल्पप्राण	घोष	स्पर्श
ढ्	,,	महाप्राण	,,	,,
ण्	,,	अल्पप्राण	,,	स्पर्श नासिक्य
त्	दंत्य-वर्त्स्य	,,	अघोष	स्पर्श
थ्	,,	महाप्राण	,,	,,
द्	,,	अल्पप्राण	घोष	,,
ध्	,,	महाप्राण	,,	,,
न्	,,	अल्पप्राण	,,	स्पर्श नासिक्य
प्	ओष्ठ्य	,,	अघोष	स्पर्श
फ्	,,	महाप्राण	,,	,,
ब्	,,	अल्पप्राण	घोष	,,
भ्	,,	महाप्राण	,,	,,
म्	,,	,,	,,	स्पर्श नासिक्य
य्	तालव्य	अल्पप्राण	,,	अंतःस्थ
र्	वर्त्स्य	,,	,,	प्रकम्पी
ल्	,,	,,	,,	पार्श्विक
व्	(i) दंत्योष्ठ्य	,,	,,	अंतःस्थ
	(ii) द्वयोष्ठ्य	,,	,,	,,
श्	तालव्य	महाप्राण	अघोष	संघर्षी
ष्	,,	,,	,,	,,
	(मूलतः मूर्धन्य)	,,	,,	,,
स्	वर्त्स्य	,,	,,	,,
ह्	कंठ्य	,,	घोष	,,
ड़्	मूर्धन्य	अल्पप्राण	,,	उत्क्षिप्त
ढ़्	,,	महाप्राण	,,	,,
क़्	जिह्वामूलीय	अल्पप्राण	अघोष	स्पर्श
ख़्	,,	महाप्राण	,,	स्पर्श संघर्षी
ग़्	,,	अल्पप्राण	घोष	,,
ज़्	वर्त्स्य	,,	,,	,,
फ़्	दंत्योष्ठ्य	,,	,,	,,

१०२. स्वर वर्ण-चिह्न के संक्षिप्त प्रतीक को मात्रा कहते हैं।

१०३. 'अ' वर्ण-चिह्न को छोड़कर अन्य सभी स्वर वर्ण-चिह्नों की मात्राएँ होती हैं, जैसे—

स्वर वर्ण-चिह्न	स्वर वर्ण-चिह्नों की मात्राएँ
आ	ा
ऑ	ॉ
इ	ि
ई	ी
उ	ु
ऊ	ू
ऋ	ृ
ए	े
ऐ	ै
ओ	ो
औ	ौ

[टिप्पणी—नियम ४६ के अनुसार 'अ' स्वर वर्ण तो हर व्यंजन वर्ण-चिह्न से युक्त है ही।]

१०४. यदि किसी व्यंजन वर्ण के अनन्तर कोई स्वर वर्ण हो तो व्यंजन वर्ण-चिह्न में उस स्वर की मात्रा लगाते हैं।

१०५. मात्राओं का संयोजन स्वर रहित व्यंजन वर्ण-चिह्न में होता है।

१०६. मात्रा का संयोजन होते ही हल् चिह्न का लोप होता है, जैसे—

काली=क्+आ+ल्+ई

नियम १०४ से =क्+ा+ल्+ी

नियम १०६ से =काली

१०७. आ, ई, ओ, औ तथा ऑ की मात्राएँ व्यंजन वर्ण-चिह्न के बाद लगाई जाती हैं; जैसे—

का=क्+आ
नियम १०४ से =क्+ा
नियम १०६ से =का

की=क्+ई
नियम १०४ से =क्+ी
नियम १०६ से =की

कॉ=क्+ऑ
को=क्+ओ
कौ=क्+औ

१०८. 'इ' की मात्रा व्यंजन वर्ण-चिह्न के पहले लगाई जाती है और यदि व्यंजन वर्ण-चिह्न संयुक्त हो तो उससे भी पहले; जैसे—

कि=क्+इ
=ि क्
=कि

खि=ख्+इ
=ि ख्
=खि

भक्ति=भ्+अ+क्+त्+इ
=भ ि क्त
=भक्ति

१०९. उ, ऊ तथा ऋ की मात्राएँ व्यंजन वर्ण-चिह्न के नीचे लगाई जाती है; जैसे—

कु=क्+उ
=क्+ु
=कु

कू=क्+ऊ
=क्+ू
=कू

कृ=क्+ऋ
=क्+ृ
=कृ

११०. 'श्' व्यंजन वर्ण-चिह्न के नीचे 'ऋ' की मात्रा लगाने पर 'शृ' रूप भी बनता है; जैसे—

शृगाल
शृगाल (सामान्य रूप)

१११. 'र्' व्यंजन वर्ण-चिह्न के साथ 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ[1] मध्य में लगाई जाती हैं; जैसे—

रु=र्+उ
रू=र्+ऊ

११२. ए तथा ऐ की मात्राएँ व्यंजन वर्ण-चिह्न के ऊपर लगाई जाती हैं; जैसे—

के=क्+ए
=क्+े
=के

कै=क+ऐ
=क्+ै
=कै

११३. अनुनासिकता सूचित करने के लिए मात्रा के मध्य भाग के ऊपर चन्द्र-बिन्दु लगाते हैं और यदि मात्रा के ऊपर घुण्डी भी हो तो उसके बाद; जैसे—

काँ=क्+आँ
=क्+ाँ
=काँ
किँ=क्+इँ
=ि+क्
=किँ
कीँ=क्+ईँ
केँ=क्+एँ
कैँ=क्+ऐँ
कोँ=क्+ओँ
कौँ=क्+औँ

[टिप्पणी—प्राचीन हस्तलेखों में चन्द्रबिंदु के स्थान पर प्रायः अनुस्वार नहीं लगाया जाता था और मात्रा की घुण्डी से पहले भी लिखा जाता था। 'कीं' को 'कीँ' लिखा जाता था।]

[1] र् व्यंजन वर्ण-चिह्न में लगाते समय उ तथा ऊ की मात्राओं में कुछ विकार भी होता है।

११४. स्वर वर्ण-चिह्न यदि किसी व्यंजन वर्ण-चिह्न में अंतर्भुक्त हो अथवा उसके नीचे या मध्य में मात्रा के रूप में हो तो उस व्यंजन वर्ण-चिह्न के ऊपर चन्द्रबिन्दु लगाते हैं; जैसे—

व्यंजन वर्ण-चिह्न में स्वर अन्तर्भुक्त होने पर—

कँ=क्+अँ
खँ=ख्+अँ

व्यंजन वर्ण-चिह्न के नीचे मात्रा रूप में स्वर वर्ण-चिह्न होने पर—

कुँ=क्+उँ
कूँ=क्+ऊँ

व्यंजन वर्ण-चिह्न के मध्य में मात्रा रूप में स्वर वर्ण-चिह्न होने पर—

रुँ=र्+उँ
रूँ=र्+ऊँ

११५. मात्रा के वाद स्वर-वर्ण का सूचक वर्ण-चिह्न ही आता है; जैसे—

कौआ=क्+औ+आ
=क्+ौ+आ
=कौआ

कोई=क्+ओ+ई
=क्+ो+ई
=कोई

चाहिए=च्+आ+ह्+इ+ए
=च्+ा+ह्+ि+ए
=चाहिए

११६. किसी शब्द में अति निकट आने वाले दो या अधिक स्वर वर्णों को संयुक्त स्वर या स्वर-गुंफ और दो या अधिक व्यंजन वर्णों को संयुक्त व्यंजन या व्यंजन-गुंफ कहते हैं।

हिन्दी के संयुक्त स्वर

अ+इ	—भइया	=भ्+अ+इ+य्+आ
अ+इ+आ	—गइआ	=ग्+अ+इ+आ
अ+ए	—गए	=ग्+अ+ए
आ+इ+ए	—आइए	=आ+इ+ए
आ+ई	—रजाई	=र्+अ+ज्+आ+ई
आ+ऊ	—ताऊ	=त्+आ+ऊ
आ+ए	—खाए	=ख्+आ+ए
आ+ओ	—लाओ	=ल्+आ+ओ
इ+आ	—दिआ	=द्+इ+आ
इ+ए	—किए	=क्+इ+ए
उ+आ	—बुआ	=ब्+उ+आ
उ+ई	—रुई	=र्+उ+ई
उ+ए	—मुए	=म्+उ+ए
ऊ+अ	—सूअर	=स्+ऊ+अ+र्+अ*
ऊ+आ	—जूआ	=ज्+ऊ+आ
ऊ+ई	—सुई	=स्+ऊ+ई
ए+ई	—लेई	=ल्+ए+ई
ए+ऊ	—जनेऊ	=ज्+अ+न्+ए+ऊ
ओ+आ	—खोआ	=ख्+ओ+आ
ओ+ई	—कोई	=क्+ओ+ई
ओ+ए	—बोए	=ब्+ओ+ए
औ+आ	—कौआ	=क्+औ+आ

संयुक्त व्यंजन (व्यंजन-गुम्फ)

क्क	—पक्का	=प्+अ+क्+क्+आ
क्ख	—मक्खन	=म्+अ+क्+ख्+अ+न्+अ*
क्च	—लेक्चर	=ल्+ए+क्+च्+अ+र्+अ*
क्ट	—डॉक्टर	=ड्+ऑ+क्+ट्+अ+र्+अ*
क्त	—रक्त	=र्+अ+क्+त्+अ*
क्म	—रुक्मिणी	=र्+उ+क्+म्+इ+ण्+ई

* 'अ' अपूर्णोच्चरित है।

क्म	—क्यारी	=क्+य्+आ+र्+ई
क्र	—क्रम	=क्+र्+अ+म्+अ*
क्ल	—क्लेश	=क्+ल्+ए+श्+अ*
क्व	—क्वार	=क्+व्+आ+र्+अ*
क्ष	—क्षेत्र	=क्+ष्+ए+त्+र्+अ*
क्ष्म	—लक्ष्मी	=ल्+अ+क्+ष्+म्+ई
क्ष्य	—लक्ष्य	=ल्+अ+क्+ष्+य्+अ*
क्ष्व	—इक्ष्वाकु	=इ+क्+ष्+व्+आ+क+उ
क्श	—रिक्शा	=र्+इ+क्+श्+आ
क्स	—नुक्स	=न्+उ+क्+स्+अ*
क्फ़	—वक्फ़	=व्+अ+क्+फ़्+अ*
ख्य	—ख्यात	=ख+य्+आ+त्+अ*
ख्र	—ख्रीस्त	=ख्+र्+ई +स्+त्+अ*
ग्ग	—सुग्गा	=स्+उ+ग्+ग+आ
ग्घ	—घिग्घी	(शेष इसी प्रकार)
ग्ण	—रुग्ण	
ग्द	—मुग्दर	
ग्ध	—मुग्ध	
ग्न	—नग्न	
ग्म	—युग्म	
ग्य	—ग्यारह	
ग्र	—ग्रास	
ग्ल	—ग्लानि	
ग्व	—ग्वाला	
घ्न	—विघ्न	
घ्य	—श्लाघ्य	
घ्र	—शीघ्र	
ङ्क	—अङ्क	=अंक
ङ्ख	—शङ्ख	=शंख
ङ्ग	—भङ्ग	=भंग
ङ्घ	—सङ्घ	=संघ

* 'अ' अपूर्णोच्चरित है ।

ङ्म	—वाङ्मय	
च्च	—बच्चा	
च्छ	—अच्छा	
च्छ्व	—उच्छ्वास	
च्य	—च्युत	
ज्ज	—छज्जा	
ज्झ	—खुज्झा	
ज्ञ	—ज्ञान	
ज्य	—राज्य	
ज्र	—वज्र	
ज्व	—ज्वर	
ञ्[1]च	—चञ्चु	=चंचु
ञ्छ	—वाञ्छित	=वांछित
ञ्ज	—कुञ्ज	=कुंज
ञ्झ	—उञ्झा	=उंझा
ट्ट	—चट्टा	
ट्ठ	—मट्ठा	
ट्य	—नाट्य	
ट्र	—ट्राम	
ठ्य	—पाठ्य	
ड्ग	—खड्ग	
ड्ड	—खड्ड	
ड्ढ	—बुड्ढा	
ड्य	—ड्योढ़ी	
ड्र	—ड्राम	
ढ्य	—धनाढ्य	
ण्[2]ट	—घण्टा	=घंटा
ण्ठ	—कण्ठ	=कंठ
ण्ड	—ठण्डा	=ठंडा
ण्ढ	—ठण्ढ[3]	=ठंढ

[1] ञ् का उच्चारण हिन्दी में न् की भाँति ही होता है।

[2] हिन्दी में संयुक्त व्यंजन का पूर्व वर्ण होने पर ण् का उच्चारण न् होता है।

[3] ठण्ढ वस्तुतः ठण्ड का ही रूप है।

ण्ण	—विषण्ण
ण्य	—पुण्य
ण्व	—कण्व
त्क	—उत्कर्ष
त्त	—कुत्ता
त्त्व	—तत्त्व
त्थ	—पत्थर
त्न	—रत्न
त्न्य	—सापत्न्य
त्प	—तत्पर
त्म	—महात्मा
त्म्य	—महात्म्य
त्य	—सत्य
त्र	—त्रास
त्ल	—कत्ल
त्श	—जुत्शी
त्स	—वत्स
त्स्न	—ज्योत्स्ना
त्स्य	—मत्स्य
त्फ़	—लुत्फ़
थ्य	—पथ्य
थ्र	—थ्रेशर
थ्व	—पृथ्वी
द्घ	—उद्घाटन
द्ग	—उद्गार
द्द	—गद्दा
द्भ	—उद्भव
द्म	—पद्मा
द्य	—विद्या
द्र	—द्रोण
द्र्य	—दारिद्र्य
द्व	—विद्वान्
द्व्य	—सद्व्यवहार

ध्म		
ध्य	—ध्यान	
ध्र		
ध्व	—ध्वनि	
न्क	—इन्कार	
न्च	—इन्च	=इंच
न्त	—अन्त	=अंत
न्त्य	—अन्त्याक्षरी	=अंत्याक्षरी
न्त्र	—यन्त्र	=यंत्र
न्त्र्य	—स्वातन्त्र्य	=स्वातंत्र्य
न्त्व	—सान्त्वना	=सांत्वना
न्थ	—पन्थ	=पंथ
न्द	—चन्दन	=चंदन
न्द्र	—इन्द्र	=इंद्र
न्द्व	—अन्तर्द्वन्द्व	=अंतर्द्वंद्व
न्न	—गन्ना	
न्ध	—अन्धा	=अंधा
न्ध्य	—सान्ध्य	=सांध्य
न्ध्र	—पुरन्ध्र	=पुरंध्र
न्म	—उन्मेष	
न्य	—न्यास	
न्र		
न्व	—धन्वा	
न्श	—मुन्शी	=मुंशी
न्स	—इन्सान	=इंसान
न्ह	—नन्हा	
प्त	—गुप्त	
प्न	—स्वप्न	
प्प	—चुप्पी	
प्य	—प्यास	
प्र	—प्रमाण	
प्ल	—प्लान	
प्स	—लिप्सा	

व्ज	—कुव्जा	
व्त	—खव्त	
व्द	—शव्द	
व्ध	—लुव्ध	
व्व	—डिव्वा	
व्भ	—जिव्भा	
व्य	—व्याह	
व्र	—व्रह्म	
व्ल	—व्लाउज़	
व्ज़	—कव्ज़ा	
भ्य	—सभ्य	
भ्र	—भ्रामक	
म्त	—इम्तहान	
म्द	—उम्दा	
म्न	—निम्न	
म्प	—चम्पा	=चंपा
म्फ	—गुम्फ	=गुंफ
म्व	—लम्वा	=लंवा
म्म	—सम्मान	=संमान
म्य	—ग्राम्य	
म्र	—नम्र	
म्ल	—म्लेच्छ	
म्ह	—तुम्हारा	
य्य	—शय्या	
र्क	—तर्क	
र्क्य	—अतर्क्य	
र्ख	—मूर्ख	
र्ख्य	—मौर्ख्य	
र्ग	—स्वर्ग	
र्घ	—दीर्घ	
र्घ्य	—अर्घ्य	
र्च	—अर्चना	
र्च्छ	—मूर्च्छा	

र्ज	—अर्जन	
र्झ	—निर्झर	
र्ण	—वर्णन	
र्ण्य	—वर्ण्य	
र्त	—कर्ता	
र्त्य	—मर्त्य	
र्त्स	—भर्त्सना	
र्त्स्य	—वर्त्स्य	
र्थ	—अर्थ	
र्थ्य	—सामर्थ्य	
र्द	—मर्दन	
र्द्व	—अन्तर्द्वन्द्व	=अंतर्द्वंद्व
र्ध	—अर्ध	
र्प	—सर्प	
र्ब	—खर्ब	
र्भ	—निर्भर	
र्म	—धर्म	
र्म्य	—हर्म्य	
र्य	—वीर्य	
र्र	—कुर्री	
र्ल	—वार्ली	
र्व	—सर्व	
र्श	—विमर्श	
र्श्व	—पार्श्व	
र्ष	—हर्ष	
र्स	—नर्स	
र्ह	—अर्हन्त	
र्ह्य	—गर्ह्य	
र्क़	—ग़र्क़	
र्ख़	—सुर्ख़	
र्ग़	—मुर्ग़	
र्ज़	—अर्ज़	
र्फ़	—उर्फ़	

ल्क	—हल्का
ल्क्य	—याज्ञवल्क्य
ल्च	—वेल्चा
ल्ट	—वाल्टी
ल्थ	—उल्था
ल्द	—जल्दी
ल्प	—विकल्प
ल्फ	—कुल्फा
ल्व	—वल्व
ल्भ	—प्रगल्भ
ल्म	—गुल्म
ल्य	—कल्याण
ल्ल	—पिल्ला
ल्व	—विल्व
ल्स	—जल्सा
ल्ह	—कुल्हड़
व्य	—व्यग्र
व्व	—अव्वल
व्र	—व्रण
श्क	—खुश्क
श्च	—पश्चात्
श्छ	—निश्छल
श्त	—गोश्त
श्न	—प्रश्न
श्म	—श्मशान
श्य	—अवश्य
श्र	—विश्राम
श्व	—विश्व
श्श	—दुश्शासन
ष्क	—शुष्क
ष्क्र	—निष्क्रमण
ष्ट	—काष्ट
ष्ट्य	—वैशिष्ट्य

ष्ठ	—पृष्ठ
ष्ठ्य	—ओष्ठ्य
ष्ण	—कृष्ण
ष्प	—पुष्प
ष्प्र	—निष्प्रयोजन
ष्म	—भीष्म
ष्य	—शिष्य
स्क	—पुरस्कार
स्ख	—स्खलन
स्त	—व्यस्त
स्त्य	—अगस्त्य
स्त्र	—वस्त्र
स्थ	—अस्वस्थ
स्थ्य	—स्वास्थ्य
स्न	—स्नान
स्प	—स्पष्ट
स्फ	—स्फोट
स्म	—स्मरण
स्य	—स्यार
स्र	—स्रोत
स्व	—स्वामी
स्स	—लस्सी
ह्ण	—अपराह्ण
ह्न	—मध्याह्न
ह्म	—ब्रह्मा
ह्य	—बाह्य
ह्र	—ह्रास
ह्ल	—आह्लाद
ह्व	—जिह्वा
क़्ल	—अक़्ल
ख़्त	—सख़्त
ख़्म	—ज़ख़्म
ख़्य	—ख़्याल

ख़्श	—बख़्शीश
ख़्र	—फ़ख़्र
ख़्व	—ख़्वाब
ख़्स	—शख़्स
ज़्द	—मज़्दा
ज़्म	—नज़्म
फ़्ज	—लफ़्ज
फ़्त	—मुफ़्त
फ़्फ	—गफ़्फ़ार
फ़्र	—फ़्रेम
फ़्ल	—फ़्लू

११७. संयुक्त व्यंजन वर्णों के चिह्नों में प्राय: संयोजन होता है; जैसे—

चिह्‌न	=	चिह्न
कष्‌ट	=	कष्ट
स्‌नेह	=	स्नेह

११८. संयोजन होने पर पूर्व वर्ण-चिह्न में लगा हल् चिह्न लुप्त हो जाता है; जैसे—

चक्‌की	=चक्की
उद्‌भव	=उद्भव

११९. प्राय: पूर्व व्यंजन वर्ण-चिह्न को ऊपर तथा उत्तर व्यंजन वर्ण-चिह्न को नीचे रखने की परम्परा रही है; जैसे—

शङ्‌ख	=	शङ्ख
चक्‌की	=	चक्की
चिह्‌न	=	चिह्न
द्‌वार	=	द्वार

१२०. पूर्व व्यंजन वर्ण-चिह्न की अन्त्य खड़ी अथवा अधखड़ी रेखा को हटाकर उसे कटा रूप देने और उसे बादवाले व्यंजन वर्ण-चिह्न से सटाने की पद्धति अधिक प्रशस्त है; जैसे—

पूर्व व्यंजन खड़ी रेखावाला होने पर

वनस्‌पति	=	वनस्पति
प्‌यार	=	प्यार
अन्‌त	=	अन्त

पूर्व व्यंजन-चिह्न अधखड़ी रेखावाला[1] होने पर

क्वार	=	क्वार
चक्की	=	चक्की

१२१. पूर्व व्यंजन र् हो तो उसके एक भिन्न रूप ˚ को उत्तर व्यंजन वर्ण-चिह्न के अन्तिम सिरे के ऊपर रखते हैं; जैसे—

धर्म	=	धर्म[2]
गर्त	=	गर्त

१२२. उत्तर व्यंजन वर्ण-चिह्न भी यदि संयुक्त हो अथवा मात्रा से युक्त हो तो ˚ को उसके भी बाद रखते हैं; जैसे—

अर्घ्य	=	अर्घ्य
कर्मी	=	कर्मी

१२३. ज् वर्ण के परे ञ वर्ण हो तो दोनों का सूचक वर्ण-चिह्न ज्ञ होता है; जैसे—

ज्ञान	=	ज्ञान
अज्ञ	=	अज्ञ

१२४. 'ज्ञ' का उच्चारण संस्कृतवाले 'ज्ञ', हिन्दीवाले 'ग्य' या 'ग्यँ', मराठीवाले 'द्न' और गुजरातीवाले 'ज्न' करते हैं।

१२५. 'क्' वर्ण-चिह्न के परे 'त' हो तो संयुक्त रूप 'क्त' भी बनता है; जैसे—

रक्त

नियम १२० से	=	रक्त
नियम १२५ से	=	रक्त

१२६. 'क्' वर्ण-चिह्न के परे 'ष' हो तो संयुक्त रूप क्ष भी बनता है; जैसे—

अक्ष

नियम १२० से	=	अक्ष
नियम १२६ से	=	अक्ष

१२७. 'नागरी 'क्ष' के स्थान पर मराठी 'क्ष' का प्रयोग ही अब अधिक होता है; जैसे—

अक्ष = अक्ष — अक्ष

[1] क् झ तथा फ के अन्त में जो अधखड़ी रेखा है इसे पहले 'दुपट्टा' कहते थे।

[2] ˚ वर्ण-चिह्न के नीचे संस्कृत में प्रायः द्वित्व व्यंजन वर्ण-चिह्न रखने की प्रथा थी; जैसे—धर्म्म, गर्त्त आदि।

१२८. 'त्' वर्ण-चिह्न के परे 'त' हो तो 'त्त' रूप भी बनता है; जैसे—

कुत्‌ता

नियम १२० से	=	कुत्ता
नियम १२८ से	=	कुत्ता

१२९. द् वर्ण-चिह्न के परे 'द' हो तो 'द्द' रूप भी बनता है; जैसे—

गद्‌दा = गद्दा

१३०. यदि संयुक्त व्यंजन का उत्तर वर्ण 'र' हो तो उसे पूर्व व्यंजन वर्ण-चिह्न के नीचे रखते हैं तथा उसके एक अन्य रूप ‸ का प्रयोग करते हैं; जैसे—

क्‌रम	=	क्रम
प्‌रकार	=	प्रकार
ह्‌रास	=	ह्रास
त्‌रास	=	त्रास
ड्‌रम	=	ड्रम
द्‌राक्षा	=	द्राक्षा

[टिप्पणी—छपाई की सुविधा के विचार से ‸ की दाहिनी टाँग को व्यंजन वर्ण-चिह्न की खड़ी रेखा में सटा देते हैं।]

१३१. क्, ह् तथा त् के बाद जब 'र' आता है तब विकल्प से उनके रूप क्र, ह्र तथा त्र भी बनते हैं; जैसे—

क्‌रम	=	क्रम
ह्‌रस्व	=	ह्रस्व
त्‌रस्त	=	त्रस्त (नियम १३० से = त्रस्त)

१३२. 'श्' व्यंजन वर्ण के परे 'र' हो तो 'श्र' रूप बनता है; जैसे—

आश्‌रम = आश्रम

१३३. श् व्यंजन वर्ण के परे 'व' हो तो विकल्प से 'श्व' रूप भी बनता है; जैसे—

अश्‌व

नियम १२० से	=	अश्व
नियम १३३ से	=	अश्व

१३४. यदि संयुक्त व्यंजन का पूर्व व्यंजन-चिह्न कटे से भिन्न रूप हो और उत्तर वर्ण 'य' हो तो 'य' को 'च' (यफला) रूप भी प्राप्त होता है और उसे पूर्व वर्ण-चिह्न से सटा दिया जाता है; जैसे—

प्राकट्‌य = प्राकट्य

१३५. ं (अनुस्वार) और : (विसर्ग) ऐसे स्वर[1] हैं जिनका प्रयोग पूर्वोल्लिखित स्वरों के बाद ही होता है, अतः ये अन्य स्वरों की तरह स्वतन्त्र नहीं।

१३६. आरम्भ में ं (अनुस्वार) का उच्चारण मुखद्वार बन्द रहने की अवस्था में नासिका से किया जाता रहा है इसलिए इसे नासिक्य स्वर भी कहते हैं।

१३७. आकर तत्सम शब्दों में अनुस्वार से परे श, स या ह व्यंजन हो तो कुछ लोग इसका मूल उच्चारण म् परन्तु अधिकतर लोग इसका सामान्य उच्चारण न् करते हैं; जैसे—

आकर तत्सम	मूल उच्चारण	सामान्य उच्चारण
अंश	अम्श	अन्श
संस्कृत	सम्स्कृत	सन्स्कृत
सिंह	सिम्ह	सिन्ह[2], सिन्ध

१३८. सामान्यतया अनुस्वार से परे (क) कंठ्य व्यंजन हो तो उस अनुस्वार का उच्चारण नासिक्य कंठ्य व्यंजन के रूप में, (ख) ओष्ठ्य व्यंजन हो तो ओष्ठ्य नासिक्य व्यंजन के रूप में, तथा (ग) तालव्य, मूर्धन्य या दन्त्य-वर्त्स्य व्यंजन हो तो दंत्य-वर्त्स्य नासिक्य व्यंजन के रूप में होता है; जैसे—

(क) कंठ्य व्यंजन परे होने पर

आकर तत्सम	अंक	—	अङ्क
आकर तद्भव	पंख	—	पङ्ख
विदेशी तत्सम[3]	तंग	—	तङ्ग
विदेशी तत्सम	इंग्लिश	—	इङ्ग्लिश

(ख) ओष्ठ्य व्यंजन परे होने पर

आकर तत्सम	कंप	कम्प
विदेशी तत्सम	पंप	पम्प

अयोगवाह

[1] संस्कृत व्याकरण में अनुस्वार तथा विसर्ग की गिनती न स्वरों में हुई है और न व्यंजनों में ही। सच तो यह है कि इनकी गिनती संस्कृत वर्ण-माला में हुई ही नहीं। वर्ण-माला में इनका योग न होने पर भी ये वर्ण-माला के साथ जुड़े रहे इसीलिए इन्हें 'अयोगवाह' कहा गया है। हिन्दी की 'बारह खड़ी' में इनकी गिनती अवश्य स्वरों में की जाती है परन्तु ये दोनों स्वतन्त्र स्वर हैं नहीं।

[2] इसी 'सिन्ह' से 'सिन्हा' बना है।

[3] विदेशी शब्दों में जब कंठ्य व्यंजनों के पहले न् का उच्चारण होता है तब उसके स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग सम्भवतः भ्रम से होता है; जैसे इन्कम के स्थान पर इंकम।

(ग) तालव्य, मूर्धन्य या दंत्य-वर्त्स्य व्यंजन परे होने पर[1]

चंचल	—	चन्चल
कंठ	—	कन्ठ
अंत	—	अन्त

१३९. पार्श्विक, प्रकम्पी, नासिक्य तथा अंतःस्थ वर्णों से पूर्व अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता बल्कि नासिक्य व्यंजन ही आते हैं; जैसे—

(पार्श्विक)	अम्लान	[अंलान नहीं]
(प्रकम्पी)	आम्र	[आंर नहीं]
(नासिक्य)	जन्म	[जंम नहीं]
(अंतःस्थ)	अन्याय	[अंयाय नहीं]

१४०. आकर तत्सम शब्दों में 'सम्' उपसर्ग के म् के स्थान पर विकल्प से अनुस्वार का प्रयोग होता है यदि परे नासिक्य व्यंजन हो; जैसे—

सम्+मेलन	=	सम्मेलन	—	संमेलन
सम्+मुख	=	सम्मुख	—	संमुख

१४१. आकर तत्सम शब्दों में अनुस्वार यदि शब्द के अन्त में हो तो उसका उच्चारण म् होता है; जैसे—

स्वयं	=	स्वयम्
अहं	=	अहम्

१४२. दन्त्य-वर्त्स्य एवम् ओष्ठ्य व्यंजन परे रहने पर अनुस्वार के स्थान पर क्रमशः न् एवम् म् व्यंजन वर्ण-चिह्नों का प्रयोग वरीय समझा जाता है; जैसे—

अंत	—	अन्त
कंप	—	कम्प

[1] संस्कृत भाषा में अनुस्वार का उच्चारण तालव्य व्यंजन परे हो तो ञ् का और मूर्धन्य व्यंजन परे हो तो ण् का होता है; जैसे—

चंचल	—	चञ्चल
कंठ	—	कण्ठ

१४३. विसर्ग का प्रयोग केवल आकर तत्सम शब्दों में होता है तथा कुछ-कुछ अघोष ह् सा होता है; जैसे—

प्रातः — प्रातह्
स्वतः — स्वतह्
संभवतः — संभवतह्
अंतःकरण — अंतह्करण

[टिप्पणी—हिन्दी में विसर्ग का प्रयोग तद्भव तथा देशज शब्दों में नहीं होता। इस तथ्य का उद्घाटन आचार्य पं० किशोरी दास जी वाजपेयी ने किया है। छह या छिह ही हिन्दी की प्रकृति के अनुकूल हैं छः या छिः नहीं।]

हिन्दी की बृहत् वर्ण-माला

स्वर वर्ण

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, ं (अनुस्वार), : (विसर्ग), ऑ, ह्रस्व ए, ह्रस्व ओ

व्यंजन वर्ण

क्, ख्, ग्, घ्, ङ्,
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्,
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्,
त्, थ्, द्, ध्, न्,
प्, फ्, ब्, भ्, म्,
य्, र्, ल्, व्, श्,
ष्, स्, ह्, ड़्, ढ़्
न्ह्, म्ह्, ल्ह्, व्ह्,
क़्, ख़्, ग़्, ज़्, फ़्,

तीसरा प्रकरण

अक्षर • बलाघात

अक्षर

१४४. वर्ण या वर्णों की अविच्छिन्न उच्चरित इकाई को अक्षर[1] कहते हैं; जैसे—

चिड़ियाखाना	=चि ड़ि या खा ना	(५ अक्षर)
बहादुरी	=ब हा दु री	(४ अक्षर)
सयाना	=स या ना	(३ अक्षर)
आना	=आ ना	(२ अक्षर)
था	=था	(१ अक्षर)

१४५. सामान्यतया एक अक्षर में एक से अधिक स्वर वर्ण नहीं होते।

१४६. अक्षर केवल स्वर वर्ण भी हो सकता है अथवा एक या अनेक व्यंजन वर्णों के सहित भी; जैसे—

आ — एक अक्षर; केवल स्वर वर्ण
था — एक अक्षर; एक व्यंजन और एक स्वर वर्ण
क्या — एक अक्षर; दो व्यंजन और एक स्वर वर्ण

१४७. सामान्यतः शब्द में जितने स्वर वर्ण होते हैं उतने अक्षर भी होते हैं; जैसे—

(तीन स्वर)	आइए	= आ इ ए	(३ अक्षर)
(दो स्वर)	आई	= आ ई	(२ अक्षर)
(एक स्वर)	आ	= आ	(१ अक्षर)
(तीन स्वर)	कहिए	=क हि ए	(३ अक्षर)

[1] संस्कृत भाषा में 'अक्षर' के कई अर्थ हैं। यहाँ इसे अँगरेजी सिलेबुल (Syllable) के समानार्थक रूप में प्रयुक्त किया गया है। इस अर्थ में भी 'अक्षर' का संस्कृत भाषा में प्रयोग होता है।

१४८. स्वर के अनुनासिक होने पर अक्षर-विभाजन में अन्तर नहीं पड़ता; जैसे—

क. १	आई	=आ ई	(२ अक्षर)
क. २	आईं	=आ ईं	(२ अक्षर)
ख. १	आए	=आ ए	(२ अक्षर)
ख. २	आएँ	=आ एँ	(२ अक्षर)

१४९. दो स्वरों विशेषतः प्रथम दो स्वरों के गुम्फ को विकल्प से इकाई मानते हैं; जैसे—

आई	=आ ई	(दो अक्षर, नियम १४७)
	=आई	(एक अक्षर, नियम १४९)
बुआ	=बु आ	(दो अक्षर, नियम १४७)
	=बुआ	(एक अक्षर, नियम १४९)
भइया	=भ इ या	(तीन अक्षर, नियम १४७)
	=भइ या	(दो अक्षर, नियम १४९)

१५०. शब्द के अन्त में 'अ' वर्ण अपूर्णोच्चरित रह जाता है; जैसे—

नाम	=न्+आ+म्+अ (अपूर्णोच्चरित)
कान	=क्+आ+न्+अ (अपूर्णोच्चरित)
धाम	=ध्+आ+म्+अ (अपूर्णोच्चरित)
सनातन	=स्+अ+न्+आ+त्+अ+न्+अ (अपूर्णोच्चरित)
बन्ध	=ब्+अ+न्+ध्+अ (अपूर्णोच्चरित)
प्रबन्ध	=प्+र्+अ+ब्+अ+न्+ध्+अ (अपूर्णोच्चरित)

१५१. जिस व्यंजन वर्ण का 'अ' अपूर्णोच्चरित हो वह पूर्व स्वर वर्ण का आक्षरिक अंग होता है; जैसे—

नाम	=न्+आ+म्+अ (अपूर्णोच्चरित)	
	=नाम	(एक अक्षर)
कान	=कान	(एक अक्षर)
सनातन	=स ना तन	(तीन अक्षर)
बन्ध	=बन्ध[1]	(एक अक्षर)
प्रबन्ध	=प्र बन्ध	(दो अक्षर)

[1] बन्ध का 'ध' पूर्व स्वर का जब आक्षरिक अंग होगा तब न् भी स्वभावतः उसका अंग होगा।

[टिप्पणी—अपूर्णोच्चरित 'अ' के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों का मत है कि यह बिल्कुल लुप्त हो चुका है। परन्तु इस सिद्धान्त को मान लेने में सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि खड़ी बोली के कवित्त-सवैयों में अन्त्य 'अ' का उच्चारण होता है। अतः इसे लुप्त न मानकर अपूर्णोच्चरित मानना ही ठीक प्रतीत होता है।]

१५२. शब्दान्त में 'अ' स्वर वर्ण पूर्णोच्चरित होता है यदि वह अनुनासिक हो, विसर्ग से युक्त हो अथवा शब्द का एकमात्र स्वर वर्ण हो; जैसे—

अनुनासिक रूप—

सायँ	=स्+आ+य्+अँ	[सा यँ]
वायँ	=व्+आ+य्+अँ	[वा यँ]

विसर्ग से युक्त—

अतः	=अ+त्+अ+ः	[अ तः]
प्रातः	=प्+र्+आ+त्+अ+ः	[प्रा तः]

शब्द का एकमात्र स्वर वर्ण—

न	=न्+अ	[न]
व	=व्+अ	[व]

१५३. यदि शब्द में एक से अधिक स्वर वर्ण हों तो वे अक्षर विभाजक भी होते हैं; जैसे—

गुलाबी =ग्+उ/+ल्+आ/+ब्+ई
गु ला बी (तीन अक्षर)

चाहिए =च्+आ/+ह्+इ/+ए
चा हि ए (तीन अक्षर)

विचारालय =व्+इ/+च्+आ/+र्+आ/+ल्+अ+य्+अ (अपूर्णोच्चरित) नियम १५०–१५१
=वि चा रा लय (चार अक्षर)

१५४. यदि दो पूर्णोच्चरित स्वर वर्णों के बीच दो व्यंजन वर्ण हों तो उनका उच्चारण अपने अपने निकटस्थ स्वर वर्णों के साथ होता है; जैसे—

भक्ति=भ्+अ+क्+त्+इ=भक् ति (दो अक्षर)

[टिप्पणी—यहाँ 'अ' और 'इ' दो स्वरों के मध्य दो व्यंजन वर्ण क् और त् हैं। क् व्यंजन अ स्वर के निकट है और त् व्यंजन इ स्वर के।]

१५५. दो पूर्णोच्चरित स्वर वर्णों के मध्य यदि दो से अधिक व्यंजन-वर्ण हों तो पूर्व स्वर वर्ण के साथ प्रथम व्यंजन वर्ण रहेगा और शेष व्यंजन वर्ण उत्तर स्वर वर्ण के साथ; जैसे—

सन्त्रस्त =स्+अ+न्+त्+र्+अ+स्+त्+अ (अपूर्णोच्चरित)

=सन् त्रस्त (दो अक्षर)

१५६. दो स्वर वर्णों के बीच यदि दो व्यंजन वर्ण हों तथा दूसरा व्यंजन य्, र्, ल् या व् हो तो पूर्व व्यंजन वर्ण का उच्चारण द्वित्व होता है; जैसे—

दिव्या =द्+इ+व्+व्+य्+आ

=दिव् व्या (दो अक्षर) (नियम १५५)

अम्लान =अ+म्+म्+ल्+आ+न्+अ (अपूर्णोच्चरित) (नियम १५०–१५१)

=अम् म्लान (दो अक्षर)

कल्याण =क्+अ+ल्+ल्+य्+आ+ण्+अ (अपूर्णोच्चरित)

=कल् ल्याण (दो अक्षर)

अज्ञ (क. अग्ञ) =अग्ग्ञ (एक अक्षर) (नियम १२३, १२४, १५१)

(ख. अग्यँ) =अग् ग्यँ (दो अक्षर) (नियम १२३, १२४, १५२)

शक्य =श्+अ+क्+क्+य्+अ (अपूर्णोच्चरित)

=शक्क्य (एक अक्षर) (नियम १५०)

[टिप्पणी—संस्कृत भाषा में य्, र्, ल् तथा व्—ये चारों अन्तःस्थ वर्ण माने गए हैं। वस्तुतः यही एक ऐसा स्थल है जहाँ (हिन्दी में) इन चारों वर्णों के कृत्य समान दिखाई देते हैं।]

१५७. जिस व्यंजन वर्ण का द्वित्व होता है वह यदि महाप्राण है तो विकल्प से उससे पूर्व उसका अल्पप्राण व्यंजन वर्ण आएगा; जैसे—

रथ्यां =र्+अ+थ्+य्+आ

नियम १५७ से =र्+अ+त्+थ्+य्+आ

नियम १५५ से =रत् थ्या

पथ्य =प्+अ+थ्+य्+अ (अपूर्णोच्चरित)

नियम १५७ से =प्+अ+त्+थ्+य्+अ (अपूर्णोच्चरित)

नियम १५१ से =पत्थ्य (एक अक्षर)

माध्यम =म्+आ+ध्+य्+अ+म्+अ
(अपूर्णोच्चरित)
नियम १५६ से =म्+आ+द्+ध्+य्+अ+म्+अ
(अपूर्णोच्चरित)
नियम १५५, १५१ से =माद् ध्यम (दो अक्षर)

१५८. यदि संयुक्त व्यंजन का उत्तर वर्ण प हो तो पूर्व व्यंजन का उच्चारण विकल्प से द्वित्व होता है; जैसे—

शिक्षा =श्+इ+क्+ष्+आ
नियम १५४ से =शिक् षा (दो अक्षर)
नियम १५८ से =शिक् क्षा (दो अक्षर)
दक्ष =द्+अ+क्+ष्+अ (अपूर्णोच्चरित)
नियम १५०, १५१ से =दक्ष (एक अक्षर)
नियम १५८ से =दक्क्ष (एक अक्षर)

१५९. यदि द्वित्व रूप पहले से हो तो पुनः द्वित्व नहीं होगा; जैसे—

अव्वल =अव् वल
मल्लाह =मल् लाह

१६०. तद्भव तथा देशज शब्दों में प्रथम स्वर वर्ण चिह्न के ठीक बादवाले सामान्य व्यंजन वर्ण-चिह्न का 'अ' अपूर्णोच्चरित होता है यदि उससे परे व्यंजन वर्ण-चिह्न अपूर्णोच्चरित से भिन्न किसी स्वर की मात्रा से युक्त हो; जैसे—

पालकी =प्+आ+ल्+अ+क्+ई
=प्+आ+ल्+अ (अपूर्णोच्चरित)+क्+ई
नियम १५१ से =पाल की (दो अक्षर)

[नियम १४७ के अनुसार 'पालकी' तीन अक्षरोंवाला शब्द होता—
पा ल की।]

जनवरी =ज्+अ+न्+अ+व्+अ+र्+ई
=ज्+अ+न्+अ (अपूर्णोच्चरित)+व्+अ+
र्+ई
=जन व री (तीन अक्षर)

परन्तु,

वैंठक	=व् + ऐ + ठ् + अ + क् + अ	
	=व् + ऐ + ठ् + अ + क् + अ (अपूर्णोच्चरित)	
	=बै ठक	(दो अक्षर)
कलई	=क् + अ + ल् + अ + ई	
नियम १४७ से	=क ल ई	(तीन अक्षर)
नियम १४९ से	=क लई	(दो अक्षर)

१६१. उन आकर तत्सम शब्दों के भी प्रथम स्वर वर्ण-चिह्न के बादवाले सामान्य व्यंजन वर्ण-चिह्न का 'अ' स्वर विकल्प से अपूर्णोच्चरित होता है जो बोल-चाल में आ चुके हैं; जैसे—

जनता	=ज् + अ + न् + अ + त् + आ	
नियम १४७ से	=ज न ता	(तीन अक्षर)
नियम १६१ से	=जन ता	(दो अक्षर)
विधवा	=(i) वि ध वा	....(१४७)
	=(ii) विध वा	....(१६१)
योजना	=(i) यो ज ना	
	=(ii) योज ना	
ममता	=(i) म म ता	
	=(ii) मम ता	
धारणा	=(i) धा र णा	
	=(ii) धार णा	

१६२. बोलियों में आकर तद्भव तथा देशज शब्दों में सामान्य व्यंजन वर्ण-चिह्न का 'अ' स्वर उस समय पूर्णोच्चरित ही रहता है जब उसके परे प्रकम्पी 'र' या उत्क्षिप्त 'ड़' वर्ण हो; जैसे—

(क) केसरिया	=क् + ए + स् + अ + र् + इ + य् + आ	
नियम १६२ से	=के स रि या	(चार अक्षर)

[टिप्पणी—नियम १४७ के अनुसार अक्षर-विभाजन होता—
के स रि या (चार अक्षर)
परन्तु नियम १६० के अनुसार मान्य रूप—
केस रि या (तीन अक्षर)
होना चाहिए था। वस्तुतः 'केसरिया' बोली में ही प्रयुक्त होता है। 'हिन्दी शब्द सागर' में इसे स्थान नहीं मिला।]

(ख) केजड़ीवाल =क्+ए+ज्+अ+ड़्+ई+व्+आ+ल्+अ (अपूर्णोच्चरित)

नियम १६१ से =के ज ड़ी वाल

(ग) खोपड़ी =ख्+ओ+प्+अ+ड़्+ई
=खो प ड़ी

(घ) घबराहट =घ्+अ+ब्+अ+र्+आ+ह्+अ+ट्+अ (अपूर्णोच्चरित)

[टिप्पणी—उक्त नियम के फलस्वरूप प्रायः अक्षर-विभाजन होता दिखाई पड़ता है। परन्तु इसे अपवाद ही मानना चाहिए। सामान्यतया केज ड़ी वाल, खोप ड़ी एवम् घब रा हट रूप ही प्रशस्त हैं।]

१६३. बोलियों में प्रकम्पी वर्ण-चिह्न यदि सामान्य रूप में हो तो उसी का 'अ' अपूर्णोच्चरित होता है; जैसे—

अतरसों =अ+त्+अ+र्+अ+स्+ओं

नियम १६३ से =अ तर सों

[परन्तु नियम १६० से होता—अत र सों, जो ठीक नहीं।]

१६४. सामान्यतया समास-पद के अवयवों को अलग-अलग करके अक्षर-विभाजन करते हैं; जैसे—

(क) कलमदान =कलम+दान
=क लम दान (तीन अक्षर)

[नियम १६० से होता—कल म दान।]

(ख) दोपहर =दो+पहर
=दो प हर

[नियम १६० से होता—दोप हर]

(ग) प्रबंधकार =प्रबंध+कार
=प्र बंध कार

[नियम १६० से होता—प्र बन् ध कार]

(घ) भर्त्सना =भर्त्स+ना
=भर्त्स ना

[नियम १६० से होता—भर् त्स ना]

[टिप्पणी—'सामान्यतया' का प्रयोग इसलिए किया गया है कि ऐसे संस्कृत समास-पद जिनमें सन्धि के फलस्वरूप विकार है वे इस नियम के अन्तर्गत नहीं आते; जैसे दिनेश (दिन+ईश); कमलेश कमला+ईश) आदि।

१६५. सामान्यतया यौगिक पदों में प्रत्यय अलग अवयव माने जाते हैं; जैसे—

चलना	=चल ना
उच्चता	=उच्च ता
चहकना	=चहक ना
	=च हक ना
बिलखना	=बिलख ना
	=बि लख ना

१६६. यदि प्रत्यय स्वर वर्ण से आरम्भ हो अथवा सामान्य व्यंजन वर्ण के रूप में हो तो अक्षर-विभाजन के समय उसे अलग अवयव नहीं मानते; जैसे—

बहाव	=बह+आव
	=ब हाव
बढ़त	=बढ़+त
	=ब ढ़त

१६७. उपसर्गों को अलग अवयव स्वीकार किया जाता है; जैसे—

अनपढ़	=(अन+पढ़)
नियम १५०, १५१	=अन पढ़
अदर्शन	=(अ+दर्शन)
नियम १५०, १५१, १५४	=अ दर् शन
बेठिकाने	=(बे+ठिकाने)
नियम १४७, १५३	=बे ठि का ने
अन्याय	=(अ+न्याय)
नियम १५०	=अ न्याय

१६८. स्वर वर्ण या संयुक्त व्यंजन से आरम्भ होने वाले पद में जब उपसर्ग लगता है तब यौगिक पद को स्वतन्त्र इकाई के रूप में स्वीकार तो किया जाता है परन्तु पूर्वतः अपूर्णोच्चरित अ स्वर को अपूर्णोच्चरित ही माना जाता है; जैसे—

अर्थ	=अर्थ—एक अक्षर	[नियम १५०, १५१]
अनर्थ (अन्+अर्थ)	=अ नर्थ—दो अक्षर	[नियम १५०, १५१]
व्यक्त	=व्यक्त—एक अक्षर	[नियम १५०, १५१]

अव्यक्त (अ + व्यक्त) = अव् व्यक्त—दो अक्षर
[नियम १५०, १५१, १५६]

अवधान (अव + धान) = (i) अ व धान—तीन अक्षर
[नियम १४७, १५०, १५१]

= (ii) अव धान—दो अक्षर
[नियम १५०, १५१, १६१]

अनवधान (अन् + अवधान) = (i) अ न व धान—चार अक्षर
[नियम १४७, १५०, १५१]

= (ii) अ नव धान—तीन अक्षर
[नियम १५०, १५१, १६८]

[परन्तु अन व धान नहीं होगा—नियम १६८ बाधक है]

बलाघात

१६९. उच्चारण के समय शब्द के किसी वर्ण या अक्षर पर अन्य वर्णों या अक्षरों की अपेक्षा श्वास का अधिक दवाव पड़ने की स्थिति को बलाघात कहते हैं।

१७०. बलाघात यदि वर्ण पर हो तो उसे वर्ण-बलाघात और अक्षर पर हो तो उसे अक्षर-बलाघात कहते हैं।

१७१. सम्बद्ध वर्ण या अक्षर पर बलाघात सूचित करने के लिए उस वर्ण या अक्षर के नीचे रेखिका[1] लगाते हैं।

१७२. एक अक्षर वाले शब्दों के स्वर वर्ण पर बलाघात होता है; जैसे—

काम	= क् + आ + म् + अ (अपूर्णोच्चरित)
मिल	= म् + इ + ल् + अ (अपूर्णोच्चरित)
झील	= झ् + ई + ल् + अ (अपूर्णोच्चरित)
पुल	= प् + उ + ल् + अ (अपूर्णोच्चरित)
मूल	= म् + ऊ + ल् + अ (अपूर्णोच्चरित)
खेल	= ख् + ए + ल् + अ (अपूर्णोच्चरित)
मौन	= म् + औ + न् + अ (अपूर्णोच्चरित)

[1] छपाई की सुविधा के लिए रेखांकित वर्ण मोटे टाइप में मुद्रित किये गये हैं।

१७३. वाक्य के ऐसे एक अक्षरवाले शब्द या सहायक शब्द पर बलाघात दिया जाता है जिसे विशेष महत्त्व प्रदान करना अभिप्रेत होता है; जैसे——

१. वह आ रहा है। (विधान सूचक वाक्य)
२. वह आ रहा है। (वह पर बलाघात)
३. वह आ रहा है। (आ क्रिया पर बलाघात)
४. वह आ रहा है। (है काल पर बलाघात)

१७४. कुछ अवस्थाओं में किसी विशिष्ट एक अक्षरवाले शब्द या सहायक शब्द पर बलाघात दिये जाने से वाक्य की विवक्षा में अन्तर आ जाता है; जैसे—

१. तुम मत जाओ। (निषेधात्मक आज्ञासूचक वाक्य)
२. तुम मत जाओ। (वाक्य में तुम पर बलाघात है)[1]
३. तुम मत जाओ। (निषेध पर बल है)

१७५. सामान्यतया दो अक्षरवाले शब्द के प्रथम अक्षर पर बलाघात रहता है; जैसे—

अटल	=अ टल
अनाज	=अ नाज
बड़ा	=ब ड़ा
पत्थर	=पत् थर
हिरन	=हि रन
ठोकर	=ठो कर

१७६. दो अक्षर वाले धातुओं अथवा प्रत्यय युक्त धातुओं का प्रयोग जब नामपद अथवा प्रेरणार्थक धातु के रूप में होता है तब बलाघात दूसरे अक्षर पर रहता है; जैसे—

उसने पतंग पकड़ ली।	प कड़	(धातु)
उसकी पकड़ अच्छी है।	प कड़	(नामपद)
तुम रोटी मत बेलना।	बेल ना	(क्रियापद)
नया बेलना खरीद लो।	बेल ना	(नामपद)
मकान बना है।	ब ना	(कृदन्त)
तू मकान बना।	ब ना	(प्रेरणार्थक धातु)

[1] 'तुम' पर जोर दिए जाने से विवक्षा यह निकलती है कि चाहे और कोई जाए पर तुम मत जाना।

१७७. तीन तथा अधिक अक्षरवाले शब्द के जिस अक्षर में दीर्घ स्वर हो, उस पर बलाघात रहता है; जैसे—

आचरण	=आ च रण
विशेषण	=वि शे षण
अनुसार	=अ नु सार
पुरस्कार	=पु रस् कार
निस्सन्देह	=निस् सन् देह
शकुन्तला	=श कुन् त ला

१७८. यदि तीन या अधिक अक्षरवाले शब्दों के एक से अक्षरों में दीर्घ स्वर हों तो सबसे पहले दीर्घ स्वरवाले अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे—

कालिदास	=का लि दास
साधारण	=सा धा रण
बुढ़ापा	=बु ढ़ा पा
पंडिताई	=पं डि ता ई

१७९. यदि तीन या अधिक अक्षरवाले शब्द के सभी अक्षरों में दीर्घ अथवा ह्रस्व स्वर हों तो द्वितीय अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे—

तीनो दीर्घ स्वर—

चौड़ाई	=चौ ड़ा ई

तीनो ह्रस्व स्वर—

परन्तु	=प रन् तु

१८०. यदि तीन अक्षरवाले शब्द के किसी एक अक्षर में विसर्ग से युक्त स्वर हो अथवा संयुक्त व्यंजन वर्ण हो तो उसी अक्षर पर बलाघात होता है; जैसे—

अन्तःकरण	=अन् तः क रण
आनन्द	=आ नन्द
अव्यय	=अव् व्यय
विक्रमी	=विक् क्र मी

१८१. यदि अनेक अक्षरवाले किसी शब्द के एक अक्षर में विसर्ग से युक्त स्वर हो और दूसरे में संयुक्त व्यंजन वर्ण तो विसर्ग युक्त स्वरवाले अक्षर पर बलाघात होगा; जैसे—

प्रातः	=प्रा तः
सामान्यतः	=सा मान्य तः

चौथा प्रकरण

नामपद

पद

१८२. रचनाभेद, अर्थभेद तथा प्रयोगभेद की दृष्टि से जब शब्दों एवम् सहायक शब्दों पर विचार किया जाता है तब उन्हें पद एवम् उपपद कहते हैं।

१८३. रचना-भेद के विचार से पदों के तीन भेद समास-पद, यौगिक पद और रूढ़ पद होते हैं।

१८४. दो पदों के योग से बने पद को समास-पद, उपपदों और पदों के योग से बने पद को यौगिक पद और ऐसे पद को रूढ़ पद कहते हैं जिसमें किसी अन्य पद या उपपद का योग न हुआ हो; जैसे—

जेब घड़ी—समास-पद—जेब (पद) + घड़ी (पद)
चलना —यौगिक पद—चल (पद) + ना (उपपद)
अनदेखा —यौगिक पद—अन (उपपद) + देख (पद) + आ (उपपद)
वही —यौगिक पद—वह (पद) + ही (उपपद)

१८५. अर्थ की दृष्टि से पदों के दो भेद नामपद (नाम के सूचक पद) और क्रियापद (क्रिया के सूचक पद) होते हैं; जैसे—

घोड़ा आया।

'घोड़ा' एक जीव का नाम है अतः नामपद हुआ और 'आया' भूतकाल में हुई आना क्रिया का सूचक है अतः क्रियापद हुआ।

१८६. नामपदों के तीन भेद संज्ञापद, सर्वनामपद तथा विशेषण पद होते हैं और क्रियापदों के भी तीन भेद होते हैं—मूल क्रियापद, धातु क्रियापद और संयुक्त क्रियापद।

१८७. नामपद यदि नियत हो तो उसे संज्ञापद, यदि वह सभी नामपदों के लिए प्रयुक्त होता हो तो उसे सर्वनामपद और यदि वह किसी पद की विशेषता बतलाता हो तो उसे विशेषणपद कहते हैं; जैसे—
संज्ञापद—राम, कृष्ण, सीता, मकान, कुर्सी, नदी, पहाड़, चाँद, सूरज····
सर्वनामपद—मैं, तू, वह, यह, कोई, कौन, क्या, जो, कुछ, सो ···
विशेषणपद—काला, गोरा, मोटा, हलका, भारी, तेज़....

संज्ञापद

१८८. संज्ञापदों के सात भेद हैं—

(१) प्राणीसूचक—

(क) जीववाचक—राम कृष्ण, आदमी, औरत, शेर, हाथी, मच्छर, जोंक····

(ख) पदवाचक—चाचा, मामा, नाती, पोता, पति, पत्नी, डाक्टर, वकील, मंत्री, कप्तान, लुहार, बनिया····

(२) वस्तुसूचक—

(क) प्रकृति-रचित—पेड़, टहनी, फूल, पानी, पत्थर····

(ख) जीव-निर्मित—मकान, मेज़, कुर्सी, अँगूठी, नकेल, घोंसला, झाला····

(३) स्थानसूचक—

राज्य, प्रांत, जिला, शहर, गाँव, महल्ला, गली····

(४) समयसूचक—

दिन, रात, पहर, पखवारा, महीना, बरस, शताब्दी····

(५) मानसूचक—

ग्राम, किलो, लिटर, पैसा, रुपया, मीटर, गज, इंच, तोला, छटाँक····

(६) भावसूचक—

(क) मनोभावसूचक—प्रेम, घृणा, दुःख, शांति····

(ख) अवस्थासूचक—अमीरी, गरीबी, बचपन, बुढ़ापा····

(७) व्यापारसूचक या क्रियार्थक—

लेखन, मुद्रण, प्रकाशन, घिराव, बुलावा, मिलाप, खेलना, हँसना, पढ़ना····

[टिप्पणी—उक्त वर्गीकरण परसर्गों (विभक्तियों) के विवेचन में अत्यधिक सहायक हुआ है।]

१८९. अर्थ का भेद होने पर एक भेद का संज्ञापद दूसरे भेद का सूचक हो सकता है; जैसे—

क–१. मीटर (नाप) =मानसूचक संज्ञापद
  २. मीटर (नापने का छड़) =वस्तुसूचक संज्ञापद
ख–१. मौत (मरने की स्थिति) =भावसूचक संज्ञापद
  २. मौत (मृत व्यक्ति)[1] =प्राणीसूचक संज्ञापद
ग–१. प्रकाशन (प्रकाशित करने का कार्य) =व्यापारसूचक या क्रियार्थक संज्ञापद
  २. प्रकाशन (प्रकाशित पुस्तक) =वस्तुसूचक (जीव-निर्मित) संज्ञापद

लिंग

१९०. पुंस्त्व तथा स्त्रीत्व की कल्पना के आधार पर[2] संज्ञापदों को पुंलिग और स्त्रीलिंग दो वर्गों में विभक्त किया गया है।

१९१. जिस प्राणी में पुंस्त्व के स्पष्ट प्राकृतिक लक्षण हों उसके सूचक संज्ञापद को पुंलिग और जिस प्राणी में स्त्रीत्व के स्पष्ट प्राकृतिक लक्षण हों उसके सूचक संज्ञापद को स्त्रीलिंग माना जाता है; जैसे—

लड़का, आदमी, घोड़ा, शेर—पुंलिग
लड़की, औरत, घोड़ी, शेरनी—स्त्रीलिंग

१९२. जिन पदों पर सामान्यतया पुरुष वर्ग ही आसीन होता रहा है उनके सूचक संज्ञापदों को पुंलिग ही माना जाता है फिर भले ही उन पर स्त्रियाँ ही आसीन क्यों न हों; जैसे—

राष्ट्रपति, राज्यपाल, मंत्री, जिलाधिकारी, सिपाही, पटवारी····

१९३. जिन पदों पर सदा स्त्रियाँ ही आसीन होती या काम करती हैं उनके सूचक संज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—

पटरानी, दाई, नर्स····

[1] जैसे, इस महीने इस महल्ले में चार मौतें हुई हैं।

[2] इस वर्गीकरण का आधार वस्तुतः लोक ही है। यही कारण है कि एक प्रदेश में कोई शब्द पुंलिग है तो दूसरे में स्त्रीलिंग। पश्चिम में 'जामुन' स्त्रीलिंग है और पूरब में पुंलिग। पं० किशोरीदास वाजपेयी 'जामुन' को स्त्रीलिंग बताते हैं और शब्दर्षि रामचन्द्र वर्म्मा पुंलिग। संस्कृत भाषा में पुंलिग और स्त्रीलिंग के अतिरिक्त एक तीसरा वर्ग नपुंसकलिंग भी है।

१६४. आश्रम, आस्पद (अल्ल), जाति, देश, देशवासी, सागर, नद, वार तथा ग्रह के सूचक संज्ञापद पुंलिंग होते हैं; जैसे—

आश्रम—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।
आस्पद—खन्ना, कपूर, साहनी, पाण्डेय ।
जाति—हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिख ।
देश—भारत, चीन, जापान, रूस, बरमा ।
देशवासी—अँगरेज़, चीनी, जापानी, रूसी ।
सागर—प्रशान्त, हिन्द, लाल, काला ।
नद—सोन, सिन्धु, ब्रह्मपुत्र ।
वार—सोम, मंगल, बुध ।
ग्रह—शनि, मंगल, नैपचून ।

१६५. धरती, तिथि, राशि, नहर, नदी तथा भाषा के सूचक संज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—

धरती—भूमि, वसुंधरा, मही ।
तिथि—परिवा, दूज, तीज, अमावस्या ।
राशि—मीन, तुला, सिंह ।
नदी—गंगा, यमुना, ताप्ती, राप्ती, कृष्णा, कावेरी ।
भाषा एवम् बोली—हिन्दी, अँगरेज़ी, उर्दू, मराठी, उड़िया, अपभ्रंश[1], भोजपुरी ।

१६६. जिन प्राणियों को देखकर सहज ही पहचाना नहीं जा सकता कि वे नर हैं या मादा, उनके सूचक संज्ञापदों के लिंग का निर्धारण, उनके स्रोत तथा रूप के आधार पर होता है ।

१६७. प्राणीसूचक से भिन्न अन्य सभी प्रकार के संज्ञापदों के लिंग का निर्धारण भी उनके स्रोत तथा रूप के आधार पर किया जाता है ।

१६८. आकर तत्सम संज्ञापद यदि मूलतः (संस्कृत भाषा में[2]) स्त्रीलिंग हों तो हिन्दी में भी स्त्रीलिंग अन्यथा पुंलिंग होंगे ।

[1] अपभ्रंश का प्रयोग पुंलिंग रूप में कुछ लोग अवश्य करते हैं ।

[2] संस्कृत भाषा में लिंग का निर्णायक लोक ही माना गया है, तो भी वहाँ निश्चित नियमों पर लिंग का निर्धारण हुआ है । ऐसे नियमों के अपवाद भी हैं परन्तु देखने में आता है कि हिन्दी ने उन्हें अंगीकार नहीं किया । उदाहरण के लिए संस्कृत में आकारान्त संज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं परन्तु दारा का प्रयोग पुंलिंग बहुवचन रूप में (दाराः) होता है । हिन्दी ने 'दारा' को स्त्रीलिंग रूप में ही अपनाया है । संस्कृत में नपुंसक लिंग संज्ञापदों के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्ति को छोड़कर अन्यत्र पुंलिंग संज्ञापदों के समान रहते हैं । अतः स्पष्ट है कि नपुंसकलिंग संज्ञापद लिंग-व्यवस्था की दृष्टि से पुंलिंग संज्ञापदों के ही अधिक निकट हैं ।

१६६. अनेक तत्सम संज्ञापद मूलतः पुंलिंग या नपुंसकलिंग होने पर भी हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं—

हिन्दी में स्त्रीलिंग परन्तु मूलतः पुंलिंग

आय	(आयः)
आत्मा	(आत्मन्)
ऋतु	(ऋतुः)
गंध	(गंधः)
जय	(जयः)
टंकार	(टंकारः)
देह	(देहः)
धातु	(धातुः)
ध्वनि	(ध्वनिः)
पराजय	(पराजयः)
मणि	(मणिः)
महिमा	(महिमन्)
मृत्यु	(मृत्युः)
राशि	(राशिः)
वायु	(वायुः)
विजय	(विजयः)
विधि	(विधिः)
विनय	(विनयः)
शपथ	(शपथः)
कोयल	(कोकिलः)

हिन्दी में स्त्रीलिंग परन्तु मूलतः नपुंसकलिंग

अस्थि	(अस्थि)
आयु	(आयुस्)
इन्द्रिय	(इन्द्रियम्)
ढाल	(ढालम्)
पुस्तक	(पुस्तकम्)
वस्तु	(वस्तु)
सामर्थ्य	(सामर्थ्यम्)

[टिप्पणी—लिंग परिवर्तन वस्तुतः आगत विदेशी शब्दों के लिंग के कारण हुआ है। अरबी-फारसी में इनके पर्याय स्त्रीलिंग ही हैं; जैसे—

आगत विदेशी (मूलतः स्त्रीलिंग)	आकर तत्सम (मूलतः पुंलिग/नपुंसकलिंग परन्तु हिन्दी में स्त्रीलिंग)
आमदनी	आय
आवाज़	ध्वनि
उमर	आयु
कसम	शपथ
किताब	पुस्तक
चीज़	वस्तु
फ़तह	जीत
महक	गंध
मौत	मृत्यु
रूह	आत्मा
हवा	वायु

२००. व्यक्ति, तारा और देवता संज्ञापद संस्कृत में स्त्रीलिंग होने पर भी हिन्दी में क्रमशः आदमी, सितारा और देव अर्थ में पुंलिंग हैं।

२०१. स्रोत के विचार से आकर तद्भव संज्ञापदों का मूल रूप यदि संस्कृत में स्त्रीलिंग हैं तो हिन्दी में भी स्त्रीलिंग अन्यथा पुंलिंग; जैसे—

हिन्दी में स्त्रीलिंग

मैना	<	मदना	स्त्रीलिंग
सूई	<	सूची	"
मक्खी	<	मक्षिका	"
जूं	<	जूका	"
भौंह	<	भ्रू	"
जांघ	<	जंघा	"

हिन्दी में पुंलिग

आसरा < आश्रय:		पुंलिग
काँसा < कांस्य:		,,
कोदो < कोद्रव:		,,
सोना < स्वर्ण:		,,
धूँआ < धूम:		,,

हिन्दी में पुंलिग

छींका < शिक्यम्		नपुंसकलिंग
तिनका < तृणम्		,,
दही < दधि		,,
बाजा < वाद्यम्		,,
रोयाँ < रोमन्		,,

[टिप्पणी—(१) एक ही रूप में प्रयुक्त तत्सम तथा तद्भव शब्दों के लिंग में अन्तर हो सकता है। उदाहरण के लिए 'टीका' तत्सम रूप में स्त्रीलिंग है (जैसे—यह टीका लाला भगवानदीन जी की लिखी हुई है।) और तद्भव (संस्कृत तिलक:) रूप में पुंलिग (जैसे—उसने टीका लगा रखा था।)।

(२) हिन्दी में कुछ शब्द विभिन्न अर्थों में विभिन्न लिंगी भी हैं; जैसे—

धातु (सोना-चाँदी अर्थ में) स्त्रीलिंग
धातु (क्रिया-मूल अर्थ में)[1] पुंलिग
पीठ (संस्थान अर्थ में) पुंलिग
पीठ (पृष्ठभाग अर्थ में) स्त्रीलिंग
घात (आघात अर्थ में) पुंलिग
घात (देखने के अर्थ में) स्त्रीलिंग
धूप (प्रकाश अर्थ में) स्त्रीलिंग
धूप (ज्वलनशील पदार्थ) पुंलिग]

[1] 'हिन्दी शब्द सागर' तथा 'मानक हिन्दी कोश' में इसे पुंलिग ही माना गया है परन्तु कुछ विद्वान् इसे स्त्रीलिंग में भी प्रयुक्त करते हैं।

२०२. ऐसे तद्भव संज्ञापदों को स्त्रीलिंग रूप में ही विशेष रूप से प्रयुक्त किया जा रहा है जिनके तत्सम रूप तो पुंलिग या नपुंसकलिंग होते हैं परन्तु (क) जिनके संयुक्त व्यंजन के किसी वर्ण का लोप हो जाता है या (ख) कोई स्वर अनुनासिक हो जाता है; जैसे—

तद्भव स्त्रीलिंग		संस्कृत में पुंलिग			
आग	<	अग्निः	ग्न	न	लोप
आँख	<	अक्षिः	क्ष	ष	,,
गागर	<	गर्गरः	र्ग	र	,,
गोद	<	क्रोड़ः	क्र	र	,,
सरसों	<	सर्षपः	र्ष	ष	,,
साँस	<	श्वासः	श्व	व	,,
बाँह	<	वाहुः	ओ	को	आँ
बूंद	<	विन्दुः	इ	को	ऊँ

तद्भव स्त्रीलिंग		संस्कृत में नपुंसकलिंग			
खीर	<	क्षीरम्	क्ष	ष	लोप
भाप	<	वाष्पम्	ष्प	ष	,,
पोर	<	पर्वन्	र्व	व	,,

२०३. तन[1], लालच, चूल्हा आदि कुछ तद्भव संज्ञापद हिन्दी में पुंलिग हैं यद्यपि इनके संस्कृत रूप स्त्रीलिंग हैं।

हिन्दी में पुंलिग		संस्कृत में स्त्रीलिंग
तन	<	तनु
लालच	<	लालसा
चूल्हा	<	चुल्ली
जामुन	<	जम्बू

२०४. सामान्यतया अनुकरणवाची देशज संज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—
धक, धड़, धप, फर, किटकिट, छमछम, वड़वड़, खड़वड़, फाफा, पींपीं, शूंशूं, खोंखों।

२०५. टन, धड़ाम आदि कुछ अनुकरणवाची संज्ञापद पुंलिग हैं; जैसे—
घड़ी ने टन बजाया।
घंटों से यहाँ धड़ाम धड़ाम हो रहा है।

[1] तनु का प्रयोग तीनो लिंगों में होता है। (दे० अमरकोश—रामाश्रमीटीका)।

२०६. आकारान्त तथा ऊकारान्त आकस्मिक अर्थात् अज्ञातमूल देशज संज्ञापद पुंलिंग होते हैं और अकारात तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग; जैसे—

पुंलिंग

आकारान्त : चैला, चोचला, छर्रा, धड़ल्ला, निहोरा।
ऊकारान्त : आड़ू, लट्टू।

स्त्रीलिंग

अकारान्त : झक, झालर, बौछार, किरच।
ईकारान्त : चूनरी, झींसी।

[टिप्पणी—पुआल, पोल, खोट, घौंद आदि ऐसे आकस्मिक देशज संज्ञापद हैं जो कुछ प्रदेशों में पुंलिंग रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। चिल्लड़, चुक्कड़ आदि अकारान्त आकस्मिक संज्ञापद पुंलिंग रूप में ही चलते हैं। परन्तु ऐसे शब्द स्थानीय ही हैं।]

२०७. आकारान्त तथा ऊकारान्त प्रत्ययों से युक्त निर्मित देशज संज्ञापद पुंलिंग होते हैं; जैसे—

हाथ+औड़ा (प्रत्यय)	= हथौड़ा	पुंलिंग
दुख+ड़ा (,,)	= दुखड़ा	,,
उड़+आका (,,)	= उड़ाका	,,
बूढ़ा+आपा (,,)	= बुढ़ापा	,,
ताँबा+इया (,,)	= ताँबिया	,,
लड़+आकू (,,)	= लड़ाकू	,,

२०८. 'इया' प्रत्यय से युक्त निर्मित आकारान्त देशज संज्ञापद ऊनतासूचक होने पर स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—

लोटा+इया	= लुटिया (छोटा लोटा)	स्त्रीलिंग
फोड़ा+इया	= फुड़िया (छोटा फोड़ा)	,,
पूड़ा+इया	= पुड़िया (छोटा पूड़ा)	,,
अंब+इया	= अंबिया (छोटा आम)	,,
खाट+इया	= खटिया (छोटी खाट)	,,
चोटी+इया	= चुटिया (छोटी चोटी)	,,

२०९. 'इया' प्रत्यय से युक्त संज्ञापद यदि तदर्थ या तद्युक्त वाचक हों तो पुंलिंग ही होते हैं; जैसे—

जाँघ+इया	= जाँघिया (पुंलिंग) (तदर्थ—जाँघ के लिए)	
ताँबा+इया	= ताँबिया (पुंलिंग) (तद्युक्त—ताँबे से बना)	

२१०. सामान्यतया अकारान्त तथा ईकारान्त प्रत्यय से युक्त निर्मित देशज संज्ञापद स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—

मिठास	= मीठा+आस (अकारान्त प्रत्यय)	स्त्रीलिंग
बुझौवल	= बूझ+औवल (,, ,,)	,,
बंधेज	= बंध+एज (,, ,,)	,,
टिकली	= टीका+ली (ईकारान्त प्रत्यय)	,,
हथेली	= हाथ+ऐली (,, ,,)	,,
चुप्पी	= चुप्प+ई (,, ,,)	,,

२११. आक, आप, आव, कड़, गीर, ड़, पन, दान, बाज़, दार आदि प्रत्ययों से युक्त निर्मित देशज संज्ञापद पुंलिंग होते हैं; जैसे—

तैर+आक	= तैराक	पुंलिंग
मिल+आप	= मिलाप	,,
चल+आव	= चलाव	,,
टुक+कड़	= टुक्कड़	,,
उठाई+गीर	= उठाईगीर	,,
अंध+ड़	= अंधड़	,,
लड़का+पन	= लड़कपन	,,
पान+दान	= पानदान	,,
गिरह+बाज़	= गिरहबाज़	,,
दुकान+दार	= दुकानदार	,,

२१२. 'आन' प्रत्यय से युक्त निर्मित देशज संज्ञापद सामान्यतया पुंलिंग ही हैं परन्तु उनमें से अधिकतर का प्रयोग स्त्रीलिंग में भी होता है; जैसे—

मिल+आन	= मिलान	पुंलिंग
ऊँचा+आन	= ऊँचान	विकल्प से स्त्रीलिंग भी
उठ+आन	= उठान	विकल्प से स्त्रीलिंग भी

२१३. अरबी, फारसी तथा तुर्की के संज्ञापद यदि मूलतः पुंलिंग हों तो हिन्दी में भी पुंलिंग और यदि मूलतः स्त्रीलिंग हों तो हिन्दी में भी स्त्रीलिंग होते हैं।

[टिप्पणी—विद्वानों का मत है कि उक्त प्रकार के आकर संज्ञापद उर्दू के माध्यम से आये हैं और उर्दू में उनका जो लिंग माना गया है वही हिन्दी में भी मान लिया गया है।]

२१४. अरबी, फ़ारसी के जो थोड़े से शब्द उर्दू में उभयलिंगी माने जाते हैं हिन्दी में उनमें से अकारान्त प्रायः स्त्रीलिंग और आकारान्त पुंलिंग की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

क़लम, बर्फ़, दरार, मज़ार (स्त्रीलिंग)

मज़ा (पुंलिंग)

[टिप्पणी—उर्दू ने हिन्दी के तद्भव देशज शब्द तो अपनाए ही हैं संस्कृत के कुछ तत्सम शब्द भी अपनाए हैं। हिन्दी के तद्भव तथा देशज आकारान्त संज्ञापद सामान्यतया पुंलिंग होते हैं और संस्कृत के स्त्रीलिंग। उर्दू ने भूल से तत्सम स्त्रीलिंग संज्ञापदों को भी आकारान्त देखकर पुंलिंग मान लिया। चर्चा, धारा, माला आदि हिन्दी में स्त्रीलिंग हैं परन्तु उर्दू में पुंलिंग।]

२१५. आंग्ल, पुर्तगाली आदि आगत विदेशी संज्ञापदों के अन्त्य अक्षर में इ या ई स्वर हो तो वे स्त्रीलिंग होते हैं अन्यथा पुंलिंग; जैसे—

आगत संज्ञापद स्त्रीलिंग		अन्त्य अक्षर में इ या ई स्वर	
साइकिल	साइ/	क्+इ+ल्+अ	(अपूर्णोच्चरित)
पालिश	पा/	ल्+इ+श्+अ	(,,)
स्क्रीन		स्+क्+र्+ई+न्+अ	(,,)
फिल्म		फ्+इ+ल्+म्+अ	(,,)
कम्पनी	कम्प/	न्+ई	

आगत संज्ञापद पुंलिंग		अन्त्य स्वर में इ या ई से भिन्न स्वर होने पर	
पाउडर	पाउ/	ड्+अ+र्+अ	(अपूर्णोच्चरित)
कैमरा	कैम/	र्+आ	
हॉल		ह्+ऑ+ल्+अ	(,,)
कॉलेज	कॉ/	ल्+ए+ज्+अ	(,,)
टैक्स		ट्+ऐ+क्+स्+अ	(,,)
पियानो	पि या/	न्+ओ	
बिस्कुट	बिस्/	क्+उ+ट्+अ	(,,)

२१६. जिन आंग्ल आदि आगत विदेशी संज्ञापदों के पर्यायवाची शब्द पहले से हिन्दी में थे उनके लिंग उनके पर्यायवाची शब्दों के लिंग के अनुरूप स्थिर कर लिए गए हैं; जैसे—

पहले से हिन्दी में चलते हुए संज्ञापद	लिंग	आगत संज्ञापद	लिंग
गाड़ी	स्त्रीलिंग	रेल, कार, मोटर, बस	स्त्रीलिंग
तारीख़, तिथि	,,	डेट	,,
जंजीर	,,	चेन	,,
हवा	,,	गैस	,,
आमदनी, आय	,,	इनकम	,,
तनख्वाह	,,	पे	,,
अर्ज़ी	,,	एप्लिकेशन	,,
नल	पुंलिग	पाइप	पुंलिग
जुरमाना	,,	फ़ाइन	,,
अँगोछा	,,	तौलिया[1]	,,
हत्था	,,	हैंडिल	,,
जहाज़, यान	,,	स्पूतनिक	,,

[टिप्पणी—वर्तनी का सदा ध्यान रखना चाहिए। टिकट, टेबुल, लेबल, मार्केट आदि पुंलिंग संज्ञापदों को जो लोग टिकिट, टेबिल, लेबिल, मार्किट लिखते-बोलते हैं वे स्वभावतः इन्हें स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग करेंगे ही।]

२१७. आंग्ल विटामिन, प्रोटीन, टिफ़िन, स्विच, बिल आदि संज्ञापद पुंलिंग एवम् रिपोर्ट, बर्थ, कांग्रेस आदि संज्ञापद स्त्रीलिंग माने जाते हैं।

२१८. समास-पदों[2] का लिंग-निर्णय उत्तर पद के लिंग के अनुसार होता है; जैसे—

		पूर्व पद	उत्तर पद	
काशीनरेश	=	काशी (स्त्री०) +	नरेश (पुं०)	(पुंलिग)
वसंतऋतु	=	वसंत (पुं०) +	ऋतु (स्त्री०)	(स्त्रीलिंग)

[1] पश्चिमी क्षेत्र में 'तौलिया' को स्त्रीलिंग माना जाता है।

[2] दो पदों के योग से बननेवाले संक्षिप्त पद को समास-पद कहते हैं।

२१९. समास-पद का उत्तरपद यदि अनुकरणवाची हो तो लिंग-निर्णय पूर्वपद के अनुरूप होता है; जैसे—

भीड़-भाड़*	(भीड़ स्त्रीलिंग)	स्त्रीलिंग
चीं-चपड़†	(चीं ,,)	,,
पैसा-वैसा†	(पैसा पुंलिंग)	पुंलिंग
पान-वान†	(पान ,,)	,,

२२०. सामान्यतः संज्ञाविशेषण भी पुंलिंग संज्ञापद की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

बूढ़ा आदमी सो रहा है। (संज्ञाविशेषण)
बूढ़ा सो रहा है। (पुंलिंग संज्ञापद)

२२१. स्त्रीलिंग संज्ञापदों की ही विशेषता बतलानेवाले संज्ञाविशेषण स्त्रीलिंग संज्ञापद की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

सती, साध्वी, सुन्दरी, बूढ़ी

२२२. प्राकृतिक दृष्टि से पुंसत्ववाले प्राणियों के सूचक पुंलिंग संज्ञापदों को पुरुषवाची और स्त्रीत्ववाले प्राणियों के सूचक स्त्रीलिंग संज्ञापदों को स्त्रीवाची कहते हैं; जैसे—

पुरुषवाची—लड़का, आदमी, गधा, चूहा, हाथी।

स्त्रीवाची—लड़की, औरत, गधी, चुहिया, हथिनी।

२२३. पुरुषवाची तथा स्त्रीवाची संज्ञापदों के द्वारा कभी जातिगत सम्बन्ध सूचित होता है और कभी पति-पत्नी जैसा; जैसे—

जातिगत सम्बन्ध—

लड़का	—लड़की
चेला	—चेली
भाई	—बहन

* 'भाड़' यहाँ अनुकरणवाची है अतः नियम २०३ के अनुसार स्त्रीलिंग है। तद्भव रूप में यह अवश्य पुंलिंग है (भूंजे का भाड़)।

† 'चपड़, वैसा तथा वान' अनुकरणवाची होने के फलस्वरूप स्त्रीलिंग होने चाहिए थे। [देखें नियम २०३]।

पति-पत्नी जैसा—

दादा	—दादी
चाचा	—चाची
मामा	—मामी

जातिगत भी, पति-पत्नी जैसा भी—

मज़दूर	—मज़दूरनी
माली	—मालिन
कुंजड़ा	—कुंजड़िन

२२४. जिन आकर तथा आगत पुरुषवाची संज्ञापदों को हिन्दी ने अपनाया है उनके स्त्रीवाची शब्द भी प्रायः अपनाए हैं; जैसे—

आकर

(क) तत्सम :	पिता		—माता	
	पति		—पत्नी	
	नर		—नारी	
	युवा		—युवती	
	अध्यापक		—अध्यापिका	
	नेता		—नेत्री	
	अभिनेता		—अभिनेत्री	
	बालक		—बालिका	
	छात्र		—छात्रा	
	विद्वान्		—विदुषी	
	बुद्धिमान्		—बुद्धिमती	
	पाठक		—पाठिका	
	राजा		—रानी	<राज्ञी
(ख) तद्भव :	गधा	<गर्दभः	—गधी	<गर्दभी
	बंदर	<वानरः	—बंदरी	<वानरी
	बकरा	<बर्करः	—बकरी	<बर्करी
	भेड़ा	<मेढ़ः	—भेड़	<मेढ़ी
	साला	<श्यालः	—साली	<श्याली
	हाथी	<हस्तिन्	—हथिनी	<हस्तिनी

आगत

मर्द	—औरत
बादशाह	—बेगम
शहज़ादा	—शहज़ादी
खाविन्द	—बीवी
अब्बा	—अम्मी, अम्माँ
डाक्टर	—लेडी-डाक्टर

२२५. सामान्यतया तद्भव तथा देशज पुरुषवाची आकारांत शब्दों में ई प्रत्यय के योग से स्त्रीवाची रूप बनते हैं ।

२२६. स्वर से आरम्भ होनेवाले स्त्रीवाची प्रत्ययों से पूर्व पुरुषवाची पद का अन्त्य अ, आ, ई अथवा ए स्वर लुप्त हो जाता है; जैसे—

पुरुषवाची	स्त्रीवाची
दादा	—दादी
[दादा	=द्+आ+द्+आ
	=द्+आ+द्(+आ लोप)+ई
	=दादी]
नाना	—नानी
बेटा	—बेटी
लड़का	—लड़की
टाँगेवाला	—टाँगेवाली

२२७. 'ई' के स्थान पर 'इन' प्रत्यय का प्रयोग होता है यदि जातीय धन्धे में लगे होने की भी विवक्षा हो; जैसे—

	जुलाहा	—जुलाहिन
नियम २२६ से		=ज्+उ+ल्+आ+ह्(+आ लोप)+इन
		=जुलाहिन
	ग्वाला	—ग्वालिन
	भड़भूँजा	—भड़भूँजिन
	कुंजड़ा	—कुंजड़िन
	लकड़हारा	—लकड़हारिन

२२८. दूल्हा, लाला एवम् बनिया के क्रमशः दुलहिन, ललाइन तथा बनिन स्त्रीवाची रूप बनते हैं ।

२२९. ईकारान्त पुरुषवाची संज्ञापदों में 'इन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीवाची रूप बनते हैं; जैसे—

धोबी —धोबिन
नियम २२६ से =ध्+ओ+ब्(+ई लोप)+इन
=धोबिन

इसी प्रकार

तेली —तेलिन
नाती —नातिन
साथी —साथिन
नाई —नाइन

[टिप्पणी—फा० दर्जी में भी 'इन' प्रत्यय से स्त्रीवाची रूप 'दर्जिन' बनता है।

२३०. 'इन' के स्थान पर 'आनी' प्रत्यय आता है यदि उपान्त में र् व्यंजन हो; जैसे—

खत्री =ख्+अ+त्+र्+ई
नियम २२६ से =ख्+अ+त्+र्(+ई लोप)+आनी
=खत्रानी
(खत् त्रा नी)

इसी प्रकार,

चौधरी —चौधरानी
(चौ ध रा नी)

२३१. ऊकारान्त तथा एकारान्त पुरुषवाची संज्ञापदों में 'आइन' प्रत्यय लगाने से स्त्रीवाची रूप बनते हैं।

२३२. 'आइन' तथा 'इया' प्रत्यय से पूर्व पुरुषवाची पद के समस्त आ, ई एवम् ऊ स्वर वर्ण ह्रस्व हो जाते हैं तथा ए का इ और ओ का उ हो जाता है; जैसे—

पाँड़े =प्+आँ+ड़्+ए
नियम २२६ से =प्+आँ+ड़्(+ए लोप)+आइन
नियम २३१, २३२ से =प्+अँ+ड़्+आइन
=पँड़ाइन

दूवे =द्+ऊ+व्(+ए लोप)+आइन
नियम २३२ से =द्+उ+ब्+आइन
=दुवाइन
हिन्दू =ह्+इ+न्+द्+ऊ+आइन
[ध्यान रहे—नियम २२६ में अन्त्य ऊ को लोप करने की बात नहीं कही गई।]
नियम २३२ से =ह्+इ+न्+द्+उ+आइन
=हिंदुआइन
साहू =स्+आ+ह्+ऊ+आइन
नियम २३२ से =स्+अ+ह्+उ+आइन
=सहुआइन

२३३. पूरब में कुछ आकारांत पुरुषवाची संज्ञापदों में 'इया' प्रत्यय के योग से भी स्त्रीवाची रूप बनते हैं; जैसे—

बेटा =ब्+ए+ट्+आ
(i) नियम २२६ से =ब्+ए+ट्(+आ लोप)+ई
=बेटी
(ii) नियम २३२ तथा २३३ से =ब+(ए)इ+ट्(+आ लोप)+इया
=बिटिया

इसी प्रकार

चूहा =(i) चूही नियम २२६ से
=(ii) चुहियां नियम २३२, २३३ से
लौंडा =(i) लौंडी नियम २२६ से
=(ii) लौंडिया नियम २३२, २३३ से
बूढ़ा =(i) ब्+ऊ+ढ़्+आ
नियम २२६ से = ब्+ऊ+ढ़(+आ लोप)+ई
= बूढ़ी
=(ii) ब्+ऊ+ढ़्(+आ लोप)+इया
नियम २३२ तथा २३३ से = ब्+उ+ढ़्+इया
= बुढ़िया

२३४. 'इया' प्रत्यय से पूर्व पुरुषवाची पद का द्वित्व व्यंजन एकल हो जाता है; जैसे—

कुत्ता =क्+उ+त्+त्+आ
नियम २२६ से =(i) क्+उ+त्+त्(+आ लोप)+ई
= कुत्ती
नियम २३३, २३४ से =(ii) क्+उ+त्(+त् लोप) (+आ लोप) +इया
=कुतिया

२३५. अकारान्त पुरुषवाची पदवाचक संज्ञापद में 'आनी' प्रत्यय लगाने से स्त्रीवाची रूप बनते हैं; जैसे—

नौकर =न्+औ+क्+अ+र्+अ (अपूर्णोच्चरित)
नियम २२६ से =न्+औ+क्+अ+र्(+अ लोप)+आनी
=नौकरानी
देवर —देवरानी
पंडित —पंडितानी
सेठ —सेठानी

२३६. 'आनी' प्रत्यय के स्थान पर 'इन' प्रत्यय लगाया जाता है यदि पुरुषवाची संज्ञापद दो अक्षरवाला हो और उसके अन्तिम अक्षर में कोई दीर्घ स्वर हो; जैसे—

सुनार =सु नार (दो अक्षर)
नियम २२६, २३६ से =सु नार्(+अ लोप)+इन
=सुनारिन
अहीर —अहीरिन
लुहार —लुहारिन

२३७. आस्पद (अल्ल) सूचक पदों में 'आनी' एवं 'इन' विकल्प से आते हैं; जैसे—

सुकुल =(i) सुकुलानी
=(ii) सुकुलाइन
मिसर =(i) मिसरानी
=(ii) मिसराइन
सेठ =(i) सेठानी
=(ii) सेठाइन

२३८. स्त्रीवाची प्रत्यय परे रहने पर आस्पद (अल्ल) सूचक पदों के दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं; जैसे—

ठाकुर =ठ्+आ(अ)+क्+उ+र्+अ(लोप)+आनी/आइन
=(i) ठकुरानी (ii) ठकुराइन

२३९. विदेशी आकारान्त पुरुषवाची संज्ञापदों के स्त्रीवाची रूप बनाने के लिए इन, आनी तथा नी प्रत्यय लगते हैं; जैसे—

मास्टर (i) मास्टरिन
(ii) मास्टरानी
(iii) मास्टरनी

डाक्टर (i) डाक्टरिन
(ii) डाक्टरानी
(iii) डाक्टरनी

इंस्पेक्टर (i) इंस्पेक्टरिन
(ii) इंस्पेक्टरानी
(iii) इंस्पेक्टरनी

२४०. मनुष्येतर प्राणीवाचक पुरुषवाची अकारान्त पुंलिंग संज्ञापदों को स्त्रीवाची रूप देने के लिए 'नी' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे—

ऊँट —ऊँ+ट्+अ(अपूर्णोच्चरित)+नी
=ऊँटनी
शेर —शेरनी
रीछ —रीछनी
गीध —गीधनी
नाग —नागनी

२४१. 'नी' के स्थान पर विकल्प से 'इन' प्रत्यय आता है यदि पुरुषवाची संज्ञापद एक अक्षरवाला हो और उसका मुख्य स्वर 'आ' हो; जैसे—

नाग (i) नागनी
(ii) नागिन

बाघ (i) बाघनी
(ii) बाघिन

साँप (i) साँपनी
(ii) साँपिन

२४२. 'नी' प्रत्यय के स्थान पर 'ई' प्रत्यय आता है यदि मनुष्येतर पुरुषवाची पुंलिग संज्ञापद दो या अधिक अक्षरवाला हो; जैसे—

गी दड़ —गीदड़(अ लोप)+ई

नियम २२६ से =गीदड़ी

हि रन —हिरन =हिरनी

सू अर —सूअर =सूअरी

मे ढक —मेढक =मेढकी

क बू तर —कबूतर =कबूतरी

२४३. भालू, भेड़िया, गैंडा आदि के स्त्रीवाची रूप बनाने के लिए इनके पहले 'मादा' का प्रयोग करते हैं; जैसे—

भालू —मादा भालू

भेड़िया —मादा भेड़िया

गैंडा —मादा गैंडा

खरगोश —मादा खरगोश

['मादा' फारसी से आया है। है यह संस्कृत 'माता' का ही रूप।]

२४४. स्त्रीवाची जीजी, मौसी, फूफी, ननद, गाय, गुड्डी आदि के पुरुषवाची रूप क्रमशः जीजा, मौसा, फूफा, ननदोई, बैल और गुड्डा स्थिर कर लिए गए हैं।

२४५. स्त्रीवाची चील, मछली आदि का पुरुषवाची रूप बनाने के लिए इनसे पहले 'नर' का प्रयोग करते हैं; जैसे—

चील —नर चील

मछली —नर मछली

छिपकली —नर छिपकली

['नर' फारसी से आया है। परन्तु है यह संस्कृत 'नर' का ही रूप।]

२४६. वस्तुवाचक आकारान्त पुंलिग संज्ञापदों के स्त्रीवाची अल्पार्थक रूप बनाने के लिए 'ई' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे—

कंघा =क्+ङ्+घ्(+आ लोप)+ई

=कंघी (छोटा कंघा)

गगरा —गगरी (छोटा गगरा)

प्याला —प्याली (छोटा प्याला)

कटोरा —कटोरी (छोटा कटोरा)

कुंआ —कुंई (छोटा कुंआ)

२४७. 'ई' के स्थान पर 'इया' प्रत्यय का प्रयोग होता है यदि पद दो अक्षर वाला हो और उसके पूर्व अक्षर में ओ स्वर हो; जैसे—

लोटा =ल्+ओ+ट्+आ
=ल्+उ(नियम २३२)+ट्
(+आ लोप—नियम २२६)+इया
—लुटिया

फोड़ा —फुड़िया

२४८. 'ई' प्रत्यय के योग से बननेवाला स्त्रीलिंग संज्ञापद यदि अल्पार्थक रूप का बाचक न हो तो वह स्वतन्त्र पद होता है; जैसे—

शीशा (आरसी) —शीशी (बोतल)
टोला (महल्ला) —टोली (जत्था)

२४९. पूरब में 'इया' स्त्रीवाची अल्पार्थक प्रत्यय अकारान्त एवम् ईकारान्त पुंलिग तथा स्त्रीलिंग संज्ञापदों में भी लगाया जाता है; जैसे—

दाँत (पुंलिंग)+इया(स्त्रीलिंग प्रत्यय)
=द्+आँ+त्+अ(अपूर्णोच्चारित)+इया
नियम २२६ =द्+आँ+त्(+अ लोप)+इया
नियम २३२ =द्+अँ+त्+इया
=दँतिया (छोटा दाँत)

खाट (स्त्रीलिंग)+इया प्रत्यय
=खटिया (छोटी खाट) नियम २२६, २३२

हाँडी (स्त्रीलिंग)+इया प्रत्यय
=हँडिया (छोटी हाँडी) नियम २२६, २३२

गगरी (स्त्रीलिंग)+इया
=गगरिया (छोटी गगरी) नियम २२६, २३२

२५०. 'ओला' पुंलिग अल्पार्थक प्रत्यय है ।

२५१. पुंलिंग अल्पार्थक प्रत्यय का योग होने पर स्त्रीवाची प्रत्ययों के समान विकार होते हैं; जैसे—

साँप (पुंलिंग)+ओला (प्रत्यय)

नियम २२६ =स्+आँ+प्(+अ लोप)+ओला

नियम २३२ =स+अँ+प्+ओला

=सँपोला (छोटा साँप, साँप का बच्चा)

खाट (स्त्रीलिंग)+ओला (प्रत्यय)

नियम २२६ =ख्+आ+ट्(+अ लोप)+ओला

नियम २३२ =ख्+अ+ट्+ओला

=खटोला (छोटी खाट)

२५२. कुछ वस्तुवाचक ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापदों में 'अ' तथा 'आ' प्रत्यय से बननेवाले पुंलिंग रूप उनके वृहदर्थक रूप के सूचक होते हैं।

२५३. वृहदर्थक प्रत्यय लगने पर स्त्रीलिंग संज्ञापद के अन्त्य स्वर का लोप हो जाता है; जैसे—

थाली (स्त्रीलिंग)+अ(वृहदर्थक प्रत्यय)

=थ्+आ+ल्(+ई लोप)+अ

=थाल (वड़ी थाली)

[स्मरण रहे—शब्दान्त में 'अ' अपूर्णोच्चरित ही रहता है।]

रोटी (स्त्रीलिंग)+अ

=रोट (वड़ी रोटी)

पोथी (स्त्रीलिंग)+आ(वृहदर्थक प्रत्यय)

=प्+ओ+थ्(+ई लोप)+आ

=पोथा (वड़ी पोथी)

गुल्ली (स्त्रीलिंग)+आ(वृहदर्थक प्रत्यय)

=गुल्ला

२५४. कुछ वृहदर्थक संज्ञापदों में विकार भी होता है; जैसे—

लाठी[1] से लट्ठ

पगड़ी से पग्गड़

[1] सम्भवतः संस्कृत 'यष्टि' से पहले 'लट्ठी' रूप बना होगा और तब 'लट्ठी' से लाठी। 'लट्ठ' इसी 'लट्ठी' से बना प्रतीत होता है।

वचन

२५५. वचन संज्ञापद में निहित संख्या-भाव का द्योतन करता है; जैसे—

क–१. मकान बन रहा है।
२. मकान बन रहे हैं।
ख–१. लड़का आ रहा था।
२. लड़के आ रहे थे।

क–१. तथा ख–१ में 'मकान' तथा 'लड़का' एक-एक इकाई के वाचक हैं परन्तु क–२. तथा ख–२. में 'मकान' तथा 'लड़के' एक से अधिक के।

२५६. जब संज्ञापद एक इकाई का सूचक हो तो उसे एकवचन और जब एक से अधिक इकाइयों का सूचक हो तो उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे

क–१. मकान बन रहा है। (एकवचन)
२. मकान बन रहे हैं। (बहुवचन)
ख–१. लड़का आ रहा था। (एकवचन)
२. लड़के आ रहे थे। (बहुवचन)

२५७. यदि एकवचन संज्ञापद से जातिगत भाव या सत्ता का बोध हो तो उसे जातिवाचक एकवचन संज्ञापद और यदि उससे जाति की किसी एक विशिष्ट इकाई का ही बोध हो तो उसे व्यक्तिवाचक एकवचन संज्ञापद कहते हैं; जैसे—

मछली पानी में तैर सकती है, तेल में नहीं।
—एकवचन जातिवाचक स्त्रीलिंग संज्ञापद
राम पानी पीता है।—एकवचन व्यक्तिवाचक पुंलिंग संज्ञापद

२५८. एकवचन संज्ञापद समूह, द्रव्य, राशि आदि के रूप में होनेवाले व्यक्तियों, पदार्थों आदि का भी वाचक होता है; जैसे—

मन्त्रिमण्डल अपना निश्चय व्यक्त कर चुका है।
हमारा परिवार बड़ा है।
बाजार में भीड़ लगी थी।
हमने एक किलो बरफी खरीदी थी।
गेहूँ बहुत महँगा है।
तालाब में कीचड़ है।
खान से लोहा निकाला जाता है।
कल से हवा तेज चल रही है।
हमें अब अवकाश मिला है।
तरकारी में मसाला पड़ा है।

२५९. भाववाचक संज्ञापद मूर्त इकाइयों के सूचक होने पर तथा समूह या राशि के रूप में होनेवाले पदार्थों, व्यक्तियों आदि के वाचक संज्ञापद विभिन्न इकाइयों के सूचक होने पर बहुवचन में भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

एकवचन	बहुवचन
उन पर हम सबका विश्वास है।	हमारे विश्वास एक से हैं।
मौत सबके सिर पर मँडराती है।	कल इस महल्ले में तीन मौतें हुईं।
इन दिनों से बाजार में मछली नहीं मिलती।	समुद्र मछलियों से भरा पड़ा है।
आजकल कपड़ा बहुत महँगा है।	वे नित्य नए कपड़े पहनते हैं।

२६०. लोग, गण, जन आदि समूहवाचक संज्ञापदों का प्रयोग बहुवचन में होता है[1]; जैसे—

लोग सब समझते हैं।
बालकगण खेल रहे हैं।

२६१. दाम, हस्ताक्षर, प्राण तथा दर्शन का प्रयोग मूलतः बहुवचन में ही होता है परन्तु विकल्प से एकवचन में भी; जैसे—

(१) हमने दाम दे दिए हैं। (बहुवचन)
हमने दाम दे दिया है। (एकवचन)
(२) उसने हस्ताक्षर कर दिए। (बहुवचन)
उसने हस्ताक्षर कर दिया। (एकवचन)
(३) उसके प्राण निकल गए। (बहुवचन)
उसका प्राण निकल गया। (एकवचन)
(४) मैंने उनके दर्शन किए। (बहुवचन)
मैंने उनका दर्शन किया। (एकवचन)

२६२. एकवचन आकारान्त पुंलिंग संज्ञापद बहुवचन में एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

घोड़ा —घोड़े
कमरा —कमरे
खम्भा —खम्भे
कैमरा —कैमरे
क़िस्सा —क़िस्से
मामला —मामले

[1] हिन्दी की बोलियों में उक्त संज्ञापद एकवचन में भी प्रयुक्त होते हैं।

२६३. उच्च पद[1] तथा आस्पद वाचक आकारान्त पुंलिंग संज्ञापद बहुवचन में प्रकृत रूप में ही रहते हैं; जैसे—

पिता —पिता
दादा —दादा
राजा —राजा
महाराजा —महाराजा
नेता —नेता
दारोगा —दारोगा
मुल्ला —मुल्ला
खन्ना —खन्ना
पाटनवाला —पाटनवाला.

२६४. उच्च पदवाचक आकारान्त पुंलिंग संज्ञापद उस समय बहुवचन में विकल्प से एकारान्त भी हो जाते हैं जब उनके प्रति उपेक्षा-भाव सूचित किया जाता है; जैसे—

ऐसे नेते गलियों में मारे-मारे फिरते हैं।
तुम्हारे जैसे राजे-महाराजे बहुत पड़े हैं।
हमने तुम जैसे बड़े दारोगे देखे हैं।
बाप-दादे न जाने कब के मर-खप गए होंगे।

२६५. पदवाचक पुंलिंग बहुवचन संज्ञापद के साथ लोग, जन, गण, वृन्द आदि का प्रयोग प्रायः किया जाता है; जैसे—

दादा —दादा लोग
नेता —नेता लोग
मुल्ला —मुल्ला लोग
हमारे चाचा लोग देहात में ही रहते हैं।
ये नेता लोग हमारा क्या भला करेंगे!

1 भारतीय परम्परा के अनुसार साला और भांजा उमर में बड़े होने पर भी छोटे होते हैं। इसलिए इनके बहुवचन रूप 'साले' और 'भांजे' होंगे।

२६६. ऐसे आकारान्त पुंलिग संज्ञापद बहुवचन में बहुधा प्रकृत रूप में ही रहते हैं जिनके अन्त में 'इया' या 'ऐया' वर्ण-समूह हो; जैसे—

एकवचन	बहुवचन
जाँघिया	जाँघिया
तौलिया	तौलिया
तकिया	तकिया
ताँबिया	ताँबिया
बखिया	बखिया
दरिया	दरिया
दिखवैया	दिखवैया

[टिप्पणी—जाँघिये, तौलिये, तकिये, ताँबिये आदि रूप भी बहुवचन में प्रयुक्त होते देखे जाते हैं।]

२६७. यदि पुंलिग एकवचन संज्ञापद आकारान्त न हो तो बहुवचन में प्रकृत रूप में ही रहता है; जैसे

एकवचन	बहुवचन
आम	आम
घर	घर
पेड़	पेड़
हाकी	हाकी
सिपाही	सिपाही

२६८. एकवचन इकारान्त तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापद को बहुवचन बनाने के लिए 'आँ' प्रत्यय लगाते हैं।

२६९. बहुवचन 'आँ' प्रत्यय से पूर्व अन्त्य ई स्वर ह्रस्व हो जाता है।

२७०. 'इ' और 'आँ' बहुवचन प्रत्यय के बीच य् का आगम होता है; जैसे—

रीति+आँ (प्रत्यय)
=र्+ई+त्+इ+आँ
नियम २७० से =र्+ई+त्+इ+य्+आँ
=रीतियाँ

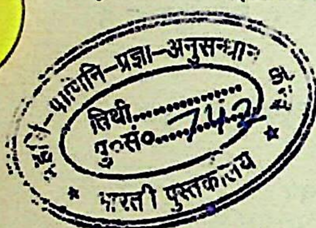
थाली+आँ (प्रत्यय)
=थ्+आ+ल्+ई+आँ
नियम २६९ से =थ्+आ+ल्+इ+आँ
नियम २७० से =थ्+आ+ल्+इ+य्+आँ
=थालियाँ

२७१. एकवचन अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञापद का बहुवचन बनाने के लिए 'एँ' प्रत्यय लगाते हैं।

२७२. बहुवचन 'एँ' प्रत्यय से पूर्व संज्ञापद के अन्त्य अ स्वर का लोप होता है तथा उपान्त य् व्यंजन वर्ण का विकल्प से लोप होता है; जैसे—

नियम २७१ —पुस्तक+एँ
नियम २७२ =प्+उ+स्+त्+अ+क्+(अ लोप)+एँ
=पुस्तकें

इसी प्रकार



चप्पल —चप्पलें
चादर —चादरें
गाय —ग्+आ+य्(+अ लोप)+एँ
=(i) गायें
ग्+आ(+य्+अ लोप)+एँ
=(ii) गाएँ

२७३. आकारान्त, उकारान्त तथा औकारान्त एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापदों को बहुवचन बनाने के लिए 'एँ' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे—

एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद	बहुवचन प्रत्यय	बहुवचन रूप
माता	+एँ	=माताएँ
माला	+एँ	=मालाएँ
दवा	+एँ	=दवाएँ
धातु	+एँ	=धातुएँ
वस्तु	+एँ	=वस्तुएँ
गौ	+एँ	=गौएँ

२७४. आकारान्त परन्तु, 'इया' प्रत्यय से युक्त एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद के अन्त्य 'आ' को अनुनासिक कर देने से बहुवचन रूप बनते हैं; जैसे—

गुड़िया =गुड़ियाँ
बुढ़िया =बुढ़ियाँ

२७५. ऊकारान्त एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद का बहुवचन बनाने के लिए 'एँ' प्रत्यय जोड़ते हैं।

२७६. बहुवचन 'एँ' प्रत्यय से पूर्व अन्त्य ऊ स्वर ह्रस्व हो जाता है; जैसे—

नियम २७५ से	बहू+एँ
नियम २७६ से	=बहुएँ
नियम २७५ से	जोरू+एँ
नियम २७६ से	=जोरुएँ

२७७. एकारान्त एवम् ओकारान्त एकवचन संज्ञापद बहुवचन में प्रकृत रूप में ही रहते हैं; जैसे—

पुंलिंग एकवचन	पुंलिंग बहुवचन
दूबे	—दूबे
चौबे	—चौबे
रासो	—रासो
फोटो	—फोटो
स्त्रीलिंग एकवचन	**स्त्रीलिंग बहुवचन**
गौं	—गौं

सर्वनाम

२७८. ऐसे नामपद को सर्वनाम पद कहते हैं जो किसी नियत नाम का सूचक तो नहीं होता परन्तु जिसका प्रयोग प्रायः सभी नामपदों के स्थान पर होता है तथा जो सन्दर्भ से उनके अर्थ का वाचक, लिंग का सूचक और वचन का बोधक भी होता है।

हिन्दी में १५ सर्वनाम हैं

१. मैं	<	मया	९. कोई	<	कः अपि
२. हम	<	अस्मे (वैदिक)	१०. कुछ	<	किंचित्
३. तू	<	त्वम्	११. कौन	<	कः+पुनः
४. तुम	<	युष्म	१२. क्या	<	किम्
५. वह	<	तद्	१३. जो	<	यः
६. वे	<	ते	१४. सो	<	सः
७. यह	<	एषः	१५. आप	<	आत्मन्
८. ये	<	एते			

२७९. 'मैं' का प्रयोग वक्ता या लेखक अपने नाम के स्थान पर करता है।

२८०. 'मैं' का प्रयोग सदा एकवचन में तथा दोनों लिंगों में होता है; जैसे—

मैं जाता हूँ।	(एकवचन पुंलिग)
मैं जाती हूँ।	(एकवचन स्त्रीलिंग)

२८१. 'हम' का प्रयोग भी वक्ता या लेखक (क) अपने नाम के स्थान पर करता है तथा (ख) अपने सहित अपने सहयोगियों, सहायकों, मित्रों, सम्बन्धियों, देशवासियों आदि के लिए भी करता है।

२८२. 'हम' का प्रयोग सदा बहुवचन में तथा दोनों लिंगों में होता है; जैसे—

हम जाते हैं।	(बहुवचन पुंलिग)
हम जाती हैं।	(बहुवचन स्त्रीलिंग)

२८३. 'तू' का प्रयोग उस व्यक्ति के लिए किया जाता है जिसे वक्ता या लेखक सम्बोधित करता है।

२८४. यदि सम्बोधित व्यक्ति के प्रति औपचारिकता बरतनी हो या श्रद्धा-भाव प्रकट करना हो तो 'तू' के स्थान पर 'आप' का और यदि स्नेह या घनिष्ठता सूचित करनी हो तो 'तुम' का प्रयोग करते हैं।

२८५. 'तू' का प्रयोग प्रायः आत्मीयता या उपेक्षाभाव सूचित करने के लिए होता है।

२८६. 'तू' का प्रयोग सदा एकवचन में तथा दोनों लिंगों में होता है; जैसे—

तू कहाँ जा रहा है?	(एकवचन पुंलिग)
तू कहाँ जा रही है?	(एकवचन स्त्रीलिंग)

२८७. 'तुम' और 'आप' का प्रयोग सदा बहुवचन में तथा दोनों लिंगों में होता है; जैसे—

तुम कैसे आए?	(बहुवचन पुंलिग)
तुम कैसे आईं?	(बहुवचन स्त्रीलिंग)
आप क्या कह रहे हैं?	(बहुवचन पुंलिग)
आप क्या कह रही हैं?	(बहुवचन स्त्रीलिंग)

२८८. जब लेखक या वक्ता एक से अधिक व्यक्तियों को सम्बोधित करके कहता है तब वह उनके नाम के स्थान पर 'आप' (आदर सूचनार्थ) और 'तुम' (औपचारिकता के लिए) का प्रयोग करता है।

२८९. लेखक या वक्ता सम्वोधित व्यक्ति से जिस अन्य व्यक्ति की चर्चा करता है उसके लिए वह 'वह' तथा 'वे' सर्वनामों का प्रयोग करता है।

२९०. 'वह' का प्रयोग सदा एकवचन में तथा 'वे' का बहुवचन में होता है।

२९१. 'वह' तथा 'वे' का प्रयोग दोनों लिंगों में होता है।

२९२. यदि वक्ता या लेखक सम्वोधित व्यक्ति से एक से अधिक व्यक्तियों की चर्चा करता है तो वह उनके लिए 'वे' सर्वनाम का प्रयोग करता है।

२९३. चर्चित व्यक्ति यदि समय या स्थान के विचार से वक्ता या लेखक के निकट हो/हों तो वह 'वह' के स्थान पर 'यह' का और 'वे' के स्थान पर 'ये' का भी प्रयोग करता है।

२९४. चर्चित व्यक्ति या व्यक्तियों के प्रति विशेष आदर-भाव जतलाने के लिए 'आप' का भी प्रयोग किया जाता है।

२९५. वक्ता या लेखक 'मैं' की जगह 'हम' का प्रयोग अहं के प्रदर्शन (अथवा उसके निवारणार्थ) करता है और किसी व्यक्ति के लिए बहुवचन सर्वनाम का प्रयोग उसके प्रति सम्मान प्रदर्शनार्थ करता है।

२९६. मैं, हम, तू, तुम, आप, वह, वे, यह तथा ये सर्वनामों का प्रयोग विशेष रूप से पुरुष (नर एवम् नारी दोनों)[1] के लिए होता है इसलिए उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

२९७. मैं और हम को उत्तम पुरुष, तू और तुम को मध्यम पुरुष और वह, वे यह तथा ये को प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष सर्वनाम कहते हैं।

२९८. जब, वह, वे, यह तथा ये सर्वनामों का प्रयोग निदेश या संकेत के लिए किया जाता है तब उन्हें निदेशसूचक सर्वनाम कहते हैं।

२९९. 'वह' तथा 'वे' निदेशसूचक सर्वनाम आपेक्षिक दूरी और 'यह' तथा 'ये' निदेशसूचक सर्वनाम आपेक्षिक निकटता सूचित करते हैं; जैसे—

वह घोड़ा है।
ये घोड़े हैं।
यह हाथी है।
ये हाथी हैं।

[1] संस्कृत भाषा में 'पुरुष' के अन्तर्गत नर एवम् नारी दोनों का अंतर्भाव होता है।

३००. 'कोई' सर्वनाम का प्रयोग किसी ऐसे व्यक्ति, वस्तु, स्थान आदि के लिए किया जाता है जिसके सम्बन्ध में कुछ निश्चयपूर्वक न कहा जा सकता हो अथवा जिसके सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ कहना अभिप्रेत न हो; जैसे—

हमारे यहाँ से कोई दिल्ली जाएगा।

कोई आया होगा।

३०१. 'कोई' का प्रयोग आदरार्थक बहुवचन रूप में भी होता है; जैसे—

दरवाज़े पर कोई खड़े हैं।

३०२. 'कोई' का प्रयोग कुछ लेखक सदा पुंलिंग रूप में ही करते हैं; जैसे—

कोई जाने को खड़ा है और तुम छींक रहे हो।

३०३. 'कुछ' का प्रयोग पुंलिग एकवचन में (क) किसी अज्ञात या अनिश्चित जीव, पदार्थ, वात आदि के लिए (ख) किसी बड़ी इकाई के अवयवों के लिए अथवा (ग) अनिश्चित स्थिति सूचित करने के लिए होता है; जैसे—

(क) आँख में कुछ पड़ गया है।

(ख) वहाँ उसे कुछ नहीं मिला।

(ग) उसे कुछ हो गया है।

३०४. 'कुछ' का बहुवचन में प्रयोग संख्या में अनिश्चित परन्तु परिमित लोगों, वस्तुओं आदि के लिए होता है; जैसे—

(क) कुछ का मत हमसे विपरीत है।

(ख) खेत में डाले गए बीजों में से कुछ तो उग आए हैं।

३०५. 'कोई' और 'कुछ' को अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

३०६. 'कौन' सर्वनाम का प्रयोग किसी व्यक्ति का नाम जानने या पूछने के लिए होता है; जैसे—

वहाँ कौन रहता है?

वहाँ से कौन आया था?

३०७. 'क्या' सर्वनाम का प्रयोग किसी व्यक्ति का पद-सम्बन्धी विवरण अथवा किसी वस्तु, जीव, बात आदि का नाम या विवरण जानने के लिए होता है; जैसे—

प्रश्न—तुमने क्या खरीदा ?
उत्तर—(क) लम्ब्रेटा स्कूटर।
(ख) हिरन का बच्चा।
प्रश्न—वह क्या है ?
उत्तर—(क) जंगली चूहा।
(ख) दफ़्तर का चपरासी।

३०८. 'क्या' का प्रयोग एकवचन तथा पुंलिग रूप में होता है तथा 'कौन' का प्रयोग दोनों वचनों और दोनों लिंगों में होता है; जैसे—

पुंलिग एकवचन—
इस समय बाज़ार में क्या मिलेगा ?

पुंलिग एकवचन—
कौन कह रहा था ?

स्त्रीलिंग एकवचन—
कौन कह रही थी ?

पुंलिग बहुवचन—
कौन कह रहे थे ?

स्त्रीलिंग बहुवचन—
कौन कह रही थीं ?

३०९. 'कौन' और 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम हैं।

३१०. 'कौन' का प्रयोग अनिश्चयसूचक रूप में 'कोई नहीं' के अर्थ में भी होता है; जैसे—

अब इस समय तुम्हारे यहाँ कौन जाएगा ?
[आशय है कि कोई नहीं जाएगा।]

३११. 'जो' सर्वनाम का प्रयोग दो उपवाक्यवाले कारण-परिणामसूचक वाक्य के प्रथम उपवाक्य में किसी ऐसे अनिश्चित व्यक्ति, पदार्थ आदि के लिए होता है जिसका उल्लेख दूसरे उपवाक्य में होने को हो।

३१२. जिस अनिश्चित व्यक्ति, पदार्थ आदि का सूचन 'जो' सर्वनाम के द्वारा कारणसूचक पूर्व उपवाक्य में हुआ हो उसका उत्तर उपवाक्य में परिणामसूचक रूप में 'सो' सर्वनाम से सूचन होता है; जैसे—

जो बोता है सो काटता है ।
जो सोएगा सो खोएगा ।
जो आया है सो जाएगा ।

३१३. 'सो' को 'जो' का नित्य-सम्बन्धी सर्वनाम कहते हैं ।

३१४. 'जो' तथा 'सो' (नित्य-सम्बन्धी) से युक्त उपवाक्यों का क्रम विकल्प से बदल भी देते हैं; जैसे—

सो काटता है जो बोता है ।
सो खोएगा जो पाएगा ।
सो जाएगा जो आया है ।

३१५. 'जो' तथा 'सो' का प्रयोग दोनो लिंगों तथा दोनो वचनों में होता है ।

३१६. परिनिष्ठित हिन्दी में 'सो' की जगह 'वह' का प्रयोग प्रायः होता है; जैसे—

जो बोता है वह काटता है ।
जो सोएगा वह खोएगा ।
जो आया है वह जाएगा ।

३१७. जब 'आप' सर्वनाम का प्रयोग अन्य सर्वनामों तथा संज्ञापदों के बाद निजता का सूचक होता है तब उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

वह आप वहाँ जाएगा ।
तू आप वहीं जाना ।
मैं आप उससे निपट लूँगा ।
राम आप वहाँ गया था ।
सीता आप कपड़े सीती है ।

[टिप्पणी—निजवाचक सर्वनाम 'आप' की जगह फ़ारसी 'ख़ुद' तथा संस्कृत 'स्वयं' का भी प्रयोग होता है; जैसे—

मैं स्वयं वहाँ जाऊँगा ।
वह ख़ुद वहाँ जाएगा ।]

३१८. निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग क्रियापद से पूर्व भी होता है; जैसे—
वह वहाँ आप जाएगा।
मैं यह काम आप कर लूँगा।

विशेषण

३१९. विशेषता बतलानेवाले पदों को विशेषण कहते हैं।

३२०. विशेषता से अभिप्राय ऐसे विवरण से होता है, जिससे किसी अन्य पद का अर्थ मर्यादित हो; जैसे—
काला घोड़ा दौड़ रहा है।

३२१. संज्ञा तथा सर्वनाम पदों की विशेषता बतलानेवाले शब्दों को संज्ञा-विशेषण पद तथा क्रियापदों की विशेषता बतलानेवाले शब्दों को क्रिया-विशेषण पद कहते हैं; जैसे—
सब लोग जा रहे हैं।
सब कोई चलेंगे। } संज्ञाविशेषण
गाड़ी तेज चल रही है। क्रियाविशेषण

३२२. संज्ञाविशेषणों के गुणवाचक, सम्बन्धवाचक और मानवाचक तीन भेद किए जाते हैं।

३२३. गुणों, सम्बन्धों तथा मानों के वाचक संज्ञाविशेषणों को क्रमशः गुणवाचक, सम्बन्धवाचक तथा मानवाचक संज्ञाविशेषण कहते हैं; जैसे—
गुणवाचक—
अच्छा आदमी, मीठा फल, कड़वी बात।
सम्बन्धवाचक—
बनारसी साड़ी, मौसेरा भाई, भारतीय इतिहास।
मानवाचक—
दो पुस्तकें, तीनो मित्र, कई वर्ष।

३२४. मानवाचक संज्ञाविशेषणों के संख्यावाचक तथा परिमाणवाचक दो मुख्य विभेद हैं; जैसे—
दो मकान
तीनो चित्र } संख्यावाचक संज्ञाविशेषण
कुछ वर्ष
बहुत दिन } परिमाणवाचक संज्ञाविशेषण

३२५. संख्यावाचक संज्ञाविशेषणों के भी दो मुख्य विभेद हैं—(क) निश्चित संख्यावाचक और (ख) अनिश्चित संख्यावाचक ।

(क) निश्चित संख्यावाचक संज्ञाविशेषण—

एक, दो, तीन, चार····	गणनावाचक
पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा····	क्रमवाचक
दूना, तिगुना, चौगुना····	आवृत्तिवाचक
दोनो, तीनो, चारो····	सामस्त्यवाचक
प्रत्येक, हर, हरेक····	प्रत्येकवाचक
१/२, २/३, ३/४, ४/५, ५/६····	अंशवाचक

(ख) अनिश्चित संख्यावाचक संज्ञा विशेषण—

कुछ, बहुत, सब, थोड़ा, ज़्यादा····

गणना-वाचक	क्रम-वाचक	आवृत्ति-वाचक	सामस्त्य-वाचक
१ एक	पहला	—	—
२ दो	दूसरा	दुगना, दूना	दोनो
३ तीन	तीसरा	तिगुना	तीनो
४ चार	चौथा	चौगुना	चारो
५ पांच	पाँचवाँ	पचगुना	पाँचो
६ छह	छठा	छह गुना	छहो
७ सात	सातवाँ	सात गुना	सातो
⋮	⋮	⋮	⋮
७९ उनासी	~वाँ	~गुना	उनासियो
⋮	⋮	⋮	⋮
९० नव्वे	~वाँ	~गुना	नव्वां
⋮	⋮	⋮	⋮
१०० सौ	~वाँ	~गुना	सौओ
१०१ एक सौ एक	~वाँ	~गुना	—
११० एक सौ दस	~वाँ	~गुना	—
२५० दो सौ पचास	~वाँ	~गुना	—
७३० सात सौ तीस	~वाँ	~गुना	—
१००० हज़ार	~वाँ	~गुना	हजारो
१००,००० लाख	~वाँ	~गुना	लाखो
१००,००,००० करोड़	~वाँ	~गुना	करोड़ो
१००,००,००,००० अरब	~वाँ	~गुना	अरबो

	१० दस	२० वीस	३० तीस	४० चालीस	५० पचास	६० साठ	७० सत्तर	८० अस्सी	९० नव्वे
एक	ग्या/रह	इक्क्/ईस	इक्/तीस	इक/तालीस	इक्आ/वन	इक/सठ	इक/हत्तर	इकया/सी	इक्या/नवे
दो	बा/रह	बा/ईस	बत्/तीस	ब/यालीस	बा/वन	बा/सठ	ब/हत्तर	बया/सी	बया/नवे
तीन	ते/रह	ते/ईस	तैं/तीस	तैं/तालीस	तिरे/पन	तिर/सठ	ति/हत्तर	तिरा/सी	तीरा/नवे
चार	चौ/दह	चौ/बीस	चौं/तीस	चौ/वालीस	चौ/वन	चौं/सठ	चौ/हत्तर	चौरा/सी	चौरा/नवे
पांच	पन्/द्रह	पच्/ईस	पैं/तीस	पैं/तालीस	पच/पन	पैं/सठ	पच/हत्तर	पचा/सी	पचा/नवे
छह	सो/लह	छब्/ईस	छत्/तीस	छि/यालीस	छप/पन	छिया/सठ	छि/हत्तर	छिया/सी	छिया/नवे
सात	सत्/रह	सत्ता/ईस	सैं/तीस	सैं/तालीस	सत्ता/वन	सड़/सठ	सत/हत्तर	सता/सी	सत्ता/नवे
आठ	अठा/रह	अठा/ईस	अड़/तीस	अड़/तालीस	अठा/वन	अड़/सठ	अठ/हत्तर	अठा/सी	अठा/नवे
नौ	उन्न/ईस	उन्/तीस	उन/तालीस	उन/चास	उन/सठ	उन/हत्तर	उन/यासी	नवा/सी	निन्या/नवे
दस	बीस	तीस	चालीस	पचास	साठ	सत्तर	अस्सी	नव्वे	सौ

अंशवाचक संख्याएँ

$\frac{1}{2}$ एक बटा दो (अर्थात् एक बटा है दो में)	आधा हिस्सा
$\frac{1}{3}$ एक बटा तीन (अर्थात् एक बटा है तीन में)	तिहाई हिस्सा
$\frac{1}{4}$ एक बटा चार (एक बटा है चार में)	चौथाई हिस्सा
$\frac{1}{5}$ एक बटा पाँच (एक बटा है पाँच में)	पाँचवाँ हिस्सा
$\frac{3}{4}$ तीन बटे चार (तीन बटे हैं चार में)	पौन हिस्सा
१$\frac{1}{4}$ एक सही एक बटा चार	सवा
१$\frac{1}{2}$ एक सही एक बटा दो	डेढ़
१$\frac{3}{4}$ एक सही तीन बटे चार	पौने दो
२$\frac{1}{4}$ दो सही एक बटा चार	सवा दो
२$\frac{1}{2}$ दो सही एक बटा दो	अढ़ाई
२$\frac{3}{4}$ दो सही तीन बटे चार	पौने तीन
३$\frac{1}{4}$ तीन सही एक बटा चार	सवा तीन
३$\frac{1}{2}$ तीन सही एक बटा दो	साढ़े तीन
३$\frac{3}{4}$ तीन सही तीन बटे चार	पौने चार
१२५ एक सौ पचीस	सवा सौ
१५० एक सौ पचास	डेढ़ सौ
१७५ एक सौ पचहत्तर	पौने दो सौ
२०० दो सौ	
२२५ दो सौ पच्चीस	सवा दो सौ
२५० दो सौ पचास	अढ़ाई सौ
२७५ दो सौ पचहत्तर	पौने तीन सौ
३०० तीन सौ	

३२६. अकारान्त, आकारान्त एवम् एकारान्त गणनावाचक संज्ञाविशेषणों में 'ओ' प्रत्यय के योग से सामस्त्यवाचक संज्ञा विशेषण बनते हैं।

३२७. सामस्त्यवाचक 'ओ' प्रत्यय से पूर्व संज्ञाविशेषण के अन्त्य अ, आ एवम् ए स्वर का लोप होता है; जैसे—

(क) तीन+ओ
=त्+ई+न्(+अ लोप)+ओ
=तीनो

(ख) सैंकड़ा+ओ
=स्+ऐं+क्+अ(अपूर्णोच्चरित)+ड़्
(+आ लोप)+ओ
=सैंकड़ो (सैंक ड़ो)

(ग) नव्वे+ओ
=न्+व्+व्(+ए लोप)+ओ
=नव्वो

३२८. गणनावाचक संख्या 'दो' में 'ओ' के स्थान पर 'नो' प्रत्यय लगता है; जैसे—

दो+नो
=दोनो

३२९. ईकारान्त गणनावाचक संज्ञाविशेषण के अन्त्य ई स्वर का इ हो जाता है यदि परे 'ओ' सामस्त्यवाचक प्रत्यय हो।

३३०. पद के अन्त्य इ स्वर के परे 'ओ' प्रत्यय होने पर य् का आगम होता है; जैसे—

	अस्सी+ओ
नियम ३२९ से	=अ्+स्+स्+इ+ओ
नियम ३३० से	=अ्+स्+स्+इ+य्+ओ
	=अस्सियो

३३१. कुछ सामस्त्यवाचक संख्यासूचक संज्ञाविशेषण योग से कुछ अधिक[1] संख्या के भी सूचक होते हैं; जैसे—

वहाँ बीसो आदमी आए थे।
(अर्थात् सभी बीस या बीस से अधिक)

वहाँ सैंकड़ो खिलाड़ी पहुँचे थे।
(अर्थात् सभी सौ या सौ से कुछ अधिक)

३३२. पाँच संख्यात्मक इकाइयों के मान को गाही और बारह संख्यात्मक इकाइयों के मान को दरजन कहते हैं; जैसे—

हमने पचीस आम खरीदे।
हमने पाँच गाही आम खरीदे।

उन्होंने चौबीस सन्तरे बेचे।
उन्होंने दो दरजन सन्तरे बेचे।

३३३. बीस संख्यात्मक इकाइयों के मान को कोड़ी एवम् बीसी और पचीस संख्यात्मक इकाइयों के मान को पचीसी कहते हैं; जैसे—

धोबी चालीस कपड़े लाया।
धोबी दो कोड़ी कपड़े लाया।
धोबी दो बीसी कपड़े लाया।

ये खरबूजे पचहत्तर होंगे।
ये ख़रबूजे तीन पचीसी होंगे।

३३४. सौ संख्यात्मक इकाइयों के मान को सैंकड़ा कहते हैं; जैसे—

उसने एक सौ आम खरीदे।
उसने एक सैंकड़ा आम खरीदे।

३३५. संख्यात्मक इकाइयों के मानसूचक संज्ञाविशेषण पदों में 'ओं' बहुवचन-सूचक प्रत्यय भी लगता है।

[1] कुछ लोगों का मत है कि सामस्त्यवाचक संख्याएँ योग से कुछ कम संख्या की भी सूचक हो सकती हैं।

३३६. 'ओं' प्रत्यय लगने पर वे सभी विकार होते हैं जो 'ओ' प्रत्यय लगने पर होते हैं।

[देखें नियम—३२७]

दरजन —दरजनों

[नियम ३३५] वहाँ दरजनों लड़के थे।

(अर्थात् वहाँ अनेक या कई दरजन लड़के थे।)

[नियम ३३१] वहाँ दरजनो लड़के थे।

(वहाँ अनुमानतः दरजन से अधिक लड़के थे।)

कोड़ी —कोड़ियों (अनेक कोड़ी)

—कोड़ियो (कोड़ी के लगभग)

३३७. कुछ संज्ञाविशेषण अन्य संज्ञाविशेषणों की भी विशेषता बतलाते हैं; जैसे—

सुनहरा कश्मीरी शाल।
बहुत बड़ा मकान।
हलकी नीली साड़ी।
कम गहरा कुँआ।
बड़ा सयाना लड़का।

३३८. पुंलिग बहुवचन संज्ञापद की विशेषता बतलाते समय आकारान्त संज्ञा विशेषण एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

एकवचन पुंलिग संज्ञापद के साथ	बहुवचन पुंलिग संज्ञापद के साथ
अच्छा लड़का	अच्छे लड़के
काला घोड़ा	काले घोड़े
बड़ा घर	बड़े घर

३३९. स्त्रीलिंग एकवचन एवम् बहुवचन संज्ञापदों की विशेषता बतलाते समय आकारान्त संज्ञाविशेषण ईकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

आकारान्त संज्ञाविशेषण	स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञापद की विशेषता बतलाते समय	स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञापद की विशेषता बतलाते समय
अच्छा	अच्छी घोड़ी	अच्छी घोड़ियाँ
भला	भली लड़की	भली लड़कियाँ
बड़ा	बड़ी छड़ी	बड़ी छड़ियाँ

३४०. जिन संज्ञाविशेषणों के अन्त में 'इया' या 'औआ' वर्ण-समूह होता है उनके अन्त्य 'आ' में विकार नहीं आता; जैसे—

बढ़िया (अन्त में 'इया' वर्ण-समूह)
बढ़िया घोड़ा —बढ़िया घोड़े
बढ़िया घोड़ी —बढ़िया घोड़ियाँ

घटिया गुवारा —घटिया गुवारे
घटिया साइकिल —घटिया साइकिलें

लखनौआ कुरता —लखनौआ कुरते
लखनौआ टोपी —लखनौआ टोपियाँ
दिखौआ शाल —दिखौआ साड़ी (साड़ियाँ)

३४१. विदेशी आकारान्त संज्ञाविशेषणों के अन्त्य 'आ' में भी विकार नहीं होता[1]; जैसे—

उम्दा	
उम्दा बैल	उम्दा गाय (गाएँ)
ज़्यादा नाले	ज़्यादा नहरें
ताज़ा आम	ताज़ा लीची

३४२. अंशवाचक 'सवा' के अन्त्य 'आ' में भी विकार नहीं होता; जैसे—

सवा क्विटल दूध
सवा दो क्विटल चावल
सवा पाँच क्विटल गेहूँ
सवा तोला सोना
सवा दस तोले चाँदी

३४३. क्रियाविशेषणों के तीन भेद हैं—गुणसूचक, सम्बन्धसूचक और रीतिसूचक।

३४४. क्रिया-सम्बन्धी विशेषता बतलानेवाले क्रियाविशेषणों को गुणसूचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—

वह खूब सोता है।
उसने ठीक कहा था।

३४५. काल, स्थान, दिशा से सम्बन्ध सूचित करनेवाले क्रियाविशेषण सम्बन्धसूचक क्रियाविशेषण होते हैं; जैसे—

राम यहाँ रहता है। (स्थानसूचक)
राम कल आया था। (समयसूचक)
राम उधर गया होगा। (दिशासूचक)

[1] फा० 'ताज़ा' में विकार विकल्प से होता है।

३४६. रीतिसूचक क्रियाविशेषण क्रियागत रीति या ढंग सूचित करते हैं; जैसे—

गाड़ी धीरे चल रही है।
वह काम जल्दी करेगा।
हवा तेज़ बह रही है।

३४७. क्रियाविशेषण के रूप में विकार नहीं होता इसलिए यह अव्यय[1] है।

३४८. क्रियाविशेषण सामान्यतया क्रियापद से पूर्व आते हैं परन्तु हैं ये स्वच्छन्द-चारी ही; जैसे—

मोहन यहाँ रहता है।
यहाँ[2] मोहन रहता है।

राम दिल्ली से कल आया।
राम कल दिल्ली से आया।
कल राम दिल्ली से आया।

३४९. जब वाक्य में कई क्रियाविशेषण होते हैं तो सामान्यतया सम्बन्धवाचक क्रियाविशेषण को पहले एवम् रीति तथा गुणवाचक क्रियाविशेषणों को बाद में रखते हैं; जैसे—

राम आज खूब सोया।
मोहन कल चुपचाप जा रहा था।

३५०. समयसूचक क्रियाविशेषण प्रायः स्थान तथा दिशासूचक क्रियाविशेषणों से सामान्यतया पहले रखे जाते हैं; जैसे—

कुछ लोग आज वहाँ जाएँगे।

३५१. धातु से बनी क्रियार्थक संज्ञाओं, संज्ञाविशेषणों, एवम् पूर्वकालिक क्रिया-विशेषणों की विशेषता भी क्रियाविशेषण सूचित करते हैं; जैसे—

उसने आगे बैठे हुओं को चुप रहने के लिए कहा।
अब पीछे हटना सम्भव नहीं।
जीवन में पीछे झाँककर देखें तो घटनाएँ विचित्र प्रकार की कहानियाँ सुनाने लगती हैं। —माखनलाल चतुर्वेदी

[1] अव्यय का अर्थ है—जिसका व्यय न हो अर्थात् जिसके रूप में विकार न होता हो।

[2] क्रियाविशेषणों के वाक्य में विभिन्न स्थानों पर प्रयोग होने से वाक्य में विवक्षागत अन्तर भी उपस्थित होता है।

पाँचवाँ प्रकरण

क्रियापद

३५२. है, था और होगा ये हिन्दी के तीन मूल क्रियापद हैं।

३५३. मूल क्रियापदों का प्रयोग किसी एकवचन पुंलिंग संज्ञापद की स्थिति या उपस्थिति सूचित करने के लिए होता है।

३५४. 'है' वर्तमानकालिक और 'था' भूतकालिक स्थिति या उपस्थिति सूचित करता है; जैसे—

लड़का है/था। विद्यालय है/था।

३५५. 'होगा' सम्भावित भविष्यत् स्थिति या उपस्थिति सूचित करता है; जैसे—

लड़का होगा। विद्यालय होगा।

३५६. क्रियापद को विधेय[1] कहते हैं।

३५७. मूल क्रियापद जिस व्यक्ति, वस्तु आदि के सम्वन्ध में विधान करते हैं उसके सूचक संज्ञा या संज्ञातुल्य पद[2] को उद्देश्य[3] कहते हैं; जैसे—

उद्देश्य	विधेय
राम	है।
किसान	था।
मन्त्री	होगा।

[1] श्री रामचन्द्र वर्मा ने 'विधेय' की परिभाषा इस प्रकार की है : '···जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ विधान किया अर्थात् कहा या वतलाया जाता है।' मानक हिन्दी कोश, पाँचवाँ खण्ड, पृ० ६७।

[2] संज्ञा-तुल्य पद से अभिप्राय (क) सर्वनाम पदों से होता है जो उनके स्थान पर प्रयुक्त होते हैं और (ख) ऐसे संज्ञाविशेषण पदों से होता है जो संज्ञावत् प्रयुक्त होते हैं।

[3] श्री रामचन्द्र वर्मा ने 'उद्देश्य' की परिभाषा इस प्रकार की है : 'वह जिसके विचार से या जिसे ध्यान में रखकर कुछ कहा या किया जाए।' मानक हिन्दी कोश, प्रथम खण्ड, पृ० ३४६।

३५८. उद्देश्य और विधेय वाक्य के आवश्यक घटक होते हैं।

३५९. उद्देश्य यदि संज्ञापद हो तो उसके लिंग और वचन तथा विधेय के लिंग और वचन में समानता होती है।

३६०. उद्देश्य यदि पुरुषवाचक सर्वनाम हो तो उसके लिंग, वचन और पुरुष तथा विधेय के लिंग, वचन और पुरुष में समानता होती है।

३६१. उद्देश्य यदि एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद हो तो मूल क्रियापद के 'आ' का 'ई' हो जाता है; जैसे—

है	था	होगा
(ह्+ऐ)	(थ्+आ)	(ह्+ओ+ग्+आ)
	ई	ई
है	थी	होगी

स्त्री है/थी/होगी।
लड़की है/थी/होगी।
बकरी है/थी/होगी।

३६२. उत्तम पुरुष 'मैं' के अतिरिक्त कोई अन्य एकवचन सर्वनामपद उद्देश्य होने पर क्रियापद अपने सामान्य रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे—

वह (पुरुष) है/था/होगा।
तू („) है/था/होगा।
कौन („) है/था/होगा?
कोई („) है/था/होगा।

वह (स्त्री) है/थी/होगी।
तू („) है/थी/होगी।
कौन („) है/थी/होगी?
कोई („) है/थी/होगी।

३६३. सर्वनाम उद्देश्य का लिंग उस संज्ञापद के लिंग के अनुरूप होगा जिसका स्थान वह ग्रहण करता है; जैसे—

राम है/था/होगा।
वह है/था/होगा।

सीता है/थी/होगी।
वह है/थी/होगी।

३६४. 'मैं' सर्वनाम उद्देश्य होने पर मूल क्रियापदों के 'ऐ' तथा 'ओ' स्वरों का 'ऊँ' हो जाता है; जैसे—

है	था	होगा
ह् + ऐ	थ् + आ	ह् + ओ + ग् + आ
ऊँ		ऊँ
हूँ	था	हूँगा

मैं (पुरुष) हूँ/था/हूँगा।
मैं (स्त्री) हूँ/थी/हूँगी।

३६५. उद्देश्य यदि पुंलिंग बहुवचन संज्ञापद हो तो मूल क्रियापद के (क) 'आ' स्वर का 'ए' हो जाता है एवम् (ख) ऐ और ओ स्वर अनुनासिक हो जाते हैं; जैसे—

है	था	होगा
ह् + ऐ	थ् + आ	ह् + ओ + ग् + आ
ऐं	ए	ओं ए
हैं	थे	होंगे

घोड़े हैं/थे/होंगे।
लड़के हैं/थे/होंगे।
आम हैं/थे/होंगे।

३६६. उद्देश्य यदि स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञापद हो तो स्त्रीलिंग एकवचन उद्देश्य के साथ प्रयुक्त क्रिया रूपों के स्वर अनुनासिक हो जाते हैं।

३६७. यदि मूल क्रियापद में एक से अधिक स्वर हों तो केवल पूर्व स्वर अनुनासिक होता है अन्त्य नहीं; जैसे—

है	थी	होगी
हैं	थीं	होंगी

स्त्रियाँ हैं/थीं/होंगी।
लड़कियाँ हैं/थीं/होंगी।
बकरियाँ हैं/थीं/होंगी।

३६८. 'तुम' के अतिरिक्त कोई अन्य बहुवचन सर्वनाम पद उद्देश्य होने पर भी क्रियापद लिंगानुरूप बहुवचन रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

लड़के हैं/थे/होंगे।
वे हैं/थे/होंगे।
हम हैं/थे/होंगे।
कौन हैं/थे/होंगे?

लड़कियाँ हैं/थीं/होंगी।
वे हैं/थीं/होंगी।
हम हैं/थीं/होंगी।
कौन हैं/थीं/होंगी?

३६९. यदि पुंलिंग बहुवचन संज्ञापद के स्थान पर उद्देश्य रूप में मध्यम पुरुष सर्वनाम 'तुम' प्रयुक्त हो तो पुंलिंग बहुवचन क्रियापद रूपों के (क) अनुनासिक स्वर निरनुनासिक हो जाते हैं एवम् (ख) 'ऐ' का 'ओ' हो जाता है; जैसे—

हैं	थे	होंगे
ह्+ऐं	थ्+ए	ह+ओं+ग्+ए
ऐ		ओ
ओ		
हो	थे	होगे

तुम हो/थे/होगे।

३७०. 'तुम' उद्देश्य रूप में यदि स्त्रीलिंग बहुवचन संज्ञापद का वाचक हो तो सामान्य बहुवचन स्त्रीलिंग क्रियापद रूपों के 'ऐं' स्वर का 'ओ' हो जाता है; जैसे—

हैं	थीं	होंगी
हो	थीं	होंगी

तुम (स्त्री) हो/थीं/होंगी।

३७१. 'तुम' उद्देश्य रूप में यदि स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञापद का वाचक हो तो 'होंगी' की जगह 'होगी' का प्रयोग होता है; जैसे—

तुम हो/थीं/होगी।

३७२. सामान्यतया उद्देश्य के अनन्तर और विधेय से पहले जब किसी संज्ञा या विशेषण पद का प्रयोग वाक्य के अर्थ की पूर्ति के निमित्त होता है तो उसे पूरक कहते हैं; जैसे—

राम किसान है।	(पूरक संज्ञा)
मोहन वकील था।	(,, ,,)
कृष्ण मन्त्री होगा।	(,, ,,)
राम चतुर है।	(पूरक विशेषण)
मोहन मूर्ख था।	(,, ,,)
कृष्ण भला होगा।	(,, ,,)
राम वहाँ है।	(पूरक क्रियाविशेषण)
मोहन उधर था।	(,, ,,)
कृष्ण कहाँ होगा ?	(,, ,,)

३७३. पूरक के रूप में संज्ञाविशेषण का लिंग तथा वचन उद्देश्य के लिंग तथा वचन के अनुरूप रहता है; जैसे—

लड़का अच्छा है।
लड़के अच्छे हैं।
लड़की अच्छी है।
लड़कियाँ अच्छी हैं।

घोड़ा काला था/होगा।
घोड़ी काली थी/होगी।
घोड़े काले थे/होंगे।
घोड़ियाँ काली थीं/होंगी।

राम अच्छा डाक्टर है।
सीता अच्छी डाक्टर है।
मोहन बड़ा सचिव है।
राधा बड़ी सचिव है।

३७४. पूरक विधेय का अंग माना जाता है।

उद्देश्य	विधेय	
	पूरक + क्रियापद	
लड़का	अच्छा	है।
लड़की	अच्छी	है।
लड़के	अच्छे	हैं।
लड़कियाँ	अच्छी	हैं।
राम	वकील	है।
मोहन	किसान	है।
घर	दूर	है।

३७५. उद्देश्य और पूरक यदि दोनो संज्ञापद हों तो उनकी विशेषता सूचित करने-वाले विशेषण उनसे पहले आते हैं; जैसे—

(क) लड़का सम्पादक है।
(ख) बड़ा लड़का सम्पादक है।
(ग) लड़का अच्छा सम्पादक है।
(घ) बड़ा लड़का अच्छा सम्पादक है।

३७६. जब पूरक पर ज़ोर देना होता है तब उसका प्रयोग उद्देश्य से पहले करते हैं; जैसे—

राम चतुर है।	चतुर राम है।
मोहन उधर है।	उधर मोहन है।
राम अच्छा डाक्टर है।	अच्छा डाक्टर राम है।

३७७. जब क्रियापद पर ज़ोर देना अभीष्ट होता है तो उसका प्रयोग पूरक या उद्देश्य से पहले करते हैं; जैसे—

राम चतुर है।	(i) राम है चतुर।	(ii) है राम चतुर।
मोहन उधर है।	(i) मोहन है उधर।	(ii) है मोहन उधर।
राम अच्छा डाक्टर है।	(i) राम है अच्छा डाक्टर।	(ii) है राम अच्छा डाक्टर।

३७८. जब उद्देश्य पर ज़ोर देना अभिप्रेत होता है तो उसे विधेय के बाद रखते हैं; जैसे—

राम चतुर है।	चतुर है राम।
मोहन उधर है।	उधर है मोहन।
राम अच्छा डाक्टर है।	अच्छा डाक्टर है राम।
बड़ा लड़का अच्छा सम्पादक है।	अच्छा सम्पादक है बड़ा लड़का।

३७६. निदेशसूचक सर्वनामों का प्रयोग विशेषणवत् उद्देश्य से पहले होता है; जैसे—

घोड़ा है ।
यह घोड़ा है ।
हाथी था ।
वह हाथी था ।
मैं हूँ ।
यह मैं हूँ ।
वह था ।
वह वह था ।
यह होगा ।
वह यह होगा ।
वे किसान हैं ।
ये मजदूर हैं ।

३८०. निदेशसूचक सर्वनाम के लिंग एवम् वचन का प्रभाव विधेय पर नहीं पड़ता; जैसे—

वह लड़का अच्छा है ।
वह लड़की अच्छी है ।
वह मैं (पुरुष) था ।
वह मैं (स्त्री) थी ।

३८१. निदेशसूचक सर्वनाम पर जोर देना हो तो उसका प्रयोग उद्देश्य के उपरान्त करते हैं; जैसे—

लड़का वह अच्छा है ।
लड़की वह अच्छी है ।
मैं (पुरुष) यह हूँ ।
मैं (स्त्री) यह हूँ ।

३८२. उद्देश्य यदि एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञापद हो तो किसी पूरक की उपस्थिति में निदेशसूचक सर्वनाम का प्रयोग नहीं होता; जैसे

रमेश अच्छा है ।
मोहन वकील है ।

३८३. एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञापद का प्रयोग जातिवाचक संज्ञापद के रूप में होता है यदि उसके पूर्व निदेशसूचक सर्वनाम का प्रयोग हो; जैसे—

वह रमेश अध्यापक है।

[अर्थात् कई रमेश हैं और उनमें से अमुक रमेश से अभिप्राय है।]

३८४. संज्ञाविशेषण का प्रयोग होने पर निदेशसूचक सर्वनाम का प्रयोग संज्ञापद उद्देश्य से पूर्व विकल्प से होता है; जैसे—

लड़का भला है।
वह लड़का भला है।

३८५. संज्ञाविशेषण का प्रयोग होने पर निदेशसूचक सर्वनाम का प्रयोग सर्वनाम उद्देश्य से पूर्व नहीं होता; जैसे—

तू चालाक है।
कौन अच्छा है ?
वह अस्वस्थ था।

३८६. आदरार्थक रूप में महामहिम, महाराज, राजा, दीवान, श्री, श्रीयुक्त, श्रीमान्, बाबू, महाशय, जनाब, सरदार, चौधरी आदि संज्ञापदों का प्रयोग एकवचन पुंलिंग संज्ञापद से पहले एवम् साहब तथा महोदय का एकवचन पुंलिंग संज्ञापद के बाद में होता है।

३८७. आदरार्थक रूप में श्रीमती, सुश्री, मुसम्मात आदि का प्रयोग एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद से पहले और 'महोदया' का एकवचन स्त्रीलिंग संज्ञापद के बाद में होता है।

३८८. आदरार्थक पद का उद्देश्य के साथ प्रयोग होने पर क्रियापद बहुवचन में रहता है; जैसे—

महामहिम राष्ट्रपति किसान हैं।
बाबू किशोरीलाल अध्यापक हैं।
महाशय कृष्ण सम्पादक थे।
श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमन्त्री थीं।
मुसम्मात सुशीला देवी हाजिर हैं।
रामनाथ साहब वकील होंगे।
कृष्णलाल महोदय नेता थे।

३८९. आदरार्थक 'बाबू' का प्रयोग संज्ञापद के बाद होगा यदि संज्ञापद के अर्धभाग का प्रयोग हो; जैसे—

बाबू रेवतीरमण हमारे नेता हैं।

रेवती बाबू हमारे नेता हैं।

रमण बाबू हमारे नेता हैं।

३९०. मूल क्रियापदों के अतिरिक्त धातु तथा उनसे बने ता, आ एवम् ना प्रत्ययों से युक्त रूप भी क्रियापदों की तरह प्रयुक्त होते हैं जो क्रियाशीलता या विकार सूचित करते हैं; जैसे—

राम पढ़ रहा है।	(क्रियाशीलता)
मकान बन रहा है।	(विकार)

३९१. धातुओं में ता, आ तथा ना प्रत्ययों के योग से बने रूपों को क्रमशः ताप्रत्ययान्त, आप्रत्ययान्त एवम् नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप या कृदन्त कहा गया है।

३९२. धातु के अन्त्य अपूर्ण उच्चरित 'अ' स्वर का लोप हो जाता है यदि उसके परे स्वर से आरम्भ होनेवाला प्रत्यय हो; जैसे—

पढ़+आ

=प्+अ+ढ़्+अ(अपूर्ण उच्चरित)+आ

=प्+अ+ढ़्+आ

=पढ़ा।

खेल+आ

=ख्+ए+ल्+अ(अपूर्ण उच्चरित)+आ

=ख्+ए+ल्+आ

=खेला।

पढ़=पढ़+ता	=पढ़ता	ता प्रत्ययान्त क्रिया-रूप
=पढ़+आ	=पढ़ा	आ प्रत्ययान्त क्रिया-रूप
=पढ़+ना	=पढ़ना	ना प्रत्ययान्त क्रिया-रूप

३९३. आकारान्त तथा ओकारान्त धातुओं से परे 'आ' प्रत्यय हो तो 'य्' का आगम होता है; जैसे—

खा+आ
=ख्+आ+य्+आ
=खाया

बो+आ
=ब्+ओ+य्+आ
=बोया

३९४. 'आ' प्रत्यय परे होने पर ईकारान्त धातु का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो जाता है तथा 'य्' का आगम होता है; जैसे—

पी+आ
=प्+ई+आ
=प्+इ+य्+आ
=पिया

सी+आ
=स्+ई+आ
=स्+इ+य्+आ
=सिया

३९५. 'आ' या 'ए' स्वर से आरम्भ होनेवाला प्रत्यय परे रहने पर ऊकारान्त धातु का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो जाता है; जैसे—

छू+आ
=छ्+ऊ+आ
=छ्+उ+आ
=छुआ

[टिप्पणी—'ए' प्रत्यय का विवरण नियम ४०३ में देखें।]

३६६. दे, ले तथा हो धातुओं से दिया, लिया तथा हुआ अनियमित आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप बनते हैं; जैसे—

धातु	आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप
दे	दिया
ले	लिया
हो	हुआ

[टिप्पणी—वस्तुत: यहाँ भी 'ए' तथा 'ओ' स्वरों को क्रमशः ह्रस्व रूप इ तथा उ प्राप्त हुआ है ।]

३६७. मर, कर, एवम् जा धातुओं से सामान्य आप्रत्ययान्त क्रिया-रूपों के अतिरिक्त अनियमित क्रिया-रूप मुआ, किया एवम् गया भी बनते हैं; जैसे—

धातु	सामान्य आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप	अनियमित आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप
मर	मरा	मुआ
कर	करा	किया
जा	जाया	गया

३६८. मरा, किया एवम् गया आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप ही सामान्यतया प्रयुक्त होते हैं ।

३६९. प्रत्ययान्त क्रिया-रूपों और मूल क्रियापदों के योग से नौ प्रकार के धातु क्रियापद बनते हैं; जैसे—

'पढ़' धातु से बननेवाले नौ प्रकार के क्रियापद—

(१) पढ़ता है ।
(२) पढ़ता था ।
(३) पढ़ता होगा ।
(४) पढ़ा है ।
(५) पढ़ा था ।
(६) पढ़ा होगा ।
(७) पढ़ना है ।
(८) पढ़ना था ।
(९) पढ़ना होगा ।

४००. प्रत्ययान्त क्रिया-रूपों के साथ मूल क्रियापद केवल कालसूचक सहायक शब्दों की तरह प्रयुक्त होते हैं; स्थिति या उपस्थिति के सूचक नहीं।

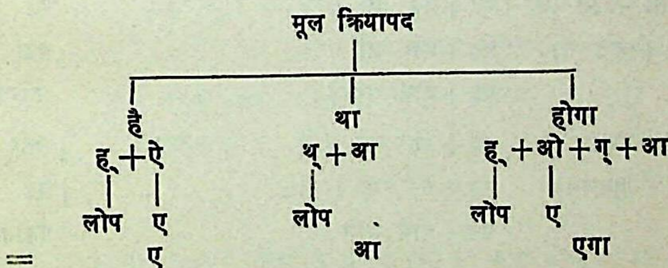
४०१. केवल धातु तथा केवल प्रत्ययान्त क्रिया-रूप भी क्रियापदों की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

(१०) धातु	पढ़
(११) ता प्रत्ययान्त क्रिया-रूप	पढ़ता
(१२) आ प्रत्ययान्त क्रिया-रूप	पढ़ा
(१३) ना प्रत्ययान्त क्रिया-रूप	पढ़ना

४०२. धातुओं में कालवाचक सहायक शब्द प्रत्यय रूप में लगने से तीन क्रियापद बनते हैं; जैसे—

(१४) पढ़+है
(१५) पढ़+था
(१६) पढ़+होगा

४०३. प्रत्यय रूप में संयोजन के समय कालवाचक सहायक शब्दों का (क) प्रथम व्यंजन वर्ण लुप्त होता है एवम् (ख) ऐ और ओ स्वरों का ए होता है परन्तु 'तुम' उद्देश्य होने पर ओ का ए नहीं होता; जैसे—



पढ़ धातु में कालवाचक सहायक शब्दों का प्रत्यय रूप में योजन—

पढ़+ए	=पढ़/ढ़्/+ए =पढ़े	[देखें नियम ३९२]
पढ़+आ	=पढ़/ढ़्/+आ =पढ़ा	[देखें नियम ३९२]
पढ़+एगा	=पढ़/ढ़्/+एगा=पढ़ेगा	[देखें नियम ३९२]
खा	=खाए, खाया [नियम ३९३] खाएगा	
बो	=बोए, बोया [नियम ३९३] बोएगा	

टिप्पणी—कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष में विकार होने पर मूल क्रिया-पदों में कुछ विकार होते हैं (देखें नियम ३६४ से ३७१)। स्वभावतः उक्त विकार उनके प्रत्यय से युक्त रूप में होने पर भी होंगे—

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता प्रथम पुरुष	है/था/होगा	हैं/थे/होंगे
,, मध्यम पुरुष	है/था/होगा	हो/थे/होगे
,, उत्तम पुरुष	हूँ/था/हूँगा	हैं/थे/होंगे

पढ़ धातु से रूप बनेंगे—

कर्ता प्रथम पुरुष	पढ़+है	/ए	/ [नियम ४०३ तथा ३९५]	पढ़े
(एकवचन)	पढ़+था	/आ	/ [,, ,,]	पढ़ा
	पढ़+होगा	/एगा	/ [,, ,,]	पढ़ेगा
कर्ता प्रथम पुरुष	पढ़+हैं	/एँ	/ [,, ,,]	पढ़ें
(बहुवचन)	पढ़+थे	/ए	/ [,, ,,]	पढ़े
	पढ़+होंगे	/एँगे	/ [,, ,,]	पढ़ेंगे
कर्ता मध्यम पुरुष	पढ़+है	/ए	/	पढ़े
(एकवचन)	पढ़+था	/आ	/	पढ़ा
	पढ़+होगा	/एगा	/	पढ़ेगा
कर्ता मध्यम पुरुष	पढ़+हो	/ओ	/ [,, ,,]	पढ़ो
(बहुवचन)	पढ़+थे	/ए	/ [,, ,,]	पढ़े
	पढ़+होगे	/ओगे	/	पढ़ोगे
कर्ता उत्तम पुरुष	पढ़+हूँ	/ऊँ	/ [,, ,,]	पढ़ूँ
(एकवचन)	पढ़+था	/आ	/ [,, ,,]	पढ़ा
	पढ़+हूँगा	/ऊँगा	/ [,, ,,]	पढ़ूँगा
कर्ता उत्तम पुरुष	पढ़+हैं	/एँ	/ [,, ,,]	पढ़ें
(बहुवचन)	पढ़+थे	/ए	/ [,, ,,]	पढ़े
	पढ़+होंगे	/एँगे	/ [,, ,,]	पढ़ेंगे

४०४. 'हो' धातु के बाद कालवाचक प्रत्यय का प्रथम ए या ओ स्वर लुप्त हो जाता है और यदि लुप्त होनेवाला स्वर अनुनासिक हुआ तो धातु का अन्त्य स्वर अनुनासिक हो जाता है; जैसे—

कर्ता प्रथम पुरुष	हो+है	/ए /	[नियम ४०४]	हो
(एकवचन)	हो+था	/आ /	[नियम ३९६]	हुआ
	हो+होगा	/एगा /	[नियम ४०४]	होगा
कर्ता प्रथम पुरुष	हो+हैं	/एँ /	[,,]	हों
(बहुवचन)	हो+थे	/ए /	[,,]	हो
	हो+होंगे	/एँगे /	[,,]	होंगे
कर्ता मध्यम पुरुष	हो+है	/ए /	[,,]	हो
(एकवचन)	हो+था	/आ /	[नियम ३९६]	हुआ
	हो+होगा	/एगा /	[नियम ४०४]	होगा
कर्ता मध्यम पुरुष	हो+हो	/ओ /	[नियम ४०३, ४०४]	हो
(बहुवचन)	हो+थे	/ए /	[नियम ४०४]	हो
	हो+होंगे	/ओंगे /	[नियम ४०३, ४०४]	होंगे
कर्ता उत्तम पुरुष	हो+हूँ	/ऊँ /	[नियम ४०३]	होऊँ
(एकवचन)	हो+था	/आ /	[नियम ३९६]	हुआ
	हो+हूँगा	/ओंगा/	[नियम ४०३]	होऊंगा
कर्ता उत्तम पुरुष	हो+हैं	/एँ /	[नियम ४०४]	हों
(बहुवचन)	हो+थे	/ए /	[,,]	हो
	हो+होंगे	/एँगे /	[,,]	होंगे

४०५. धातु क्रियापदों से क्रिया के घटित होने का काल एवम् कथन के समय विद्यमान स्थिति या मनःस्थिति भी सूचित होती है इसलिए इन्हें लकार[1] कहते हैं जिनकी संख्या ९ है।

[1] 'A technical term for all the tenses and moods.' —Sir Monier Williams, *A Sanskrit English Dictionary*.
संस्कृत व्याकरण में लट्, लिट् आदि लकारों के द्वारा काल तथा मनःस्थिति के भेदों को प्रकट किया गया है। सुविधा की दृष्टि से ही इसी अर्थ में लकार शब्द प्रयुक्त है।

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार,

(२) निष्पणतामूलक लकार,

(३) औचित्यमूलक लकार,

(४) तथ्यमूलक लकार,

(५) आदेशमूलक लकार,

(६) निदेशमूलक लकार,

(७) सम्भावनामूलक लकार,

(८) संकेतमूलक लकार,

(९) आवश्यकतामूलक लकार।

४०६. उद्देश्य के लिंग, वचन तथा पुरुष के बदलने पर जो विकार मूल क्रियापदों में होते हैं वे विकार प्रत्ययान्त क्रिया-रूपों एवम् कालवाचक सहायक शब्दों में भी होते हैं।

४०७. किसी क्रिया में प्रवृत्त होना सूचित करने के लिए प्रवृत्तिमूलक लकार का प्रयोग होता है जो ताप्रत्ययान्त क्रिया-रूप एवम् कालवाचक सहायक शब्दों के योग से बनता है; जैसे—

राम आता है।

राम आता था।

राम आता होगा।

[टिप्पणी—भविष्यत् प्रवृत्तिमूलक लकार का प्रयोग बहुत कम होता है। जब होता भी है तब समयसूचक क्रियाविशेषण या क्रियाविशेषण पदबंध का प्रयोग भी क्रियापद के साथ होता है; जैसे—

राम अभी आता होगा।

गाड़ी दस मिनट में आती होगी।]

		वर्तमान प्रवृत्तिमूलक लकार	नियम	भूत प्रवृत्तिमूलक लकार	नियम	भविष्यत् प्रवृत्तिमूलक लकार	नियम
उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन							
	राम	पढ़ता है	(३५४)	पढ़ता था		पढ़ता होगा	
	वह	पढ़ता है	(३६२)	पढ़ता था		पढ़ता होगा	
	तू	पढ़ता है	(३६२)	पढ़ता था		पढ़ता होगा	
	मैं	पढ़ता हूं	(३६४)	पढ़ता था		पढ़ता हूंगा	
उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन							
	सीता	पढ़ती है	(३६१)	पढ़ती थी		पढ़ती होगी	
	वह	पढ़ती है	(,,)	पढ़ती थी		पढ़ती होगी	
	तू	पढ़ती है	(,,)	पढ़ती थी		पढ़ती होगी	
	मैं	पढ़ती हूं	(३६४)	पढ़ती थी		पढ़ती हूंगी	
उद्देश्य—पुंलिंग बहुवचन							
	लड़के	पढ़ते हैं	(३६५)	पढ़ते थे		पढ़ते होंगे	
	वे	पढ़ते हैं	(३६७)	पढ़ते थे		पढ़ते होंगे	
	तुम	पढ़ते हो	(३६९)	पढ़ते थे		पढ़ते होंगे	
	हम	पढ़ते हैं	(३७०)	पढ़ते थे		पढ़ते होंगे ।	
उद्देश्य—स्त्रीलिंग बहुवचन							
	लड़कियां	पढ़ती हैं	(३६६)	पढ़ती थीं		पढ़ती होंगी	(३६७)
	वे	पढ़ती हैं	(३६८)	पढ़ती थीं		पढ़ती होंगी	
	तुम	पढ़ती हो	(३७०)	पढ़ती थीं		पढ़ती होंगी	(३७१)
	हम	पढ़ती हैं	(३६८)	पढ़ती थीं		पढ़ती होंगी	

४०८. विधेय रूप में धातु से बने क्रियापद जिस नामपद के सम्बन्ध में विधान करते हैं वह भी उद्देश्य कहलाता है; जैसे—

(क) राम सोता है । (उद्देश्य)

(ख) कृष्ण जाता है । (उद्देश्य)

[टिप्पणी—(क) वाक्य में 'सोता है' क्रियापद 'राम' के सम्बन्ध में विधान करता है अतः 'राम' उद्देश्य हुआ ।

(ख) वाक्य में 'जाता है' क्रियापद 'कृष्ण' के सम्बन्ध में विधान करता है अतः 'कृष्ण' उद्देश्य हुआ ।]

४०९. सामान्यतया धातु से बने क्रियापद एक से अधिक नामपदों के सम्बन्ध में भी विधान करते हैं; जैसे—

(क) राम काम करता है।
(ख) मोहन पुस्तक खरीदता है।
(ग) रमेश छुरी से खरबूजा काटता है।

[टिप्पणी—(क) वाक्य में 'करता है' क्रियापद 'राम' और 'काम' संज्ञापदों के सम्बन्ध में विधान कर रहा है। (ख) वाक्य में 'खरीदता है' क्रियापद 'मोहन' और 'पुस्तक' के सम्बन्ध में विधान करता है। (ग) वाक्य में 'काटता है', क्रियापद 'रमेश', 'छुरी' एवम् 'खरबूजा' के सम्बन्ध में विधान कर रहा है।]

४१०. धातु से बना क्रियापद जिन संज्ञापदों के सम्बन्ध में विधान करता है उनमें सात प्रकार की स्थितियों की कल्पना की गई है, जिन्हें कारक कहते हैं।

कारक :

(१) कर्ता
(२) कर्म
(३) करण
(४) सम्प्रदान
(५) अपादान
(६) सम्बन्ध
(७) अधिकरण

४११. कारकत्व सूचित करने के लिए सामान्यतया विभक्ति-परसर्गों तथा विभक्ति-प्रत्ययों का प्रयोग होता है।

४१२. जो क्रिया में स्वतः प्रवृत्त हो अथवा क्रिया करने या न करने में स्वतन्त्र हो उसे कर्ता कहते हैं।

४१३. कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रियापदों के रूप चलते हैं तथा उसमें सामान्यतया कोई विभक्ति-प्रत्यय या विभक्ति-परसर्ग नहीं आता अथवा 'अ' विभक्ति-प्रत्यय आता है जिसका लोप हो जाता है।

[टिप्पणी—'अ' विभक्ति-प्रत्यय हिन्दी में संस्कृत से आया है। संस्कृत में प्रथमा एकवचन की विभक्ति है—अः। हिन्दी में तत्सम शब्दों के अन्त्य विसर्ग का लोप हो जाता है। शेष रहा—अ। हिन्दी में पहले ही अकारान्त शब्दों के अन्त्य 'अ' का सामान्यतया अपूर्ण उच्चारण होता है अतः 'अ' प्रत्यय का लोप हो जाना स्वाभाविक है।]

संज्ञापद	विभक्ति-प्रत्यय	कर्ता कारक का रूप
राम	+अ	=राम
घोड़ा	+अ	=घोड़ा

राम खेलता है ।
घोड़ा आता है ।
'राम' और 'घोड़ा' यहाँ कर्ता कारक में हैं ।

४१४. क्रिया का फल कर्ता से भिन्न जिस संज्ञापद या संज्ञातुल्य पद पर पड़ता है उसे कर्म कहते हैं तथा उसमें 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

राम घोड़े को खरीदता है ।

[टिप्पणी—यहाँ खरीदने की क्रिया राम करता है अतः 'राम' कर्ता हुआ । खरीदने की क्रिया का फल घोड़े पर पड़ता है—वही तो खरीदा जाता है । अतः 'घोड़ा' कर्म हुआ ।]

४१५. सामान्यतया कर्ता और क्रियापद के बीच ही कर्म को रखते हैं परन्तु यदि कर्म पर ज़ोर देना हो तो उसे कर्ता के पहले रखते हैं, क्रियापद पर ज़ोर देना हो तो उसे कर्म के पहले रखते हैं और कर्ता पर ज़ोर देना हो तो उसे क्रियापद के बाद रखते हैं; जैसे—

क—१. बिल्ली चूहे को पकड़ती है ।
क—२. चूहे को बिल्ली पकड़ती है ।
क—३. बिल्ली पकड़ती है चूहे को ।
क—४. चूहे को पकड़ती है बिल्ली ।

क—१ सामान्य वाक्य-रचना है । क—२ में कर्म पर, क—३ में क्रियापद पर और क—४ में कर्ता पर ज़ोर है ।

४१६. कर्म के बाद उस समय या तो कोई विभक्ति-परसर्ग नहीं आता अथवा अ विभक्ति-प्रत्यय आता है जब वह किसी पदार्थ, साधारण जीव, भाव आदि का सूचक होता है ।

[टिप्पणी—कर्मकारक के बाद 'अ'[1] विभक्ति-प्रत्यय का भी लोप हो जाता है; जैसे—

राम पुस्तक पढ़ता है ।
मोहन बकरी खरीदता है ।
सोहन विचार करता है ।]

[1] 'अ' विभक्ति-प्रत्यय संस्कृत की द्वितीया विभक्ति अम् का ही अन्त्य व्यंजन म् लुप्त होने पर बना रहनेवाला रूप है ।

४१७. बल, निश्चय आदि की विवक्षा सूचित करने के लिए 'अ' विभक्ति-प्रत्यय के स्थान पर प्राय: जीव तथा पदार्थसूचक संज्ञापदों के बाद 'को' विभक्ति परसर्ग वरीय समझा जाता है; जैसे—

(क) राम घोड़ा खरीदेगा।

(ख) राम घोड़े को खरीदेगा।

यहाँ (ख) वाक्य से आशय है कि राम अवश्य घोड़ा खरीदेगा।

(ग) वह मकान बेचेगा।

(घ) वह मकान को बेचेगा।

यहाँ (घ) वाक्य से आशय है कि वह मकान अवश्य बेचेगा।

४१८. अनेक क्रियापदों द्वारा सूचित क्रिया का फल कर्ता से भिन्न किसी अन्य व्यक्ति, वस्तु आदि पर नहीं पड़ता; जैसे—

राम दौड़ता है।

लड़का खेलता है।

मोहन सोया है।

वह आएगा।

४१९. जिस धातु से बने क्रियापद का फल कर्ता तक ही परिमित रहता हो उसे अकर्मक धातु और जिसका फल कर्म पर पड़ता हो उसे सकर्मक धातु कहते हैं।

४२०. कर्ता एवम् कर्म पर पड़नेवाले फल के विचार से ही किसी धातु के अकर्मक अथवा सकर्मक होने का निश्चय होता है; जैसे—

राम पुस्तक पढ़ता है।	('पढ़' सकर्मक धातु)
राम पढ़ता है।	('पढ़' अकर्मक धातु)
मोहन गेंद खेलता है।	('खेल' सकर्मक धातु)
मोहन खेलता है।	('खेल' अकर्मक धातु)
मैं हाथ खुजलाता हूँ।	('खुजला' सकर्मक धातु)
मेरा हाथ खुजला रहा है।	('खुजला' अकर्मक धातु)
वह लड़ाई लड़ा।	('लड़' सकर्मक धातु)
वह खूब लड़ा।	('लड़' अकर्मक धातु)

[टिप्पणी—अत: स्पष्ट है कि प्रयोग के आधार पर कुछ धातुओं का अकर्मक तथा सकर्मक दोनों रूपों में प्रयोग होता है।]

४२१. कुछ धातुओं के क्रियापदों के साथ दो-दो कर्म प्रयुक्त होते हैं।

४२२. सामान्यतया द्विकर्मक धातु का जो कर्म प्राणी का वाचक हो उसे गौण कर्म एवम् अन्य को मुख्य कर्म कहा जाता है।

४२३. द्विकर्मक धातु के मुख्य कर्म में विभक्ति-परसर्ग नहीं आता परन्तु गौण कर्म में 'से' विभक्ति परसर्ग आता है यदि क्रियापद कह अथवा पूछ धातु से बना हो अन्यथा 'को' परसर्ग; जैसे—

'कह' व 'पूछ' धातु से बना क्रियापद होने पर—

राम कृष्ण से प्रश्न पूछता है।
मोती राधा से एक बात कहता है।

अन्य धातुओं से बना क्रियापद होने पर—

मोहन ने कृष्ण को सारी घटना सुनायी।
उन्होंने हम को एक बात बतलायी।
लड़की गुड़िया को कपड़े पहनाती है।
बहन भाई को राखी बाँधती है।
हलवाई मुझको लड्डू खिलाता था।

४२४. किसी क्रिया की निष्पत्ति सूचित करने के लिए निष्पन्नतामूलक लकार का प्रयोग होता है जो आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप एवम् कालवाचक सहायक शब्दों के योग से बनता है; जैसे—

निष्पन्नतामूलक लकार

	वर्तमान	भूत	भविष्यत्
लड़का खेला	/ है /	/ था /	/ होगा /
वह/तू खेला	/ है /	/ था /	/ होगा /
मैं खेला	/ हूँ /	/ था /	/ हूँगा /
लड़की खेली	/ है /	/ थी /	/ होगी /
वह/तू खेली	/ है /	/ थी /	/ होगी /
मैं खेली	/ हूँ /	/ थी /	/ हूँगी /
लड़के खेले	/ हैं /	/ थे /	/ होंगे /
वे/हम खेले	/ हैं /	/ थे /	/ होंगे /
तुम खेले	/ हो /	/ थे /	/ होगे /
लड़कियाँ खेली	/ हैं /	/ थीं /	/ होंगी /
वे/हम खेली	/ हैं /	/ थीं /	/ होंगी /
तुम खेली	/ हो /	/ थीं /	/ होंगी / होगी

[टिप्पणी—भविष्यत् निष्पन्नतामूलक लकार का प्रयोग कम ही होता है।]

४२५. आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप के अन्त्य 'आ' स्वर में विकार होने पर य् आगम का सामान्यतया लोप हो जाता है; जैसे—

लड़का आया / है / / था / / होगा /
लड़की आई / है / / थी / / होगी /
लड़के आए / हैं / / थे / / होंगे /
लड़कियाँ आई / हैं / / थीं / / होंगी /

[टिप्पणी—सामान्यतया इसलिए कि कुछ लोग इस प्रकार भी लिखते हैं :

लड़का आया / है / / था / / होगा /
लड़की आयी / है / / थी / / होगी /
लड़के आये / हैं / / थे / / होंगे /
लड़कियाँ आयी / हैं / / थीं / / होंगी /]

४२६. यदि क्रियापद आप्रत्ययान्त हो एवम् सकर्मक धातु से बना हो तो कर्ता में 'ने' विभक्ति-परसर्ग आता है।

४२७. कर्ता में विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय हो तो धातु क्रियापद में उसके लिंग, वचन एवम् पुरुष के अनुसार परिवर्तन नहीं होता।

४२८. कर्ता में विभक्ति-प्रत्यय अथवा विभक्ति-परिसर्ग होने पर क्रियापद विभक्ति-प्रत्यय अथवा विभक्ति-परसर्ग से रहित कर्म के लिंग तथा वचन के अनुसार बदलता है; जैसे—

लड़के ने खिलौना खरीदा / है / / था / / होगा /
लड़की ने खिलौना खरीदा / है / / था / / होगा /
लड़कों ने खिलौना खरीदा / है / / था / / होगा /
लड़कियों ने खिलौना खरीदा / है / / था / / होगा /

लड़के ने घड़ी खरीदी / है / / थी / / होगी /
लड़की ने घड़ी खरीदी / है / / थी / / होगी /
लड़कों ने घड़ी खरीदी / है / / थी / / होगी /
लड़कियों ने घड़ी खरीदी / है / / थी / / होगी /

लड़के ने खिलौने खरीदे / हैं / / थे / / होंगे /
लड़की ने खिलौने खरीदे / हैं / / थे / / होंगे /
लड़कों ने खिलौने खरीदे / हैं / / थे / / होंगे /
लड़कियों ने खिलौने खरीदे / हैं / / थे / / होंगे /

लड़के ने घड़ियाँ खरीदी / हैं / / थीं / / होंगी /
लड़की ने घड़ियाँ खरीदी / हैं / / थीं / / होंगी /
लड़कों ने घड़ियाँ खरीदी / हैं / / थीं / / होंगी /
लड़कियों ने घड़ियाँ खरीदी / हैं / / थीं / / होंगी /

४२६. कर्ता और कर्म दोनों में विभक्ति-प्रत्यय या विभक्ति-परसर्ग हों तो क्रियापद अन्य पुरुष एकवचन रहता है; जैसे—

मोहन ने श्याम को बुलाया / है / / था / / होगा /
राम ने सीता को बुलाया / है / / था / / होगा /
मोहन ने लड़कों को बुलाया / है / / था / / होगा /
राम ने लड़कियों को बुलाया / है / / था / / होगा /

४३०. 'ला'[1] सकर्मक धातु होने पर भी उससे बने आप्रत्ययान्त क्रियापदों की उपस्थिति में कर्ता में 'ने' विभक्ति-परसर्ग नहीं आता; जैसे—

राम पुस्तक लाया / है / / था / / होगा /
सीता पुस्तक लाई / है / / थी / / होगी /
राम पुस्तकें लाया / है / / था / / होगा /
सीता पुस्तकें लाईं / है / / थी / / होगी /

४३१. 'समझ' धातु के आप्रत्ययान्त क्रियापदों की उपस्थिति में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग विकल्प से होता है; जैसे—

क—१. वह समझा है।
२. उसने समझा है।
ख—१. मैं समझा हूँ।
२. मैंने समझा है।

४३२. छींक, नहा, बक तथा बोल अकर्मक धातुओं के आप्रत्ययान्त क्रियापदों की उपस्थिति में कर्ताकारक में विकल्प से 'ने' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

क—१. लड़का छींका है।
२. लड़के ने छींका है।
ख—१. लड़का नहाया है।
२. लड़के ने नहाया है।
ग—१. वह बका है।
२. उसने बका है।
घ—१. वह बोला है।
२. उसने बोला है।[2]

[1] 'ला' धातु वस्तुतः ले+आ दो धातुओं के मिश्रण से बना है। 'आ' अकर्मक धातु है। सम्भवतः इसीलिए 'ला' भी अन्य अकर्मक धातुओं की तरह प्रयुक्त होता है।

[2] 'राम ने बोला है।' ऐसे प्रयोग पंजाबी लेखकों की कृतियों में मिलते हैं।

४३३. जब अकर्मक धातु से बने क्रियापद की उपस्थिति में कर्ता में विभक्ति-प्रत्यय या विभक्ति-परसर्ग आता है तब क्रियापद अन्य पुरुष एकवचन रहता है।

राम ने नहाया /है/ /था/ /होगा/
सीता ने नहाया /है/ /था/ /होगा/
लड़कों ने नहाया /है/ /था/ /होगा/
लड़कियों ने नहाया /है/ /था/ /होगा/

४३४. पूर्व निष्पादित क्रिया का प्रभाव वर्तमान में व्याप्त हो तो वर्तमान निष्पन्नतामूलक लकार का प्रयोग भूत निष्पन्नतामूलक लकार की अपेक्षा अधिक वरीय होता है; जैसे—

(क) लड़का कल आया था।
(ख) लड़का कल आया है।

[टिप्पणी—लड़का यदि आया और चला भी गया तो (क) वाक्य ही उत्तम है। परन्तु वह आया और अभी तक रुका हुआ है तो (ख) वाक्य उत्तम होगा।]

४३५. कर्ता में 'अ' से भिन्न विभक्ति-प्रत्यय अथवा विभक्ति-परसर्ग हो एवम् कर्म न हो अथवा अनुक्त हो तो क्रियापद अन्य पुरुष एकवचन रहता है; जैसे—

राम ने खाया /है/ /था/ /होगा/
सीता ने खाया /है/ /था/ /होगा/
लड़कों ने खाया /है/ /था/ /होगा/
लड़कियों ने खाया /है/ /था/ /होगा/

परन्तु

राम ने खरबूजा खाया /है/ /था/ /होगा/
राम ने बरफ़ी खाई /है/ /थी/ /होगी/

४३६. औचित्य सूचित करने के लिए औचित्यमूलक लकार का प्रयोग होता है जो नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप तथा कालवाचक सहायक शब्दों के योग से बनता है।

४३७. जब क्रियापद नाप्रत्ययान्त क्रियारूप हो तो कर्ता में 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है।

[देखें—नियम ४३३]

राम को जाना	/है/	/था/	/होगा/
सीता को जाना	/है/	/था/	/होगा/
लड़कों को जाना	/है/	/था/	/होगा/
लड़कियों को जाना	/है/	/था/	/होगा/

[देखें—नियम ४२८]

राम को घोड़ा खरीदना	/है/	/था/	/होगा/
राम को गाय खरीदनी	/है/	/थी/	/होगी/
सीता को घोड़े खरीदने	/हैं/	/थे/	/होंगे/
सीता को गायें खरीदनी	/हैं/	/थीं/	/होंगी/

४३८. तथ्य या वस्तु-स्थिति सूचित करने के लिए तथ्यमूलक लकार का प्रयोग होता है जो रूप एवम् अर्थ की दृष्टि से अनियमित है।

४३९. रूप के विचार से वर्तमान तथ्यमूलक लकार ताप्रत्ययान्त क्रिया-रूप तथा वर्तमान कालवाचक सहायक शब्दों के योग से बनता है।

[टिप्पणी—स्पष्ट है कि रूप के विचार से वर्तमान प्रवृत्तिमूलक लकार और वर्तमान तथ्यमूलक लकार समान हैं।]

४४०. वर्तमान तथ्यमूलक लकार का प्रयोग (क) प्रस्तुत क्षण में घटित व्यापार, (ख) चिरन्तन सत्य एवम् (ग) भूत का प्रत्यक्ष वर्णन करने के लिए होता है; जैसे—

डाकिया आता है।	(प्रस्तुत क्षण में घटित व्यापार)
पृथ्वी घूमती है।	(चिरन्तन सत्य)
राम वन जाते हैं।	(भूत का प्रत्यक्ष वर्णन)

४४१. रूप के विचार से भूत तथ्यमूलक लकार धातु में भूत कालवाचक प्रत्यय[1] लगने से बनता है।

[टिप्पणी—भूत तथ्यमूलक लकार के क्रियापद आकारान्त क्रिया-रूप के समान होते हैं।]

४४२. भूत तथ्यमूलक लकार बीते हुए समय में किसी निष्पादित व्यापार की सूचना देता है एवम् कुछ अवसरों पर उस व्यापार की पूर्णता भी सूचित करता है; जैसे—

वह आया।
उसने बात बनाई।
लड़का खेला।
वह/तू/मैं खेला।
लड़की खेली।
वह/तू/मैं खेली।
राम ने पढ़ा।
सीता ने पढ़ा।
लड़कों ने पढ़ा।
लड़कियों ने पढ़ा।
मैंने/तूने/उसने पढ़ा।
हमने/तुमने/उन्होंने पढ़ा।
लड़के ने ग्रन्थ पढ़ा।
लड़की ने ग्रन्थ पढ़ा।
लड़कों ने ग्रन्थ पढ़ा।
लड़कियों ने ग्रन्थ पढ़ा।
लड़के ने पुस्तक पढ़ी।
लड़की ने पुस्तक पढ़ी।

1 'था' कालवाचक सहायक शब्द प्रत्यय रूप में लगता है। [देखें—नियम ४०२, ४०३]
'था' कालवाचक सहायक शब्द का प्रत्यय रूपान्तर—

वह/तू/मैं	(पुरुष)	था—आ
वह/तू/मैं	(स्त्री)	थी—ई
वे/तुम/हम/आप	(पुरुष)	थे —ए
वे/तुम/हम	(स्त्री)	थीं—ईं

[विशेष देखें—नियम ४०४]

४४३. जिस कर्ता अथवा कर्म के रूप में प्रयुक्त नामपद के अनुरूप क्रियापद का रूपान्तर होता हो, वह यदि स्त्रीलिंग वहुवचन हो तो भूत तथ्यमूलक लकार के क्रियापद का अन्त्य स्वर अनुनासिक हो जाता है; जैसे—

लड़कियाँ खेलीं।
श्याम/तुम/वे खेलीं।
लड़कों ने पुस्तकें पढ़ीं।
लड़कियों ने पुस्तकें पढ़ीं।

४४४. रूप के विचार से भविष्यत् तथ्यमूलक लकार धातु में भविष्यत् कालवाचक प्रत्यय[1] लगाने से वनता है।

४४५. भविष्यत् तथ्यमूलक लकार भविष्य में होनेवाले व्यापार की सूचना देता एवम् सम्भावना प्रकट करता है; जैसे—

लड़का खेलेगा।
वह/तू खेलेगा।
मैं खेलूंगा।
लड़की खेलेगी।
वह/तू खेलेगी।
मैं खेलूंगी।
लड़के खेलेंगे।
वे/आप/हम खेलेंगे।
तुम खेलोगे।
लड़कियाँ खेलेंगी।
वे/आप/हम खेलेंगी।
तुम खेलोगी।

[1] 'होगा' कालवाचक सहायक शब्द प्रत्यय रूप में आएगा।
'होगा' कालवाचक सहायक शब्द का प्रत्यय रूपान्तर—
[देखें—नियम ४०३, ४०४]

वह/तू	(पुरुष)	होगा —	एगा
मैं	(„)	हूँगा —	ऊँगा
वे/हम/आप	(„)	होंगे —	एँगे
वह/तू	(स्त्री)	होगी —	एगी
मैं	(„)	हूँगी —	ऊँगी
तुम	(„)	होगी —	ओगी
वे/हम	(„)	होंगी —	एँगी

४४६. संकेतमूलक लकार भी रूप की दृष्टि से अनियमित होते हैं।

४४७. वर्तमान संकेतमूलक लकार धातु में वर्तमान कालवाचक प्रत्यय[1] के योग से बनता है।

४४८. वर्तमान संकेतमूलक लकार के दोनों उपवाक्यों में क्रियापद वर्तमान संकेतमूलक लकार होते हैं; जैसे—

वह दे तो मैं लूं।
वह आए तो मैं जाऊँ।
मैं कहूँ तो वह करे।

४४९. भूत संकेतमूलक लकार ताप्रत्ययान्त क्रियारूप से सूचित किया जाता है; जैसे—

राम आता तो मैं जाता।
सीता आती तो राधा जाती।

४५०. भूत संकेतमूलक लकार के दोनों उपवाक्यों में क्रियापद भूत संकेतमूलक लकार होते हैं।
[उदाहरण ऊपर देखें]

४५१. भविष्यत् सकेतमूलक लकार आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप से सूचित किया जाता है; जैसे—

वह आया तो मैं जाऊँगा।
मैं गया तो वह आएगा।

1 'है' वर्तमान कालवाचक सहायक शब्द प्रत्यय रूप में आता है।
'है' कालवाचक सहायक शब्द का प्रत्यय रूपान्तर—

वह/तू	है —	ए
मैं	हूँ —	ऊँ
वे/हम	हैं —	एँ
तुम	हो —	ओ

'पढ़' धातु से बना संकेतमूलक वर्तमान लकार—

वह/तू पढ़े।
मैं पढ़ूं।
हम/वे/आप पढ़ें।
तुम पढ़ो।
वह दे तो मैं लूं!
वह पढ़े तो मैं उसको पुरस्कार दूं।

४५२. भविष्यत् संकेतमूलक लकार में आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप के स्थान पर भविष्यत् तथ्यमूलक लकार का भी प्रयोग होता है; जैसे—

वह आएगी तो मैं जाऊँगा ।
मैं जाऊँगा तो वह आएगी ।

४५३. भविष्यत् संकेतमूलक लकार के दूसरे उपवाक्य में भविष्यत् तथ्यमूलक लकार आता है ।
[उदाहरण ऊपर देखें]

४५४. भूत तथा भविष्यत् संकेतमूलक लकारों में प्रत्ययान्त क्रियारूप का अन्त्य ई स्वर अनुनासिक हो जाता है यदि उसका रूपान्तर स्त्रीलिंग बहुवचन नामपद के अनुसार हो; जैसे—

लड़कियाँ आतीं तो औरतें जातीं ।
लड़कियाँ आईं तो औरतें जाएँगी ।

४५५. भविष्यत् संकेतमूलक लकार से ऐसे व्यापार की पूर्णता भी सूचित करते हैं जिसके तत्क्षण होने की सम्भावना हो; जैसे—

मैं अभी आया ।
वे अभी आए ।
वह चुटकियों में आया ।
हम फौरन आए ।

४५६. ताप्रत्ययान्त एवम् आप्रत्ययान्त क्रिया-रूपों में भविष्यत् कालवाचक सहायक शब्दों के योग से क्रमशः वर्तमानकालिक तथा भूतकालिक सम्भावनामूलक लकार बनते हैं; जैसे—

	सम्भावनामूलक लकार	
	वर्तमानकालिक	भूतकालिक
राम/वह/तू	आता होगा	आया होगा
मैं	आता हूँगा	आया हूँगा
लड़के	आते होंगे	आए होंगे
लड़कियाँ	आती होंगी	आई होंगी

४५७. धातु में वर्तमान कालसूचक प्रत्यय लगने से भविष्यत् सम्भावनामूलक लकार का बोध होता है ।

४५८. भविष्यत् सम्भावनामूलक लकार का प्रयोग आशीश, आकांक्षा, विधि[1], अनुमति की प्राप्ति आदि सूचित करने के लिए होता है; जैसे—

वह सौ बरस जिए। (आशीश)
राम आए। (आकांक्षा)
(पहले) राम आए। (विधि)
मैं अन्दर आऊँ। (अनुमति की प्राप्ति)

४५९. किसी कार्य में प्रवृत्त करने के उद्देश्य से उपस्थित व्यक्ति को आदेश देने के लिए आदेशमूलक लकार का प्रयोग होता है।

४६०. आदेशमूलक लकार सूचित करने के लिए 'तू' उद्देश्य होने पर केवल धातु का प्रयोग करते हैं; जैसे—

तू जा।
तू आ।
तू पढ़।
तू पुस्तक पढ़।
तू पुस्तकें पढ़।

४६१. आदेशमूलक लकार सूचित करने के लिए 'तुम' और 'आप' उद्देश्य होने पर धातु में क्रमश: ओ और एँ प्रत्यय लगाए जाते हैं; जैसे—

तुम जाओ/आओ/पढ़ो।
आप/जाएँ/आएँ/पढ़ें।

४६२. हो, दे और ले धातुओं में 'ओ' प्रत्यय लगने पर हो, दो और लो रूप तथा 'एँ' प्रत्यय लगने पर हों, दें और लें रूप बनते हैं; जैसे—

तू दे/ले/हो।
तुम दो/लो/हो।
आप/दें/लें/हों।

[1] विधि से अभिप्राय यहाँ ऐसे आदेश से है जो सीधे न दिया गया हो।

४६३. ईकारान्त धातु 'ओ' और 'एँ' प्रत्यय लगने पर इकारान्त हो जाते हैं तथा य् का विकल्प से आगम होता है; जैसे—

पी + ओ =पिओ/पियो
सी + ओ =सिओ/सियो
पी + एँ =पिएँ/पियें
सी + एँ =सिएँ/सियें

४६४. यदि धातु का अन्त्य स्वर अपूर्णोच्चरित से भिन्न हो तो 'एँ' प्रत्यय से पूर्व विकल्प से य् एवम् व् का आगम भी होता है; जैसे—

आ+एँ =(i) आएँ
(ii) आयें
(iii) आवें

खा+एँ =(i) खाएँ
(ii) खायें
(iii) खावें

सी+एँ =(i) सिएँ [नियम ४६२]
(ii) सियें
(iii) सिवें

आप आएँ/आयें/आवें।
आप खाएँ/खायें/खावें।
आप सिएँ/सियें/सिवें।

४६५. ईकारान्त धातुओं को छोड़कर अन्य धातुओं में 'एँ' प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से 'इए' प्रत्यय का भी प्रयोग होता है; जैसे—

आप जाएँ/जाइए।
आप खाएँ/खाइए।
आप पढ़ें/पढ़िए।

४६६. 'चाह' धातु में 'इए' प्रत्यय लगने से बननेवाला रूप 'चाहिए' का प्रयोग आदेशमूलक लकार में नहीं अपितु आवश्यकतामूलक लकार में होता है। [विशेष देखें—नियम ४७३]

४६७. 'इए' प्रत्यय लगने पर हो, कर, दे तथा ले धातुओं से हूजिए, कीजिए[1], दीजिए तथा लीजिए अनियमित रूप भी बनते हैं।

४६८. उपस्थित व्यक्ति को निदेश देने के लिए निदेशमूलक लकार का प्रयोग होता है।

४६९. निदेश का पालन भविष्य के लिए होता है अतः इसका सम्बन्ध भविष्यत् काल से ही होता है।

४७०. निदेशमूलक लकार सूचित करने के लिए नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप का प्रयोग करते हैं जो सदा प्रकृत रूप में रहता है; जैसे—

तू जाना।
तुम जाना।
आप जाना।

४७१. बोलियों में तू अथवा तुम उद्देश्य होने पर निदेशसूचक लकार में धातु में 'इयो' प्रत्यय भी लगाते हैं; जैसे—

तू जाइयो/खाइयो/पढ़ियो।
तुम जाइयो/खाइयो/पढ़ियो।

४७२. निदेशमूलक लकार का प्रयोग संकेतमूलक भविष्यत्कालिक लकार की तरह भी होता है; जैसे—

तू दिल्ली जाना तो मेरे लिए रेडियो लाना।

४७३. आवश्यकता सूचित करने के लिए आवश्यकतामूलक लकार का प्रयोग होता है।

४७४. 'चाह' धातु में 'इए' प्रत्यय के योग से बने रूप के साथ कालवाचक सहायक शब्दों के प्रयोग से आवश्यकतामूलक लकार बनता है।

४७५. आवश्यकतामूलक लकार के कर्ता में 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है।

४७६. वर्तमान आवश्यकतामूलक लकार में कालवाचक सहायक शब्द 'है' का लोप हो जाता है; जैसे—

राम को घोड़ा चाहिए/चाहिए था/चाहिए होगा।
राम को घोड़े चाहिए/चाहिए थे/चाहिए होंगे।
मोहन को पुस्तक चाहिए/चाहिए थी/चाहिए होगी।
मोहन को पुस्तकें चाहिए/चाहिए थीं/चाहिए होंगी।

1 'किज्जे' रूप अपभ्रंश में मिलता है।

संयुक्त क्रियापद

४७७. जब (क) दो या दो से अधिक धातुओं अथवा क्रिया-रूपों के योग से तथा (ख) नामपद और धातु या क्रिया-रूप के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रियापद कहते हैं; जैसे—

(क) राम चला जाएगा।
(चल तथा जा धातुओं से बना संयुक्त क्रियापद)

(ख) मोहन सो रहा था।
(सो तथा रह धातुओं से बना संयुक्त क्रियापद)

(ग) उसने मेरा मत स्वीकार किया।
(स्वीकार नामपद और कर धातु से बना संयुक्त क्रियापद)

(घ) डाक्टर ने लड़के को अच्छा किया।
(अच्छा नामपद और कर धातु से बना संयुक्त क्रियापद)।

४७८. संयुक्त क्रियापद के प्रथम धातु अथवा उससे बने क्रियारूप को मुख्य क्रियापद और द्वितीय को सहकारी क्रियापद कहते हैं; जैसे—

राम चला जाएगा।

चला	(मुख्य क्रियापद)
जाएगा	(सहकारी क्रियापद)
चला जाएगा	(संयुक्त क्रियापद)

४७९. संयुक्त क्रियापदों में मुख्य क्रियापद के धातु का अर्थ प्रधान होता है।

४८०. संयुक्त क्रियापदों में सहकारी धातु अपने सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

४८१. हिन्दी में सामान्यतया २१ धातुओं से बने सहकारी क्रियापद चलते हैं—

१. आ	पूर्णत्व, उपस्थिति
२. उठ	सहसा होने वाली उन्मुखता
३. कर	प्रायिकता
४. चल	अग्रसरता, निरन्तरता
५. चाह	प्रवृत्ति, संकल्प
६. चुक	निष्पादन, पूर्ति
७. जा	प्रवृत्ति, अग्रसरता, निरन्तरता, पूर्णत्व
८. डाल	तीव्रता
९. दे	सहयोग, वेग, निष्पन्नता
१०. निकल	संचार
११. पड़	आकस्मिक क्रियाशीलता, विवशता

१२. पा आन्तरिक समर्थता
१३. बन अनवरोध
१४. बैठ अग्रसरता, सुस्थितता
१५. मर निश्चयात्मक अप्रिय भाव
१६. रख प्रयोजन
१७. रह सातत्य, उपक्रम
१८. लग आरम्भ
१९. ले आप्ति
२०. सक परिस्थितिजन्य समर्थता
२१. हो स्थिति, प्रयोजन

[टिप्पणी—कुछ अन्य धातुओं के भी सहकारी क्रियापद कुछ विशिष्ट धातुओं के साथ ही प्रयुक्त होते हैं। ऐसे प्रयोग मुहावरों के अन्तर्गत आते हैं; जैसे—

(क) एक दिन वह अपने सारे कुनबे को ले डूबेगा।[1]
(यहाँ 'ले डूबना' मुहावरा है)

(ख) जैसे कोई खोटा ग्रह सावन और भादों के महीनों के बीच से वर्षा को ले बीतता है।[2] (यहाँ 'ले बीतना' मुहावरा है)

४८२. मुख्य क्रियापद धातु रूप में हो तो निम्नलिखित १६ धातुओं से बने सहकारी क्रियापद विभिन्न लकारों में आते हैं—

सकर्मक धातु:
१. डाल
२. दे
३. ले
४. रख

अकर्मक धातु:
५. आ
६. उठ
७. चल
८. चुक
९. जा
१०. निकल
११. पड़
१२. पा
१३. बैठ
१४. मर
१५. रह
१६. सक

1 प्रभाकर माचवे, साँचा, पृ० ४।
2 सीताराम चतुर्वेदी, कालिदास ग्रन्थावली।

४८३. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'सक' धातु से बने सहकारी क्रियापद परिस्थितिजन्य समर्थता एवम् अनुमति सूचित करते हैं; जैसे—

मुख्य धातु 'पढ़' और सहायक धातु 'सक' से बने लकार

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार—

(क) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

राम पढ़ सकता है	राम पढ़ सकता था	राम पढ़ सकता होगा (नियम ३५९)
वह पढ़ सकता है	वह पढ़ सकता था	वह पढ़ सकता होगा (नियम ३६२)
तू पढ़ सकता है	तू पढ़ सकता था	तू पढ़ सकता होगा (नियम ३६२)
मैं पढ़ सकता हूँ	मैं पढ़ सकता था	मैं पढ़ सकता हूँगा (नियम ३६४)

(ख) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

सीता पढ़ सकती है	सीता पढ़ सकती थी	सीता पढ़ सकती होगी (नियम ३६१)
वह पढ़ सकती है	वह पढ़ सकती थी	वह पढ़ सकती होगी (नियम ३६१)
तू पढ़ सकती है	तू पढ़ सकती थी	तू पढ़ सकती होगी (नियम ३६१)
मैं पढ़ सकती हूँ	मैं पढ़ सकती थी	मैं पढ़ सकती हूँगी (नियम ३६४)

(ग) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

लड़के पढ़ सकते हैं	लड़के पढ़ सकते थे	लड़के पढ़ सकते होंगे (नियम ३६५)
वे पढ़ सकते हैं	वे पढ़ सकते थे	वे पढ़ सकते होंगे (नियम ३६८)
तुम पढ़ सकते हो	तुम पढ़ सकते थे	तुम पढ़ सकते होगे (नियम ३६९)
हम पढ़ सकते हैं	हम पढ़ सकते थे	हम पढ़ सकते होंगे (नियम ३७०)

(घ) उद्देश्य—स्त्रीलिंग बहुवचन

लड़कियाँ पढ़ सकती हैं	लड़कियाँ पढ़ सकती थीं	लड़कियाँ पढ़ सकती होंगी (नियम ३६६)
वे पढ़ सकती हैं	वे पढ़ सकती थीं	वे पढ़ सकती होंगी (नियम ३६८)
तुम पढ़ सकती हो	तुम पढ़ सकती थीं	तुम पढ़ सकती होंगी/होगी (नियम ३७०, ३७१)
हम पढ़ सकती हैं	हम पढ़ सकती थीं	हम पढ़ सकती होंगी (नियम ३६८)

(२) निष्पन्नतामूलक लकार—

(क) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

लड़का/वह पढ़ सका है	लड़का/वह पढ़ सका था	लड़का/वह पढ़ सका होगा
तू पढ़ सका है	तू पढ़ सका था	तू पढ़ सका होगा
मैं पढ़ सका हूँ	मैं पढ़ सका था	मैं पढ़ सका हूँगा

(ख) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

वह पढ़ सकी है	वह पढ़ सकी थी	वह पढ़ सकी होगी
तू पढ़ सकी है	तू पढ़ सकी थी	तू पढ़ सकी होगी
मैं पढ़ सकी हूँ	मैं पढ़ सकी थी	मैं पढ़ सकी हूँगी

(ग) उद्देश्य—पुंलिंग बहुवचन

वे पढ़ सके हैं	वे पढ़ सके थे	वे पढ़ सके होंगे
तुम पढ़ सके हो	तुम पढ़ सके थे	तुम पढ़ सके होगे
हम पढ़ सके हैं	हम पढ़ सके थे	हम पढ़ सके होंगे

(घ) उद्देश्य—स्त्रीलिंग बहुवचन

वे पढ़ सकी हैं	वे पढ़ सकी थीं	वे पढ़ सकी होंगी
तुम पढ़ सकी हो	तुम पढ़ सकी थीं	तुम पढ़ सकी होगी/होंगी
हम पढ़ सकी हैं	हम पढ़ सकी थीं	हम पढ़ सकी होंगी

(३) औचित्यमूलक लकार—

लड़के को पढ़ सकना है	लड़के को पढ़ सकना था	लड़के को पढ़ सकना होगा
लड़की को पढ़ सकना है	लड़की को पढ़ सकना था	लड़की को पढ़ सकना होगा
हमको पढ़ सकना है	हमको पढ़ सकना था	हमको पढ़ सकना होगा

(४) तथ्यमूलक लकार—

(क) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

वह पढ़ सकता है	वह पढ़ सका	वह पढ़ सकेगा
तू पढ़ सकता है	तू पढ़ सका	तू पढ़ सकेगा
मैं पढ़ सकता हूँ	मैं पढ़ सका	मैं पढ़ सकूँगा

(ख) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

वह पढ़ सकती है	वह पढ़ सकी	वह पढ़ सकेगी
तू पढ़ सकती है	तू पढ़ सकी	तू पढ़ सकेगी
मैं पढ़ सकती हूँ	मैं पढ़ सकी	मैं पढ़ सकूँगी

(ग) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

वे पढ़ सकते हैं	वे पढ़ सके	वे पढ़ सकेंगे
तुम पढ़ सकते हो	तुम पढ़ सके	तुम पढ़ सकोगे
हम पढ़ सकते हैं	हम पढ़ सके	हम पढ़ सकेंगे

(घ) उद्देश्य—स्त्रीलिंग बहुवचन

वे पढ़ सकती हैं	वे पढ़ सकीं	वे पढ़ सकेंगी
तुम पढ़ सकती हो	तुम पढ़ सकीं	तुम पढ़ सकोगी
हम पढ़ सकती हैं	हम पढ़ सकीं	हम पढ़ सकेंगी

(५) संकेतमूलक लकार—

(क) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

वह पढ़ सके	वह पढ़ सकता	वह पढ़ सका
तू पढ़ सके	तू पढ़ सकता	तू पढ़ सका
मैं पढ़ सकूँ	मैं पढ़ सकता	मैं पढ़ सका

(ख) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

वह पढ़ सके	वह पढ़ सकती	वह पढ़ सकी
तू पढ़ सके	तू पढ़ सकती	तू पढ़ सकी
मैं पढ़ सकूँ	मैं पढ़ सकती	मैं पढ़ सकी

(ग) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

वे पढ़ सकें	वे पढ़ सकते	वे पढ़ सके
तुम पढ़ सको	तुम पढ़ सकते	तुम पढ़ सके
हम पढ़ सकें	हम पढ़ सकते	हम पढ़ सके

(घ) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

वे पढ़ सकें	वे पढ़ सकतीं	वे पढ़ सकीं
तुम पढ़ सको	तुम पढ़ सकतीं	तुम पढ़ सकी/सकीं
हम पढ़ सकें	हम पढ़ सकतीं	हम पढ़ सकीं

(६) सम्भावनामूलक लकार—

(क) उद्देश्य—पुंलिंग एकवचन

वह पढ़ सकता होगा	वह पढ़ सका होगा	वह पढ़ सके
तू पढ़ सकता होगा	तू पढ़ सका होगा	तू पढ़ सके
मैं पढ़ सकता हूँगा	मैं पढ़ सका हूँगा	मैं पढ़ सकूँ

(ख) उद्देश्य—स्त्रीलिंग एकवचन

वह पढ़ सकती होगी	वह पढ़ सकी होगी	वह पढ़ सके
तू पढ़ सकती होगी	तू पढ़ सकी होगी	तू पढ़ सके
मैं पढ़ सकती हूँगी	मैं पढ़ सकी हूँगी	मैं पढ़ सकूँ

(ग) उद्देश्य—पुंलिंग बहुवचन

वे पढ़ सकते होंगे	वे पढ़ सके होंगे	वे पढ़ सकें
तुम पढ़ सकते होगे	तुम पढ़ सके होगे	तुम पढ़ सको
हम पढ़ सकते होंगे	हम पढ़ सके होंगे	हम पढ़ सकें

(घ) उद्देश्य—स्त्रीलिंग बहुवचन

वे पढ़ सकती होंगी	वे पढ़ सकी होंगी	वे पढ़ सकें
तुम पढ़ सकती होगी	तुम पढ़ सकी होगी	तुम पढ़ सको
हम पढ़ सकती होंगी	हम पढ़ सकी होंगी	हम पढ़ सकें

(७) आदेशमूलक लकार—

(क) उद्देश्य—एकवचन (मध्यम पुरुष)

तू पढ़/सक/दे	—	—

(ख) उद्देश्य—बहुवचन (मध्यम पुरुष)

तुम पढ़/सको/दो	—	—

[टिप्पणी—'सक' धातु सामर्थ्यसूचक है। अतः इसके द्वारा आदेश देना सम्भव नहीं। यहाँ 'दे' धातु से आशय स्पष्ट हो जाता है।]

(८) निदेशमूलक लकार—

उद्देश्य—मध्य पुरुष

—	—	तू पढ़/सकना/देना
—	—	तुम पढ़/सकना/देना

[टिप्पणी—यहाँ भी 'दे' धातु से आशय स्पष्ट होता है।]

४८४. आवश्यकतामूलक लकारों को छोड़कर शेष सभी लकारों में संयुक्त क्रियापदों का प्रयोग हो सकता है।

[टिप्पणी—प्रश्न हो सकता है कि आवश्यकतामूलक लकार ही इस बिरादरी से बाहर क्यों? उत्तर में कहा जा सकता है कि आवश्यकतामूलक लकार तो केवल एक धातु से बने क्रियापदों तक ही सीमित है।]

४८५. संयुक्त क्रियापद के मुख्य क्रियापद के विचार से नहीं अपितु सहकारी क्रियापद के विचार से उद्देश्य में 'ने' तथा 'को' विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग होता है; जैसे—

(क) राम पढ़ सकता है।

(ख) राम पुस्तक पढ़ सकता है।

(ग) राम पुस्तक पढ़ सका है।

[टिप्पणी—(ग) वाक्य में 'पढ़ सका है' संयुक्त क्रियापद है। अर्थ की दृष्टि से 'पढ़' सकर्मक है अतः क्रियापद सकर्मक हुआ। सहकारी क्रियापद यहाँ आप्रत्ययान्त क्रियारूप में है और 'सक' अकर्मक धातु है अतः कर्ता में 'ने' विभक्ति-परसर्ग नहीं आया। 'राम ने पुस्तक पढ़ी है' ठीक है परन्तु 'राम ने पुस्तक पढ़ सकी है' अशुद्ध।]

४८६. यदि संयुक्त क्रियापद का मुख्य अथवा सहकारी क्रियापद नाप्रत्ययान्त क्रियारूप हो तो कर्ता में 'को' विभक्ति-परसर्ग अवश्य आता है; जैसे—

राम को पढ़ सकना है।

राम को पढ़ना होता है।

४८७. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'डाल' धातु से बने सहकारी क्रियापद 'तीव्रता' की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार—

उद्देश्य पुंलिंग एकवचन	वह पढ़ डालता है	वह पढ़ डालता था	वह पढ़ डालता होगा
	तू पढ़ डालता है	तू पढ़ डालता था	तू पढ़ डालता होगा
	मैं पढ़ डालता हूँ	मैं पढ़ डालता था	मैं पढ़ डालता हूँगा

[शेष सभी रूप 'सक' के समान हैं। देखें नियम ४८३ के अन्तर्गत सभी लकारों के उदाहरण]

४८८. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'दे' धातु से बने सहकारी क्रियापद सहयोग एवम् वेग की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—
[सहयोग—अर्थ में]
वह पत्र पढ़ देता है/वह पत्र पढ़ देता था/वह पत्र पढ़ देता होगा ।
[वेग—अर्थ में]
वह दिल्ली से चल देता है/वह दिल्ली से चल देता था/
वह दिल्ली से चल देता होगा ।

४८९. पटक, फेंक, मार, दबोच, रगड़ आदि मुख्य धातु के रूप में हों तो सहकारी 'दे' धातु से स्थान-परिवर्तन भी होता है और फलस्वरूप विवक्षागत अन्तर भी; जैसे—

क–१. वह पहलवान को पटक देता है ।
२. वह पहलवान को दे पटकता है ।
ख–१. राम ने दुकानदार को पत्थर मार दिया है ।
२. राम ने दुकानदार को पत्थर दे मारा है ।

[टिप्पणी—क–१. में 'पटक' मुख्य धातु है और 'दे' सहायक धातु जबकि क–२. में 'दे' मुख्य धातु हो गया है और 'पटक' सहायक धातु । इसी प्रकार ख–१. तथा ख–२. में भी समझें ।]

४९०. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'ले' तथा 'बैठ' धातु से बने सहकारी क्रियापद क्रमशः आप्ति तथा अग्रसरता की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

वह पुस्तक खरीद लेता है ।
मैं घोड़ा खरीद लूंगा ।
केशो का स्वभाव बचपन से तेज था और बात-बात पर लड़ बैठता था । —प्रभाकर माचवे[1]

४९१. मुख्य क्रियापद धातु हो तो 'रख' धातु से बने सहकारी क्रियापद प्रयोजन सम्बन्धी विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

वह टोपी पहन रखता है ।
मैं प्रबन्ध कर रखूंगा ।

[1] साँचा, पृ० ३ ।

४६२. छोड़, देख आदि मुख्य धातुओं का सहकारी 'रख' धातु से स्थान-परिवर्तन भी होता है और फलस्वरूप विवक्षागत अन्तर भी; जैसे—

क–१. उसने दूत छोड़ रखा है।
२. उसने दूत रख छोड़ा है।
ख–१. कोई लड़का देख रखें।
२. कोई लड़का रख देखें।

४६३. मुख्य क्रियापद धातु हो तो 'आ' धातु से बने सहकारी क्रियापद (क) पूर्णत्व एवम् (ख) उपस्थिति सूचित करते हैं; जैसे—

वह खेल आता है। (पूर्णत्व)
वह छत पर चढ़ आता है। (उपस्थिति)

४६४. मुख्य क्रियापद धातु हो तो 'उठ' धातु से बने सहकारी क्रियापद 'सहसा होनेवाली उन्मुखता' सूचित करते हैं; जैसे—

वह नाच उठता है।
फूल खिल उठता है।

४६५. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'चल' धातु से बने सहकारी क्रियापद अग्रसरता की विवक्षा सूचित करते हैं और 'निकल' धातु से बने सहकारी क्रियापद संचार की विवक्षा करते हैं; जैसे—

मकान बन चला है।
हिसाब हो चला है।
अखबार चल निकला है।
उधर से भी हो निकलना।

४६६. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'चुक' धातु से बने सहकारी क्रियापद निष्पादन की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

वह खा चुकता है।
मैं खा चुका हूँ।

४६७. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'जा' धातु से बने सहकारी क्रियापद प्रवृत्ति एवम् पूर्णत्व की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

वह सो जाता है। (प्रवृत्ति)
वह पढ़ जाता है। (पूर्णत्व)

४६८. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'पड़' धातु से बने सहकारी क्रियापद आकस्मिक क्रियाशीलता की विवक्षा सूचित करते हैं; जैसे—

वह गिर पड़ता है।
मैं हँस पड़ता हूँ।

४९९. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'पा' धातु से बने सहकारी क्रियापद आन्तरिक समर्थता सूचित करते हैं; जैसे—

वह पढ़ पाता है।
मैं लिख पाता हूँ।

५००. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'मर' धातु से बने सहकारी क्रियापद निश्चयात्मक अप्रिय भाव सूचित करते हैं; जैसे—

बाज़ कबूतर को ले मरता है।

५०१. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'रह' धातु के सहकारी क्रियापद सातत्य एवम् उपक्रम की विवक्षा सूचित करते हैं।

५०२. मुख्य क्रियापद धातु के रूप में हो तो 'रह' धातु से बने आप्रत्ययान्त क्रियारूप ही प्रयुक्त होते हैं और वे भी कालवाचक सहायक शब्दों के साथ; जैसे—

'सातत्य' अर्थ में—

लड़का पढ़ रहा है[1]	लड़का पढ़ रहा था	लड़का पढ़ रहा होगा
वह पढ़ रहा है	वह पढ़ रहा था	वह पढ़ रहा होगा
तू पढ़ रहा है	तू पढ़ रहा था	तू पढ़ रहा होगा
मैं पढ़ रहा हूँ	मैं पढ़ रहा था	मैं पढ़ रहा हूँगा
लड़की पढ़ रही है	लड़की पढ़ रही थी	लड़की पढ़ रही होगी
वह पढ़ रही है	वह पढ़ रही थी	वह पढ़ रही होगी
तू पढ़ रही है	तू पढ़ रही थी	तू पढ़ रही होगी
मैं पढ़ रही हूँ	मैं पढ़ रही थी	मैं पढ़ रही हूँगी
लड़के पढ़ रहे हैं	लड़के पढ़ रहे थे	लड़के पढ़ रहे होंगे
वे पढ़ रहे हैं	वे पढ़ रहे थे	वे पढ़ रहे होंगे
तुम पढ़ रहे हो	तुम पढ़ रहे थे	तुम पढ़ रहे होगे
हम पढ़ रहे हैं	हम पढ़ रहे थे	हम पढ़ रहे होंगे
लड़कियाँ पढ़ रही हैं	लड़कियाँ पढ़ रही थीं	लड़कियाँ पढ़ रही होंगी
वे पढ़ रही हैं	वे पढ़ रही थीं	वे पढ़ रही होंगी
तुम पढ़ रही हो	तुम पढ़ रही थीं	तुम पढ़ रही होगी/होंगी
हम पढ़ रही हैं	हम पढ़ रही थीं	हम पढ़ रही होंगी

[1] अनेक हिन्दी व्याकरण धातु+रहा+कालवाचक सहायक शब्दों के रूप में क्रियापद होने पर सातत्यबोधक काल मानते हैं।

'उपक्रम' अर्थ में—

वह दिल्ली जा रहा है।
(अर्थात् वह दिल्ली जाने की तयारी कर रहा है)

५०३. धातु के रूप में प्रयुक्त मुख्य क्रियापद को पूर्वकालिक क्रियापद और सहकारी क्रियापद को मुख्य क्रियापद उस समय माना जाता है, जब सहकारी धातु पूर्वलिखित धातुओं से भिन्न हो अथवा वह विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त न होकर सामान्य अर्थ में प्रयुक्त हो; जैसे—

नदी समुद्र में जा मिली।
वह आ धमकता है।
वह वहाँ जा रहता है।

[टिप्पणी—यहाँ 'मिल' और 'धमक' धातु पूर्वलिखित सहकारी धातुओं से भिन्न हैं। 'रह' धातु पूर्वलिखित धातुओं में से अवश्य है परन्तु वह यहाँ अपने सामान्य अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। अतः इन तीनों धातुओं से बने क्रियापद मुख्य क्रियापद हैं। 'जा' और 'आ' धातु यहाँ पूर्वकालिक क्रियापद हैं।]

५०४. सामान्यतया पूर्वकालिक क्रियापद धातु में 'कर' प्रत्यय लगाने से बनते हैं और इस बात के सूचक होते हैं कि कर्ता मुख्य क्रिया करने से पहले इसे सम्पन्न करता है; जैसे—

राम खाकर जाएगा।
वह नहाकर खाता है।

५०५. 'कर' धातु में 'कर' प्रत्यय के स्थान पर 'के' प्रत्यय के योग से पूर्वकालिक क्रियापद बनते हैं; जैसे—

वह काम करके जाएगा।

५०६. पूर्वकालिक क्रियापद क्रियाविशेषण का काम करते हैं।

५०७. पूर्वकालिक क्रियापद कुछ अवसरों पर कारण, रीति, साधन, अवस्थिति आदि के भी सूचक होते हैं; जैसे—

वह उनके साथ रहकर रोता है। (कारण)
लड़का दौड़कर मिठाई लाता है। (रीति)
वह फाँसी लगाकर मर जाएगा। (साधन)
वह हिन्दू होकर मदिरा पीता है। (अवस्थिति)

५०८. मुख्य क्रियापद नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप हो तो रह, पड़ तथा हो धातुओं से बने सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५०९. सहकारी धातु 'रह' आवश्यकता 'पड़' विवशता तथा 'हो' इच्छा एवम् प्रयोजन की विवक्षा इंगित करता है; जैसे—

[देखें नियम ४३७]

राम को जाना रहता है। (आवश्यकता)

राम को जाना पड़ता है। (विवशता)

राम को जाना होता है। (प्रयोजन)

[देखें नियम ४२८]

राम को पुस्तक पढ़ना रहता है।

मोहन को घोड़े खरीदने रहते हैं।

५१०. मुख्य क्रियापद नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप हो तो उसके साथ 'चाह' धातु के सहकारी क्रियापद भी प्रयुक्त होते हैं।

५११. नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप के साथ जब 'चाह' धातु के सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं तब (क) कर्ता में 'को' विभक्ति-परसर्ग नहीं आता एवम् नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप प्रकृत में ही रहता है; जैसे—

लड़का आना चाहता है।

लड़की आना चाहती है।

लड़के आना चाहते हैं।

लड़कियाँ आना चाहती हैं।

मोहन घोड़ा खरीदना चाहता है।

मोहन पुस्तक खरीदना चाहता है।

मोहन घोड़े खरीदना चाहता है।

मोहन पुस्तकें खरीदना चाहता है।

[टिप्पणी—

(क) कुछ लोग 'मोहन पुस्तक खरीदनी चाहता है' को शुद्ध बतलाते हैं परन्तु उनके मत से 'मोहन घोड़े खरीदने चाहता है' भी तो होना चाहिए। परन्तु ऐसा होता नहीं।

(ख) आवश्यकतामूलक लकार बिल्कुल अलग चीज है यह बात मस्तिष्क में बैठा लेनी चाहिए।]

५१२. नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप में विकल्प से विकार होते हैं जब कर्ता के 'ने' विभक्ति-परसर्ग से युक्त होने पर वह कर्म के लिंग-वचन से शासित होता है; जैसे—

उसने घोड़ा खरीदना चाहा।
सीता ने घोड़ा खरीदना चाहा।
सीता ने घोड़ी खरीदना चाही।
सोहन ने पुस्तकें खरीदना चाहीं। } नियम ५११ से
कृष्ण ने घोड़ा खरीदना चाहा।
उसने घोड़ा खरीदना चाहा।
सीता ने घोड़ी खरीदनी चाही।
मोहन ने पुस्तकें खरीदनी चाहीं।
कृष्ण ने घोड़े खरीदने चाहे।

५१३. मुख्य क्रियापद रूप में नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूप एकारान्त हो जाता है जब उसके साथ लग, पा तथा दे धातुओं के सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५१४. सहकारी धातु 'लग' आरम्भ अर्थ में, 'पा' अनवरोध अर्थ में तथा 'दे' धातु सहयोग अर्थ में प्रयुक्त होता है; जैसे—

वह गाने लगा है। (आरम्भ)
वह जाने पाएगा। (अनवरोध)
वह नहाने देगा। (सहयोग)

५१५. मुख्य क्रियापद ताप्रत्ययान्त क्रिया-रूप में रहता है जब उसके साथ रह, जा तथा चल धातुओं से बने सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५१६. 'रह' धातु से बने सहकारी क्रियापद प्रायिकतासूचक होते हैं, 'जा' धातु से बने सहकारी क्रियापद अग्रसरतासूचक एवम् चल धातु से बने सहकारी क्रियापद निरन्तरतासूचक होते हैं; जैसे—

लड़का जाता रहता है। (प्रायिकता)
मोहन पढ़ता ज़ाता है। (अग्रसरता)
सोहन खेलता चलता है। (निरन्तरता)

५१७. मुख्य क्रियापद आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप रहता है जब उसके साथ रह, हो, पड़, वैठ तथा जा धातु से बने सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५१८. सहकारी धातु 'हो' से बने क्रियापद स्थितिसूचक तथा 'रह' धातु से बने क्रियापद प्रवृत्तिसूचक होते हैं; जैसे—

लड़का आया होता है। (स्थितिसूचक)
मोहन बैठा रहता है। (प्रवृत्तिसूचक)

५१९. सहकारी धातु पड़, बैठ तथा जा से बने क्रियापद क्रमशः अग्रसरता, सुस्थितता तथा निरन्तरता के सूचक होते हैं; जैसे—

आँसू निकले पड़ते थे। (अग्रसरता)
चोर छिपा बैठा था। (सुस्थितता)
साड़ियाँ पहनी जा रही थीं। (निरन्तरता)

५२०. ताप्रत्ययान्त एवम् आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप एकारान्त रूप में ही प्रयुक्त होते हैं यदि उनके साथ सामर्थ्य अर्थ में 'बन' धातु के सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५२१. जब सहकारी क्रियापद बन धातु से निर्मित होते हैं तब कर्ता में 'से' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

उससे चलते नहीं बनता।
उससे चलते नहीं बना।
मुझसे खेले नहीं बनता।
मुझसे खेले नहीं बना।
राम से पुस्तक खरीदते नहीं बनती।
हम से घोड़े खरीदते नहीं बने।

५२२. मुख्य क्रियापद रूप में आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप उस समय प्रकृत रूप में ही रहता है जब उसके साथ 'कर' अथवा 'चाह' धातुओं से बने सहकारी क्रियापद आते हैं।

५२३. प्रायिकता सूचनार्थ 'कर' धातु से बने सहकारी क्रियापदों का और सम्भावना सूचनार्थ 'चाह' धातु से बने क्रियापदों का प्रयोग होता है; जैसे—

राम आया करता है।
सीता आया करती है।
मोहन आया चाहता है।
राधा आया चाहती है।

५२४. 'कर' या 'चाह' धातु से बने सहकारी क्रियापदों का प्रयोग होने पर 'जा' धातु से बने 'जाया' आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप का प्रयोग होता है; जैसे—

राम जाया करता है।
राम जाया चाहता है।
सीता जाया करती है।
सीता जाया चाहती है।

५२५. मुख्य क्रियापद के रूप में आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप एकारान्त हो जाता है जब जा, चल, दे, था, बैठ धातु से बने सहकारी क्रियापद प्रयुक्त होते हैं।

५२६. निरन्तरता सूचित करने के लिए 'जा' तथा 'चल' धातु के सहकारी क्रियापदों का, निष्पन्नता सूचित करने के लिए 'दे' धातु के क्रियापदों का तथा सुस्थितता सूचित करने के लिए 'बैठ' धातु के क्रियापदों का प्रयोग होता है; जैसे—

वह आम खाए जाता है।	(निरन्तरता)
वह आम खाए चलता है।	(,,)
वह पुस्तक लाए देता है।	(निष्पन्नता)
वह घड़ी दबाए बैठा है।	(सुस्थितता)

५२७. जा, बैठ तथा दे धातु से बने सहकारी क्रियापद ताप्रत्ययान्त एवम् आप्रत्ययान्त क्रिया-रूपों में ही प्रयुक्त होते हैं यदि मुख्य क्रियापद एकारान्त में हो।

५२८. संयुक्त क्रियापद के सहकारी धातु को आधार बनाकर आनुषंगिक रूप से द्वितीय एवम् तृतीय सहकारी धातुओं के क्रियापदों का प्रयोग भी होता है; जैसे—

वह दांत बनाता है।
वह दांत बनाता चलता है।
वह दांत बनाता चल रहा है।
वह दांत बनाता चला जा रहा है।

५२९. नामपदों तथा धातुओं के योग से भी संयुक्त क्रियापद बनते हैं; जैसे—

वह मुझको रुपया उधार देगा।
[उधार (संज्ञापद) + दे (धातु)]

राष्ट्रपति संसद भंग करते हैं।
[भंग (संज्ञापद) + कर (धातु)]

ईश्वर उसको मुक्ति प्रदान करे।
[प्रदान (संज्ञापद) + कर (धातु)]

डाक्टर ने रोगी को अच्छा किया।
[अच्छा (संज्ञाविशेषण) + कर (धातु)]

ज्वर से उसका चेहरा काला पड़ गया।
[काला (संज्ञाविशेषण) + पड़ (धातु)]

वे गन्दगी दूर करेंगे।
[दूर (क्रियाविशेषण) + कर (धातु)]

तुम्हारी बात होकर रहेगी।
[होकर (क्रियाविशेषण) + रह (धातु)]

उसे (शहर के किनारे को) छोड़ते ही महासागर शुरू हो जाता था।[1]
—श्रीलाल शुक्ल

वाच्य

५३०. वाच्य अर्थात् कथन-प्रकार के विचार से वाक्य-रचना के तीन भेद किये जाते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवम् भाववाच्य।[2]

५३१. अकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य वाक्य-रचनाएँ बनती हैं एवम् सकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य वाक्य-रचनाएँ।

[1] रागदरबारी, तृतीय संस्करण, पृ० १।

[2] संस्कृत व्याकरण में लज्जा, सत्ता आदि अर्थसूचक धातुओं को अकर्मक तथा शेष को सकर्मक माना गया है। अकर्मक धातुओं से कर्ता के अनुसार क्रिया होने पर कर्तृवाच्य और कर्ता के तृतीया विभक्ति से युक्त होने पर भाववाच्य। भाववाच्य में क्रिया अन्य पुरुष तथा एकवचनांत ही होती है।

सकर्मक धातुओं से कर्ता के अनुसार क्रिया होने पर कर्तृवाच्य तथा कर्म के अनुसार क्रिया होने पर कर्मवाच्य। कर्मवाच्य में कर्ता तृतीयान्त और कर्म प्रथमान्त होता है।

हिन्दी वैयाकरणों ने वाच्य के सम्बन्ध में विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। वर्तमान हिन्दी भाषा की प्रकृति को दृष्टि में रखकर प्रस्तुत ग्रन्थ में वाच्य का नये सिरे से प्रतिपादन किया गया है।

५३२. जब अकर्मक एवम् सकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्ता का व्यापार सूचित हो तब वाक्य-रचना कर्तृवाच्य होती है; जैसे—

अकर्मक धातु 'आ' से बने क्रियापद—

प्रवृत्तिमूलक लकार	राम आता है।
निष्पन्नतामूलक लकार	राम आया है।
औचित्यमूलक लकार	राम को आना है।
तथ्यमूलक लकार	राम आएगा।
सम्भावनामूलक लकार	राम आता होगा।
संकेतमूलक लकार	राम आए।
आदेशमूलक लकार	राम (तू) आ।
निदेशमूलक लकार	राम (तू) आना।
आवश्यकतामूलक लकार	राम को आना चाहिए।

सकर्मक धातु 'खरीद' से बने क्रियापद—

प्रवृत्तिमूलक लकार	राम पुस्तक खरीदता है।
निष्पन्नतामूलक लकार	राम ने पुस्तक खरीदी है।
औचित्यमूलक लकार	राम को पुस्तक खरीदना है।
तथ्यमूलक लकार	राम पुस्तक खरीदेगा।
सम्भावनामूलक लकार	राम पुस्तक खरीदता होगा।
संकेतमूलक लकार	राम पुस्तक खरीदे।
आदेशमूलक लकार	राम (तू) पुस्तक खरीद।
निदेशमूलक लकार	राम (तू) पुस्तक खरीदना।
आवश्यकतामूलक लकार	राम को पुस्तक खरीदनी चाहिए।

सभी क्रियापद कर्ता राम के व्यापार के सूचक हैं।

५३३. अकर्मक धातु से बनी क्रियापदवाली कर्तृवाच्य वाक्य-रचना को भाववाच्य में ढाला जा सकता है।

५३४. भाववाच्य में क्रियापद सदा अन्य पुरुष एकवचन पुंलिग रहता है तथा वह सदा क्रिया का व्यापार सूचित करता है।

५३५. कर्तृवाच्य वाक्य-रचना को भाववाच्य में ढालते समय (क) कर्ता में 'के द्वारा' या 'से' विभक्ति-परसर्ग आता है, (ख) मुख्य क्रियापद को आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप दिया जाता है एवम् (ग) उसके ठीक बाद 'जा' धातु को मुख्य क्रियापद के रूप में रखा जाता है; जैसे—

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
प्रवृत्तिमूलक लकार—	
राम आता है।	राम के द्वारा/से आया जाता है।
सीता आती है।	सीता के द्वारा/से आया जाता है।
मैं आता हूँ।	मेरे द्वारा/मुझसे आया जाता है।
हम आते हैं।	हमारे द्वारा/हमसे आया जाता है।
निष्पन्नतामूलक लकार—	
राम आया है।	राम के द्वारा/से आया गया है।
सीता आई है।	सीता के द्वारा/से आया गया है।
तथ्यमूलक लकार—	
राम आएगा।	राम के द्वारा/से आया जाएगा।
सीता आएगी।	सीता के द्वारा/से आया जाएगा।
संकेतमूलक लकार—	
वह आए।	उसके द्वारा/उससे आया जाए।
मैं आऊं।	मेरे द्वारा/मुझसे आया जाए।
सम्भावनामूलक लकार—	
वह आता होगा।	उसके द्वारा/उससे आया जाता होगा।
वह आती होगी।	उसके द्वारा/उससे आया जाता होगा।
वे आते होंगे।	उनके द्वारा/उनसे आया जाता होगा।

[टिप्पणी—आदेश तथा निदेश व्यक्ति-सापेक्ष होता है, क्रिया-सापेक्ष नहीं। आवश्यकतामूलक लकार सकर्मक धातु से ही बनता है अकर्मक से नहीं। भाववाच्य में औचित्यमूलक लकार के रूप नहीं चलते। औचित्य, आदेश, निदेश तथा आवश्यकतामूलक लकारों के भाववाच्य रूप हिन्दी में प्रयुक्त नहीं होते।]

५३६. भाववाच्य में मुख्य धातु 'जा' का आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप 'जाया' प्रयुक्त होता है; जैसे—

राम जाता है।
राम से जाया जाता है।

५३७. सकर्मक धातु से बने क्रियापदवाली कर्तृवाच्य वाक्य-रचना को कर्मवाच्य में ढाला जा सकता है।

५३८. कर्तृवाच्य वाक्य-रचना को कर्मवाच्य में ढालते समय (क) कर्ता में 'के द्वारा' अथवा 'से' विभक्ति-परसर्ग आता है, (ख) मुख्य क्रियापद को आप्रत्ययान्त क्रिया-रूप दिया जाता है एवम् (ग) उसके ठीक बाद 'जा' धातु को मुख्य क्रियापद के रूप में रखा जाता है।

५३९. कर्तृवाच्य में यदि कर्म विभक्ति-परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय से युक्त हो तो क्रियापद अन्य पुरुष एकवचन ही रहेगा अन्यथा उसमें कर्म के लिंग तथा वचन के अनुरूप विकार होगा।

५४०. कर्मवाच्य में क्रियापद सदा कर्म का व्यापार सूचित करता है; जैसे—

(क) कर्म के विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय से युक्त होने पर—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
प्रवृत्तिमूलक लकार—	
राम घोड़े को खरीदता है।	राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाता है।
सीता घोड़े को खरीदती है।	सीता के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाता है।
राम घोड़ों को खरीदता है।	राम के द्वारा/से घोड़ों को खरीदा जाता है।
सीता घोड़ों को खरीदती है।	सीता के द्वारा/से घोड़ों को खरीदा जाता है।
निष्पन्नतामूलक लकार—	
राम ने घोड़े को खरीदा है।	राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा गया है।
औचित्यमूलक लकार—	
राम को घोड़े को खरीदना है।	राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाना है।
तथ्यमूलक लकार—	
राम घोड़े को खरीदेगा।	राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाएगा।
सम्भावनामूलक लकार—	
राम घोड़ों को खरीदता होगा।	राम के द्वारा/से घोड़ों को खरीदा जाता होगा।
संकेतमूलक लकार—	
राम घोड़े को खरीदे।	राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाए।

(ख) कर्म के विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय से रहित होने पर—

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
प्रवृत्तिमूलक लकार—	
राम घोड़ा लाता है।	राम के द्वारा/से घोड़ा लाया जाता है।
राम पुस्तक लाता है।	राम के द्वारा/से पुस्तक लाई जाती है।
राम घोड़े लाता है।	राम के द्वारा/से घोड़े लाए जाते हैं।
राम पुस्तकें लाता है।	राम के द्वारा/से पुस्तकें लाई जाती हैं।
निष्पन्नतामूलक लकार—	
राम ने घोड़ा खरीदा है।	राम के द्वारा/से घोड़ा खरीदा गया है।
सीता ने घोड़ा खरीदा है।	सीता के द्वारा/से घोड़ा खरीदा गया है।
लड़के ने पुस्तक खरीदी है।	लड़के के द्वारा/से पुस्तक खरीदी गई है।
औचित्यमूलक लकार—	
राम को पुस्तक खरीदनी है।	राम के द्वारा/से पुस्तक खरीदी जानी है।
तथ्यमूलक लकार—	
राम पुस्तक खरीदेगा।	राम के द्वारा/से पुस्तक खरीदी जाएगी।
सम्भावनामूलक लकार—	
राम घोड़ा खरीदता होगा।	राम के द्वारा/से घोड़ा खरीदा जाता होगा।
संकेतमूलक लकार—	
राम पुस्तक खरीदे.....।	राम के द्वारा/से पुस्तक खरीदी जाए.....।
आवश्यकतामूलक लकार—	
राम को घोड़ा खरीदना चाहिए।	राम के द्वारा/से घोड़ा खरीदा जाना चाहिए।

[टिप्पणी—आदेश तथा निदेशमूलक लकारों में कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता।]

५४१. कर्तृवाच्य वाक्य-रचना का मुख्य क्रियापद 'सुन' या 'देख' धातु से बना हो तो कर्मवाच्य में 'जा' के स्थान पर 'दे' या 'पड़' धातु के सहकारी क्रियापदों का प्रयोग विकल्प से होता है।

५४२. कर्मवाच्य में 'जा' के स्थान पर 'दे' या 'पड़' सहकारी धातु का प्रयोग करने पर (क) कर्ता में 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है और मुख्य क्रिया-पद 'आई' प्रत्यययुक्त भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे—

(क) राम शब्द सुनता है। (कर्तृवाच्य)
क–१. राम के द्वारा/से शब्द सुना जाता है। (कर्मवाच्य) (नियम ५३७–५३८)
क–२. राम को शब्द सुनाई पड़ता है। (नियम ५४१–५४२)
क–३. राम को शब्द सुनाई देता है।

(ख) मोहन चित्र देखता है। (कर्तृवाच्य)
ख–१. मोहन के द्वारा/से चित्र देखा जाता है। (कर्मवाच्य)
ख–२. मोहन को चित्र दिखाई पड़ता है। (,,)
ख–३. मोहन को चित्र दिखाई देता है। (,,)

५४३. जब 'बन' धातु के क्रियापद सहकारी रूप में प्रयुक्त होते हैं तो मुख्य क्रियापद के धातु के अकर्मक होने पर भाववाच्य और सकर्मक होने पर कर्मवाच्य होता है; जैसे—

उससे चलते नहीं बनता। [नियम ५२१] (भाववाच्य)
राम से पुस्तक खरीदते नहीं बनती। [,, ,,] (कर्मवाच्य)

५४४. कर्मवाच्य वाक्य-रचना में (क) कर्ता का उल्लेख अनावश्यक, अप्रासंगिक आदि समझकर छोड़ भी दिया जाता है एवम् (ख) कर्म के विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय का विकल्प से लोप हो जाता है; जैसे—

[क]

क–१. राम के द्वारा/से पुस्तक खरीदी जाती है। (कर्मवाच्य)
क–२. पुस्तक खरीदी जाती है। (कर्मवाच्य)

ख–१. राम के द्वारा/से घोड़े को खरीदा जाता है। (कर्मवाच्य)
ख–२. घोड़े को खरीदा जाता है। (कर्मवाच्य)

ग–१. राम को शब्द सुनाई पड़ता है। (कर्मवाच्य)
ग–२. शब्द सुनाई पड़ता है। (कर्मवाच्य)

[ख]

(क) राम चोर को पकड़ता है। (कर्तृवाच्य)

क–१. राम के द्वारा/से चोर को पकड़ा जाता है। (कर्मवाच्य)

क–२. चोर को पकड़ा जाता है। (,,)

क–३. राम के द्वारा/से चोर पकड़ा जाता है। (,,)

क–४. चोर पकड़ा जाता है। (,,)

(ख) सोहन मुझको मारता है। (कर्तृवाच्य)

ख–१. सोहन के द्वारा/से मुझको मारा जाता है। (कर्मवाच्य)

ख–२. मुझको मारा जाता है। (,,)

ख–३. सोहन के द्वारा/से मैं मारा जाता हूँ। (,,)

ख–४. मैं मारा जाता हूँ। (,,)

५४५. उस कर्मवाच्य वाक्य-रचना को कर्म कर्तृक कहते हैं जब कर्म कर्तावत् प्रयुक्त होता है।

५४६. कर्म कर्तृक वाक्य-रचना में कर्तृवाच्य वाक्य-रचना के कर्ता का लोप हो जाता है।

५४७. कर्मवाच्य वाक्य-रचना रचना के सकर्मक धातु से बने क्रियापद को तत्सम्बन्धी अकर्मक धातु से बने क्रियापद का रूप देने से कर्म कर्तृक वाक्य-रचना बनती है; जैसे—

(क) राम घर बनाता है। (कर्तृवाच्य)

क–१. राम के द्वारा/से घर बनाया जाता है। (कर्मवाच्य)

क–२. घर बनता है। (कर्मकर्तृक)

(ख) मोहन मिठाई बाँटता है। (कर्तृवाच्य)

ख–१. मोहन के द्वारा/से मिठाई बाँटी जाती है। (कर्मवाच्य)

ख–२. मिठाई बँटती है। (कर्मकर्तृक)

(ग) कृष्ण दरवाजा खोलता है। (कर्तृवाच्य)

ग–१. कृष्ण के द्वारा/से दरवाजा खोला जाता है। (कर्मवाच्य)

ग–२. दरवाजा खुलता है। (कर्मकर्तृक)

(घ) दरजी कमीज सीता है। (कर्तृवाच्य)

घ–१. दरजी के द्वारा/से कमीज सी जाती है। (कर्मवाच्य)

घ–२. कमीज सिलती है। (कर्मकर्तृक)

छठा प्रकरण

सहायक शब्द

विभक्ति/परसर्ग

५४८. वाक्य के एक पद का सम्बन्ध दूसरे पद से स्थापित करने वाले सहायक शब्दों को विभक्ति या परसर्ग[1] कहते हैं; जैसे—

सीता ने गाय को बाँधा।

[टिप्पणी—'सीता' और 'गाय' नामपद हैं और 'बाँधा' क्रियापद। 'ने' और 'को' सहायक शब्द हैं। 'ने' सीता का सम्बन्ध 'बाँधा' से जोड़ता है और 'को' गाय का सम्बन्ध भी 'बाँधा' से। अतः 'ने' और 'को' दोनो विभक्ति-परसर्ग हुए।]

[1] 'विभक्ति' और 'परसर्ग' इन दो शब्दों में से किसे वरीयता दी जाए, यह निर्णय करना कठिन है। विभक्ति संस्कृत भाषा का शब्द है जो मूलतः प्रत्यय का सूचक है। संस्कृत भाषा में विभक्तियाँ प्रत्ययों की तरह ही प्रयुक्त होती हैं अर्थात् पदों से सटाकर लिखी जाती हैं और उनका अविभाज्य अंग होती हैं। हिन्दी में कुछ विभक्तियाँ तो इस वर्ग में आती हैं परन्तु अधिकतर विभक्तियाँ अधिकतर अवस्थाओं में पदों से सटाकर नहीं लिखी जातीं। संस्कृत में नामपदों की रचना विभक्ति लगने पर ही होती है परन्तु हिन्दी में पदों की रचना में विभक्ति का योग आवश्यक नहीं माना जाता। हिन्दी में नामपद और विभक्ति के बीच निपात भी आ टपकते हैं परन्तु संस्कृत में ऐसा नहीं होता। निश्चय ही संस्कृत की विभक्ति से हिन्दी की विभक्ति भिन्न है। इसके लिए आधुनिक विद्वानों ने 'परसर्ग' शब्द अपनाना उचित समझा है।

यदि शब्दार्थ की दृष्टि से विचार करें तो कह सकते हैं कि विभक्ति वह है जो विभक्त करे। हम देखते हैं कि सामान्यतया कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रियापदों में परिवर्तन होता है परन्तु उसके परे विभक्ति आ जाने पर नहीं। विभक्ति सचमुच क्रियापदों को कर्ता के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुरूप ढलने से रोकती है। जिस संज्ञापद के बाद विभक्ति आती है उसके लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार क्रियापद नहीं बदलता। इस दृष्टि से विभक्ति का प्रयोग सार्थक है। 'परसर्ग' का अर्थ है—जिसकी सृष्टि परे हो। सामान्यतया विभक्ति परे ही रहती है अतः यह नाम भी सार्थक है।

५४९. हिन्दी में छह विभक्ति-प्रत्यय तथा छह ही विभक्ति-परसर्ग हैं ।

विभक्ति-प्रत्यय—अ, ए, एँ, ओं, रा, ना

विभक्ति-परसर्ग—ने, को, से, में, पर, का

५५०. कर्ता कारक में अ विभक्ति-प्रत्यय एवम् ने, को तथा से विभक्ति-परसर्ग आते हैं ।

कर्ता में विभक्ति-प्रत्यय—

अ देखें नियम ४१३

कर्ता में विभक्ति-परसर्ग—

ने देखें नियम ४२६, ४२८, ४३०, ४३१, ४३२

को देखें नियम ४३७, ४७५

से देखें नियम ५२१, ५३५, ५३८

५५१. कर्म कारक में अ, ए तथा एँ विभक्ति-प्रत्यय एवम् 'को' तथा 'से' विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग होता है ।

कर्म में विभक्ति-प्रत्यय—

अ देखें नियम ४१५

ए देखें नियम ५९२

एँ देखें नियम ५९६

कर्म में विभक्ति-परसर्ग—

को देखें नियम ४१४

से देखें नियम ४२३

५५२. क्रिया के निष्पादन में जो नामपद सबसे अधिक साधक होता है उसे करण कहते हैं ।

हिन्दी की जो विभक्तियाँ (ए, एँ, ओं, रा तथा ना) प्रत्यय रूप में सटाकर लिखी जाती हैं उन्हें विभक्ति-प्रत्यय और जो विभक्तियाँ सामान्यतया हटाकर और कुछ अवस्थाओं में सटाकर भी लिखी जाती हैं उन्हें विभक्ति-परसर्ग या केवल परसर्ग कहें तो अच्छा हो ।

संस्कृत में विभक्तियाँ वचन की सूचक भी होती हैं । वहाँ जिस नामपद के बाद विभक्ति आती है, वह उसके वचन से प्रभावित होती है परन्तु हिन्दी में ऐसा नहीं होता । इसके विपरीत हिन्दी की आकारान्त विभक्तियाँ उस नामपद के वचन एवम् लिंग से प्रभावित होती हैं जिससे वह किसी नामपद का सम्बन्ध स्थापित करती है ।

'पुस्तकें हैं' में 'एँ' को विभक्ति मानते हैं हमारे वाजपेयी जी । 'एँ' यहाँ विभक्ति नहीं है बहुवचन का सूचक प्रत्यय है । दे० हिन्दी व्याकरण, पृ० २३ ।

विभक्ति-परसर्गों तथा विभक्ति-प्रत्ययों के प्रयोजन का उल्लेख नियम ४११ में हो चुका है । नियम ४११ है—'कारकत्व सूचित करने के लिए सामान्यतया विभक्ति-परसर्गों तथा विभक्ति-प्रत्ययों का प्रयोग होता है ।'

५५३. करण कारक में 'से' विभक्ति परसर्ग आता है; जैसे—

(क) राम साइकिल से आया।

(ख) मोहन ने छुरी से खरबूजा काटा।

[टिप्पणी—(क) वाक्य में आने की क्रिया में 'साइकिल' एवम् (ख) वाक्य में काटने की क्रिया में 'छुरी' सबसे अधिक साधक है, अतः 'साइकिल' और 'छुरी' करण हुए।]

५५४. जिसे कुछ दिया जाए उसके सूचक नामपद को सम्प्रदान कारक कहते हैं।

५५५. सम्प्रदान कारक में 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

राम मोहन को पुस्तक देता है।

५५६. सम्प्रदान में 'को' विभक्ति-परसर्ग आने पर कर्म में 'को' विभक्ति-परसर्ग नहीं आता; जैसे—

राम मोहन को पुस्तक देता है।

पिता जमाता को अपनी कन्या देता है।

५५७. जिससे विच्छेद हो उसके सूचक नामपद को अपादान कारक कहते हैं।

५५८. अपादान कारक में 'से' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

पत्ता पेड़ से गिरता है।

लड़का घर से आता है।

५५९. जिससे रिश्ता-नाता या स्वामित्व भाव सूचित करना हो उसे सम्बन्ध कारक[1] कहते हैं।

५६०. सम्बन्ध कारक में 'का' विभक्ति-परसर्ग का एकारान्त विकारी रूप 'के' आता है; जैसे—

राम के भतीजी हुई। (नाता)

राम के घोड़ी है। (स्वामित्व भाव)

[1] संस्कृत भाषा में सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता। हिन्दी में भी सम्बन्ध को कारक नहीं माना जाता था। परन्तु आचार्य किशोरीदास जी वाजपेयी ने 'के' को सम्बन्धकारक की विभक्ति सिद्ध किया है।

कुछ विद्वानों का मत है कि 'सीता के लड़की हुई' वाक्य का वास्तविक रूप है—'सीता के यहाँ लड़की हुई' अथवा 'सीता के गर्भ से लड़की हुई' ठीक है। परन्तु 'सीता के भतीजी हुई' का वास्तविक रूप क्या होगा—

'सीता की भाभी के यहाँ लड़की हुई' अथवा 'सीता के भाभी के गर्भ से लड़की हुई'। जरा ध्यान दीजिए। यहाँ 'लड़की' तो पैदा हो गई परन्तु 'भतीजी' कहाँ गई!

फिर 'राम के भाई है' की जगह यदि यह कहा जाए 'राम के यहाँ भाई है' तो सम्भवतः ठीक न होगा

५६१. जो नामपद क्रिया के आधार का सूचक हो उसे अधिकरण कारक कहते हैं।

५६२. अधिकरण कारक में 'में' एवम् 'पर' विभक्ति-परसर्ग आते हैं।

५६३. आधार में निहित अथवा उसके अन्तर्गत स्थित होने की अवस्था सूचित करने के लिए 'में' का प्रयोग होता है; जैसे—

लड़के में सज्जनता है।	(निहित अवस्था)
आँखों में सुरमा है।	(,, ,,)
कानों में बालियाँ हैं।	(,, ,,)
समुद्र में मछलियाँ हैं।	(अन्तर्गत स्थिति)

५६४. आधार के ऊपरी या बाह्य भाग में अथवा उसके निकट स्थित होने की अवस्था सूचित करने के लिए 'पर' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग होता है; जैसे—

मेज पर पुस्तक है।	(ऊपरी भाग में स्थिति)
दीवार पर विज्ञापन चिपका था।	(बाह्य भाग में स्थिति)
सड़क पर मकान है।	(निकट स्थिति)

५६५. जिन नामपदों के बाद विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय आता है उनमें कुछ अवस्थाओं में विकार भी होता है; जैसे—

क—१. घोड़ा घास खाता है।
क—२. घोड़े ने घास खाई।
ख—१. मैं बाजार जाऊँगा।
ख—२. मुझको बाजार जाना है।

५६६. विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर आकारान्त पुंलिंग एकवचन संज्ञापद एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

घोड़ा + को
= घोड़े को
घड़ा + में
= घड़े में
कौआ + ने
= कौए ने

[टिप्पणी—यहाँ ध्यान रहे कि उक्त निर्देश आकारान्त पुंलिंग संज्ञापदों के लिए ही है स्त्रीलिंग संज्ञापदों के लिए नहीं; जैसे—
पाठशाला में लड़के पढ़ते हैं।]

५६७. ऐसे आकारान्त पुंलिग एकवचन संज्ञापद एकारान्त नहीं होते जो (क) उच्च पद के वाचक हों, (ख) विदेशी भूभाग के सूचक हों अथवा (ग) जिनके अन्त में 'इया' या 'ऐया' वर्ण-समूह हो; जैसे—

उच्च पद के वाचक संज्ञापद—

दादा + को
=दादा को

[टिप्पणी—इसी प्रकार चाचा को, मामा को, दारोगा को, मुल्ला को; परन्तु 'भतीजे को' तथा 'साले को' ही होगा 'भतीजा को' तथा 'साला को' नहीं। कारण 'भतीजा' और 'साला' भारतीय परम्परा के अनुसार उच्च पद के वाचक नहीं। इसके विपरीत 'जीजा' उच्च पद का अधिकारी है भले ही उमर में छोटा ही क्यों न हो।]

बिदेशी भूभाग के सूचक संज्ञापद—

अमेरिका + को
=अमेरिका को
बरमा को, अफ्रीका को

अन्त में 'इया या 'ऐया' वर्ण-समूह होने पर—

दरिया + को
=दरिया को

[इसी प्रकार तकिया, जाँघिया आदि में]

साधु बनिया ने न जाने किस-किस उपाय से रुपया कमाया था····।
—सम्पूर्णानन्द[1]

कन्हैया + को
=कन्हैया को
खेवैया + को
=खेवैया को

५६८. बोलियों में ऐसे पुंलिग एकवचन तद्भव तथा देशज संज्ञापदों के अन्त्य आ का ए विकल्प से होता है जिनके अन्त में 'इया' वर्ण-सगूह हो; जैसे—

तकिया + को
=तकिये को
जांघिया + में
=जाँघिये में
बनिया + से
=बनिये से

[1] ब्राह्मण सावधान, पृ० ६।

५६९. विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर भारतीय नगरों, प्रदेशों, व्यक्ति-नामों एवम् उपजातियों के सूचक आकारान्त पुंलिग एकवचन संज्ञापदों के अन्त्य 'आ' को एकारान्त करने की प्रवृत्ति कम हो रही है; जैसे—

भारतीय नगर—

आगरा	(i) आगरे में
	(ii) आगरा में
अम्वाला	(i) अम्वाले में
	(ii) अम्वाला में

[टिप्पणी—पूर्वतः कुछ आकारान्त नगरों के नामों के अन्त्य आ को 'ए' किया जाता था और कुछ के नहीं। अब प्रकृत रूप में ही प्रायः ऐसे नामों को रखा जाता है।]

भारतीय प्रदेश—

राजपूताना	(i) राजपताने में
	(ii) राजपूताना में

व्यक्ति-नाम—

दीना	(i) दीने से
	(ii) दीना से

उपजाति—

खन्ना	(i) खन्ने पर
	(ii) खन्ना पर

५७०. विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर पुंलिग एकवचन संज्ञापद की विशेषता बतलानेवाले आकारान्त संज्ञा-विशेषण भी एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

अच्छा घोड़ा+में
=अच्छे घोड़े में

काला कुत्ता+को
=काले कुत्ते को

मोटा बकरा+पर
=मोटे बकरे पर

बड़ा हाथी+ने
=बड़े हाथी ने

५७१. विशेष्य से परे विभक्ति-परसर्ग हो तो उसकी विशेषता बतलानेवाला संज्ञाविशेषण सदा उससे पहले आता है; जैसे—

लड़का बड़ा है।
(तुम) बड़े लड़के को बुलाओ।

५७२. जिन संज्ञा-विशेषणों के अन्त में इया, ऐया या औआ वर्ण-समूह होते हैं वे एकारान्त नहीं होते; जैसे—

राम बढ़िया घोड़े पर बैठा है।
तुम उस बिचवैया से पूछ सकते हो।
वह इस दिखौआ व्यवहार से प्रसन्न नहीं।

५७३. आकारान्त विदेशी संज्ञा-विशेषण एकारान्त नहीं होते परन्तु 'ताज़ा' आदि कुछ संज्ञा-विशेषणों में विकार विकल्प से होता है; जैसे—

मुहल्ले में हिन्दुओं के ज़्यादा घर हैं।
वह ज़्यादा घरों में जाएगा।
वह उम्दा कारीगर है।
उम्दा कारीगरों ने दरवाज़ा बनाया है।
ताज़ा मक्खन से घी निकलता है।
ताज़े मक्खन से घी निकलता है।

५७४. विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर बहुवचन संज्ञापदों में 'ओं'[1] प्रत्यय आता है तथा इसके परिणामस्वरूप अन्त्य (क) अ, ए, ओ तथा अनुनासिक ए एवम् आ स्वरों का लोप होता है तथा (ख) ऊ एवम् ई स्वर-वर्ण ह्रस्व हो जाते हैं; जैसे—

एकवचन संज्ञापद	बहुवचन संज्ञापद	+	विभक्ति-परसर्ग	=	नवरूप
घर	घर	+	को	=	घरों को/में/से
घोड़ा	घोड़े	+	को	=	घोड़ों को/में/से
रेडियो	रेडियो	+	को	=	रेडियो को/में/से
पुस्तक	पुस्तकें	+	को	=	पुस्तकों को/में/से
गुड़िया	गुड़ियाँ	+	को	=	गुड़ियों को/में/से
तम्बू	तम्बू	+	को	=	तम्बुओं को/में/से
हाथी	हाथी	+	को	=	हाथियों को/में/से

[विशेष देखें—नियम ५७६]

परन्तु

नेता	नेता	+	को	=	नेताओं को
दादा	दादा	+	को	=	दादाओं को

1 'ओं' विकरण माना जाता है। पद और विभक्तियों के बीच जो प्रत्यय आता है उसे हिन्दी व्याकरण में 'विकरण' कहा जाता है।

५७५. समय, स्थान तथा मानसूचक वहुवचन संज्ञापद यदि संख्यासूचक विशेपण से युक्त हों तो विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर उनमें 'ओं' प्रत्यय का अव लोप हो जाता है; जैसे—

	एकवचन	बहुवचन
समयसूचक संज्ञापद	महीना	महीने
,, ,,	घंटा	घंटे
स्थानसूचक संज्ञापद	स्थान	स्थान
मानसूचक संज्ञापद	दर्जन	दर्जन

वह दो महीने पर आया । ('महीनों पर' नहीं)

इस कार्य में दो घंटे से अधिक समय नहीं लगेगा । ('घंटों से' नहीं होगा)

कांग्रेस दो स्थान पर हारी । ('स्थानों पर' नहीं होगा)

हमारा चार दर्जन से क्या होगा । ('दर्जनों से' नहीं होगा)

[टिप्पणी—पुराने लेखकों की कृतियों में 'ओं' का प्रयोग मिलता है ।]

५७६. बहुवचन के सूचक प्रत्यय से पूर्व 'इ' स्वर हो तो 'य्' का आगम होता है; जैसे—

बहुवचन कवि+ने =कवियों ने

,, हाथी+ने

[देखें—नियम ५७४ के अंतर्गत उदाहरण]

=हाथि+ओं+ने

=हथियों ने

५७७. कुछ, कोई और क्या सर्वनामों के अतिरिक्त अन्य सर्वनामों के साथ विभक्ति-परसर्ग सटाकर लिखे जाते हैं परन्तु 'पर' सदा हटाकर ही लिखा जाता है; जैसे—

मैंने, तूने, तुमने, हमने
उसको, किसको, तिसको
इसमें, उस पर, मुझ पर
उन पर

परन्तु,

कुछ ने, क्या का, किसी को

५७८. विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर वह, यह, कौन, कोई, जो, सो, वे और ये सर्वनामों के रूप क्रमशः उस, इस, किस, किसी, जिस, तिस, उन एवम् इन होते हैं।

वह — उस	उसने, उसको, उसमें, उस पर
यह — इस	इसने, इसको, इसमें, इस पर
कौन— किस	किसने, किसको, किसमें, किस पर
कोई— किसी[1]	किसी ने, किसी को, किसी में, किसी पर
जो — जिस	जिसने, जिसको, जिसमें, जिस पर
सो — तिस	तिसने, तिसको, तिसमें, तिस पर
वे — उन	उनने, उनको, उनमें, उन पर
ये — इन	इनने, इनको, इनमें, इन पर

५७९. बहुवचन में किस, जिस तथा तिस के क्रमशः किन, जिन तथा तिन रूप हो जाते हैं; जैसे—

किनने, किनको, किनमें, किन पर
जिनने, जिनको, जिनमें, जिन पर
तिनने, तिनको, तिनमें, तिन पर

५८०. सामान्यतया 'ने' विभक्ति-परसर्ग परे होने पर नकारान्त बहुवचन सर्वनाम रूपों का उपान्त्य व्यंजन वर्ण महाप्राण होता है तथा 'ओं' प्रत्यय भी आता है; जैसे—

[देखें नियम ५७५—'ओं' प्रत्यय लगने पर नामपद के अन्त्य अ····का लोप होता है।]

उन=उ+न्+अ(अपूर्णोच्चरित)
उन+में=उ+न्ह्(+अ लोप)+ओं+ने
=उन्होंने

इसी प्रकार,

इन्होंने, जिन्होंने, किन्होंने, तिन्होंने

[टिप्पणी—हिन्दी में उक्त रूप ही व्यवहृत होते हैं यद्यपि राष्ट्रभाषा पतंजलि स्वामी निगमानन्द जी ने उनने, इनने, जिनने, किनने एवम् तिनने को प्रशस्त माना है। 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका में इन्हीं रूपों का प्रयोग वर्षों से हो रहा है।]

[1] नियम ५७७ के अनुसार जब 'कोई' के साथ विभक्ति-परसर्ग सटाकर नहीं लिखा जाता तब उसके अन्य रूप 'किसी' के साथ भी उसे सटाने का प्रश्न नहीं उठता।

५८१. को, में, पर एवम् से विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर 'मैं' और 'तू' सर्वनामों के क्रमशः 'मुझ' और 'तुझ' रूप होते हैं; जैसे—

मैं — मुझ   मुझको, मुझमें, मुझ पर, मुझसे
तू — तुझ   तुझको, तुझमें, तुझ पर, तुझसे

५८२. 'ने' विभक्ति-परसर्ग परे होने पर मैं, तू, हम और तुम सर्वनाम प्रकृत रूप में रहते हैं; जैसे—

मैंने लोटा खरीदा है।
तूने क्या लिखा है ?
हमने आम खाए।
तुमने कुछ नहीं खोया।

५८३. 'के' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर कुछ अवस्थाओं में 'रे' और 'ने' विभक्ति-प्रत्ययों का भी प्रयोग होता है।

५८४. मैं, तू, हम और तुम सर्वनामों के परे 'के' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'रे' विभक्ति-प्रत्यय आता है।

५८५. 'रे' प्रत्यय का योग होने पर मैं, तू, हम और तुम के रूप क्रमशः मेरे, तेरे, हमारे और तुम्हारे हो जाते हैं; जैसे—

मेरे लड़का हुआ।
तेरे लड़की हुई।
हमारे भतीजा हुआ है।
तुम्हारे भांजी हुई है।

५८६. 'आप' सर्वनाम के साथ 'के' विभक्ति-परसर्ग का भी प्रयोग होता है और उसके स्थान पर 'ने' प्रत्यय का भी।

५८७. 'ने' विभक्ति-प्रत्यय का प्रयोग होने पर 'आप' का रूप 'अपने' हो जाता है।

५८८. 'आप' सर्वनाम के परे 'के' विभक्ति-परसर्ग हो तो वह मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष का बोधक होता है; जैसे—

आपके मकान है।
आपके लड़की हुई है।

['आपके' का यहां अभिप्राय है तुम्हारे, उनके या इनके]

५८९. 'ने' विभक्ति-प्रत्यय से युक्त आप सर्वनाम उत्तम पुरुष का सूचक होता है; जैसे—

अपने मकान है।
अपने लड़की हुई है।

['अपने' से अभिप्राय है हमारे।]

५९०. बोली में सर्वनामों के 'रे' तथा 'ने' विभक्ति-प्रत्ययों से युक्त रूपों के साथ भी को, से, में तथा पर विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग होता है; जैसे—

क–१. मुझको जाना है।[1]
क–२. मेरे को जाना है।
ख–१. वह मुझसे पुस्तक ले गया।[2]
ख–२. वह मेरे से पुस्तक ले गया।
ग–१. उसने हमको बुलाया है।
ग–२. उसने अपने को बुलाया है।

५९१. 'ने' विभक्ति-प्रत्यय से युक्त रूप के साथ विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग तो प्रशस्त है परन्तु 'रे' विभक्ति-प्रत्यय से युक्त रूप के साथ नहीं; जैसे—

उसने तुझको बुलाया है।	(प्रशस्त)
उसने तेरे को बुलाया है।	(अप्रशस्त)
अपने को जाना है।	(प्रशस्त)
हमारे को जाना है।	(अप्रशस्त)

५९२. 'को' विभक्ति-प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से 'ए' विभक्ति-प्रत्यय का प्रयोग मैं, तू, वह, यह, कौन, जो एवम् सो के विकारी रूप के साथ होता है।

५९३. 'को' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर जब कोई विभक्ति-प्रत्यय आता है तब उसके अन्त्य अपूर्णोच्चरित स्वर 'अ' का लोप हो जाता है; जैसे—

मैं / मुझको / मुझे
तू / तुझको / तुझे
वह / उसको / उसे
यह / इसको / इसे
कौन / किसको / किसे
जो / जिसको / जिसे
सो / तिसको / तिसे

[1] औचित्यमूलक लकार।
[2] गौण कर्म में 'से' विभक्ति-परसर्ग।

क–१. मुझको जाना है।
क–२. मुझे जाना है।
ख–१. राम ने मुझको पुस्तक दी।
ख–२. राम ने मुझे पुस्तक दी।
ग–१. तुम उसको बुला लाओ।
ग–२. तुम उसे बुला लाओ।
घ–१. वह किसको मारेगा?
घ–२. वह किसे मारेगा?

५९४. 'को' विभक्ति-प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से 'एँ' विभक्ति-प्रत्यय का प्रयोग बहुवचन सर्वनाम वे, ये, कौन, जो एवम् सो के विकारी रूप के साथ होता है; जैसे—
[देखें नियम ५९३]

वे / उनको / उनें
ये / इनको / इनें
कौन / किनको / किनें
जो / जिनको / जिनें
सो / तिनको / तिनें

५९५. लेखन में सामान्यतया 'एँ' प्रत्यय से पूर्व अनुनासिक व्यंजन को महाप्राण रूप प्राप्त होता है; जैसे—
[यहाँ न् अनुनासिक व्यंजन है]

उनें =उ+न्+एँ
=उ+न्ह्+एँ
=उन्हें

इनें =इ+न्+एँ
=इ+न्ह्+एँ
=इन्हें

किनें =क्+इ+न्+एँ
=क्+इ+न्ह्+एँ
=किन्हें

जिनें =ज्+इ+न्+एँ
=ज्+इ+न्ह्+एँ
=जिन्हें

तिनें =त्+इ+न्+एँ
=त्+इ+न्ह्+एँ
=तिन्हें

५६६. 'हम' और 'तुम' सर्वनामों के परे 'को' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'एँ' विभक्ति-प्रत्यय विकल्प से आता है; जैसे—

हम+एँ
=ह्+अ+म्+अ (अपूर्णोच्चरित)+एँ
=ह्+अ+म्+एँ (नियम ५६३ से)
=ह्+अ+म्ह्+एँ (नियम ५६५ से)
=हम्हें

तुम+एँ
=त्+उ+म्+अ+एँ
=त्+उ+म्+एँ (नियम ५६३ से)
=त्+उ+म्ह्+एँ (नियम ५६५ से)
=तुम्हें

५६७. परिनिष्ठित हिन्दी में 'हम्हें' के स्थान पर 'हमें' रूप ही वरीय माना जाता है।

५६८. 'का' ऐसा विभक्ति-परसर्ग है जो नामपदों का सम्बन्ध नामपदों से तथा क्रियापदों का सम्बन्ध क्रियापदों से जोड़ता है; जैसे—

हम दोपहर का भोजन नहीं करेंगे।
[नामपद (संज्ञापद)+नामपद (संज्ञापद)]

लड़का घर का अच्छा है।
[नामपद (संज्ञापद)+नामपद (विशेषणपद)]

वह ताकता का ताकता रह गया।
(क्रियापद+क्रियापद)

५६९. से, में तथा पर विभक्ति-परसर्ग भी नामपदों का सम्बन्ध नामपदों से जोड़ते हैं; जैसे—

मोहन कृष्ण से अच्छा है।
लड़का जादूगरी में सिद्धहस्त है।
दिन पर दिन बीतते चले जा रहे हैं।

६००. आकारान्त विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय के अन्त्य 'आ' में रूपान्तर सामान्य संज्ञा-विशेषण की तरह तथा उस नामपद के लिंग तथा वचन के अनुसार होता है जिससे वह किसी पद का सम्बन्ध स्थापित करता है; जैसे—

राम का भाई आया है। [भाई—पुंलिग एकवचन]
राम की बहन आई है। [बहन—स्त्रीलिंग एकवचन]
राम के भाई आए हैं। [भाई—पुंलिग बहुवचन]
राम की बहनें आई हैं। [बहनें—स्त्रीलिंग बहुवचन]

[टिप्पणी—'का' उस पद के तो ठीक वाद आता है जिसका सम्बन्ध वह किसी अन्य पद से जोड़ता है परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि जिस पद से सम्बन्ध जोड़ा जा रहा है वह उसके ठीक बाद हो ही, अन्तराल भी हो सकता है; जैसे—

भूठ का रंगीनमिज़ाजी और वेश्यागामिता की लत से घना नाता है....।[1] —अमृतलाल नागर

उक्त वाक्य में 'का' विभक्ति-परसर्ग 'भूठ' संज्ञापद का सम्बन्ध 'नाता' संज्ञापद से जोड़ रहा है।]

६०१. आकारान्त विभक्ति-परसर्ग से युक्त नामपद संज्ञा-विशेषणवत् प्रयुक्त होता है; जैसे—

क–१. भारत का इतिहास।
क–२. भारतीय इतिहास।
ख–१. यह इतिहास भारत का है।
ख–२. यह इतिहास भारतीय है।
ग–१. यह घर का घी है।
ग–२. यह घी घर का है।
घ–१. यह बाजार की मिठाई है।
घ–२. यह मिठाई बाजार की है।

[1] ये कोठेवालियाँ, पृ० ६।

६०२. मैं, तू, हम और तुम सर्वनामों के अनन्तर 'का' विभक्ति-परसर्ग की जगह 'रा' विभक्ति-प्रत्यय आता है।

[टिप्पणी—यहाँ इतना स्पष्ट है कि अन्य सर्वनामों के परे 'का' विभक्ति-परसर्ग ही आता है 'रा' प्रत्यय नहीं; जैसे—

आपका	जिनका
इसका	तिसका
उसका	तिनका
इनका	किसी का
उनका	कुछ का
जिसका	क्या का]

६०३. 'रा' विभक्ति-प्रत्यय परे रहने पर सर्वनामों के अन्त्य अनुनासिक अथवा निरनुनासिक दीर्घ स्वरों का 'ए' हो जाता है; जैसे—

मैं + रा
=म् + ऐं + रा
=म् + ए + रा
=मेरा

तू + रा
=त् + ऊ + रा
=त् + ए + रा
=तेरा

[टिप्पणी—'हम' और 'तुम' का अन्त्य स्वर दीर्घ नहीं।]

६०४. 'रा' विभक्ति-प्रत्यय परे रहने पर सर्वनाम पदों का अन्त्य अपूर्णोच्चरित स्वर दीर्घ हो जाता है तथा उपान्त्य अल्पप्राण व्यंजन महाप्राण हो जाता है; जैसे—

(i) तुम + रा
=त् + उ + म् + अ (अपूर्णोच्चरित) + रा
=त् + उ + म् + आ + रा
=त् + उ + म्ह् + आ + रा
=तुम्हारा

तुम्हारा घोड़ा	तुम्हारी घोड़ी
तुम्हारे घोड़े	तुम्हारी घोड़ियाँ

(ii) हम + रा
=ह् + अ + म् + अ (अपूर्णोच्चरित) + रा
=ह् + अ + म् + आ + रा
=ह् + अ + म्ह् + आ + रा
=हम्हारा

६०५. परिनिष्ठित हिन्दी में 'हम्हारा' की जगह 'हमारा' का प्रयोग होता है; जैसे—

हमारा घोड़ा
हमारी घोड़ी
हमारे घोड़े
हमारी घोड़ियाँ

६०६. 'का' विभक्ति-परसर्ग द्वारा द्योतित सम्बन्ध अनेक प्रकार के हो सकते हैं; जैसे—

(१) स्वस्वाभिभाव[1]	—	राम की घड़ी
(२) सेव्य-सेवकभाव	—	भगवान का भगत
(३) अंगांगिभाव	—	बच्चे का हाथ
(४) जन्यजनकभाव	—	मोहन का लड़का
(५) कर्तृकर्मभाव	—	बिहारी की सतसई
(६) कार्य-कारणभाव	—	सोने का कंठा

६०७. 'रा' विभक्ति-प्रत्यय से युक्त सर्वनामपद विशेषणवत् प्रयुक्त होते हैं इसलिए इन्हें सर्वनाम-विशेषण भी कहते हैं।

६०८. 'आप' सर्वनाम में 'ना' विभक्ति-प्रत्यय के योग से 'अपना' सर्वनाम-विशेषण बनता है।

६०९. 'अपना' सर्वनाम विशेषण कर्ता का सम्बन्ध विशेष्य से सूचित करता है जबकि अन्य सर्वनाम-विशेषण वक्ता या लेखक का सम्बन्ध विशेष्य से प्रकट करते हैं; जैसे—

(क) राम मेरी पुस्तक पढ़ता है।
(ख) राम अपनी पुस्तक पढ़ता है।

[पहले वाक्य में 'मेरी' लेखक या वक्ता के लिए आया है और दूसरे वाक्य में 'अपनी' कर्ता राम के लिए।]

(ग) वह तुम्हारी माँ से कहता है।
[लेखक या वक्ता की दृष्टि से मध्यम पुरुष की माँ से]
(घ) वह मेरी माँ से कहता है।
[लेखक या वक्ता की माँ से]
(ङ) वह अपनी माँ से कहता है।
[कर्ता की माँ से]

[1] यह पूरा का पूरा विवरण राष्ट्रभाषा पतंजलि निगमानन्द जी परमहंस के 'मौलिक हिन्दी व्याकरण' से साभार उद्धृत किया गया है।

६१०. 'का' विभक्ति-परसर्ग युक्त सर्वनाम पद भी सर्वनाम-विशेषणवत् ही प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

वह उसकी माँ से कहता है।

(लेखक या वक्ता की दृष्टि से अन्य पुरुष की माँ से)

[टिप्पणी—इन दो वाक्यों को देखें—

(क) मोहन अपना घोड़ा ले गया।

(ख) मोहन आपका घोड़ा ले गया।

नियम ६०९ के अनुसार 'अपना' मोहन के लिए आया है (अपना सर्वनाम-विशेषण कर्ता का सम्बन्ध विशेष्य से सूचित करता है।) और 'आपका' वक्ता या लेखक की दृष्टि से मध्यम पुरुष का सम्बन्ध सूचित करता है (अन्य सर्वनाम-विशेषण वक्ता या लेखक का सम्बन्ध विशेष्य से प्रकट करते हैं।)]

६११. जब वक्ता या लेखक किसी संज्ञापद द्वारा सूचित व्यक्ति, वस्तु आदि के प्रति स्वामित्व या औपचारिक सम्बन्ध दरसाना चाहता है तब वह 'मेरा' या 'हमारा' का प्रयोग करता है और जब आत्मीयता दरसाना चाहता है तब 'अपना' का; जैसे—

क–१. आज हमारा विद्यालय बन्द है।

क–२. आज अपना विद्यालय बन्द है।

[टिप्पणी—जब स्वामित्व और आत्मीयता दोनों प्रकट करना हो तो दोनों का प्रयोग भी होता है; जैसे—

आज हमारा अपना विद्यालय बन्द है।

आज उसकी अपनी दुकान खुली थी।]

६१२. 'अपना' के एकारान्त रूप में को, से, में तथा पर विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग निजवाचक सर्वनाम के रूप में भी होता है।

६१३. निजवाचक सर्वनाम कर्ता का सूचक होता है; जैसे—

राम अपने को बहादुर समझता है।

राम अपने से आया।

राम अपने में खुश है।

राम विपत्ति अपने पर झेलेगा।

६१४. निजवाचक सर्वनाम उस समय वक्ता या लेखक का सूचक होता है जब उसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से होता है; जैसे—

अपने को जाना था।
अपने से करेंगे।
अपने में दम नहीं रहा।
अपने पर पड़ेगी तो झेलेंगे।

६१५. आप से बना 'आपस' परस्परवाचक सर्वनाम है।

६१६. परस्परवाचक सर्वनाम के साथ 'का' या 'में' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग आवश्यक होता है; जैसे—

यह हमारा आपस का झगड़ा है।
यह झगड़ा हम आपस में तै करेंगे।

६१७. आ, चढ़, जंच, पड़, पहुँच, भा, मिल, रह, लग, सूझ, हो आदि अकर्मक धातुओं से बने क्रियापद के उद्देश्य का आधार यदि कोई प्राणी हो तो उसके परे 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

राम को अँगरेज़ी आती है।
मोहन को बुखार चढ़ा है।
राम को पुस्तक जँची नहीं।
कृष्ण को मार पड़ती है।
सीता को कष्ट पहुँचा।
राधा को मुरली भाती नहीं।
रमेश को सुख मिलेगा।
उसे/उसको ध्यान रहेगा।
मुझे/मुझको चोट लगी थी।
शरण को कविता लिखने की सूझी।[1] —प्रभाकर माचवे
तुम्हें/तुमको दुःख हुआ होगा।

[टिप्पणी—यदि आधार प्राणी न हुआ तो 'को' विभक्ति-परसर्ग नहीं आएगा।

मेरे पैर में चोट लगी।
उसके दिल में दुःख हुआ।]

[1] साँचा, पृ० ६२।

६१८. उद्देश्य का आधार यदि प्राणी हो तो उसके परे भी 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

राम को दुःख है।
कृष्ण को बुखार था।
उसको ध्यान होगा।

६१९. नामपद और आ हो, तथा लग धातुओं के योग से बने संयुक्त क्रियापद के उद्देश्य के आधार में 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है यदि उसकी रुचि-अरुचि प्रकट करनी हो; जैसे—

कृष्ण को राधा अच्छी लगी।
हमको उनका घर पसन्द आया।
उसको यह बात बुरी लगी।

६२०. रुचि, अनुकूलता अथवा इनके विपरीत भाव प्रकट करते समय आ तथा हो धातुओं के मुख्य क्रियापद का विकल्प से लोप हो जाता है; जैसे—

क—१. लड़के को लड़की पसन्द आती है।
क—२. लड़के को लड़की पसन्द है।
ख—१. मोहन को कहानी पसन्द आई थी।
ख—२. मोहन को कहानी पसन्द थी।
ग—१. सीता को घर पसन्द नहीं हुआ।
ग—२. सीता को घर पसन्द नहीं।

६२१. यदि मुख्य क्रियापद 'जा' धातु से बना हो तो स्थानवाचक संज्ञापदों के परे 'को' विभक्ति-परसर्ग गंतव्य को इंगित करने के लिए आता है; जैसे—

गाड़ी दिल्ली को जाती है।
यह सड़क गाँव को जाती है।
लड़का बम्बई को जाता है।

६२२. गंतव्य को इंगित करने वाले विभक्ति-परसर्ग का विकल्प से लोप भी होता है; जैसे—

गाड़ी दिल्ली जाती है।
सड़क गाँव जाती है।
लड़का बम्बई जाता है।

[टिप्पणी—यहाँ स्थानवाचक संज्ञापदों का प्रयोग क्रिया-विशेषण के समान प्रतीत होता है।]

६२३. समयसूचक संज्ञापद के कथित काल के अंश को सूचित करने के लिए 'को' विभक्ति-परसर्ग आता है; जैसे—

वह रात को जाएगा।

(अर्थात् वह रात में किसी समय जाएगा)

६२४. क्रियार्थक संज्ञापदों के परे 'को' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग व्यापार सम्बन्धी उद्यतता सूचित करने के लिए होता है; जैसे—

लड़का आने को है।

वह खेलने को था।

६२५. मानसूचक संज्ञापदों के परे 'को' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग उपेक्षा-भाव सूचित करने के लिए होता है; जैसे—

कोई उसे दो पैसे को भी नहीं पूछता।

६२६. 'से' विभक्ति-परसर्ग प्राणी, वस्तु एवम् मानसूचक संज्ञापदों के परे माध्यम एवम् घटक का सूचक होता है; जैसे—

कृष्ण राम से पुस्तक लेता है।

लड़का दुकान से आम खरीदता है।

दीवार सीमेंट से बनती है।

तुम दो को तीन से गुना करो।

अब कपड़ा मीटर से बिकता है।

६२७. स्थानसूचक संज्ञापदों के परे 'से' विभक्ति-परसर्ग उद्गम या स्रोत का भी सूचक होता है; जैसे—

मोती समुद्र से निकलते हैं।

अँगूर काबुल से आते हैं।

६२८. क्रियार्थक तथा भावसूचक संज्ञापदों के परे 'से' विभक्ति-परसर्ग कारण, प्रयोजन तथा रीति का सूचक होता है; जैसे—

पढ़ने से अक़्ल आती है। (कारण)

वह काम से गया है। (प्रयोजन)

वह दिल से सेवा करेगा। (रीति)

६२९. भय का हेतु एवम् उपेक्षा-भाव सूचित करने के लिए भी 'से' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग होता है; जैसे—

रमेश कुत्ते से डरता है। (भय का हेतु)

वह हमारी बला से न आए। (उपेक्षा-भाव)

६३०. प्राणीसूचक संज्ञापदों के परे 'पर' विभक्ति-परसर्ग आरोपण एवम् अनुरूपता का सूचक है; जैसे—

मुझ पर दोष लगा था।[1]
बेटा बाप पर पड़ा था।

६३१. समयसूचक संज्ञापदों के परे 'पर' विभक्ति-परसर्ग अवधि एवम् नियत समय का सूचक होता है; जैसे—

बुखार दो महीने पर उतरा। (अवधि)
गाड़ी समय पर आई। (नियत समय)

६३२. क्रियार्थक संज्ञापदों के परे 'पर' विभक्ति-परसर्ग अनन्तरता, प्रयोजन एवम् सम्पादन का सूचक होता है; जैसे—

यह काम उनके आने पर होगा। (अनन्तरता)
वह दौरे पर गया है। (प्रयोजन)
उन्होंने हमारे आने पर रोक लगा दी। (सम्पादन)

६३३. भाववाचक संज्ञापदों के परे 'पर' विभक्ति-परसर्ग विचार्य विषय की प्रस्तुति या सम्मुखता एवम् स्थान की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

उनकी बातों पर आप मत जाइए।
आज भी अभाव की बाधाएँ निष्ठा की चुनौती पर झुक जाएँगी।[2]
—विद्यानिवास मिश्र

वह काम पर गया है।

६३४. मानसूचक संज्ञापदों के परे 'पर' विभक्ति-परसर्ग विक्रय की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

मकान एक लाख पर गया।

६३५. बहुवचन संज्ञापदों के परे 'में' विभक्ति-परसर्ग परस्पर-भाव की भी विवक्षा देता है; जैसे—

लड़कों में झगड़ा हुआ।
इन देशों में मित्रता होगी।

[1] 'मुझको दोष लगा था' भी नियम ६१७ से सिद्ध है। परन्तु आरोपण अर्थ में 'को' की अपेक्षा 'पर' का ही प्रयोग प्रशस्त है।
[2] बसन्त आ गया, पृ० ४१।

६३६. 'में' विभक्ति-परसर्ग वस्तुसूचक संज्ञापदों के परे आधार से युक्त होने की विवक्षा भी देता है; जैसे—

कानों में कुण्डल हैं।
हाथ में घड़ी लगी थी।

६३७. 'में' विभक्ति-परसर्ग स्थानसूचक संज्ञापदों के परे प्रवेश की विवक्षा एवम् समयसूचक संज्ञापदों के परे कथित समय के विस्तार की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

हम लोग जंगल में जाएँगे।
हम लोग रात में पढ़ते हैं।

६३८. 'में' विभक्ति-परसर्ग क्रियार्थक संज्ञापदों के परे विचार्य विषय की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

उनको जाने में देर होगी।
नगर-निर्माण में तो नहीं पर महल-निर्माण में मुझसे भी सलाह ली गई।[1] —मनु शर्मा

६३९. 'में' विभक्ति-परसर्ग भाववाचक संज्ञापदों के परे विशेपता एवम् प्रवृति-शीलता का सूचक है; जैसे—

वह कद में बड़ा है। (विशेषता)
वह काम में लगा था। (विचार्य विषय)

६४०. जब संज्ञापदों का सम्बन्ध स्थान तथा समयसूचक क्रियाविशेषणों से जोड़ा जाता है तब 'के' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग होता है; जैसे—

मंदिर विद्यालय के आगे है।
हम दिल्ली के निकट पहुँच चुके हैं।
राम के सिवा वहाँ कौन गया था।
वे राम के साथ आए हैं।
सड़क के एक ओर[2] पेट्रोल स्टेशन था।[3] —श्रीलाल शुक्ल

[1] द्रौपदी की आत्मकथा, पृ० ५७।

[2] 'समय तथा स्थानसूचक संज्ञापद क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं।' (देखें—नियम ८२१)

यहाँ 'ओर' क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त हुआ है।

[3] राग दरबारी, तृतीय संस्करण, पृ० १।

६४१. जब आपेक्षिकता की विवक्षा सूचित करना अभिप्रेत हो तब 'के' के स्थान पर 'से' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग करते हैं; जैसे—

(क) मंदिर विद्यालय से दूर है।

[यहाँ आशय है कि मंदिर विद्यालय की अपेक्षा अधिक दूर है।]

(ख) राम कृष्ण से पहले आया।

[राम कृष्ण की अपेक्षा पहले आया।]

६४२. जब 'के' विभक्ति-परसर्ग किसी नामपद का सम्बन्ध विना, सिवा, अलावा, बावजूद या बगैर क्रिया-विशेषणों से स्थापित करता है तब इन क्रिया-विशेषणों का प्रयोग विकल्प से संज्ञापदों के पूर्व भी होता है; जैसे—

क–१. राम के सिवा वहाँ कोई नहीं है।

क–२. सिवा राम के वहाँ कोई नहीं है।

ख–१. कहने के बावजूद वह वहाँ गया ही।

ख–२. बावजूद कहने के वह वहाँ गया ही।

ग–१. आपके अलावा वहाँ से कौन आया?

ग–२. अलावा आपके वहाँ से कौन आया?

घ–१. उसके बिना यह काम कोई नहीं करेगा।

घ–२. बिना उसके यह काम कोई नहीं करेगा।

६४३. जब संज्ञापदों का सम्बन्ध संज्ञा-विशेषणों से जोड़ा जाता है तब समता या अनुरूपता की विवक्षा सूचित करने के लिए 'के' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग करते हैं; जैसे—

वह रमेश के बराबर है।

कृष्ण मोहन के जैसा है।

६४४. जब नामपदों का सम्बन्ध नामपदों से जोड़ा जाता है तब तुलना या विभेद, युक्तता या राहित्य एवम् भौगोलिक स्थिति की विवक्षा सूचित करने के लिए 'से' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग करते हैं; जैसे—

मोहन राम से अच्छा है।	(तुलना)
यह पुस्तक उस पुस्तक से भिन्न है।	(विभेद)
समुद्र रत्नों से भरा है।	(युक्तता)
तालाब पानी से खाली है।	(राहित्य)
वह आँख से अंधा है।	(„)
मंदिर नदी से उत्तर है।	(भौगोलिक स्थिति)
हिमालय पूर्व से पश्चिम फैला है।	(„ „)

६४५. जब नामपदों का सम्बन्ध नामपदों से जोड़ा जाता है तब विशेषता या स्थिति सूचित करने के लिए 'में' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग करते हैं; जैसे—

वह घर में बड़ा है। (विशेषता)
मोहन लड़ने में तगड़ा है। (,,)
सोहन राजनीति में निपुण है। (स्थिति)
युद्ध विश्व में व्याप्त था। (,,)

६४६. द्विरुक्त पदों के बीच 'का' समष्टि की, 'पर' निरन्तरता की तथा 'से' अत्यधिकता की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

(क) घर का घर सिनेमा देखने गया है।
(सारा घर—घर के सब लोग—समष्टि)
(ख) दर्शक पर दर्शक चले आ रहे हैं। (निरन्तरता)
(ग) ग़रीब से ग़रीब भी लड़की को इतना तो देते ही हैं।
(अत्यधिक ग़रीब—अत्यधिकता)

६४७. 'का' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'सम्बन्धी' संज्ञा-विशेषण का प्रयोग भी कुछ अवसरों पर होता है; जैसे—

क–१. घर का झगड़ा।
क–२. घर सम्बन्धी झगड़ा।
ख–१. पेट की बीमारी।
ख–२. पेट सम्बन्धी बीमारी।

६४८. 'से' की जगह 'में से' का प्रयोग वरीय होता है जब विच्छेद मध्य से हो; जैसे—

क–१. बदबू नाले से आ रही थी।
क–२. बदबू नाले में से आ रही थी।
ख–१. घर से कोई एक जाएगा।
ख–२. घर में से कोई एक जाएगा।
ग–१. सौ से पाँच घटा दो।
ग–२. सौ में से पाँच घटा दो।
घ–१. वह भीड़ से निकल गया।[1]
घ–२. वह भीड़ में से निकल गया।

[1] यह प्रयोग प्रशस्त नहीं।

६४६. 'से' की जगह विकल्प से 'पर से' का प्रयोग होता है जब विच्छेद ऊपर से हो; जैसे—

क–१. वह छत से कूद पड़ा।
क–२. वह छत पर से कूद पड़ा।
ख–१. राम सीढ़ी से गिर पड़ा।
ख–२. राम सीढ़ी पर से गिर पड़ा।

६५०. 'का' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर विकल्प से 'पर का' तथा 'में का' का प्रयोग आधार का बाह्य तथा आन्तर सम्बन्ध द्योतित करने के लिए होता है; जैसे—

क–१. चित्र का परदा हटा दो।
क–२. चित्र पर का पर्दा हटा दो।
ख–१. मेरा हाथ का कंगन गिर गया।
ख–२. मेरा हाथ में का कंगन गिर गया।

६५१. कुछ संज्ञा तथा क्रिया-विशेषण पदों का प्रयोग विभक्ति-परसर्गों के स्थान पर होता है और यदि वे पद मूलतः स्त्रीलिंग हैं तो उनके पहले 'की' अन्यथा 'के' विभक्ति-परसर्ग का प्रयोग होता है।

६५२. गंतव्य का दिशा-निर्देश करने के लिए 'को' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'ओर' तथा 'तरफ़' मूलत स्त्रीलिंग संज्ञापदों का प्रयोग होता है; जैसे—

क–१. राम घर को जा रहा है।
क–२. राम घर की ओर जा रहा है।
क–३. राम घर की तरफ़ जा रहा है।

६५३. करण या साधन का निर्देश करने के लिए 'से' विभक्ति के स्थान पर 'द्वारा' या 'ज़रिए' क्रिया-विशेषणों का प्रयोग होता है; जैसे—

करण में के द्वारा/जरिए—

क–१. राम छुरी से आम काटता है।
क–२. राम छुरी के द्वारा आम काटता है।
क–३. राम छुरी के ज़रिए आम काटता है।[1]

साधन में के द्वारा/जरिए—

ख–१. राम गाड़ी से आया।
ख–२. राम गाड़ी के द्वारा आया।
ख–३. राम गाड़ी के ज़रिए आया।

[1] यह प्रयोग प्रशस्त नहीं है।

६५४. हेतु का निर्देश करने के लिए 'से' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'कारण' संज्ञापद एवम् 'मारे'[1] क्रिया-विशेषण का प्रयोग होता है; जैसे—

क—१. उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया ।
क—२. उसका चेहरा गुस्से के कारण लाल हो गया ।
क—३. उसका चेहरा गुस्से के मारे लाल हो गया ।
ख—१. वह भूख से दुःखी है ।
ख—२. वह भूख के कारण दुःखी है ।
ख—३. वह भूख के मारे दुःखी है ।

६५५. तुलना का निर्देश करने के लिए 'से' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर अपेक्षा एवम् बनिस्वत स्त्रीलिंग संज्ञापदों का प्रयोग होता है; जैसे—

क—१. राम मोहन से अच्छा है ।
क—२. राम मोहन की अपेक्षा अच्छा है ।
क—३. राम मोहन की बनिस्वत अच्छा है ।
ख—१. सीता कृष्णा से सुन्दर है ।
ख—२. सीता कृष्णा की अपेक्षा सुन्दर है ।
ख—३ सीता कृष्णा की बनिस्वत सुन्दर है ।

६५६. अंतर्गत स्थिति का निर्देश करने के लिए 'में' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'अंदर' तथा 'भीतर' क्रिया-विशेषणों का प्रयोग होता है; जैसे—

क—१. लड़का कमरे में सोया है ।
क—२. लड़का कमरे के अंदर सोया है ।
क—३. लड़का कमरे के भीतर सोया है ।

६५७. परस्पर-भाव का निर्देश करने के लिए 'में' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर बीच एवम् मध्य पुंलिग संज्ञापदों का प्रयोग होता है; जैसे—

क—१. झगड़ा उन लोगों में हुआ ।
क—२. झगड़ा उन लोगों के बीच हुआ ।
क—३. झगड़ा उन लोगों के मध्य हुआ ।

६५८. आधार के ऊपरी भाग का निर्देश करने के लिए 'पर' विभक्ति-परसर्ग के स्थान पर 'ऊपर' क्रिया-विशेषण का प्रयोग होता है; जैसे—

लड़का छत पर है ।
लड़का छत के ऊपर है ।

[1] 'मारे' सम्भवतः सं० मारेण से व्युत्पन्न है ।

६५९. कुछ संज्ञा तथा क्रिया-विशेषण पद विभक्ति-परसर्गों की तरह भी प्रयुक्त हैं और ऐसी स्थिति में उनके पहले भी 'के' विभक्ति-परसर्ग आता है।

६६०. प्राप्ति एवम् प्रयोजन अर्थों में 'लिए' क्रिया-विशेषण का विभक्ति-परसर्ग की तरह प्रयोग होता है; जैसे—

वह सुख के लिए चिंतित है। (प्राप्ति)
वह सेवा के लिए नियुक्त था। (प्रयोजन)

६६१. स्वामित्व अर्थ में 'पास' क्रिया-विशेषण का विभक्ति-परसर्ग की तरह प्रयोग होता है; जैसे—

मोहन के पास गाय है।
राम के पास बंदूक थी।

६६२. पक्षग्रहण अर्थ में साथ एवम् संग संज्ञापदों का विभक्ति-परसर्ग की तरह प्रयोग होता है; जैसे—

हम आपके साथ हैं।
वे समाजवादी दल के संग हैं।

६६३. जब किसी नामपद का सम्बन्ध 'के' विभक्ति-परसर्ग क्रिया-विशेषण तथा एकारान्त रूप में प्रयुक्त ताप्रत्ययान्त एवम् आप्रत्ययान्त क्रिया-रूपों से स्थापित करता है तो क्रमशः युगपत् तथा अपेक्षा की विवक्षा सूचित होती है; जैसे—

वहाँ राम के पहुँचते वह चल पड़ा। (युगपत्)
मेरे रहते तुम्हें कुछ नहीं होगा। (,,)
उनके आए यह बात होगी। (अपेक्षा)

६६४. जब किसी नामपद का सम्बन्ध 'को' विभक्ति-परसर्ग क्रिया-विशेषण तथा एकारान्त रूप में प्रयुक्त ताप्रत्ययान्त, आप्रत्ययान्त एवम् नाप्रत्ययान्त क्रिया-रूपों से स्थापित करता है तो क्रमशः प्रायिकता, निष्पन्नता तथा उन्मुखता की विवक्षा सूचित होती है; जैसे—

यहाँ मोहन को आते बरसों हो गए। (प्रायिकता)
यहाँ कृष्ण को आए महीनों हो गए। (निष्पन्नता)
हमने लड़के को पढ़ने दिल्ली भेजा है। (उन्मुखता)

६६५. जब 'के' विभक्ति-परसर्ग किसी संज्ञापद का सम्बन्ध 'जैसा' सार्वनामिक विशेषण पद से स्थापित करता है तब विकल्प से 'जैसा' के स्थान पर 'सा'[1] का प्रयोग भी होता है; जैसे—

क–१. मोहन का मकान सोहन के मकान के जैसा है।
क–२. मोहन का मकान सोहन के मकान के सा है।
ख–१. राम की गाय कृष्ण की गाय के जैसी है।
ख–२. राम की गाय कृष्ण की गाय के सी है।

६६६. 'जैसा' एवम् 'सा' के पूर्व के विभक्ति-परसर्ग का विकल्प से लोप हो जाता है; जैसे—

क–१. मोहन का मकान राम के मकान के जैसा है।
क–२. मोहन का मकान राम के मकान जैसा है।[2]
ख–१. सोहन की पुस्तक दिनेश की पुस्तक के जैसी है।
ख–२. सोहन की पुस्तक दिनेश की पुस्तक जैसी है।

६६७. 'का' विभक्ति-परसर्ग के साथ 'सा' अनुरूपता का सूचक होता है; जैसे—

उसका चेहरा राम के चेहरे का सा है।

६६८. विभक्ति-परसर्ग लुप्त होने पर भी प्रभावी होता है; जैसे—

उसके जैसा बहादुर तुमको कहाँ मिलेगा ?
उस जैसा बहादुर तुमको कहाँ मिलेगा ?
उस सा बहादुर तुमको कहाँ मिलेगा ?

६६९. 'के' विभक्ति-परसर्ग की जगह प्रयुक्त 'रे' विभक्ति-प्रत्यय का भी लोप होता है और इसके परिणामस्वरूप मेरे और तेरे रूप क्रमशः मुझ और तुझ हो जाते हैं; जैसे—

मोहन तेरे/मेरे जैसा डरपोक है।
मोहन तुझ/मुझ जैसा डरपोक है।
मोहन तुझ/मुझ सा डरपोक है।

[1] 'सा' संज्ञा-विशेषण है। यह सं० सदृश का तद्भव रूप है।

[2] 'के' विभक्ति-परसर्ग के लोप होने से समास हो जाता है अतः मकान और जैसा के बीच प्रायः योजिका भी लगाई जाती है; जैसे—

मोहन का मकान राम के मकान-जैसा है।
सोहन की पुस्तक दिनेश की पुस्तक-जैसी है।

६७०. 'रे' विभक्ति-परसर्ग का लोप होने पर हमारे और तुम्हारे रूप क्रमशः हम और तुम हो जाते हैं[1]; जैसे—

क–१. वह हमारे जैसा है ।

क–२. वह हम जैसा है ।

क–३. वह हम सा है ।

ख–१. वह तुम्हारे जैसा है ।

ख–२. वह तुम जैसा है ।

ख–३. वह तुम सा है ।

६७१. स्थानवाचक क्रिया-विशेषणों के अनन्तर 'का' एवम् 'से' विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग होता है; जैसे—

वह कहाँ का निवासी है ?

सोहन वहाँ से आया था ।

मकान बाहर से अच्छा है ।

६७२. कुछ समय तथा दिशासूचक क्रिया-विशेषणों के अनन्तर का, से, के तथा पर विभक्ति-परसर्गों का प्रयोग होता है; जैसे—

आज का दिन भी बीत गया ।
कल के बाद फिर मत आना ।
छुट्टियाँ परसों से शुरू होंगी ।
वह कब का[2] खड़ा है ।
उधर का हाल लिखना ।
इधर से होकर जाना ।
यहाँ के लोग परिश्रमी हैं ।
वहाँ की स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी हैं ।

[टिप्पणी—उक्त प्रसंगों में सम्भावना ऐसी प्रतीत होती है कि क्रिया-विशेषणों का प्रयोग सर्वनामवत् हुआ है ।]

1 'हम' और 'तुम' में रे प्रत्यय लगने से ही तो हमारे और तुम्हारे रूप (नियम देखें—५८३) बनते हैं । जब 'रे' प्रत्यय का लोप होगा तो स्वभावतः पूर्व रूप होगा ।

2 'कब का' के दो अर्थ हैं—(i) कब से (जैसे—वह कब का खड़ा है ।) और (ii) किस समय का (जैसे—यह पत्रिका कब की है ।)

६७३. आज्ञादिसूचक लकार में कर्ता से प्रायः पहले और कभी-कभी बाद में भी कर्ता को सम्मुखीन करने के लिए जिस संज्ञापद का प्रयोग करते हैं उसे सम्बोधन कर्ता कहते हैं; जैसे—

रमेश, तुम वहाँ चले जाओ।
माँ, तू वहाँ क्यों गई ?
पिता जी, आप मुझे खिलौना ले दें।
मोहन, पुस्तक लेते आना।
साहित्य जीवन का खण्डन नहीं कर सकता, महाशय ![1]
—डा० देवराज

६७४. सम्बोधन कर्ता की उपस्थिति में कर्तासूचक संज्ञा या सर्वनामपद का प्रयोग नहीं भी किया जाता; जैसे—

क–१. रमेश, तुम वहाँ चले जाना।
क–२. रमेश, वहाँ चले जाना।
ख–१. मोहन, तुम पुस्तक अवश्य ले जाना।
ख–२. मोहन, पुस्तक अवश्य ले जाना।

६७५. सम्बोधन कर्ता के लिंग तथा वचन के अनुसार क्रियापद में विकार नहीं होता; जैसे—

रमेश[2], तू जा।
रमेश, तुम जाओ।

६७६. सम्बोधन कर्ता को अल्प-विराम की सहायता से प्रायः अलग रखते हैं; जैसे—

रमेश, तुम पहले पुस्तक पढ़ो।
दिनेश, जरा चुप रहो।
तुम कल चले जाना, मोहन।

६७७. आकारान्त पुंलिंग एकवचन संज्ञापद सम्बोधन कर्ता रूप में एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

लड़के, एक गिलास पानी दे जाओ।
टाँगेवाले, टाँगा इधर लाओ।
खोंचेवाले, इधर आओ।

[1] पथ की खोज, पृ० ५।
[2] यहाँ 'रमेश' के अनुसार क्रियापद नहीं अपितु सर्वनाम के अनुसार है।

६७८. जो आकारान्त पुंलिंग एकवचन संज्ञापद विभक्ति-परसर्ग परे रहने पर प्रकृत रूप रहते हैं, वे सम्वोधन कर्ता रूप में भी वैसे ही रहते हैं; जैसे—

दादा, आप मत जाएँ।

चाचा, आप कहाँ चले गए थे?

६७९. सम्वोधन रूप में अकारान्त, आकारान्त, एकारान्त तथा ओकारान्त वहुवचन संज्ञापदों में 'ओ' प्रत्यय आता है।

एकवचन	बहुवचन	बहुवचन सम्वोधन रूप
वालक	वालक	बालको
लड़का	लड़के	लड़को
चौवे	चौवे	चौवो

६८०. 'ओ' प्रत्यय से पूर्व वहुवचन संज्ञापद का अन्त्य अ, ए एवम् ओ स्वर का लोप हो जाता है।

संज्ञापद एकवचन	संज्ञापद बहुवचन	
बालक	वालक	बालको
लड़का	लड़के	लड़को
मोटा[1]	मोटे	मोटो

परन्तु निम्नलिखित तद्वत् रहेंगे [देखें नियम ६७८]—

दादा	दादा	दादाओ
आचार्या	आचार्या	आचार्याओ

६८१. इकारान्त तथा ईकारान्त एकवचन संज्ञापदों में 'ओ' प्रत्यय के योग से वहुवचन सम्बोधन रूप बनता है एवम् प्रत्यय से पूर्व ई स्वर ह्रस्व हो जाता है तथा य् का आगम होता; जैसे—

साथी (पुंलिग एकवचन का सम्वोधन रूप)—साथियो

देवी (स्त्रीलिंग ,, ,, ,, ,,)—देवियो

६८२. उकारान्त तथा ऊकारान्त एकवचन संज्ञापदों में 'ओ' प्रत्यय के योग से बहुवचन सम्वोधन रूप बनता है तथा प्रत्यय पूर्व दीर्घ ऊ स्वर ह्रस्व हो जाता है; जैसे—

साधु (एकवचन पुंलिग का सम्बोधन रूप)—साधुओ

वावू (,, ,, ,, ,, ,,)—बावुओ

बहू (,, ,, ,, ,, ,,)—वहुओ

1 संज्ञा-विशेषण भी संज्ञापदों की तरह प्रयुक्त होते हैं। (देखें नियम—८१९)

६८३. सम्बोधन रूप के बाद अल्प-विराम के स्थान पर विस्मयादि चिह्न का भी कुछ लोग प्रयोग करते हैं; जैसे—

बालको ! कल विद्यालय बन्द है ।

निपात

६८४. उन सहायक शब्दों को निपात कहते हैं जो वाक्यार्थ में नई विवक्षा लाते हैं ।

हिन्दी के प्रमुख निपात

केवल
क्या
जी
तक
तो
न
नहीं
भर
भी
मत
मात्र
सही
सिर्फ़
हाँ
ही

६८५. 'क्या' और 'न' प्रश्नसूचक निपात हैं ।

६८६. 'क्या' का प्रयोग वाक्य के आरम्भ में होता है और 'न' का अन्त में; जैसे—

क—१. राम जाता है ।	(विधानसूचक वाक्य)
क—२. क्या राम जाता है ?	(प्रश्नसूचक वाक्य)
क—३. राम जाता है न ?	(,, ,,)
ख—१. मोहन गया है ।	(विधानसूचक वाक्य)
ख—२. क्या राम गया है ?	(प्रश्नसूचक वाक्य)
ख—३. राम गया है न ?	(,, ,,)

६८७. अधिक जोर देने के लिए 'क्या' निपात का प्रयोग वाक्य के अन्त में एवम् कर्ता के बाद भी किया जाता है; जैसे—

क–१. क्या राम गया है ?
क–२. राम गया है क्या ?
क–३. राम क्या गया है ?
ख–१. क्या मोहन ने पुस्तक खरीदी थी ?
ख–२. मोहन ने पुस्तक खरीदी थी क्या ?
ख–३. मोहन ने क्या पुस्तक खरीदी थी ?

६८८. 'मत' निपात आज्ञासूचक वाक्य को निषेधात्मक बना देता है; जैसे—

क–१. तुम वहाँ जाओ।	(आज्ञासूचक)
क–२. तुम वहाँ मत जाओ।	(निषेधात्मक आज्ञासूचक)
ख–१. तुम वहाँ जाना।	(आज्ञासूचक)
ख–२. तुम वहाँ मत जाना।	(निषेधात्मक आज्ञासूचक)

६८९. 'मत' निपात सामान्यतया क्रियापदों से पहले आता है और यदि क्रियापद संयुक्त हुआ तो विकल्प से मुख्य क्रियापद के बाद भी; जैसे—

क–१. वहाँ चले जाना।	(आज्ञासूचक)
क–२. वहाँ मत चले जाना।	(निषेधात्मक आज्ञासूचक)
क–३. वहाँ चले मत जाना।	(,, ,,)
ख–१. वहाँ खेलते रहना।	(आज्ञासूचक)
ख–२. वहाँ मत खेलते रहना।	(निषेधात्मक आज्ञासूचक)
ख–३. वहाँ खेलते मत रहना।	(,, ,,)

६९०. अधिक ज़ोर देने के लिए 'मत' का प्रयोग वाक्य के अन्त या आरम्भ में भी होता है; जैसे—

क–१. वहाँ मत जाना।
क–२. मत वहाँ जाना।
क–३. वहाँ जाना मत।
ख–१. वहाँ मत जाओ।
ख–२. मत वहाँ जाओ।
ख–३. वहाँ जाओ मत।

६६१. नकारबोधक निपात 'नहीं' का प्रयोग क्रियापदों से पहले या मुख्य क्रियापद के बाद होता है; जैसे—

क–१. वह मुझको नहीं चाहता था ।
क–२. वह मुझको चाहता नहीं था ।
ख–१. वह नहीं देख रहा था ।
ख–२. वह देख नहीं रहा था ।

६६२. 'नहीं' निपात का प्रयोग होने पर वर्तमान कालवाचक सहायक शब्द तथा वर्तमानकालिक मूल क्रियापद का विकल्प से लोप भी हो जाता है; जैसे—

क–१. वह आम खरीदता है ।
क–२. वह आम नहीं खरीदता है ।
क–३. वह आम नहीं खरीदता ।
ख–१. सोहन खेल रहा है ।
ख–२. सोहन नहीं खेल रहा है ।
ख–३. सोहन नहीं खेल रहा ।
ग–१. राम घर पर है ।
ग–२. राम घर पर नहीं है ।
ग–३. राम घर पर नहीं ।

६६३. अधिक ज़ोर देने के लिए 'नहीं' निपात का प्रयोग वर्तमान कालवाचक सहायक शब्द तथा वर्तमानकालिक मूल क्रियापद के बाद करते हैं; जैसे—

क–१. वह गया है ।
क–२. वह नहीं गया है ।
क–३. वह नहीं गया । [नियम ६६२]
क–४. वह गया है नहीं ।
ख–१. राम घर पर है ।
ख–२ राम घर पर नहीं है ।
ख–३. राम घर पर नहीं । [नियम ६६२]
ख–४. राम घर पर है नहीं ।

६६४. 'न' निपात का प्रयोग भी निषेधकारक तथा नकारबोधक रूप में होता है; जैसे—

क–१. वहाँ मत जाना ।
क–२. वहाँ न जाना ।
ख–१. उसने नहीं खाया ।
ख–२. उसने न खाया ।

६६५. 'नहीं' का प्रयोग संकल्पसूचक होता है एवम् 'न' का असमर्थता या अनिच्छासूचक; जैसे—

क. वह नहीं आया।

ख. वह न आया।

[टिप्पणी—'क' वाक्य से विवक्षा यह निकलती है कि उसने न आने का संकल्प कर रखा था और नहीं आया। 'ख' वाक्य से यह विवक्षा निकलती है कि असमर्थता के कारण अथवा अनिच्छा से वह नहीं आया।]

६६६. 'जी' ऐसा आदरसूचक निपात है जिसका प्रयोग विशेष रूप से संज्ञापदों के बाद तथा कुछ अवसरों पर सर्वनाम तथा संज्ञा-विशेषणों के बाद भी होता है; जैसे—

संज्ञापदों के साथ—

पिता जी जा रहे हैं।

माता जी पढ़ रही हैं।

सर्वनाम पद के साथ—

मैंने आप जी से कहा था।

संज्ञा-विशेषण के साथ—

अच्छा जी।

६६७. विभक्ति-परसर्ग से रहित एकवचन संज्ञापद कर्ता के परे 'जी' निपात हो तो क्रियापद बहुवचन (आदरार्थक) में आता है; जैसे—

क–१. मोहन जा रहा है।

क–२. मोहन जी जा रहे हैं।

ख–१. मेरी माता जा रही है।

ख–२. मेरी माता जी जा रही हैं।

६६८. उत्तर के रूप में 'जी' का प्रयोग सहमति, अवज्ञा एवम् क्षमार्थ होता है; जैसे—

(क) सहमतिसूचक—

—तुम वहाँ गये थे?

—जी।

(ख) अवज्ञासूचक—

—मैं तुम्हारा सिर फोड़ दूंगा!

—जी!

(ग) क्षमार्थ—

—कल हमारे यहाँ आना।

—जी?[1]

[1] आशय है कि फिर से कहिए।

६९९. 'जी' का प्रयोग उत्तरस्वरूप वाक्य के आरम्भ में और विल्कप से अन्त में भी सम्बोधित व्यक्ति के प्रति सम्मान दिखलाने के लिए होता है; जैसे—

—वहाँ जाओ।
—जी, जाता हूँ।
—कल आना।
—आऊँगा, जी।

७००. 'हाँ' स्वीकृतिसूचक निपात है और इसके पूर्व या अनन्तर 'जी' का प्रयोग शिष्टाचारपूर्ण समझा जाता है; जैसे—

—तुम वहाँ गए थे ?
—हाँ, मैं वहाँ गया था।
—जी हाँ, मैं वहाँ गया था।
—हाँ जी[1], मैं वहाँ गया था।

७०१. 'जी हाँ' का प्रयोग व्यंग्यसूचक भी होता है; जैसे—

—तुमने वह पुस्तक ली होगी ?
—जी हाँ, मैं ही तो चोर हूँ।

[टिप्पणी—'हाँ' का प्रयोग विस्मयादिबोधक की भाँति भी होता है; जैसे—

—बाँध टूट गया।
—हाँ !]

७०२. भी, ही एवम् तो वलप्रदायक निपात हैं, जिनका प्रयोग नामपद तथा क्रियापद विशेषतया मुख्य क्रियापद के बाद होता है; जैसे—

क–१. राम भी (तो/ही) जाएगा।
क–२. राम जाएगा भी (तो/ही)।
ख–१. मोहन भी जा रहा है।
ख–२. मोहन जा भी रहा है।
ग–१. और भी लोग आने वाले हैं।
ग–२. और लोग भी आने वाले हैं।
घ–१. गाड़ी तो धीरे चल रही है।
घ–२. गाड़ी धीरे तो चल रही है।

[1] मूलत पंजाबी लेखकों द्वारा प्रयुक्त।

७०३. 'भी' निपात में 'अतिरिक्त' की विवक्षा सूचित होती है; जैसे—

(क) सोहन भी जाएगा।

[आशय है कि कोई और तो जा ही रहा है उसके अतिरिक्त सोहन भी जाएगा।]

(ख) लड़की सुन्दर भी है।

[आशय है कि लड़की में और गुण भी हैं और इसके अतिरिक्त सुन्दर भी है।]

(ग) राम जाएगा भी।

[आशय है कि राम अन्य क्रियाएँ तो करेगा ही इसके अतिरिक्त जाएगा भी।]

७०४. 'ही' निपात प्रस्तुत से 'भिन्न नहीं' या 'अतिरिक्त नहीं' की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

(क) सोहन ही जाएगा।

[आशय यह है कि सोहन से भिन्न या अतिरिक्त कोई और व्यक्ति नहीं जाएगा, सिर्फ़ सोहन जाएगा।]

(ख) लड़की सुन्दर ही है।

[आशय यह है कि लड़की में और गुण नहीं हैं केवल सुन्दर है।]

(ग) राम जाएगा ही।

[आशय है कि राम अवश्य जाएगा]

७०५. 'तो' निपात 'औरों' का विचार छोड़कर आशा या निश्चय जतलाने की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

(क) सोहन तो जाएगा।

[आशय यह है कि कोई और जाए या न जाए सोहन निश्चयपूर्वक जाएगा।]

(ख) लड़की सुन्दर तो है।

[आशय यह है जहाँ तक कि सुन्दरता का प्रश्न है लड़की तो सुन्दर है परन्तु""।]

७०६. यदि संज्ञापद विभक्ति-परसर्ग से युक्त हो तो बलप्रदायक निपात विभक्ति-परसर्ग के बाद आता है; जैसे—

राम ने भी पुस्तक खरीदी है।

राम ने तो पुस्तक खरीदी है।

राम ने ही पुस्तक खरीदी है।

७०७. 'ही' निपात का प्रयोग विकल्प से विभक्ति-परसर्ग से पूर्व भी होता है; जैसे—

क–१. राम ने ही पुस्तक खरीदी थी।
क–२. राम ही ने पुस्तक खरीदी थी।

७०८. सिर्फ़, मात्र तथा केवल ये तीनो निपात 'प्रस्तुत से अतिरिक्त कुछ और नहीं' की विवक्षा प्रकट करते हैं।

७०९. संज्ञापदों तथा क्रियापदों से प्रायः पूर्व और विकल्प से बाद भी उक्त तीनो निपातों का प्रयोग होता है; जैसे—

क. सिर्फ़ राम जाएगा।
ख. मात्र राम जाएगा।
ग. केवल राम जाएगा।
क–१. राम सिर्फ़ जाएगा।
ख–१. राम मात्र जाएगा।
ग–१. राम केवल जाएगा।

७१०. 'मात्र' आकर तत्सम संज्ञापदों के बाद 'सब तथा प्रत्येक' की विवक्षा प्रकट करता है; जैसे—

प्राणी मात्र दुःखी हैं।

७११. 'भर' तथा 'तक' ऐसे बलप्रदायक निपात हैं जो नामपदों तथा क्रियापदों के बाद आते हैं; जैसे—

मोहन रात भर जागता रहा।
वह वहाँ गया भर।
वह घर तक जाएगा।
वह यहाँ आया तक नहीं।

७१२. नामपद के परे यदि विभक्ति-परसर्ग हो तो 'भर' तथा 'तक' निपात उस विभक्ति-परसर्ग से पहले आते हैं; जैसे—

सोहन घर भर को खिलाता है।
उसने भाई तक को नहीं बुलाया।

७१३. सामान्यतया 'भर' और 'तक' का प्रयोग मुख्य क्रियापद के बाद होता है; जैसे—

वह रात में लिखता भर है।
सीता गाती भर है।

७१४. 'भर' निपात सकल एवम् केवल की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

मोहन रात भर जागता रहा। (सारी रात जागता रहा)

वह मेरा नाम भर जानता है। (केवल नाम जानता है)

७१५. 'तक' निपात 'अतिरिक्त ग्रहण' की विवक्षा सूचित करता है; जैसे—

(क) वह हमारा नाम तक जानता है।

[आशय यह है कि उसे हमारे सम्बन्ध में जानकारी है और यहाँ तक है कि वह हमारा नाम भी जानता है।]

(ख) वे आँख तक नहीं मिलाते।

[आशय यह है कि वे न मिलते हैं, न बोलते हैं और न सामना होने पर आँख ही मिलाते हैं।]

७१६. समयसूचक संज्ञापदों के अनन्तर 'भर' और 'तक' निपात सामूहिक रूप से कथित काल की अवधि सूचित करते हैं; जैसे—

मैं घंटा भर तक वहाँ रुका रहा।

७१७. 'तक' निपात कुछ अवसरों पर स्थान, समय तथा भाववाचक एवम् क्रियार्थक संज्ञापदों का सम्बन्ध भी क्रियापदों से जोड़ता है।

७१८. जब 'तक' नामपदों का सम्बन्ध क्रियापदों से जोड़ता है तो यह कथित काल या स्थान की सम्भावित सीमा[1] की विवक्षा द्योतित करता है एवम् विभक्ति-परसर्ग का भी काम करने लगता है; जैसे—

वह सड़क तक गया था।

पानी रात तक बरसता रहा।

वे आन्दोलन तक यहीं ठहरेंगे।

राम के आने तक मैं रुका रहा।

[1] 'सम्भावित सीमा' लेखक के दृष्टिकोण से सम्बद्ध होती है। 'वह सुबह तक आएगा' से आशय यह भी हो सकता है कि सुबह होने से पहले आएगा और यह भी हो सकता है कि सुबह बीतने तक आएगा।

इसी प्रकार, 'वह दिल्ली तक जाएगा' से आशय यह भी हो सकता है कि वह दिल्ली की इधरवाली सीमा तक जाएगा और यह भी हो सकता है कि वह दिल्ली तो जाएगा ही परन्तु उसकी उधरवाली सीमा से परे नहीं जाएगा।

'वह आन्दोलन तक रुकेगा।' इस वाक्य के भी दो आशय निकलते हैं। एक तो यह कि वह आन्दोलन के शुरू होने तक रुकेगा और दूसरे यह कि जब तक आन्दोलन चलता रहेगा तब तक वह यहाँ रुका रहेगा।

७१९. 'भर' निपात भी कुछ अवसरों पर अपनी विवक्षा प्रकट करने के अतिरिक्त मानसूचक संज्ञापदों का सम्बन्ध नामपदों से जोड़ता है; जैसे—

मुट्ठी भर सुरमा।
थाली भर आटा।
सेर भर आलू।
गिलास भर दूध।
बाबू और मामू ने छाती-छाती-भर पानी में नहाया और मैं कमर-भर पानी में।[1] —हिमांशु श्रीवास्तव

[टिप्पणी—'भर' युक्त या भरा हुआ होने की विवक्षा देता है।]

७२०. 'तक' और 'भर' पूर्ण विभक्ति-परसर्ग नहीं हैं, यही कारण है जिन नामपदों के अनन्तर ये आते हैं उनमें सदा विकार नहीं होते; जैसे—

क—१. कटोरा भर घी।
क—२. कटोरे भर घी।
ख—१. वह दस दिन तक आएगा।
ख—२. वह दस दिनों तक आएगा।

[टिप्पणी—क—१ में यदि 'भर' विभक्ति-परसर्ग है तो 'कटोरा' का 'कटोरे' हो जाना चाहिए था।
ख—१. में यदि 'तक' विभक्ति-परसर्ग है तो 'दिन' में 'ओं' प्रत्यय आना चाहिए था।]

७२१. 'नकारबोधक वाक्यों में 'नहीं' का प्रयोग प्रायः 'तक' तथा 'भर' निपातों के बाद होता है; जैसे—

क. वह आया तक नहीं।
ख. वह मुझसे बोला तक नहीं।
ग. वहाँ घर भर नहीं जाएगा।
घ—१. वह लोटा भर नहीं पानी पिएगा।
घ—२. वह लोटा भर पानी नहीं पिएगा।

७२२. 'सही' निपात प्रवृत्तिमूलक है तथा इसका प्रयोग वाक्य के अन्त में होता है; जैसे—

तुम आओ सही।
तू पढ़ सही।

[1] लोहे के पंख, पृ० ३३।

७२३. 'सही' के पहले 'तो' निपात का प्रयोग वरीय समझा जाता है; जैसे—
तुम आओ तो सही।

७२४. 'सही' का प्रयोग आश्चर्य, औचित्य आदि सूचित करने के लिए भी होता है; जैसे—
आप वहाँ गए सही। (आश्चर्य)
चलो, यही सही। (औचित्य)

योजक

७२५. ऐसे सहायक शब्दों को योजक कहते हैं जो दो या अधिक समान व्याकरणिक इकाइयों को जोड़कर उन्हें वृहत् इकाई बनाते हैं; जैसे—
राम जाएगा और श्याम आएगा। (दो वाक्य)
सीता गाएगी, राधा नाचेगी और मोहिनी तबला बजाएगी। (तीन वाक्य)
राम तथा श्याम कल जाएँगे। (दो कर्ता पद)
राम, श्याम तथा कृष्ण पढ़ते हैं। (तीन कर्ता पद)
मोहन लोटे तथा बाल्टियाँ खरीदेगा। (दो कर्म)
सोहन दिल्ली से कृष्ण, राम या रमेश को भेजेगा। (तीन कर्म)
क्या तुम पुस्तकें खरीदोगे और बेचोगे ? (दो क्रियापद)

[टिप्पणी—वाक्य के आरम्भ में किसी योजक का प्रयोग जब निष्कर्ष या उपसंहार सूचित करने के लिए होता है तब वह पूर्व वाक्य, अनुच्छेद, परिच्छेद आदि से अर्थगत सम्बन्ध तो जोड़ता है परन्तु उन्हें वृहत् इकाई नहीं बनाता। ऐसे अवसरों पर उसे योजक न मानकर क्रिया-विशेषण रूप में स्वीकार करना भला प्रतीत होता है; जैसे—
तो मैं क्या कर सकता हूँ ?
(तो—ऐसी स्थिति में, स्पष्ट रूप से क्रिया-विशेषण है)
अतः हम लोगों को वहाँ से चलना पड़ा।
(अतः—परिणामस्वरूप, क्रिया-विशेषण ही तो है)
इसलिए अँगरेजी का सिंहासन से हटना जरूरी है....।[1]
—विद्यानिवास मिश्र

[1] बसन्त आ गया, पृ० ५५।

तो फिर जिस तने हुए व्यक्तित्व का उन पर आरोप किया जाता है, वह कहाँ है ?[1] —विद्यानिवास मिश्र

बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद् के इस अधिवेशन का सभापति बनाकर जो सम्मान आपने दिया है, उसके लिए मुझे कृतज्ञता प्रकट करनी चाहिए। परन्तु मैं सबसे पहले विद्या और तपस्या की खनिरूपा इस महिमामयी भूमि को प्रणाम करता हूँ....।[2]
—हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

आश्चर्य होता है इस भूमि की सन्तानों की महिमा पर। पर और भी आश्चर्य होता है हमारी ग्राहिका-शक्ति के भोथरेपन पर।[3]
—हज़ारीप्रसाद द्विवेदी

किन्तु मेरे भाई ने पहले ही अपनी घोषणा में 'सत्कुल' शब्द का प्रयोग कर दिया था।[4] —मनु शर्मा]

७२६. जो योजक स्वतन्त्र वाक्यों को जोड़ते हैं उन्हें समानाधिकरण योजक कहते हैं और जो योजक परस्पर आश्रित वाक्यों को जोड़ते हैं उन्हें व्यधिकरण योजक; जैसे—

(क) शेर की आँखें बड़ी होती हैं और हाथी की आँखें छोटी होती हैं। (और—समानाधिकरण योजक)

(ख) राम गाएगा तो पानी बरसेगा। (तो—व्यधिकरण योजक)

[टिप्पणी—(क) वाक्य में दो उपवाक्य हैं और दोनों स्वतन्त्र हैं। इन दोनों को जोड़ने वाला योजक 'और' समानाधिकरण हुआ।

(ख) वाक्य में भी दो उपवाक्य हैं जो एक-दूसरे पर आश्रित हैं। पानी तभी तो बरसेगा जब राम गाएगा। पानी का बरसना राम के आने पर आश्रित है। अतः इन उपवाक्यों को जोड़नेवाला योजक व्यधिकरण हुआ।]

1 वही, पृ० ७९।
2 कुटज, पृ० ४५।
3 वही, पृ० ७८।
4 द्रौपदी की आत्मकथा, पृ० ३८।

७२७. उस वाक्य को उपवाक्य कहते हैं जो योजक के द्वारा किसी अन्य वाक्य से जुड़ा रहता है तथा जिस वाक्य के सभी उपवाक्य समानाधिकरण योजक (या योजकों) से जुड़े हों उसे संयुक्त वाक्य तथा जिसका कोई उपवाक्य व्यधिकरण योजक से जुड़ा हो उसे मिश्र वाक्य कहते हैं; जैसे—

संयुक्त वाक्य

(क) राम आएगा [(स्वतन्त्र) उपवाक्य] और श्याम जाएगा [(स्वतन्त्र) उपवाक्य]।

मिश्र वाक्य

(ख) राम आएगा [(स्वतन्त्र) उपवाक्य] तो पानी बरसेगा [(आश्रित) उपवाक्य]।

[(क) वाक्य में 'और' समानाधिकरण योजक आया है इसलिए संयुक्त वाक्य हुआ एवम् (ख) वाक्य में 'तो' व्यधिकरण योजक आया है अतः मिश्र वाक्य हुआ।]

(ग) पर तुमने मेरे बाप को अपने बाप की पासबुक दिखाई थी [(स्वतन्त्र) उपवाक्य] और मेरे बाप को विश्वास हो गया था [(स्वतन्त्र) उपवाक्य] कि तेरे बाप भी मेरे बाप की तरह लखपति हैं [(आश्रित) उपवाक्य]।[1] —कृष्णचंदर

[टिप्पणी—अँगरेज़ी व्याकरण के आधार पर हमारे अनेक वैयाकरणों ने आश्रित उपवाक्यों के तीन भेद किए हैं—संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य एवम् क्रिया-विशेषण उपवाक्य। इन विद्वानों का मत है कि आश्रित उपवाक्य या तो संज्ञापद का कार्य करता है या संज्ञा-विशेषण का या फिर क्रिया-विशेषण का।]

७२८. 'और' योजक का प्रयोग उस समय किया जाता है जब दो वाक्यों में अनन्तरता, भिन्नता, असंगति या अनौचित्य की विवक्षा होती है; जैसे—

(क) वे आएँगे और हम उनका स्वागत करेंगे। (अनन्तरता)

(ख) वे जवान हैं और मैं बूढ़ा। (भिन्नता)

(ग) अभी शाम हुई नहीं और तुम माँगने चले आये। (असंगति)

(घ) सवेरा हो गया और वह अभी तक नहीं आया। (अनौचित्य)

[1] फूल की तन्हाई, पृ० ९९।

७२९. 'कि' योजक का प्रयोग उस समय किया जाता है जब आश्रित वाक्य व्याख्या, विकल्प या परिणाम का सूचक होता है; जैसे—

(क) रमेश सच कहता है कि मोहन कृपण है। (व्याख्या)

(ख) आप वहाँ जाएँगे कि मैं जाऊँ। (विकल्प)

(ग) कुछ ऐसा करो कि वह चला जाए। (परिणाम)

७३०. 'पर' योजक का प्रयोग उस समय होता है जब आश्रित वाक्य अपवाद, अन्तर्विरोध या प्रतिबन्ध का सूचक हो; जैसे—

सब जानते थे पर वह नहीं। (अपवाद)

वह रईस तो है पर है कृपण। (अन्तर्विरोध)

वह पुस्तक देगा पर पैसा लेकर। (प्रतिबन्ध)

७३१. 'तो' योजक का प्रयोग उस समय होता है जब कार्य-कारण भाव प्रकट करना अभिप्रेत होता है अथवा असंगति का निषेध करना होता है; जैसे—

(क) कार्य-कारण भाव—

मैंने कहा तो वह मान गया।

मैंने चाबी घुमाई तो दरवाज़ा खुल गया।

उसने बुलाया तो मैं चला आया।

(ख) असंगति का निषेध—

वह मूर्ख है तो क्या हुआ।

७३२. 'या' तथा 'चाहे' विकल्पसूचक, 'जो' परिणामसूचक, 'सो' कारणसूचक एवम् 'मानो' सम्भावनासूचक योजक है; जैसे—

वह आएगा या मैं जाऊँगा। (विकल्पसूचक)

वह जाए चाहे तुम जाओ। (,,)

कुछ ऐसा करो जो वह आ जाए। (परिणामसूचक)

वह नहीं आया सो हम भी नहीं गए। (कारणसूचक)

वह मुझ पर हुकुम चलाता है मानो मैं उसका नौकर हूँ। (सम्भावनासूचक)

७३३. कुछ परसर्ग तथा निपात भी विभिन्न पदों एवं निपातों के साहचर्य में योजकों की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

वह भाग गया जिससे गाड़ी पकड़ सके।

उसे भी कुछ दे दें जिसमें उसकी बात रह जाए।

मैं ज्यादा नहीं बोलता इसलिए कि मैं पढ़ा-लिखा नहीं।

वह नहीं आया क्योंकि उसे ज्वर था।

वह आए तो भी मैं नहीं जाऊँगा।

वह मेरी बहन है नहीं तो गोली मार देता।

वे हम से लेने आए थे न कि देने।

वह गूँगा था इस पर भी मैंने उसे नौकरी दी।

मैंने उसे मकान ही नहीं दिया इसके अतिरिक्त अपना सारा धन भी दिया।

वह नहीं आया कारण यह है कि उसका भाई अस्वस्थ था।

आरामकुर्सी ही नहीं, सभी कुछ मध्यकालीन था।[1] —श्रीलाल शुक्ल

[टिप्पणी—हिन्दी में संस्कृत तथा अरबी-फारसी के योजक भी चलते हैं; जैसे—

संस्कृत के योजक

अतः
अतएव
अथवा
अन्यथा
अपितु
अर्थात्
एवम्
किंवा
तथा
परन्तु

[1] रागदरबारी, पृ ११८।

अरबी-फारसी के योजक

गो—आदमी हमेशा बेहतर की तलाश में बढ़ता है, गो बेहतर कभी-कभी बदतर साबित होता है।[1] —प्रभाकर माचवे

गोया

चूँकि

ताकि

बल्कि

मगर

लेकिन

व

वरना]

७३४. संयुक्त वाक्य के प्रथम उपवाक्य के आरम्भ में भी कुछ योजकों की आवृत्ति देखी जाती है; जैसे—

क–१. वह मंत्री है या कोई बड़ा नेता।

क–२. या वह मंत्री है या कोई बड़ा नेता।

ख–१. राम वहाँ जाए चाहे उसका भाई।

ख–२. चाहे राम वहाँ जाए चाहे उसका भाई।

ग–१. उनसे चलते बनता है न देखते।

ग–२. न उनसे चलते बनता है न देखते।

घ–१. मोहन को मारूँ क्या श्याम को मारूँ।

घ–२. क्या मोहन को मारूँ क्या श्याम को मारूँ।

७३५. कुछ ऐसे भी योजक हैं जो प्रथम उपवाक्य के आरम्भ में आते हैं और उनके नित्यसम्बन्धी दूसरे उपवाक्य के आरम्भ में; जैसे—

अगर.... मगर

चूँकि.... इसलिए

जो.... तो

यदि.... तो—यदि वह आया तो मैं जाऊँगा।

यद्यपि....तथापि

यद्यपि....तो भी।

[1] साँचा, पृ० १।

७३६. कुछ योजकों को उनके नियत स्थान से हटाकर वाक्य के आरम्भ में, (क) उनके बदले एवम् (ख) उनके सहित अन्य योजक भी रखे जाते हैं; जैसे—

क–१. मैं पहले कह चुका हूँ कि दुनिया गोल है।
क–२. जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, दुनिया गोल है।
ख–१. दुनिया इधर से उधर हो जाए पर वह अपना हठ नहीं छोड़ेगा।
ख–२. चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए, वह अपना हठ नहीं छोड़ेगा।
ग–१. वह क्षमा नहीं माँगेगा तो मैं उससे नहीं बोलूंगा।
ग–२. जब तक कि वह क्षमा नहीं माँगेगा, मैं उससे नहीं बोलूंगा।
घ–१. वह गाली देता है तो मेरा कलेजा फट जाता है।
घ–२. जब वह गाली देता है, मेरा कलेजा फट जाता है।
जैसे कि सत्य के होते हैं, इस ट्रक के भी कई पहलू थे।

—श्रीलाल शुक्ल

७३७. यदि मिश्र वाक्य की एक इकाई के किसी सर्वनाम, संज्ञा-विशेषण अथवा क्रिया-विशेषण का नित्यसम्बन्धी दूसरी इकाई में हो तो उन वाक्यों के बीच योजक की आवश्यकता नहीं होती; जैसे—

जो सच बोलेगा, वह पुरस्कार प्राप्त करेगा।
जो मिठाई उसने भेजी थी, वह बासी थी।
जितना माल तुम भेजोगे उतना हम भी भेजेंगे।
वह जैसे आया वैसे चला गया।
पहले पूरी चीज़ सुन लो, बाद में अपनी राय देना।[1]

—प्रभाकर माचवे

७३८. जब दो या अधिक पदों को योजक जोड़ते हैं तो संयोजन तथा विकल्प सूचक योजक अन्तिम पद के पहले आते हैं और 'अन्य अनेक' के सूचक योजक अन्त में; जैसे—

कृष्ण और सोहन जा रहे हैं। (संयोजनसूचक)
राम, मोहन, कृष्ण और सोहन जा रहे हैं। (,,)
राधा या सीता जाएगी। (विकल्पसूचक)
राधा, सीता, कृष्णा या उर्मिला जाएगी। (,,)
राम, कृष्ण, वीरेन्द्र, सुभाष आदि (वगैरह, इत्यादि, प्रभृति) जाएँगे। (अन्य अनेक अर्थ में)
रमा, राधिका, सरोज, नीलम आदि (वगैरह, इत्यादि, प्रभृति) आएँगी। (अन्य अनेक अर्थ में)

[1] साँचा, पृ० ६२।

७३९. जब विभिन्न लिंगी कर्ता (अथवा कर्म) संयोजन या विकल्पसूचक योजक से जुड़े हों तो सामान्यतया अन्तिम कर्ता (अथवा कर्म) के लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुरूप क्रियापद में परिवर्तन होता है; जैसे—

वह और मैं जाऊँगा।
एक लड़का और एक लड़की आई है।

मैंने लोटा और बाल्टी खरीदी।
उसने बाल्टी और लोटा खरीदा।

राधा या श्याम आएगा।
राम या सीता जाएगी।

लड़के और लड़कियाँ पढ़ रही हैं।
लड़कियाँ और लड़के पढ़ रहे हैं।

७४०. संयोजनसूचक योजक द्वारा सम्बद्ध यदि समलिंगी कर्ता (या कर्म) पद हों तो क्रियापद सम्बद्ध लिंग में तथा बहुवचन रूप में रहता है; जैसे—

राम और श्याम आ रहे हैं।
सीता और राधा आ रही हैं।

[टिप्पणी—पुराने लेखक 'राम और श्याम आ रहा है' और 'सीता और राधा आ रही है' भी लिखते थे।]

७४१. यदि संयोजनसूचक योजक द्वारा सम्बद्ध विभिन्न लिंगी कर्ता (अथवा कर्म) पद हों तो क्रियापद को पुंलिग बहुवचन रूप में रखने की प्रवृत्ति प्रबल हो रही है; जैसे—

सीता और राम आ रहे हैं।
राम और सीता आ रहे हैं।

पति और पत्नी आ रहे हैं।
पत्नी और पति आ रहे हैं।

७४२. जब कर्ता (या कर्म) पद 'अन्य अनेक' अर्थ में प्रयुक्त योजक से जुड़े हों तो क्रियापद सदा बहुवचन में रहता है।

७४३. जब समलिंगी कर्ता (या कर्म) पद 'अन्य अनेक' अर्थ में प्रयुक्त योजक से जुड़े होते हैं तब क्रियापद सम्बद्ध लिंग में अन्यथा पुंलिग रहता है; जैसे— [देखें नियम—७४२]

राधा, सीता, उमा आदि जा रही हैं।
मोहन, कृष्ण आदि जा रहे हैं।
राम, सीता आदि जा रहे हैं।
सीता, राम आदि जा रहे हैं।

७४४. 'अन्य अनेक' अर्थ में प्रयुक्त योजकों की प्रायः द्विरुक्ति होती है; जैसे—

राधा, सीता, उमा आदि आदि (वगैरह वगैरह) जा रही हैं।

७४५. 'अन्य अनेक' अर्थ में प्रयुक्त योजक के अनन्तर समाहार सूचक पद का प्रयोग भी होता है; जैसे—

क—१. हम बाजार से दाल, चीनी आदि लाएंगे।
क—२. हम बाजार से दाल, चीनी आदि वस्तुएँ (चीजें) लाएँगे।

७४६. योजक द्वारा जुड़े हुए संज्ञापदों के बाद आनेवाला विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय उन सभी पदों को शासित करता है; जैसे—

क—१. लड़के और लड़कियाँ जाएँगी।
क—२. लड़कों और लड़कियों को जाना है।

७४७. यदि योजक द्वारा जुड़े हुए नामपद समान न हों अथवा विशेष ज़ोर देना हो तो विभक्ति-परसर्ग की आवृत्ति हो सकती है; जैसे—

मोहन मुझको और सीता को बुला रहा है।
राम ने रमेश को और मुझको बुलाया है।
मैं तुमको और उसको भी भेजूंगा।

७४८. उपसर्ग तथा परसर्ग ऐसे सहायक शब्द हैं जो शब्दों के साथ जुड़कर नए शब्द बनाते हैं।

७४९. उपसर्ग तथा प्रत्यय सहायक शब्दों में नहीं जुड़ते।

७५०. ऐसे सहायक शब्द जो शब्दों के आरम्भ में जुड़ते हैं, उन्हें उपसर्ग[1] कहते हैं; जैसे—

उपसर्ग	+	शब्द	=	नया शब्द
अन	+	देखा	=	अनदेखा
अन	+	सुना	=	अनसुना
अन	+	बन	=	अनबन

[1] उपसर्ग सहायक शब्द ही होते हैं। 'अधजला' में 'अध' उपसर्ग नहीं है। यह 'आधा' विशेषण का संक्षिप्त रूप है।

७५१. हिन्दी के छह ही प्रचलित उपसर्ग हैं जो उसके अपने कहे जा सकते हैं; जैसे—

अ	—	अथक, अपढ़
अन	—	अनदेखा, अनसुना
नि	—	निडर
कु	—	कुघड़ी
सु	—	सुदिन
ना	—	नासमझ

[टिप्पणी—प्रथम पाँचों उपसर्ग मूलतः संस्कृत के ही हैं और अन्तिम 'ना' फारसी का। हिन्दी ने स्वयं उपसर्गों की सहायता से थोड़े से ही शब्द बनाए हैं। हाँ उसने संस्कृत तथा अरबी-फारसी के तत्सम तथा तद्भव ऐसे शब्द अवश्य अधिक मात्रा में अपनाए हैं जो मूलतः उपसर्ग से युक्त हैं। अतः अमोल<अमूल्य, औगुन<अवगुण, दुकाल<दुष्काल आदि तद्भव शब्दों अ, औ और दु को उपसर्ग नहीं मानना चाहिए क्योंकि ये तद्भव शब्दों के अंग हैं।

संस्कृत के उपसर्ग

अ	अकाल, अशिक्षित
अति	अतिशय, अतिक्रमण
अधि	अधिकार, अधिकरण
अन्[1]	अनादर (अन् + आदर), अनभीष्ट (अन् + अभीष्ट)
अनु	अनुकरण, अनुशासन
अप	अपयश, अपशब्द
अभि	अभिमान, अभियान
अव	अवलोकन, अवरोह
आ	आजीवन, आजन्म
उत्	उत्तम, उत्कंठा
उद्[2]	उद्गार, उद्यम
उप	उपदेश, उपवन
दुर्	दुर्दशा, दुर्लभ
दुष्/दुस्[3]	दुष्कर्म, दुस्साहस

[1] अन् वस्तुतः 'अ' उपसर्ग का ही अन्य रूप है।
[2] उद् वस्तुतः उत् उपसर्ग का ही अन्य रूप है।
[3] दुष् तथा दुस् वस्तुतः दुर् उपसर्ग के ही अन्य रूप हैं।

नि	निवारण, निरोध
निर्	निर्दोष, निर्भय
निश्/निस्[1]	निश्चल, निस्तेज
परा	पराजय, परामर्श
परि	परिचय, परिजन
प्र	प्रबल, प्रताप
प्रति	प्रतिकार, प्रतिदान
वि	विरोध, विमुख
सम्	सम्मेलन, सम्मुख
सन्[2]	संन्यास, संहार
सु	सुजन, सुवास

अरबी-फारसी के कुछ प्रसिद्ध उपसर्ग

अल	अलगरज
कम	कमसिन
खुश	खुशबू
ग़ैर	ग़ैरवाजिब
ना	नालायक
फ़िल	फ़िलहाल
ब	बनाम
बद	बदनाम
बर	बरखास्त
बा	बाइज़्ज़त
बिल	बिलकुल
बिला	बिलाशक
बे	बेकसूर
ला	लाजवाब
सर	सरताज
हम	हमराह
हर	हररोज़]

[1] निश् तथा निस् वस्तुतः निर् के ही अन्य रूप हैं।

[2] सन् वस्तुतः सम् का ही अन्य रूप है।

७५२. ऐसे सहायक शब्द जो पदों के अन्त में जुड़ते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे—

आऊ (प्रत्यय)	खाऊ, गँवाऊ
इयल (,,)	मरियल, सड़ियल
आई (,,)	लड़ाई, भलाई

[टिप्पणी—'प्रत्यय' भी शब्दों के अन्त में जुड़ते हैं और कुछ अवस्थाओं में विभक्ति-परसर्ग तथा विभक्ति-प्रत्यय भी शब्दों के अन्त में जुड़ते हैं। अन्तर यह है कि विभक्ति-परसर्ग या विभक्ति-प्रत्यय तो एक पद का सम्बन्ध दूसरे पद से स्थापित करने के लिए जोड़े जाते हैं जबकि प्रत्यय नए शब्द का निर्माण करने के लिए।]

७५३. जिस शब्द में प्रत्यय लगता है सामान्यतया उसका प्रकार-भेद भी वदल जाता है; जैसे—

उठ	(धातु)	+	आऊ	(प्रत्यय)	=	उठाऊ	(संज्ञा-विशेषण)
भला	(संज्ञा-विशेषण)	+	आई	(प्रत्यय)	=	भलाई	(संज्ञा)
लड़	(धातु)	+	ना	(प्रत्यय)	=	लड़ना	(संज्ञा)
चौड़ा	(संज्ञा-विशेषण)	+	आन	(प्रत्यय)	=	चौड़ान	(संज्ञा)
आम	(वस्तुवाचक-प्रकृति निर्मित संज्ञा)	+	आवट	(प्रत्यय)	=	अमावट	(वस्तुवाचक जीव-निर्मित संज्ञा)
नाक	(वस्तुवाचक-प्रकृति निर्मित संज्ञा)	+	ऐल	(प्रत्यय)	=	नकेल	(वस्तु-वाचक जीव-निर्मित संज्ञा)

७५४. जो प्रत्यय नाम-पदों में लगाए जाते हैं उन्हें नाम-प्रत्यय और जो धातुओं में लगाये जाते हैं उन्हें धातु-प्रत्यय कहते हैं; जैसे—

नाम प्रत्यय

हाथ + ऐली = हथेली
साँप + ओला = सँपोला

धातु प्रत्यय

गिन + ती = गिनती
घट + ओतरी = घटोतरी

[टिप्पणी—हिन्दी वस्तुतः प्रत्यय प्रधान भाषा है उपसर्ग प्रधान नहीं। संस्कृत मूलतः उपसर्ग प्रधान भाषा ही है। हिन्दी में अनगिनत प्रत्यय हैं जिनका लेखा-जोखा अभी पूर्णतः नहीं हो सका है। यहाँ कुछ प्रमुख प्रत्ययों की सूची दी जा रही है।]

हिन्दी के प्रमुख प्रत्यय

(१) नाम प्रत्यय

(क) संज्ञा को संज्ञा-विशेषण रूप देनेवाले प्रत्यय—

आ	—	भूख	+	आ	=	भूखा
आऊ	—	काम	+	आऊ	=	कमाऊ
आलू	—	झगड़ा	+	आलू	=	झगड़ालू
इयल	—	दाढ़ी	+	इयल	=	दढ़ियल
इया	—	मक्खन	+	इया	=	मखनिया
ईला	—	ख़र्च	+	ईला	=	खर्चीला
उआँ	—	ढाल	+	उआँ	=	ढालुआँ
एरा	—	चाचा	+	एरा	=	चचेरा
एला	—	सौत	+	एला	=	सौतेला
ऐल	—	गुस्सा	+	ऐल	=	गुस्सैल
बाज	—	धोखा	+	बाज़	=	धोखेबाज़
वाला	—	घोड़ा	+	वाला	=	घोड़ेवाला
सार	—	मिलन	+	सार	=	मिलनसार

(ख) संज्ञा का प्रकार भेद बदल देनेवाले प्रत्यय—

अड़	—	भंग	+	अड़	=	भंगड़	वस्तुसूचक/पदसूचक
आरा	—	गली	+	आरा	=	गलियारा	स्त्रीलिंग/पुंलिंग
उआ	—	राँड़	+	उआ	=	रँडुआ	स्त्रीलिंग/पुंलिंग
उरी	—	बाँस	+	उरी	=	बाँसुरी	पुंलिंग/स्त्रीलिंग
एली	—	हाथ	+	एली	=	हथेली	पुंलिंग/स्त्रीलिंग
ओला	—	साँप	+	ओला	=	सँपोला	पुंलिंग/अल्पार्थक रूप
ओटा	—	चाम	+	ओटा	=	चमोटा	प्रकृतिरचित/प्राणीनिर्मित
औड़ा	—	हाथ	+	औड़ा	=	हथौड़ा	प्रकृतिरचित/प्राणीनिर्मित
औता	—	काठ	+	औता	=	कठौता	प्रकृतिरचित/प्राणीनिर्मित
औती	—	बाप	+	औती	=	बपौती	पदसूचक/भाववाचक
का	—	भाप	+	का	=	भपका	प्रकृतिरचित/प्राणीनिर्मित
दार	—	दुकान	+	दार	=	दुकानदार	स्थानवाचक/पदवाचक
पन	—	बच्चा	+	पन	=	बचपन	प्राणीसूचक/भाववाचक
ली	—	टीका	+	ली	=	टिकली	पुंलिंग/स्त्रीलिंग
वाल	—	आगरा	+	वाल	=	अगरवाल	स्थानसूचक/पदवाचक
वाला	—	घोड़ा	+	वाला	=	घोड़ेवाला	प्राणीसूचक/पदवाचक

(ग) संज्ञा को धातु रूप देनेवाले प्रत्यय—

आ	—	शरम	+	आ	=	शरमा
इया	—	चपत	+	इया	=	चपतिया

(घ) संज्ञा-विशेषण को संज्ञापद (स्त्रीलिंग) बनानेवाले प्रत्यय—

आई	—	भला	+	आई	=	भलाई
आस	—	मीठा	+	आस	=	मिठास
ई	—	चुप	+	ई	=	चुप्पी
ता	—	सुंदर	+	ता	=	सुंदरता (संस्कृत प्रत्यय)

(ङ) संज्ञा-विशेषण से संज्ञापद (पुंलिंग) बनानेवाले प्रत्यय—

आ	—	सात	+	आ	=	सत्ता
आन	—	ऊँचा	+	आन	=	ऊँचान
आप	—	बूढ़ा	+	आपा	=	बुढ़ापा
का	—	चार	+	का	=	चौका
पन	—	उजला	+	पन	=	उजलापन
ला	—	नौ	+	ला	=	नहला

(च) संज्ञा-विशेषण को धातु बनानेवाले प्रत्यय—

आ	—	गरम	+	आ	=	गरमा

(छ) संज्ञा-विशेषण का प्रकार बदल देनेवाले प्रत्यय—

ओ	—	हजार	+	ओ	=	हजारो
का	—	एक } दो }	+ +	का का	=	इक्का-दुक्का
हरा	—	दो	+	हरा	=	दोहरा

(२) धातु प्रत्यय

(क) धातु को संज्ञापद (पुंलिंग) रूप देनेवाले प्रत्यय—

आ	—	फिर	+	आ	=	फेरा
आक	—	तैर	+	आक	=	तैराक
आकू	—	उड़	+	आकू	=	उड़ाकू
आव	—	छिप	+	आव	=	छिपाव
आवा	—	बुला	+	आवा	=	बुलावा
एज	—	बंध	+	एज	=	बंधेज
का	—	छिल	+	का	=	छिलका
ता	—	कर	+	ता	=	करता
ना	—	रो	+	ना	=	रोना
वैया	—	गा	+	वैया	=	गवैया

(ख) धातु को संज्ञापद (स्त्रीलिंग) रूप देनेवाले प्रत्यय—

अंत	—	गढ़	+	अंत	=	गढ़ंत
अक	—	बैठ	+	अक	=	बैठक
अन	—	सी	+	अन	=	सियन
आई	—	लड़	+	आई	=	लड़ाई
आवट	—	लिख	+	आवट	=	लिखावट
आस	—	ऊँघ	+	आस	=	ऊँघास
आहट	—	चिल्ला	+	आहट	=	चिल्लाहट
ई	—	हँस	+	ई	=	हँसी
ऐया	—	भूल	+	ऐया	=	भुलैया
ओतरी	—	घट	+	ओतरी	=	घटोतरी
औती	—	मना	+	औती	=	मनौती
औवल	—	बूझ	+	औवल	=	बुझौवल
की	—	फूट	+	की	=	फुटकी
ती	—	गिन	+	ती	=	गिनती
नी	—	कर	+	नी	=	करनी
लाई	—	देख	+	लाई	=	दिखलाई
वनी	—	छा	+	वनी	=	छावनी

(ग) धातु से संज्ञा-विशेषण बनानेवाले प्रत्यय—

अक्कड़	—	भूल	+	अक्कड़	=	भुलक्कड़
आ	—	मर	+	आ	=	मरा (हाथी)
आऊ	—	टिक	+	आऊ	=	टिकाऊ
आवना	—	डर	+	आवना	=	डरावना
इयल	—	मर	+	इयल	=	मरियल
ऊ	—	खा	+	ऊ	=	खाऊ
ऐरा	—	लूट	+	ऐरा	=	लुटेरा
ओड़	—	हँस	+	ओड़	=	हँसोड़
ओरा	—	चाट	+	ओरा	=	चटोरा
ता	—	चल	+	ता	=	चलता (घोड़ा)
ना	—	रो	+	ना	=	रोना (रोनी सूरत)
हा	—	काट	+	हा	=	कटहा (कुत्ता)

७५५. तद्भव तथा देशज शब्दों में प्रत्यय लगने पर दीर्घ स्वर आ, ई एवम् ऊ ह्रस्व हो जाते हैं; जैसे—

आगरा + वाल
=आ+ग्+अ+र्+आ+वाल
=अ+ग्+अ+र्+अ[1]+वाल
=अगरवाल (अ गर वाल)

७५६. आ, ई, ऊ, ओ, इया, ऐया, री, उरी, पन, वाला आदि प्रत्यय लगने पर दीर्घ स्वर ह्रस्व नहीं होते; जैसे—

चूर	+	आ	=	चूरा
चूर	+	ई	=	चूरी
जाँघ	+	इया	=	जाँघिया
भूल	+	ऐया	=	भुलैया
बाँस	+	उरी	=	बाँसुरी
लाख	+	ओ	=	लाखो
नुकीला	+	पन	=	नुकीलापन
गाँव	+	वाला	=	गाँववाला

७५७. यदि प्रत्यय स्वर से आरम्भ हो तो पद के अन्त्य अपूर्णोच्चरित 'अ' स्वर वर्ण का लोप होता है; जैसे—

आम + आवट
=आ+म्+अ(अपूर्णोच्चरित)+आवट
=अ+म्+आवट [नियम ७५५, ७५७]
=अमावट

७५८. प्रत्यय परे होने पर अनुस्वार का लोप होता है और परिणामस्वरूप उससे पूर्व स्वर अनुनासिक हो जाता है; जैसे—

मंग+अड़
=म्+अ+ङ्+ग्+अ(अपूर्णोच्चरित)+अड़
=म्+अँ+ग्+अड़
=मँगड़

संगत+इया
=स्+अ+ङ्+ग्+अ्+त्+अ(अपूर्णोच्चरित)+इया
=स्+अँ+ग्+त्+इया
=सँगतिया

[1] शब्द के अंत में 'अ' अपूर्णोच्चरित होता है।

७५९. वाला, वाज तथा दार ये तीनों ऐसे प्रत्यय हैं जो विभक्ति-परसर्गों की तरह एक पद का सम्बन्ध दूसरे पद से स्थापित करते हैं।

७६०. वाला, बाज़ एवम् दार प्रत्यय परे होने पर अन्य विभक्ति-परसर्गों की तरह आकारान्त पुंलिंग संज्ञापद एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

घोड़ा + वाला = घोड़ेवाला आदमी
धोखा + बाज़ = धोखेबाज़ औरत
सूबा + दार = सूबेदार लोग

७६१. जो आकारान्त पुंलिंग एकवचन संज्ञापद विभक्ति-परसर्ग से परे रहने पर प्रकृत रूप में रहते हैं वे वाला, बाज़ एवम् दार प्रत्यय से युक्त होने पर भी प्रकृत रूप में रहते हैं; जैसे—

दादावाला कोट
चायवाला घर

७६२. जिस प्रकार ही एवम् भर निपात संज्ञापद एवम् विभक्ति-परसर्ग के बीच आ जाते हैं उसी प्रकार संज्ञापद एवम् 'वाला' प्रत्यय के बीच भी आ जाते हैं; जैसे—

क—१. घोड़ेवाला लड़का आया है।
क—२. घोड़े ही वाला लड़का आया है।

ख—१. टाँगेवाली लड़की यहाँ रहती है।
ख—२. टाँगे ही वाली लड़की यहाँ रहती है।

७६३. 'वाला' प्रत्यय उद्यतता अर्थ में 'को' विभक्ति-परसर्ग की तरह क्रियार्थक संज्ञापदों के परे भी आता है; जैसे—

क—१. जहाज आने वाला है।
क—२. जहाज आने को है।

ख—१. गाड़ी जाने ही वाली है।
ख—२. गाड़ी जाने ही को है।

७६४. प्रत्यय परे रहने पर पद के द्वित्त्व व्यंजन एकल हो जाते हैं; जैसे—

(क) गद्दा+एला
=ग्+अ+द्+द्+आ+एला
नियम ७५७ से =ग्+अ+द्+द्+एला
नियम ७६३ से =ग्+अ+द्+एला
=गदेला

(ख) लक्कड़+हारा
=लकड़हारा

७६५. प्रत्यय परे रहने पर संयुक्त व्यंजन के अल्पप्राण व्यंजन का लोप होता है यदि उसके परे महाप्राण व्यंजन हो; जैसे—

(क) मक्खन+इया
नियम ७५७ से =मक्खन्+इया
नियम ७६४ से =मखन्+इया
=मखनिया

(ख) पत्थर+औटा
नियम ७५७ से =पत्थर्+औटा
नियम ७६४ से =पथर्+औटा
=पथरौटा

७६६. 'आ' प्रत्यय परे रहने पर संख्यासूचक पदों का अन्त्य व्यंजन वर्ण का प्रायः द्वित्त्व होता है; जैसे—

एक + आ = इक्का
सात + आ = सत्ता

७६७. यह, वह, सो, जो और कौन इन पाँच सर्वनाम पदों में 'ना' तथा 'आ' प्रत्यय लगते हैं।

७६८. विभक्ति-परसर्ग की तरह प्रत्यय लगने पर कुछ सर्वनाम पद अपने अन्य विकारी रूप को प्राप्त होते हैं।
[नियम ५७८ से बननेवाले विकारी रूप]

यह	इस
वह	उस
सो	तिस
जो	जिस
कौन	किस

७६९. 'ना' मानवाचक प्रत्यय है और इसके परे रहने पर 'स' को 'त'[1] होता है; जैसे—

निदेशसूचक	यह / इस + ना = इतना वह / उस + ना = उतना
सम्बन्धसूचक	सो / तिस + ना = तितना जो / जिस + ना = जितना
प्रश्नसूचक	कौन/ किस + ना = कितना
इतना उतना	निदेशसूचक मानवाचक विशेषण
तितना जितना	सम्बन्धसूचक मानवाचक विशेषण
कितना	प्रश्नसूचक मानवाचक विशेषण

७७०. 'आ' गुणवाचक प्रत्यय परे होने पर 'इ' का 'ऐ' तथा 'उ' का 'वै' होता है; जैसे—

निदेशसूचक	यह / इस + आ = ऐसा वह / उस + आ = वैसा
सम्बन्धसूचक	सो / तिस + आ = तैसा जो / जिस + आ = जैसा
प्रश्नसूचक	कौन/ किस + आ = कैसा
ऐसा वैसा	निदेशसूचक गुणवाचक विशेषण
तैसा जैसा	सम्बन्धसूचक गुणवाचक विशेषण
कैसा	प्रश्नसूचक गुणवाचक विशेषण

७७१. उपसर्ग या प्रत्यय अथवा दोनों से युक्त पद को यौगिक पद अन्यथा रूढ़ पद कहते हैं।

[1] ऐसा प्रतीत होता है कि त् व्यंजन स् व्यंजन का अल्पप्राण रूप है—

स्—दन्त्यवर्त्स्य, अघोष, महाप्राण

त्—दन्त्यवर्त्स्य, अघोष, अल्पप्राण

७७२. विस्मयादिबोधक ऐसे सहायक शब्दों को कहते हैं जो (क) मानसिक भावों को व्यक्त करते अथवा (ख) सम्बोधन रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

अरे ! विस्मयसूचक
वाह ! हर्षसूचक
उफ ! पीड़ासूचक
हाय ! शोकसूचक
धत ! घृणासूचक
अरे !
हे !
अजी!
अबे ! } सम्बोधनसूचक

७७३. सामान्यतया विस्मयादिबोधक सहायक शब्द वाक्य के अंग नहीं होते अतः इनकी अलग सत्ता सूचित करने के लिए इनके अनन्तर विस्मय चिह्न लगाया जाता है; जैसे—

अरे !
वाह !

७७४. कुछ अवसरों पर विस्मयादिबोधक सहायक शब्द वाक्य के साथ उसके आरम्भ या अन्त में प्रयुक्त होते हैं, तब इन्हें अल्पविराम से अलग किया जाता है; जैसे—

अरे, तुम हो !
कहाँ गया था, रे !

७७५. सम्बोधन रूप में प्रयुक्त नामपदों के साथ विस्मयादिबोधक सहायक शब्दों का प्रयोग भी होता है; जैसे—

ओ रिक्शेवाले, इधर आओ।
अजी साहब, हमारी भी तो सुनिए।
बाप रे, मैं मर गया !

७७६. जब विभिन्न पदों का प्रयोग मानसिक भावों की अभिव्यक्ति के लिए होता है तब उन्हें भी विस्मयादिबोधक माना जाता है; जैसे—

—खबरदार ! —जिंदाबाद !
—तौबा ! —मुर्दाबाद !
—क्या खूब ! —बस !
—गोल ! —अच्छा !
—छक्का ! —नमस्ते !

सातवाँ प्रकरण

पदबंध

७७७. जब दो या अधिक शब्द नियत क्रम से तथा निश्चित अर्थ में किसी पद का कार्य करते हैं तो उन्हें पदबंध कहते हैं; जैसे—

संज्ञा पदबंध—

आँख का इशारा, हातिमताई का किस्सा, चीनी मिट्टी, मिट्टी का तेल, इधर उधर हो जाना[1], मृत्यु को प्राप्त होना, जान देना।

संज्ञा-विशेषण पदबंध—

ध्यान में मग्न, काम में लगा हुआ, हाथ का साफ़, घर से अच्छा, बात का धनी, सहन करने योग्य, अधिकार में आया हुआ।

क्रिया-विशेषण पदबंध—

किसी न किसी तरह, खुदा-खुदा करके, सुबह होते, दिया जले, दोपहर ढले, कब का, दिल से, भले ही।

७७८. ऐसे पदबंध को मुहावरा कहते हैं जिससे कुछ विशिष्ट लक्षणाजन्य अर्थ निकलता हो;[2] जैसे—

कमर टूट जाना—उसकी कमर टूट गई है।

[**टिप्पणी**—'कमर टूट जाना' मुहावरा है और इसका विशिष्ट लक्षणाजन्य अर्थ है—शक्ति या साहस न रह जाना।]

[1] जिस पदबंध के अंत में क्रियार्थक संज्ञा होती है वस्तुतः वह संज्ञा पदबंध ही होता है। यह दूसरी बात है कि उसके धातु से क्रियापद भी बनते हैं। 'पुस्तकें इधर उधर हो गईं' में 'इधर उधर हो गईं' अवश्य क्रिया पदबंध है। परन्तु हिन्दी में इसके मूल रूप 'इधर उधर हो जाना' को संज्ञा पदबंध के रूप में स्वीकार करना ही भला प्रतीत होता है। हिन्दी कोशों में क्रियार्थक संज्ञाओं को क्रिया माना जाता है जो सिद्धान्ततः ठीक नहीं, परन्तु ऐसा सुविधा के लिए किया जाता है।

[2] मुहावरे की यह परिभाषा शब्दर्षि रामचन्द्र वर्मा की परिभाषा पर आधारित है। देखें अच्छी हिन्दी, पृ० १५५ (सत्तहवाँ संस्करण)।

७७९. जब किसी पद से कुछ विशिष्ट लक्षणाजन्य अर्थ निकलता हो तो उसका प्रयोग लाक्षणिक या मुहावरेदार कहा जा सकता है; जैसे—

अरहर की दाल तो आजकल के लिए आग है।

अब हमारी नौकरी तो गई।

[टिप्पणी—यहाँ संज्ञापद 'आग' और 'जा' धातु से बने 'गई' क्रियापद का प्रयोग मुहावरेदार माना जाएगा।]

७८०. ऐसे पदबंध को कहावत[1] कहते हैं जो किसी कथा पर आधारित होता है, सादृश्य द्योतनार्थ प्रयुक्त होता है एवम् प्राय: वाक्य के रूप में होता है; जैसे—

नाच न आवे आँगन टेढ़ा।

चोर चोर मौसेरे भाई।

आसमान से गिरा खजूर में अटका।

७८१. दो या अधिक पदों के संयोजन से बने संक्षिप्त पद को समास-पद अथवा समस्त पद कहते हैं; जैसे—

काठ की पुतली	कठपुतली
आँख पर चढ़ा	अँखचढ़ा
पानी का घाट	पनघट
पानी की चक्की	पनचक्की
दो या चार	दो चार, दो-चार
उठते और बैठते	उठते बैठते, उठते-बैठते
माँ और बाप	माँ बाप, माँ-बाप
जेब की घड़ी	जेबघड़ी, जेब-घड़ी
खेल और कूद	खेलकूद, खेल-कूद

[टिप्पणी—यहाँ तद्भव और देशज शब्दों से बने समास-पदों पर ही विचार किया गया है। संस्कृत तथा अरबी-फारसी के जो तत्सम समास-पद हिन्दी में चलते हैं वे उन्हीं भाषाओं के नियमों से बने हैं।]

[1] कहावत के सम्बन्ध में शब्दर्षि रामचन्द्र वर्मा का निम्नलिखित वक्तव्य दृष्टव्य है—
मुहावरों का प्रयोग तो वाक्यों के अन्तर्गत उनका सौंदर्य बढ़ाने और उनमें उपयुक्त प्रवाह लाने के लिए होता है और कहावतों का प्रयोग बिलकुल स्वतन्त्र रूप से और किसी विषय को केवल स्पष्ट करने के लिए। अच्छी हिन्दी, पृ० १७० (सत्रहवाँ संस्करण)।

७८२. समास-पद के पूर्वपद का यदि कोई वर्ण ह्रस्व या लुप्त हो तो उसे उत्तर-पद से मिलाकर लिखने की ही प्रवृत्ति प्रशस्त है; जैसे—

काठ की पुतली [काठ / कठ] कठपुतली
पानी का घाट [पानी / पन] पनघट

७८३. यदि समास-पद के पूर्व और उत्तरपद के बीच कोई सहायक शब्द लुप्त हो तो सामान्यतया उन्हें अलग अलग लिखते हैं और विकल्प से उनमें योजिका भी लगाई जाती है; जैसे—

दो या चार	दो चार, दो-चार
उठते और बैठते	उठते बैठते, उठते-बैठते
हँसी और खेल	हँसी खेल, हँसी-खेल
कहने के योग्य	कहने योग्य, कहने-योग्य
ऐसा या वैसा	ऐसा वैसा, ऐसा-वैसा

७८४. यदि समास-पद का पूर्वपद एक अक्षरवाला हो और उसका अन्त्य स्वर अपूर्णोच्चरित हो तब उसे अलग अलग नहीं लिखते बल्कि मिलाकर लिखते हैं अथवा योजिका लगाते हैं; जैसे—

जेबघड़ी, जेब-घड़ी (जेब घड़ी, नहीं)
खेलकूद, खेल-कूद (खेल कूद, नहीं)

[टिप्पणी—अतः स्पष्ट है कि माँ और बाप से बना समास-पद 'माँ-बाप' या 'माँ बाप' लिखा जाएगा 'माँबाप' नहीं।]

७८५. रचना की दृष्टि से समास-पदों के दो भेद अविकारी और विकारी होते हैं; जैसे—

अविकारी (अर्थात् जिनमें विकार न हो)

रसोई + घर = रसोई-घर
काम + चलाऊ = कामचलाऊ
दिल + बहलाऊ = दिलबहलाऊ

विकारी (अर्थात् जिनमें विकार होता हो)

काठ + पुतली = कठपुतली
आधा + कचरा = अधकचरा
मूँड + चिरा = मुँडचिरा

७८६. अर्थ की दृष्टि से समास-पदों के दो भेद अर्थसिद्ध और अर्थगर्भ भी किए जा सकते हैं; जैसे—

अर्थसिद्ध (अर्थ से सिद्ध)

अधकचरा	= आधा कचरा
खटमीठा	= खट्टा और मीठा
मोलभाव	= मोल और भाव

अर्थगर्भ (जिसके गर्भ में अर्थ छिपा हो)

रसोई-घर	= रसोई बनाने का घर
आँखमिचौनी	= आँख मींचने का खेल
ललमुँहा	= वह जिसका लाल मुँह हो अर्थात् वन्दर

७८७. अर्थगर्भ समास-पदों का पूर्वपद यदि देशज या तद्भव हो तो उसके आ, ई तथा ऊ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं एवम् 'ओ' का 'उ' हो जाता है; जैसे—

(क) काठ+पुतली
=क्+आ+ठ्+अ(अपूर्णोच्चरित)+पुतली
=क्+अ+ठ्+अ(अपूर्णोच्चरित)+पुतली [नियम ७८७]
=कठपुतली [नियम ७८२]

(ख) फूल+झड़ी
=फ्+ऊ+ल्+अ(अपूर्णोच्चरित)+झड़ी
=फ्+उ+ल्+अ(अपूर्णोच्चरित)+झड़ी [नियम ७८७]
=फुलझड़ी [नियम ७८२]

(ग) आधा+कचरा
=आ+ध्+आ+कचरा
=अ+ध्+अ(अपूर्णोच्चरित)+कचरा [नियम ७८७]
=अधकचरा [नियम ७८२]

(घ) घोड़ा+सवार
=घ्+ओ+ड़्+आ+सवार
=घ्+उ+ड़्+अ(अपूर्णोच्चरित)+सवार [नियम ७८७]
=घुड़सवार [नियम ७८२]

७८८. हिन्दी में तद्भव तथा देशज इकारान्त पद नहीं होते इसलिए पूर्वपद को समास में प्राप्त अन्त्य इ स्वर का अ[1] हो जाता है; जैसे—

पानी + चक्की
= प् + आ + न् + ई + चक्की
= प् + अ + न् + इ + चक्की [नियम ७८७]
= प् + अ + न् + अ(अपूर्णोच्चरित) + चक्की [नियम ७८८]
= पनचक्की। [नियम ७८२]

[टिप्पणी—उक्त नियम अन्त्य 'इ' से ही सम्बद्ध है अतः मीठा + बोला से 'मिठबोला' ही बनेगा—मठबोला नहीं।]

७८९. विकारी समास-पद के पूर्वपद का द्वित्व व्यंजन एकल हो जाता है; जैसे—

(क) खट्टा + मीठा
= ख् + अ + ट् + ट् + आ + मीठा
= ख् + अ + ट् + ट् + अ(अपूर्णोच्चरित) + मीठा [नियम ७८७]
= ख् + अ + ट् + अ(अपूर्णोच्चरित) + मीठा [नियम ७८९]
= खटमीठा [नियम ७८२]

(ख) कच्चा + लोहा
= क् + अ + च् + च् + आ + लोहा
= क् + अ + च् + च् + अ(अपूर्णोच्चरित) + लोहा [नियम ७८७]
= क् + अ + च् + अ(अपूर्णोच्चरित) + लोहा [नियम ७८९]
= कचलोहा [नियम ७८२]

७९०. समास-पद के पूर्वपद के अन्त्य अपूर्णोच्चरित स्वर से युक्त व्यंजन वर्ण का लोप होता है यदि उसी व्यंजन वर्ण से उत्तर पद आरम्भ होता हो; जैसे—

नाक + कटा
= न् + आ + क् + अ(अपूर्णोच्चरित) + कटा
= न् + अ + क् + अ(अपूर्णोच्चरित) + कटा
= न् + अ + कटा
= नकटा

[1] शब्द के अन्त में 'अ' अपूर्णोच्चरित होता है। देखें नियम—१५०

७९१. समास-पद का पूर्व पद संख्यासूचक हो तो एक, दो, तीन, चार, पांच और छह का इक, दु, ति, चौ, पच और छ रूप होता है; जैसे—

एक	+	तारा	=	इकतारा
दो	+	धारू	=	दुधारू
तीन	+	कोना	=	तिकोना
चार	+	राह	=	चौराहा
पाँच	+	मेल	=	पचमेल
छह	+	कोना	=	छकोना

[शेष नियम पूर्ववत्—७८२, ७८७ से]

सात	+	लड़ा	=	सतलड़ा
आठ	+	तारा	=	अठतारा

७९२. यदि समास-पद स्त्रीलिंग संज्ञापद हो तो संख्यासूचक पूर्वपद में विकल्प से ही विकार होता है; जैसे—

दो	+	लड़ा	=	(i) दोलड़ा
			=	(ii) दुलड़ा
दो	+	पहर	=	(i) दोपहर
			=	(ii) दुपहर
दो	+	नाली	=	(i) दोनाली
			=	(ii) दुनाली
चार	+	पाई	=	(i) चारपाई[1]
			=	(ii) चौपाई

[टिप्पणी—यहाँ सामान्यतया विकार होता है इसलिए पूर्वपद तथा उत्तरपद को मिलाया जाता है। सम्भवतः यही कारण है कि विकार न करने पर भी दोनों पदों को मिलाकर ही लिखने की परिपाटी है।]

७९३. यदि पूर्वपद और उत्तरपद विभिन्न स्रोतों के हों तो उनमें योजिका लगाते हैं; जैसे—

खादी-उद्योग	खादी	+	उद्योग	(देशज+आकर तत्सम)
आँसू-गैस	आँसू	+	गैस	(तद्भव+आगत)
धन-दौलत	धन	+	दौलत	(आकर तत्सम+आगत)
गली-कूचा	गली	+	कूचा	(तद्भव+आगत)
जी-जान	जी	+	जान	(तद्भव+आगत)

[1] हिन्दी में चारपाई और चौपाई अलग-अलग अर्थों में चलते हैं।

७९४. भिन्न भिन्न स्रोतों के आधार पर गढ़े जा रहे समास-पदों को प्रायः अलग अलग ही रखते हैं उन्हें जोड़ते या उनमें योजिका नहीं लगाते; जैसे—

सफाई अभियान	(सफाई का अभियान)
सड़क निर्माण	(सड़क का निर्माण)
नहर योजना	(नहर की योजना)
काम रोको प्रस्ताव	(काम रोको सम्बन्धी प्रस्ताव)

७९५. यदि समास-पद स्त्रीलिंग संज्ञापद हो तो पूर्वपद में विकार नहीं होता; जैसे—

कहा-सुनी
छीना-झपटी
धक्का-मुक्की
लगाई-बुझाई

[टिप्पणी—पूर्व नियमों से कहसुनी, छिनझपटी, धकमुक्की, लगबुझाई रूप बनने चाहिए थे।]

७९६. यदि पूर्व पद धातु हो अथवा प्रत्यय से युक्त हो तो उसके दीर्घ स्वर ह्रस्व नहीं होते; जैसे—

खींच-तान	(खींच — धातु)
रो-धो	(रो — धातु)
खा-पी	(खा — धातु)
उठा-पटक	(उठा — उठ धातु + आप्रत्यय)
चला-चली	(चला — चल धातु + आप्रत्यय)

७९७. समास-पद के कुछ उत्तर पदों में भी विकार होता है; जैसे—

पानी + घाट = पनघट
लंबा + तड़ंगा = लंबतड़ंग

७६८. कुछ सर्वनाम तथा क्रिया-विशेषण पदों के साथ 'ही' निपात के योग से भी समास-पद बनते हैं जो प्राय: अनियमित हैं; जैसे—

यह	+	ही	=	यही
वह	+	ही	=	वही
अब	+	ही	=	अभी
कब	+	ही	=	कभी
तब	+	ही	=	तभी
जब	+	ही	=	जभी
यहाँ	+	ही	=	यहीं
वहाँ	+	ही	=	वहीं
कहाँ	+	ही	=	कहीं
इस	+	ही	=	इसी
उस	+	ही	=	उसी
किस	+	ही	=	किसी ?
हम	+	ही	=	हम्हीं/हमी
तुम	+	ही	=	तुम्हीं
उन	+	ही	=	उन्हीं
इन	+	ही	=	इन्हीं
किन	+	ही	=	किन्हीं
जिन	+	ही	=	जिन्हीं

[टिप्पणी—प्रश्न हो सकता है कि यही, वही, अभी, कभी, तभी, हमीं, तुम्हीं आदि को यौगिक पद समझा जाए या समास-पद। वस्तुत: 'ही' सहायक शब्द है और प्रत्यय भी सहायक शब्द होता है इसलिए ऐसे पद यौगिक ही हुए। परन्तु प्रत्यय से बने पद भिन्न प्रकार-भेदवाले होते हैं जबकि 'ही' से बने पदों का प्रकार-भेद नहीं बदलता। इसलिए इन्हें समास-पदों के अन्तर्गत ही रखना अधिक उचित प्रतीत होता है।]

७९९. द्विरुक्त पदों की गिनती समास-पदों में ही होती है क्योंकि वे अर्थ-गर्भ होते हैं और उनमें निरन्तरता, सदृश्यता, सर्वता, अधिकता, विविधता, विषयपरकता आदि की विवक्षा रहती है; जैसे—

मैं बैठे बैठे थक गया हूँ। (निरन्तरता)
बीच बीच में बात करने से आपकी कविता का महत्त्व कम हो जाता है।[1] —प्रभाकर माचवे
उसकी साड़ी का रंग नीला नीला है। (सदृश्यता)
हम घर घर चंदे के लिए जाएँगे। (सर्वता)
वह खुशी खुशी घर चला गया। (अधिकता)
लड़कों ने सुन्दर सुन्दर कपड़े पहने थे। (विविधता)
उसने मुझे बातों बातों में उलझाए रखा। (विषयपरकता)

८००. द्विरुक्त समास-पदों के अवयवों को प्रायः अलग अलग ही रखते हैं अथवा उनमें योजिका लगाते हैं; जैसे—

बैठे बैठे	बैठे-बैठे
नीला नीला	नीला-नीला
घर घर	घर-घर
समय समय	समय-समय
बातों बातों (में)	बातों-बातों (में)

८०१. कुछ द्विरुक्त संज्ञा-विशेषणों एवम् क्रिया-विशेषणों में उस समय संयोजन भी होता है जब अधिकता या तीव्रता की विवक्षा सूचित करना अभिप्रेत हो।

८०२. अधिकता या तीव्रता की विवक्षा होने पर समास-पदों के मध्य 'आ' या 'ओं' का आगम होता है; जैसे

गरम गरम	गरमागरम
टप टप	टपाटप
हज़ार हज़ार	हज़ारों-हज़ार[2]

८०३. नामपदों तथा धातुओं के साथ संज्ञा-विशेषण 'जैसा' विशेषतया उसका संक्षिप्त रूप 'सा' समास-पद बनाते हैं।

[1] साँचा, पृ० ६२।
[2] 'हर साल हज़ारों-हज़ार परदेस जाने वाले मेघदूतों द्वारा हज़ारों-हज़ार सन्देश भेजते हैं।' —राही मासूम रज़ा कृत आधा गाँव, पृ० १०।

८०४. समास-पद में नाम-पदों के साथ 'जैसा' या 'सा' मिलते-जुलते होने की विवक्षा देता है और धातुओं के साथ 'मानो' की; जैसे—

धूआं-जैसा उठ रहा है। धूआं-सा उठ रहा है।	अर्थात् धूएँ के जैसी कोई चीज उठ रही है।
वह खेल-सा रहा है।	मानो वह खेल रहा है (वस्तुतः वह खेल नहीं रहा।)

समय के घड़े में एक पतला-सा छेद है जिससे क्षण-क्षण समय टपकता रहता है।[1] —राही मासूम रज़ा

८०५. रूप या महत्त्व की दृष्टि से समास-पद का पूर्वपद प्रायः हलका होता है; जैसे—

रूप की दृष्टि से—

धन-दौलत बाल-बच्चे	एक अक्षरवाला पहले और दो अक्षरवाला बाद में
हल-बैल	दोनों एक अक्षरवाले परन्तु ह्रस्व स्वरवाला पहले

महत्त्व की दृष्टि से—

मक्खी-मच्छर[2] राधा-कृष्ण सीता-राम हँसी-खेल	स्त्रीलिंग पहले और पुंलिंग बाद में

दो-चार

दस-बीस

बराबर होने पर—

रात-दिन	दिन-रात
रोज़ी-रोटी	रोटी-रोज़ी

८०६. संस्कृत की परम्परा के अनुसार रचना के विचार से समास-पदों के चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि, एवम् द्वन्द्व।

[1] आधा गाँव, पृ० ११।

[2] उनमें मिठाइयाँ भी थीं जो दिन-रात आँधी-पानी और मक्खी-मच्छरों के हमलों का मुकाबला करती थीं। श्रीलाल शुक्ल कृत रागदरबारी, पृ० ९।

८०७. अव्ययीभाव समास-पद का पूर्व पद प्रधान होता है; जैसे—

यथाशक्ति	(यथा+शक्ति)	शक्ति के अनुसार
भरसक	(भर+सक)	शक्ति भर

८०८. तत्पुरुष समास में उत्तर पद प्रधान होता है; जैसे—

वनवास	(वन+वास)	वन में वास
राजपुरुष	(राज+पुरुष)	राजा का पुरुष
विश्वव्यापी	(विश्व+व्यापी)	विश्व में व्याप्त
दुःखजनित	(दुःख+जनित)	दुःख से जनित
मूल्यसूचक	(मूल्य+सूचक)	मूल्य का सूचक
विचारसंबंधी	(विचार+संबंधी)	विचार से संबद्ध

८०९. तत्पुरुष समास के दो भेद होते हैं—कर्मधारय और द्विगु।

८१०. तत्पुरुष समास-पद का पूर्व पद संज्ञा-विशेषण हो तो कर्मधारय एवम् संख्यासूचक विशेषण हो तो द्विगु समास होता है; जैसे—

कर्मधारय—

नीलकमल (नील-कमल) नीला (विशेषण)+कमल

द्विगु—

नवग्रह (नव-ग्रह) नव (संख्यासूचक विशेषण)+ग्रह

८११. उपमान और उपमेय के योग से बननेवाले समास-पदों की गिनती भी कर्मधारय में होती है; जैसे—

घनश्याम (घन-श्याम) घन के समान श्याम

८१२. जिस समास-पद के पद अपने अपने अर्थ छोड़कर किसी अन्य पद का अर्थ सूचित करते हों उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे—

लम्बोदर = गणेश (लम्बा है उदर जिसका)

८१३. जिस समास-पद के दोनों पद प्रधान हों उन्हें द्वन्द्व समास कहते हैं; जैसे—

देशकाल (देश-काल) देश और काल

[टिप्पणी—तत्सम समास-पदों को मिलाकर भी लिखा जाता है और उनमें योजिका भी लगाते हैं। कुछ सामान्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं—

(क) यदि समास-पदों में सन्धि होती है तो उन्हें मिलाकर लिखा जाता है; जैसे—

जलोत्सव = (जल+उत्सव)
विचारोत्पादक = (विचार+उत्पादक)

(ख) पूर्व पद या उत्तर पद विशेषण हो तो मिलाकर लिखते हैं; जैसे—

पूर्वकथन	अंशकालिक
पूर्वजन्य	वीरतापूर्ण
शास्त्रसज्जित	वीरतापूर्वक

(ग) यदि समास-पद के दोनों पद संज्ञापद हों तो उत्तर पद एक अक्षरवाला होने पर मिलाकर लिखा जाता है अन्यथा योजिका लगाई जाती है; जैसे—

अर्थशास्त्र	अर्थ-विज्ञान
शब्दशास्त्र	शब्द-विज्ञान
शब्दलोक	शब्द-जगत्
करतल	कर-निर्धारण

(घ) यदि उत्तर-पद हो तो एक अक्षरवाला ही परन्तु उसमें संयुक्त व्यंजन हो तो विकल्प से योजिका भी लगाते हैं; जैसे—

अर्थशास्त्र	अर्थ-शास्त्र
विहारस्थल	विहार-स्थल
विषवृक्ष	विष-वृक्ष
मंत्रतंत्र	मंत्र-तंत्र]

८१४. व्यक्ति-नाम के सूचक समास-पदों में आकारान्त संज्ञा-विशेषण प्रायः एकारान्त हो जाते हैं; जैसे—

छोटे लाल
प्यारे लाल
अनोखे खाँ
अच्छे मियाँ
नंद दुलारे
बैजू बावरे, बैजू बावरा

आठवाँ प्रकरण

पदान्तर

८१५. पद-भेद में अन्तर आ जाना ही पदान्तर है।

८१६. सर्वनाम संज्ञा-विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

हम लोग जाएँगे।
कौन आदमी वहाँ जाएगा?
हम वे पुस्तकें खरीदेंगे।
राम उन पुस्तकों को कहाँ रखेगा?
जो लोग जाना चाहें चले जाएँ।

८१७. मानसूचक संज्ञापद संज्ञा-विशेषणों की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

मैंने दो गज़ मारकीन खरीदी।
उसके पास दस बीघा ज़मीन है।
एक छटाँक घी लाना।
मैं दो सेर दूध पी सकता हूँ।

८१८. समय तथा स्थानसूचक संज्ञापद क्रिया-विशेषणों की तरह भी प्रयुक्त होते हैं और यदि वे मूलतः आकारान्त पुंलिंग हैं तो एकारान्त भी होते देखे जाते हैं; जैसे—

वह दो वर्ष दिल्ली रहा।
वह दिल्ली जाएगा।
वह नदी के किनारे गया था।

[टिप्पणी—क्रियापद के सम्बन्ध में समय एवम् स्थान का निर्देश करने वाले पद क्रिया-विशेषण होते हैं।]

८१९. जब संज्ञापद क्रिया-विशेषण रूप में प्रयुक्त होते हैं तो उनकी विशेषता बतलानेवाले संज्ञा-विशेषण तथा सर्वनाम-विशेषण विकारी रूप में प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

वह अच्छे समय आया।
वह भले दिन यहाँ से गया।
इस समय वह वहाँ नहीं मिलेगा।
तुम किस तरफ गए थे ?
पानी इस वर्ष खूब बरसा।
वह उस घड़ी बड़बड़ा उठा।
उस रात वहाँ चोर आए।

८२०. अनेक संज्ञा-विशेषण संज्ञापदों तथा सर्वनामपदों की तरह भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

गरीब को कौन पूछता है ?
सब हमारे यहाँ आएँगे।
विचारशील अब कहाँ हैं ?
सब सिनेमा देखने गए हैं।
कुछ हमारे यहाँ भी ठहरे हैं।
कई सफल हुए होंगे।
'कल्पना' का सम्पादकीय सशक्त था।

८२१. अनेक संज्ञापद धातुओं की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

स्वीकार, नकार, आरम्भ

८२२. अनेक संज्ञा-विशेषण पद क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त होते तथा प्रकृत रूप में रहते हैं; जैसे—

राम अच्छा गाता है। — मोहन कैसा आया !
सीता अच्छा गाती है। — सीता कैसा आई !
लड़के अच्छा गाते हैं। — लड़के कैसा आए !
लड़कियाँ अच्छा गाती हैं। — लड़कियाँ कैसा आईं !

[टिप्पणी—'सीता अच्छी गाती है' तथा 'सीता कैसी आई' प्रयोग भी दिखाई पड़ते हैं।]

८२३. जब आकारान्त सार्वनामिक-विशेषण या संज्ञा-विशेषण को रीतिसूचक क्रिया-विशेषण की तरह प्रयुक्त करना अभीष्ट होता है तब उसे एकारान्त विकारी रूप में प्रयुक्त करते हैं; जैसे—

लड़का कैसे आया ?
लड़की कैसे आई ?
लड़के कैसे आए ?
लड़कियाँ कैसे आईं ?
नौकर भले आए मैं तो नहीं जाऊँगा ।

८२४. अनेक धातु संज्ञापदों की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

ऊँघ, जाँच, माँग, मार, रट, रोक, सीख, हार....

८२५. कुछ धातु समास-पदों में ही संज्ञापद की तरह प्रयुक्त होते हैं; जैसे—

घट-बढ़

८२६. एक अक्षर वाली कुछ धातुओं के पूर्णोच्चरित 'अ' स्वर को दीर्घ करने से संज्ञापद बनते हैं; जैसे—

बढ़ से बाढ़
चल से चाल
चढ़ा-उपरी

८२७. अकर्मक धातु से सकर्मक धातु बनते हैं ।

८२८. आकारान्त तथा पड़, रह, सक, हो आदि अकर्मक धातुओं के सकर्मक धातु रूप नहीं बनते ।

८२९. अकारान्त अकर्मक धातु में 'आ' प्रत्यय के योग से सकर्मक धातु बनाये जाते हैं; जैसे—

चल+आ
=च्+अ+ल्+अ(अपूर्णोच्चरित)+आ
=च्+अ+ल्+आ [नियम ७५७]
=चला ।

बढ़+आ
=ब्+अ+ढ़्+अ(अपूर्णोच्चरित)+आ
=ब्+अ+ढ़्+आ [नियम ७५७]
=बढ़ा ।

इसी प्रकार,

अकर्मक धातु		सकर्मक धातु रूप
दब		दबा
मिल		मिला
खोल		खोला

८३०. सकर्मकता, प्रेरणार्थकता एवम् परोन्मुखता सम्बन्धी प्रत्ययों का योग होने पर धातु के (क) आ, ई एवम् ऊ स्वर ह्रस्व हो जाते हैं, (ख) ए एवम् ओ स्वरों का रूप क्रमशः इ एवम् उ हो जाता है तथा (ग) ऐ स्वर का विकल्प से इ होता है; जैसे—

अकर्मक धातु	सकर्मक धातु
जाग	जगा
भाग	भगा
वीत	विता
सूख	सुखा
खेल	खिला
वैठ	(i) बैठा
	(ii) बिठा
तैर	(i) तैरा
	(ii) तिरा

८३१. अकर्मक धातु का अन्त्य स्वर यदि अपूर्णोच्चरित 'अ' से भिन्न हो तो 'आ' के स्थान पर 'ला' प्रत्यय आता है; जैसे—

अकर्मक धातु —सो [अन्त्य स्वर—ओ]
सकर्मक धातु =सो+ला
=स्+ओ+ला
नियम ८३० से =स्+उ+ला
=सुला

अकर्मक धातु —सी
सकर्मक धातु =सी+ला
=स्+ई+ला
नियम ८३० से =स्+इ+ला
=सिला

अकर्मक धातु —जी
सकर्मक रूप =जी+ला
=ज्+ई+ला
नियम ८३० से =ज्+इ+ला
=जिला

८३२. भीग एवम् डूब धातुओं में 'आ' के स्थान पर 'ओ' प्रत्यय विकल्प से आता है; जैसे—

अकर्मक धातु 'भीग'

सकर्मक रूप (i) भीग+आ=भिगा [नियम ८२९]
(ii) भीग+ओ=भिगो [नियम ८३२]

अकर्मक धातु 'डूब'

सकर्मक रूप (i) डूब+आ=डुबा [नियम ८२९]
(ii) डूब+ओ=डुबो [नियम ८३२]

८३३. आत्मोन्मुखी सकर्मक धातुओं से परोन्मुखी[1] सकर्मक रूप भी उसी प्रकार बनाए जाते हैं जिस प्रकार अकर्मक धातुओं के सकर्मक रूप; जैसे—

आत्मोन्मुखी सकर्मक धातु	प्रत्यय	परोन्मुखी सकर्मक धातु
कर	+आ	करा
पढ़	+आ	पढ़ा
लिख	+आ	लिखा
पकड़	+आ	पकड़ा
छोड़	+आ	छुड़ा
देख	+आ	दिखा
खेल	+आ	खिला
पी	+ला	पिला

८३४. 'खा' आत्मोन्मुखी धातु का परोन्मुखी सकर्मक रूप 'खिला' बनता है; जैसे—

माँ बच्चे को खिलाती है।

८३५. सकर्मक धातु के क्रियापदों के स्थान पर उस समय प्रेरणार्थक धातु के क्रियापदों का प्रयोग होता है जब कर्ता क्रिया का सम्पादन स्वयं न करके किसी से करवाता है।

[1] सकर्मक क्रिया का व्यापार आत्मपरक हुआ तो उसे आत्मोन्मुखी और दूसरे के प्रति हुआ तो उसे परोन्मुखी कह सकते हैं।

८३६. सकर्मक धातु को प्रेरणार्थक रूप देने के लिए 'वा' प्रत्यय लगाते हैं; जैसे—
[देखें नियम—८३०]

सकर्मक धातु	प्रत्यय	प्रेरणार्थक रूप
बाँध	+वा	बँधवा
मार	+वा	मरवा
निकाल	+वा	निकलवा
लूट	+वा	लुटवा
घेर	+वा	घिरवा
निचोड़	+वा	निचुड़वा
देख	+वा	दिखवा
चला	+वा	चलवा
दबा	+वा	दबवा
बुला	+वा	बुलवा
तैरा	+वा	(i) तैरवा
		(ii) तिरवा
बैठा	+वा	(i) बैठवा
		(ii) बिठवा

८३७. 'ला' धातु में 'वा' प्रेरणार्थक प्रत्यय लगने से 'लिवा' रूप बनता है।

८३८. सकर्मक धातु के अन्तिम अक्षर में महाप्राण व्यंजन हो तो 'वा' के स्थान पर 'ला' प्रत्यय अधिक वरीय समझा जाता है; जैसे—

सकर्मक धातु	प्रेरणार्थक रूप (i) वा प्रत्यय	प्रेरणार्थक रूप (ii) ला प्रत्यय
कह	कहवा	कहला
सीख	सिखवा	सिखला
देख	दिखवा	दिखला
बैठा	(i) बैठवा	(i) बैठला
	(ii) बिठवा	(ii) बिठला

८३९. बोलियों में 'कहवा' और 'कहला' के योग से 'कहलवा'; और 'दिखवा' और 'दिखला' के योग से 'दिखलवा' प्रेरणार्थक रूप भी बनते हैं।

[टिप्पणी—परोन्मुखी एवम् प्रेरणार्थक क्रियापदों में जो सूक्ष्म अन्तर है उस पर सामान्यतया ध्यान नहीं दिया जाता और परोन्मुखी क्रियापदों को प्रेरणार्थक क्रियापदों के तुल्य मान लिया जाता है। अधिकतर अवसरों पर तो काम चल जाता है परन्तु कुछ अवसरों पर अर्थगत विशिष्टता द्रष्टव्य होती है; जैसे—

राम लड़के को पढ़ाता है।
राम लड़के को पढ़वाता है।

परोन्मुखी क्रियापदों में कर्ता की सक्रियता रहती है और प्रेरणार्थक क्रियापदों में कर्ता के अभिकर्ता की।]

८४०. कुछ सकर्मक धातुओं को अकर्मक रूप देने के लिए उनके आ स्वर का अ; ई तथा ए स्वरों का इ; एवम् ऊ तथा ओ स्वरों का उ करते हैं; जैसे—

सकर्मक धातु	अकर्मक धातु
निकाल	निकल
घेर	घिर
निचोड़	निचुड़
जोड़	जुड़[1]
लूट	लुट
भीड़	भिड़

८४१. 'सी' सकर्मक धातु का अकर्मक रूप 'सिल' होता है।

८४२. जोड़, तोड़, फोड़, छोड़ एवम् फाड़ सकर्मक धातुओं के अकर्मक रूप क्रमशः जुट[2], टूट, फूट, छूट तथा फट बनते हैं।

[1] जुड़ का एक रूप जुट भी होता है। [देखें नियम—८३६]
[2] जुट और जुड़ रूपों में आर्थी अन्तर भी है।

८४३. सामान्यतया जिस पद, पदबंध अथवा सहायक शब्द का विना प्रयोग किए ही अनुमान अथवा प्रसंग से अर्थ व्यक्त हो जाता हो उसका लोप[1] माना जाता है; जैसे—

—/अन्दर आ जाऊँ।	'मैं' लोप
—/यहाँ बैठो।	'तुम' लोप
—/बधाई हो।	'आपको' लोप
—राम कहता है/श्याम आएगा।	'कि' लोप
—उसको रात/नींद नहीं आई।	'में' लोप
—/कहाँ जाओगे ?	'तुम' लोप
—/दिल्ली/।	'मैं/जाऊँगा' लोप
—/वहाँ कैसे जाऊँ ?	'मैं' लोप
—/साइकिल से/।	'तुम/वहाँ जाओ' लोप
—/कहते हैं मानसिंह दयालु था।	'लोग' लोप
—/सुनते हैं कि काबुल में गधे नहीं होते।	'हम लोग' लोप
—/कल वहाँ चले जाना।	'तुम' लोप
—अच्छा/।	'मैं वहाँ कल चला जाऊँगा' लोप
—/ठीक ही तो है।[2] —प्रभाकर माचवे	'बात' लोप

[1] 'लोप' वस्तुतः लाघवीकरण की ओर सामाजिक अभिरुचि का द्योतक है।
[2] साँचा, पृ० ७४।

नवाँ प्रकरण

विराम-चिह्न

८४४. लेखन में प्रयुक्त ऐसे चिह्नों को, जो कथन के विराम के सूचक होते हैं, विराम-चिह्न कहते हैं।

हिन्दी में प्रयुक्त विराम-चिह्न

१. पूर्ण विराम (खड़ी पाई)	।
२. अपूर्ण विराम	:
३. अर्ध विराम	;
४. अल्प विराम	,
५. प्रश्न-चिह्न	?
६. विस्मयादि चिह्न	!
७. अवतरण चिह्न	" "/' '
८. योजिका	-
९. रेखिका	—
१०. तिर्यक्, तिर्यंक	/
११. संक्षिप्तक	०
१२. बिंदु	.
१३. कोष्ठक	( )
१४. बिंदु-रेख	....
१५. लोप चिह्न	'
१६. हंस पद	^
१७. अधोरेख	_
१८. तारक चिह्न	*
१९. डाइगर	†
२०. डबल डाइगर	‡

[टिप्पणी—(क) पूर्ण विराम अर्थात् खड़ी पाई को छोड़कर अन्य सभी चिह्न हिन्दी ने अँगरेज़ी भाषा से लिए हैं।

(ख) प्राय: लेखक इन चिह्नों का प्रयोग अपने-अपने दृष्टिकोण तथा इच्छा से करते हैं किसी परिपाटी के अनुसार नहीं। ऐसे भी लेखक हैं जो इन चिह्नों के अधिक प्रयोग को अच्छा नहीं समझते।]

८४५. सामान्यतया वाक्य की समाप्ति पर पूर्ण विराम लगाया जाता है परन्तु यदि वाक्य प्रश्नसूचक हो तो उसके स्थान पर प्रायः प्रश्न-चिह्न और यदि विस्मयादिसूचक हो तो उसके स्थान पर प्रायः विस्मयादि-चिह्न लगाते हैं; जैसे—

मैं धीरे-धीरे बड़ी हुई। यौवन का उभार आया। मन में ज्वार-भाटे हिलोरे लेने लगे। मेरे अंग-अंग में रति की शोभा व्याप्त हो गई।[1] —मनु शर्मा

हमारे शोधकार्य का स्तर क्या हमारी विशाल विरासत के अनुरूप हुआ है ?[2] —हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

नास हो इन नावलों का, जब देखो नावल ![3] —यशपाल

[टिप्पणी—अनेक लेखक प्रश्नसूचक तथा विस्मयादिसूचक वाक्यों के अंत में भी प्रायः पूर्ण विराम लगाते हैं।]

८४६. कुछ लोग आदेशसूचक वाक्यों में प्रश्न-चिह्न एवम् कुछ लोग इच्छासूचक वाक्यों में विस्मयादि-चिह्न भी लगाते हैं; जैसे—

बैठक के किवाड़ों पर खट-खट सुनकर पुकारा, "कमाल, देखो कौन आया है ?"[4] —यशपाल

ईश्वर तुम्हारी उम्र लम्बी करे !

८४७. कुछ लोग पूर्ण विराम के स्थान पर बिंदु का प्रयोग करते हैं।

[टिप्पणी—हिन्दी की कुछ प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में पूर्ण विराम के स्थान पर बिंदु ही रखा जाता है। ऐसा सम्भवतः स्थान की बचत अथवा नवीनता के लिए किया जाता है।]

८४८. प्रश्न या विस्मय की गम्भीरता या तीव्रता सूचित करने के लिए एक से अधिक प्रश्नसूचक तथा विस्मयादि-चिह्न भी लगाए जाते हैं; जैसे—

चारों ओर सूनापन ! हवा में साँय साँय की आवाज़ !![5]

—हिमांशु श्रीवास्तव

[1] द्रौपदी की आत्मकथा, पृ० २८।
[2] कुटज, पृ० ३०।
[3] मेरी तेरी उसकी बात, पृ० २५०।
[4] वही, पृ० ३१८।
[5] लोहे के पंख, पृ० २८०।

८४९. वाक्य या उपवाक्य के अंत में उस समय अपूर्ण विराम रखते हैं जब कोई सूची, उद्धरण या विचार प्रस्तुत करना अभिप्रेत हो; जैसे—

राजनीतिक समिति के सदस्यों के नाम हैं : श्री चरणसिंह, श्री जगजीवनराम, श्री अटलबिहारी वाजपेयी, श्री पटेल एवम् श्री मुरारजी देसाई।

उसने सोचा : ऐसे आदमी को प्लानिंग कमीशन में होना चाहिए था।[1] —श्रीलाल शुक्ल

कांग्रेस समाजवादी नेताओं ने सुझाव दिया : बजाय इस प्रस्ताव के कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव पुनः करा लिया जाए।[2] —यशपाल

हरि भैया ने बताया : गोविंद जी ग्रामोद्योग योजना में अवैतनिक सहयोग दे रहे हैं।[3] —यशपाल

८५०. दो उपवाक्यों के मध्य में सामान्यतया योजक न होने पर अल्प विराम लगाते हैं परन्तु यदि उपवाक्य बड़े-बड़े हों या विभिन्न विचारों को सूचित करते हों तो अर्ध विराम लगाते हैं; जैसे—

अल्प विराम

तुम जानती हो, मैं लड़कियों से कितना बचता हूँ, विशेषतः मित्रों की पत्नियों से।[4] —डा० देवराज

कभी नयी कविता की बखिया उधेड़ी जाती है, कभी शोध की मूर्खताओं की, कभी राजनीतिकों की, तो कभी उपस्थित लोगों की।[5] —विद्यानिवास मिश्र

हमारे देश में अन्याय के लिए लड़ाई जिसे लड़नी होती है, वह अपने को निपट अकेला पाता है और यदि नौकरी से निकाल दिया जाता है, तो उसकी स्थिति और भी संकटमय हो जाती है।[6] —विद्यानिवास मिश्र

उसका जीवन प्रवाहमय था, उसे एक जगह ठहरना पसन्द न था।[7] —डा० देवराज

[1] रागदरबारी, पृ० २३९।
[2] मेरी तेरी उसकी बात, पृ० ३९८।
[3] वही, पृ० १४३।
[4] पथ की खोज, पृ० ४।
[5] वसन्त आ गया…, पृ० ६९।
[6] वही, पृ० १७।
[7] पथ की खोज, पृ० ७।

उन्होंने कड़क कर कहा, "मैं कहता हूँ, खन्ना को इसी समय बुलाओ।"[1] —श्रीलाल शुक्ल

वे पैदल ही आते-जाते, पैसे बचाने की गरज से, साइकिल न उन्होंने खरीदी, न उसकी सवारी की।[2] —बच्चन

अर्ध विराम

मैं अपने बचपन में कभी गली-सड़क पर लड़कों के साथ खेल नहीं सका; पतंग, ताश कुछ भी न जाना।[3] —अमृतलाल नागर

गली की दक्षिणी पंक्ति में कई कायस्थों के मकान थे; उनमें बाबू द्वारिका प्रसाद कुछ प्रसिद्ध हुए; बाबू केदारनाथ अग्रवाल मुख्तार के मुहर्रिर थे, जिनकी मुखतारी से बहुत से वकीलों की वकालत ईर्ष्या करती थी।[4] —बच्चन

भ्रमरयूथ से घिरे हुए पुष्पों से मौलसिरी के वृक्ष भरे हुए हैं; तमाल के नए किसलयों ने कस्तूरी के सौरभ को वश में कर लिया है; लाल पलाश-पुष्पों को देखकर जान पड़ता है कि युवक-युवतियों के हृदय विदीर्ण करनेवाले मनसिज के रक्त-विलिप्त नख हैं; नागकेसर के श्वेत पटल-शोभित पीले-पीले फूल मदनमहीपति के सुवर्णदंडयुक्त छत्र की छवि धारण किए हैं; पाटल-पुष्पों पर मिली हुई भौरों की टोली देखकर अनुमान होता है कि कामदेवता का तूणीर (तरकस) है; संसार को विगलित और लज्जित देखकर ही मानो तरुण (नया) करुण का श्वेत पुष्प हँस रहा है; विरहियों को वेधने के लिए कुंत (भाले) के समान मुँहवाले केतपुष्पों ने दिशाओं को विषम कर दिया है; माधवी के परिमल से वसन्त-काल ललित और नवमालती तथा जाती पुष्पों से शोभित हो गया है; तरुणों के अकारण बंधु तरुण रसाल वृक्ष इस वसन्त-काल में हिलती हुई माधवी लता के आलिंगन से पुलकित है।[5] —हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

[टिप्पणी—योजकों की उपस्थिति में भी अनेक लेखक अल्प विराम एवम् अर्ध विराम लगाते हैं; जैसे—

मैं भाग जाना चाहती थी, पर निकल न सकी।[6] —मनु शर्मा

इतने में आपका साल भर का खर्च चल जाता है, या आमदनी का और भी कोई ज़रिया है।[7] —अमृतलाल नागर

यह विषय आपको इतना अधिक रोचक प्रतीत होगा कि आप इस पर अनुरक्त हो जाएँगे; और अपनी तथा अपने मित्रों की भाषा ठीक करने के सिवा साहित्य का भी उपकार करेंगे।[8]

—रामचन्द्र वर्मा]

[1] रागदरबारी, पृ० १०५।
[2] क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ ११३।
[3] ये कोठेवालियाँ, पृ० ६।
[4] वही, पृ० ११३।
[5] मध्यकालीन धर्मसाधना, पृ० १४७।
[6] द्रौपदी की आत्मकथा, पृ० १३२।
[7] ये कोठेवालियाँ, पृ० ११८।
[8] अच्छी हिन्दी, पृ० २५।

८५१. समान पदों या पदबंधों के बीच योजक न हो तो अल्प विराम का प्रयोग होता है; जैसे—

व्यापक अश्रद्धा, अविश्वास, प्रमाद, अकर्म्मण्यता और दम्भ ने धर्म में घर कर लिया है।[1] —सम्पूर्णानन्द

शब्दकोष, ज्ञानराशि के अनुवाद, पाठ्य-पुस्तकें, भाषा-शिक्षक, प्रशिक्षक, शिक्षकों के आदान-प्रदान जैसे कार्य तब तक निष्प्रभाव बने रहेंगे, जब तक साध्य का ध्यान हमारे चित्त में नहीं आता।[2] —विद्यानिवास मिश्र

८५२. सम्बोधन पद के बाद प्रायः अल्प विराम का प्रयोग होता है, जबकि कुछ लोग विस्मयादि चिह्न का भी प्रयोग करते हैं; जैसे—

(क) उसने अत्यन्त विनीत भाव से कहा—"राजमहिषी, मैं कौरवों के दरबार से एक अत्यन्त दुखद समाचार लाया हूँ।"[3] —मनु शर्मा

(ख) ड्राइवर ने कहा, "शिरिमानजी, आजकल कर क्या रहे हैं।"[4] —श्रीलाल शुक्ल

(ग) माँगीराम ने कहा, "केशो ! राम जी की कसम, मैं झूठ क्यों बोलूं ?"[5] —प्रभाकर माचवे

८५३. पदवाचक समानाधिकरण संज्ञापद के बाद अल्प विराम लगाते हैं; जैसे—

भारत के प्रधानमन्त्री, श्री देसाई वाराणसी आ रहे हैं।

८५४. यदि किसी नामपद के बाद पदवाचक संज्ञापद हो तो उस नामपद के बाद भी अल्प विराम लगाते हैं; जैसे—

श्री देसाई, भारत के प्रधानमन्त्री, वाराणसी आ रहे हैं।[6]

[1] ब्राह्मण सावधान !, पृ० २४।
[2] वसन्त आ गया···, पृ० ४०।
[3] द्रौपदी की आत्मकथा, पृ० ७१।
[4] रागदरबारी, पृ० ११।
[5] साँचा, पृ० १।
[6] ऐसे वाक्य हिन्दी की प्रकृति से मेल नहीं खाते।

८५५. यदि किसी उपवाक्य के पेटे में ही कोई दूसरा उपवाक्य हो तो मध्य स्थित उपवाक्य से पूर्व भी अल्पविराम रखा जाता है और बाद में भी; जैसे—

जब पुस्तक के लेखक का, जो इतिहास के प्राध्यापक थे, ध्यान उन भूलों की ओर गया, तो वे दंग रह गये ।[1] —रामचन्द्र वर्मा

मलय पर्वत से, जहाँ पर सर्पों का वास है, आई हुई हवा को विष की तरह समझती है ।[2] —हज़ारी प्रसाद द्विवेदी

८५६. उद्धृत अंश की पृथकता सूचित करने के लिए उसे अवतरण-चिह्नों के मध्य रखते हैं; जैसे—

वैद्यजी ने गम्भीरता से कहा, "बताने की कोई आवश्यकता नहीं है । मैं सब जानता हूँ ।"[3] —श्रीलाल शुक्ल

८५७. जब किसी उद्धृत अंश के अन्तर्गत कोई अन्य उद्धृत अंश हो तो उसे एकल अवतरण-चिह्न में रखा जाता है ।

८५८. विचार्य पद को भी एकल अवतरण-चिह्नों के मध्य रखते हैं; जैसे—

'चिंतनीय' वह है जिसके सम्बन्ध में चिन्तन करने की आवश्यकता हो ।[4] —रामचन्द्र वर्मा

परन्तु 'का' की जगह 'को' रखने पर कुछ भी मतलब नहीं निकलता था ।[5] —रामचन्द्र वर्मा

८५९. योजिका का प्रयोग समास-पदों में होता है; जैसे—

उनमें मिठाइयाँ भी थीं जो दिन-रात आँधी-पानी और मक्खी-मच्छरों के हमलों का····मुकाबला करती थीं ।[6] —श्रीलाल शुक्ल

मैं अपने बचपन में कभी गली-सड़क पर लड़कों के साथ खेला नहीं·····।[7] —अमृतलाल नागर

[1] अच्छी हिन्दी, पृ० ७१ ।
[2] मध्यकालीन धर्मसाधना, पृ० १५१ ।
[3] रागदरबारी, पृ० ३२१ ।
[4] अच्छी हिन्दी, पृ० १३३ ।
[5] वही, पृ० ६५ ।
[6] रागदरबारी, पृ० ९ ।
[7] ये कोठेवालियाँ, पृ० ९ ।

८६०. रेखिका का प्रयोग पदों एवम् उपवाक्यों का अलगाव सूचित करने के लिए प्रायः होने लगा है; जैसे—

बाबू रामचन्द्र के एक लड़का—महावीर प्रसाद—और दो लड़कियाँ थीं····।[1] —बच्चन

उसके प्रति मेरा भी कुछ कर्तव्य है, और मुझे विश्वास है कि वह मेरी निकटता चाहती है—बीमार होने से, शायद, अधिक।[2] —बच्चन

स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध शारीरिक सम्बन्ध है—शुद्ध भौतिक।[3] —डा० देवराज

कांग्रेसी, समाजवादी, जनसंघी, कम्युनिस्ट, कवि, लेखक, पत्रकार, सरकारी अफ़सर, व्यवसायी, शिकारी, जमींदार, मजदूर नेता—सभी प्रकार के लोग वहाँ जुटे हैं और उन्मुक्त भाव से चर्चा करते हैं।[4] —विद्यानिवास मिश्र

८६१. तिर्यक् विकल्पसूचक होता है; जैसे—

कुल में कलंक/दाग़ लगाना।[5]

८६२. कोष्ठक का प्रयोग विशेष विवरण, अर्थ आदि देने के लिए होता है; जैसे—

अमरकोश (१–६–६) में उपन्यास और वाङ्मुख पर्याय माने गये हैं।[6] —अमरनाथ पाण्डेय

उपरि (ऊपर) तथा उक्त (कहा हुआ) पदों को मिलाने से उपर्युक्त पद बना है।[7] —अमरनाथ पाण्डेय

८६३. विंदुरेख का प्रयोग लुप्त, अज्ञात या अप्रासंगिक अंश सूचित करने के लिए होता है; जैसे—

वर्तमान स्थितियों को देखते हुए यह स्थिति····नहीं है।[8]

1 क्या भूलूँ क्या याद करूँ, पृ० २२५।
2 वही, पृ० २५६।
3 पथ की खोज, पृ० ५।
4 बसन्त आ गया···, पृ० ६६।
5 व्यावहारिक हिन्दी-अँग्रेज़ी कोश, पृ० १४२।
6 शब्दविमर्श, पृ० ३४।
7 वही।
8 धर्मयुग साहित्य पहेली संख्या ६६, धर्मयुग १ अक्टूबर १६७७, पृ० ५३।

८६४. पद के संक्षिप्त रूप के वाद 'संक्षिप्तक' रखते हैं; जैसे—

डा० (डाक्टर)
पं० (पंडित)
का० हिं० वि० (काशी हिंदू विश्वविद्यालय)

८६५. ' पूर्व अंश के लोप का सूचक है; जैसे—

जून '७७ में मैं दिल्ली में था।
(अर्थात् जून १९७७ में)

८६६. पंक्ति में छूट का संकेत करने के लिए हंस पद लगाते हैं; जैसे—

सोमवार
राम हमारे यहाँ ‸ को आया था।

८६७. किसी पद, पदबंध, उपवाक्य आदि की विशिष्टता सूचित करने के लिए उसके नीचे अधोरेख लगाते हैं; जैसे—

<u>राम</u> ने कृष्ण को वुलाया। (कर्ता)
राम ने <u>कृष्ण</u> को वुलाया। (कर्म)
राम ने कृष्ण को <u>वुलाया</u>। (क्रियापद)

८६८. तारक-चिह्न (*) का प्रयोग पाद-टिप्पणी को इंगित करने के लिए होता है।

८६९. डाइगर (†) तथा डवल डाइगर (‡) का प्रयोग भी तारक-चिह्न के स्थान पर होता है।

परिशिष्ट १ :

अकर्मक 'उड़' धातु से बननेवाले लकार

(क) 'उड़' अकर्मक धातु ;
(ख) 'उड़' से बना सकर्मक रूप 'उड़ा' ;
(ग) सकर्मक 'उड़ा' से बना प्रेरणार्थक रूप 'उड़वा'

१. वर्तमान काल

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार

उद्देश्य	'उड़' अकर्मक धातु	'उड़ा' सकर्मक रूप	'उड़वा' प्रेरणार्थक रूप
अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ता है	वह उड़ाता है	वह उड़वाता है
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ता है	तू उड़ाता है	तू उड़वाता है
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ता हूँ	मैं उड़ाता हूँ	मैं उड़वाता हूँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती है	वह उड़ाती है	वह उड़वाती है
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती है	तू उड़ाती है	तू उड़वाती है
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती हूँ	मैं उड़ाती हूँ	मैं उड़वाती हूँ
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ते हैं	वे उड़ाते हैं	वे उड़वाते हैं
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ते हो	तुम उड़ाते हो	तुम उड़वाते हो
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ते हैं	हम उड़ाते हैं	हम उड़वाते हैं
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ती हैं	वे उड़ाती हैं	वे उड़वाती हैं
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती हो	तुम उड़ाती हो	तुम उड़वाती हो
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ती हैं	हम उड़ाती हैं	हम उड़वाती हैं

(२) निष्पन्नतामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा है	उसने उड़ाया है*	उसने उड़वाया है*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा है	तूने उड़ाया है*	तूने उड़वाया है*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा हूँ	मैंने उड़ाया है*	मैंने उड़वाया है*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी है	उसने उड़ाया है*	उसने उड़वाया है*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी है	तूने उड़ाया है*	तूने उड़वाया है*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी हूँ	मैंने उड़ाया है*	मैंने उड़वाया है*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े हैं	उन्होंने उड़ाया है*	उन्होंने उड़वाया है*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े हो	तुमने उड़ाया है*	तुमने उड़वाया है*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े हैं	हमने उड़ाया है*	हमने उड़वाया है*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ी हैं	उन्होंने उड़ाया है*	उन्होंने उड़वाया है*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी हो	तुमने उड़ाया है*	तुमने उड़वाया है*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ी हैं	हमने उड़ाया है*	हमने उड़वाया है*

---

* यह चिह्न सूचित करता है कि कर्म की उपस्थिति में उसके लिंग तथा वचन के अनुसार क्रियापद में अवश्य परिवर्तन होगा ; जैसे—

उसने / तूने / मैंने / उन्होंने / तुमने / हमने गुवारा उड़ाया / उड़वाया है—गुवारे उड़ाए / उड़वाए हैं ।

उसने / तूने / मैंने / उन्होंने / तुमने / हमने पतंग उड़ाई / उड़वाई है—पतंगें उड़ाई / उड़वाई हैं ।

(३) औचित्यमूलक लकार

अन्य	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	उसको उड़ना है	उसको उड़ाना है*	उसको उड़वाना है*
मध्यम	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	तुझको उड़ना है	तुझको उड़ाना है*	तुझको उड़वाना है*
उत्तम	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	मुझको उड़ना है	मुझको उड़ाना है*	मुझको उड़वाना है*
अन्य	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	उसको उड़ना है	उसको उड़ाना है*	उसको उड़वाना है*
मध्यम	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	तुझको उड़ना है	तुझको उड़ाना है*	तुझको उड़वाना है*
उत्तम	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	मुझको उड़ना है	मुझको उड़ाना है*	मुझको उड़वाना है*
अन्य	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	उनको उड़ना है	उनको उड़ाना है*	उनको उड़वाना है*
मध्यम	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	तुमको उड़ना है	तुमको उड़ाना है*	तुमको उड़वाना है*
उत्तम	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	हमको उड़ना है	हमको उड़ाना है*	हमको उड़वाना है*
अन्य	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	उनको उड़ना है	उनको उड़ाना है*	उनको उड़वाना है*
मध्यम	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	तुमको उड़ना है	तुमको उड़ाना है*	तुमको उड़वाना है*
उत्तम	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	हमको उड़ना है	हमको उड़ाना है*	हमको उड़वाना है*

(४) तथ्यमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ता है	वह उड़ाता है	वह उड़वाता है
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ता है	तू उड़ाता है	तू उड़वाता है
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ता हूँ	मैं उड़ाता हूँ	मैं उड़वाता हूँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती है	वह उड़ाती है	वह उड़वाती है
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती है	तू उड़ाती है	तू उड़वाती है
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती हूँ	मैं उड़ाती हूँ	मैं उड़वाती हूँ
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ते हैं	वे उड़ाते हैं	वे उड़वाते हैं
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ते हो	तुम उड़ाते हो	तुम उड़वाते हो
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ते हैं	हम उड़ाते हैं	हम उड़वाते हैं
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ती हैं	वे उड़ाती हैं	वे उड़वाती हैं
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती हो	तुम उड़ाती हो	तुम उड़वाती हो
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ती हैं	हम उड़ाती हैं	हम उड़वाती हैं

(५) आदेशमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़	तू उड़ा	तू उड़वा
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	—	—	—
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़	तू उड़ा	तू उड़वा
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	—	—	—
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	—	—	—
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	—	—	—

(६) निदेशमूलक लकार

[निदेशमूलक लकार का प्रयोग भविष्यत् काल में होता है—देखें नियम ४६९]

(७) संकेतमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़े	वह उड़ाए	वह उड़वाए
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़े	तू उड़ाए	तू उड़वाए
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ूँ	मैं उड़ाऊँ	मैं उड़वाऊँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़े	वह उड़ाए	वह उड़वाए
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़े	तू उड़ाए	तू उड़वाए
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ूँ	मैं उड़ाऊँ	मैं उड़वाऊँ
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ें	वे उड़ाएँ	वे उड़वाएँ
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ें	हम उड़ाएँ	हम उड़वाएँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ें	वे उड़ाएँ	वे उड़वाएँ
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ें	हम उड़ाएँ	हम उड़वाएँ

(८) संभावनामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ता होगा	वह उड़ाता होगा	वह उड़वाता होगा
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ता होगा	तू टड़ाता होगा	तू उड़वाता होगा
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ता हूँगा	मैं उड़ाता हूँगा	मैं उड़वाता हूँगा
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती होगी	वह उड़ाती होगी	वह उड़वाती होगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती होगी	तू उड़ाती होगी	तू उड़वाती होगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती हूँगी	मैं उड़ाती हूँगी	मैं उड़वाती हूँगी
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ते होंगे	वे उड़ाते होंगे	वे उड़वाते होंगे
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ते होंगे	तुम उड़ाते होंगे	तुम उड़वाते होंगे
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ते होंगे	हम उड़ाते होंगे	हम उड़वाते होंगे
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ती होंगी	वे उड़ाती होंगी	वे उड़वाती होंगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती होगी/होंगी	तुम उड़ाती होगी/होंगी	तुम उड़वाती होगी/होंगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ती होंगी	हम उड़ाती होंगी	हम उड़वाती होंगी

(६) आवश्यकतामूलक लकार

अन्य	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	उसको उड़ना चाहिए	उसको उड़ाना चाहिए*	उसको उड़वाना चाहिए*
मध्यम	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए	तुझको उड़ाना चाहिए*	तुझको उड़वाना चाहिए*
उत्तम	पुरुष	पुंलिंग	एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए	मुझको उड़ाना चाहिए*	मुझको उड़वाना चाहिए*
अन्य	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	उसको उड़ना चाहिए	उसको उड़ाना चाहिए*	उसको उड़वाना चाहिए*
मध्यम	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए	तुझको उड़ाना चाहिए*	तुझको उड़वाना चाहिए*
उत्तम	पुरुष	स्त्रीलिंग	एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए	मुझको उड़ाना चाहिए*	मुझको उड़वाना चाहिए*
अन्य	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए	उनको उड़ाना चाहिए*	उनको उड़वाना चाहिए*
मध्यम	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए	तुमको उड़ाना चाहिए*	तुमको उड़वाना चाहिए*
उत्तम	पुरुष	पुंलिंग	बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए	हमको उड़ाना चाहिए*	हमको उड़वाना चाहिए*
अन्य	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए	उनको उड़ाना चाहिए*	उनको उड़वाना चाहिए*
मध्यम	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए	तुमको उड़ाना चाहिए*	तुमको उड़वाना चाहिए*
उत्तम	पुरुष	स्त्रीलिंग	बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए	हमको उड़ाना चाहिए*	हमको उड़वाना चाहिए*

२. भूतकाल

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार

उद्देश्य	'उड़' अकर्मक धातु	'उड़ा' सकर्मक रूप	'उड़वा' प्रेरणार्थक रूप
अन्य पुरुष पुंलिग एकवचन	वह उड़ता था	वह उड़ाता था	वह उड़वाता था
मध्यम पुरुष पुंलिग एकवचन	तू उड़ता था	तू उड़ाता था	तू उड़वाता था
उत्तम पुरुष पुंलिग एकवचन	मैं उड़ता था	मैं उड़ाता था	मैं उड़वाता था
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती थी	वह उड़ाती थी	वह उड़वाती थी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती थी	तू उड़ाती थी	तू उड़वाती थी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती थी	मैं उड़ाती थी	मैं उड़वाती थी
अन्य पुरुष पुंलिग बहुवचन	वे उड़ते थे	वे उड़ाते थे	वे उड़वाते थे
मध्यम पुरुष पुंलिग बहुवचन	तुम उड़ते थे	तुम उड़ाते थे	तुम उड़वाते थे
उत्तम पुरुष पुंलिग बहुवचन	हम उड़ते थे	हम उड़ाते थे	हम उड़वाते थे
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ती थीं	वे उड़ाती थीं	वे उड़वाती थीं
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती थी/थीं	तुम उड़ाती थी/थीं	तुम उड़वाती थी/थीं
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ती थीं	हम उड़ाती थीं	हम उड़वाती थीं

(२) निष्पन्नतामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा था	उसने उड़ाया था*	उसने उड़वाया था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा था	तूने उड़ाया था*	तूने उड़वाया था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा था	मैंने उड़ाया था*	मैंने उड़वाया था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी थी	उसने उड़ाया था*	उसने उड़वाया था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी थी	तूने उड़ाया था*	तूने उड़वाया था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी थी	मैंने उड़ाया था*	मैंने उड़वाया था*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े थे	उन्होंने उड़ाया था*	उन्होंने उड़वाया था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े थे	तुमने उड़ाया था*	तुमने उड़वाया था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े थे	हमने उड़ाया था*	हमने उड़वाया था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ी थीं	उन्होंने उड़ाया था*	उन्होंने उड़वाया था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी थी/थीं	तुमने उड़ाया था*	तुमने उड़वाया था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ी थीं	हमने उड़ाया था*	हमने उड़वाया था*

(३) औचित्यमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	उसको उड़ना था	उसको उड़ाना था*	उसको उड़वाना था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तुझको उड़ना था	तुझको उड़ाना था*	तुझको उड़वाना था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मुझको उड़ना था	मुझको उड़ाना था*	मुझको उड़वाना था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	उसको उड़ना था	उसको उड़ाना था*	उसको उड़वाना था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तुझको उड़ना था	तुझको उड़ाना था*	तुझको उड़वाना था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मुझको उड़ना था	मुझको उड़ाना था*	मुझको उड़वाना था*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	उनको उड़ना था	उनको उड़ाना था*	उनको उड़वाना था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना था	तुमको उड़ाना था*	तुमको उड़वाना था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हमको उड़ना था	हमको उड़ाना था*	हमको उड़वाना था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	उनको उड़ना था	उनको उड़ाना था*	उनको उड़वाया था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना था	तुमको उड़ाना था*	तुमको उड़वाना था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हमको उड़ना था	हमको उड़ाना था*	हमको उड़वाना था*

(४) तथ्यमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा	उसने उड़ाया*	उसने उड़वाया*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा	तूने उड़ाया*	तूने उड़वाया*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा	मैंने उड़ाया*	मैंने उड़वाया*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी	उसने उड़ाया*	उसने उड़वाया*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी	तूने उड़ाया*	तूने उड़वाया*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी	मैंने उड़ाया*	मैंने उड़वाया*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े	उन्होंने उड़ाया*	उन्होंने उड़वाया*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े	तुमने उड़ाया*	तुमने उड़वाया*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े	हमने उड़ाया*	हमने उड़वाया*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ीं	उन्होंने उड़ाया*	उन्होंने उड़वाया*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी/उड़ीं	तुमने उड़ाया*	तुमने उड़वाया*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ीं	हमने उड़ाया*	हमने उड़वाया*

(५) आदेशमूलक लकार

[आदेशमूलक लकार वर्तमान काल में ही प्रयुक्त होता है—देखें नियम ४५६]

(६) निदेशमूलक लकार

[निदेशमूलक लकार का प्रयोग भविष्यत् काल में होता है—देखें नियम ४६६]

(७) संकेतमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ता	वह उड़ाता	वह उड़वाता
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ता	तू उड़ाता	तू उड़वाता
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ता	मैं उड़ाता	मैं उड़वाता
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती	वह उड़ाती	वह उड़वाती
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती	तू उड़ाती	तू उड़वाती
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती	मैं उड़ाती	मैं उड़वाती
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ते	वे उड़ाते	वे उड़वाते
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ते	तुम उड़ाते	तुम उड़वाते
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ते	हम उड़ाते	हम उड़वाते
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़तीं	वे उड़ातीं	वे उड़वातीं
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती/उड़तीं	तुम उड़ाती/उड़ातीं	तुम उड़वाती/उड़वातीं
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़तीं	हम उड़ाती	हम उड़वातीं

(८) संभावनामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा होगा	उसने उड़ाया होगा*	उसने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा होगा	तूने उड़ाया होगा*	तूने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा हूँगा	मैंने उड़ाया होगा*	मैंने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी होगी	उसने उड़ाया होगा*	उसने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी होगी	तूने उड़ाया होगा*	तूने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी हूँगी	मैंने उड़ाया होगा*	मैंने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े होंगे	उन्होंने उड़ाया होगा*	उन्होंने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े होंगे	तुमने उड़ाया होगा*	तुमने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े होंगे	हमने उड़ाया होगा*	हमने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ी होंगी	उन्होंने उड़ाया होगा*	उन्होंने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी होगी/होंगी	तुमने उड़ाया होगा*	तुमने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ी होंगी	हमने उड़ाया होगा*	हमने उड़वाया होगा*

(ध) आवश्यकतामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	उसको उड़ना चाहिए था	उसको उड़ाना चाहिए था*	उसको उड़वाना चाहिए था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए था	तुझको उड़ाना चाहिए था*	तुझको उड़वाना चाहिए था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए था	मुझको उड़ाना चाहिए था*	मुझको उड़वाना चाहिए था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	उसको उड़ना चाहिए था	उसको उड़ाना चाहिए था*	उसको उड़वाना चाहिए था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए था	तुझको उड़ाना चाहिए था*	तुझको उड़वाना चाहिए था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए था	मुझको उड़ाना चाहिए था*	मुझको उड़वाना चाहिए था*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए था	उनको उड़ाना चाहिए था*	उनको उड़वाना चाहिए था*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए था	तुमको उड़ाना चाहिए था*	तुमको उड़वाना चाहिए था*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए था	हमको उड़ाना चाहिए था*	हमको उड़वाना चाहिए था*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए था	उनको उड़ाना चाहिए था*	उनको उड़वाना चाहिए था*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए था	तुमको उड़ाना चाहिए था*	तुमको उड़वाना चाहिए था*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए था	हमको उड़ाना चाहिए था*	हमको उड़वाना चाहिए था*

३. भविष्यत् काल

(१) प्रवृत्तिमूलक लकार

उद्देश्य	'उड़' अकर्मक धातु	'उड़ा' सकर्मक रूप	'उड़वा' प्रेरणार्थक रूप
अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ता होगा	वह उड़ाता होगा	वह उड़वाता होगा
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ता होगा	तू उड़ाता होगा	तू उड़वाता होगा
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ता हूँगा	मैं उड़ाता हूँगा	मैं उड़वाता हूँगा
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ती होगी	वह उड़ाती होगी	वह उड़वाती होगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ती होगी	तू उड़ाती होगी	तू उड़वाती होगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ती हूँगी	मैं उड़ाती हूँगी	मैं उड़वाती हूँगी
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ते होंगे	वे उड़ाते होंगे	वे उड़वाते होंगे
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ते होंगे	तुम उड़ाते होगे	तुम उड़वाते होंगे
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ते होंगे	हम उड़ाते होंगे	हम उड़वाते होंगे
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ती होंगी	वे उड़ाती होंगी	वे उड़वाती होंगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ती होगी/होंगी	तुम उड़ाती होगी/होंगी	तुम उड़वाती होगी/होंगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ती होंगी	हम उड़ाती होंगी	हम उड़वाती होंगी

(२) निष्पन्नतामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा होगा	उसने उड़ाया होगा*	उसने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा होगा	तूने उड़ाया होगा*	तूने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा हूँगा	मैंने उड़ाया होगा*	मैंने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी होगी	उसने उड़ाया होगा*	उसने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी होगी	तूने उड़ाया होगा*	तूने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी हूँगी	मैंने उड़ाया होगा*	मैंने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े होंगे	उन्होंने उड़ाया होगा*	उन्होंने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े होंगे	तुमने उड़ाया होगा*	तुमने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े होंगे	हमने उड़ाया होगा*	हमने उड़वाया होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ी होंगी	उन्होंने उड़ाया होगा*	उन्होंने उड़वाया होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी होगी/होंगी	तुमने उड़ाया होगा*	तुमने उड़वाया होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ी होंगी	हमने उड़ाया होगा*	हमने उड़वाया होगा*

(३) औचित्यमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	उसको उड़ना होगा	उसको उड़ाना होगा*	उसको उड़वाना होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तुझको उड़ना होगा	तुझको उड़ाना होगा*	तुझको उड़वाना होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मुझको उड़ना होगा	मुझको उड़ाना होगा*	मुझको उड़वाना होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	उसको उड़ना होगा	उसको उड़ाना होगा*	उसको उड़वाना होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तुझको उड़ना होगा	तुझको उड़ाना होगा*	तुझको उड़वाना होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मुझको उड़ना होगा	मुझको उड़ाना होगा*	मुझको उड़वाना होगा*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	उनको उड़ना होगा	उनको उड़ाना होगा*	उनको उड़वाना होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना होगा	तुमको उड़ाना होगा*	तुमको उड़वाना होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हमको उड़ना होगा	हमको उड़ाना होगा*	हमको उड़वाना होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	उनको उड़ना होगा	उनको उड़ाना होगा*	उनको उड़वाना होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना होगा	तुमको उड़ाना होगा*	तुमको उड़वाना होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हमको उड़ना होगा	हमको उड़ाना होगा*	हमको उड़वाना होगा*

(४) तथ्यमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ेगा	वह उड़ाएगा	वह उड़वाएगा
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ेगा	तू उड़ाएगा	तू उड़वाएगा
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ूँगा	मैं उड़ाऊँगा	मैं उड़वाऊँगा
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ेगी	वह उड़ाएगी	वह उड़वाएगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ेगी	तू उड़ाएगी	तू उड़वाएगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ूँगी	मैं उड़ाऊँगी	मैं उड़वाऊँगी
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ेंगे	वे उड़ाएँगे	वे उड़वाएँगे
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ोगे	तुम उड़ाओगे	तुम उड़वाओगे
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ेंगे	हम उड़ाएँगे	हम उड़वाएँगे
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ेंगी	वे उड़ाएँगी	वे उड़वाएँगी
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ोगी	तुम उड़ाओगी	तुम उड़वाओगी
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ेंगी	हम उड़ाएँगी	हम उड़वाएँगी

(५) आदेशमूलक लकार

[आदेशमूलक लकार वर्तमान काल में ही प्रयुक्त होगा (देखें नियम ४५६)। समयवाची क्रियाविशेषणों की सहायता से वर्तमान आदेशमूलक लकार द्वारा भविष्यत् आदेशमूलक लकार का काम अवश्य चल जाता है; जैसे—कल वहाँ जाओ।]

(६) निदेशमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ना	तू उड़ाना	तू उड़वाना
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	—	—	—
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ना	तू उड़ाना	तू उड़वाना
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	—	—	—
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ना	तुम उड़ाना	तुम उड़वाना
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	—	—	—
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	—	—	—
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ना	तुम उड़ाना	तुम उड़वाना
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग वहुवचन	—	—	—

(७) संकेतमूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़ा	उसने उड़ाया*	उसने उड़वाया*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़ा	तूने उड़ाया*	तूने उड़वाया*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ा	मैंने उड़ाया*	मैंने उड़वाया*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़ी	उसने उड़ाया*	उसने उड़वाया*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़ी	तूने उड़ाया*	तूने उड़वाया*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ी	मैंने उड़ाया*	मैंने उड़वाया*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़े	उन्होंने उड़ाया*	उन्होंने उड़वाया*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़े	तुमने उड़ाया*	तुमने उड़वाया*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़े	हमने उड़ाया*	हमने उड़वाया*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ीं	उन्होंने उड़ाया*	उन्होंने उड़वाया*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ी/उड़ीं	तुमने उड़ाया*	तुमने उड़वाया*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ीं	हमने उड़ाया*	हमने उड़वाया*

(८) संभावनामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	वह उड़े	वह उड़ाए	वह उड़वाए
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तू उड़े	तू उड़ाए	तू उड़वाए
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मैं उड़ूं	मैं उड़ाऊँ	मैं उड़वाऊँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	वह उड़े	वह उड़ाए	वह उड़वाए
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तू उड़े	तू उड़ाए	तू उड़वाए
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मैं उड़ूं	मैं उड़ाऊँ	मैं उड़वाऊँ
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	वे उड़ें	वे उड़ाएँ	वे उड़वाएँ
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हम उड़ें	हम उड़ाएँ	हम उड़वाएँ
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	वे उड़ें	वे उड़ाएँ	वे उड़वाएँ
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुम उड़ो	तुम उड़ाओ	तुम उड़वाओ
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हम उड़ें	हम उड़ाएँ	हम उड़वाएँ

(६) आवश्यकतामूलक लकार

अन्य पुरुष पुंलिंग एकवचन	उसको उड़ना चाहिए होगा	उसको उड़ाना चाहिए होगा*	उसको उड़वाना चाहिए होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए होगा	तुझको उड़ाना चाहिए होगा*	तुझको उड़वाना चाहिए होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए होगा	मुझको उड़ाना चाहिए होगा*	मुझको उड़वाना चाहिए होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	उसको उड़ना चाहिए होगा	उसको उड़ाना चाहिए होगा*	उसको उड़वाना चाहिए होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	तुझको उड़ना चाहिए होगा	तुझको उड़ाना चाहिए होगा*	तुझको उड़वाना चाहिए होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग एकवचन	मुझको उड़ना चाहिए होगा	मुझको उड़ाना चाहिए होगा*	मुझको उड़वाना चाहिए होगा*
अन्य पुरुष पुंलिंग बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए होगा	उनको उड़ाना चाहिए होगा*	उनको उड़वाना चाहिए होगा*
मध्यम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए होगा	तुमको उड़ाना चाहिए होगा*	तुमको उड़वाना चाहिए होगा*
उत्तम पुरुष पुंलिंग बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए होगा	हमको उड़ाना चाहिए होगा*	हमको उड़वाना चाहिए होगा*
अन्य पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	उनको उड़ना चाहिए होगा	उनको उड़ाना चाहिए होगा*	उनको उड़वाना चाहिए होगा*
मध्यम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	तुमको उड़ना चाहिए होगा	तुमको उड़ाना चाहिए होगा*	तुमको उड़वाना चाहिए होगा*
उत्तम पुरुष स्त्रीलिंग बहुवचन	हमको उड़ना चाहिए होगा	हमको उड़ाना चाहिए होगा*	हमको उड़वाना चाहिए होगा*



परिशिष्ट २ :

संस्कृत में सन्धियां

१. पास-पास स्थित पदों के निकटस्थ वर्णों के मेल से होने वाले विकार को सन्धि कहते हैं।

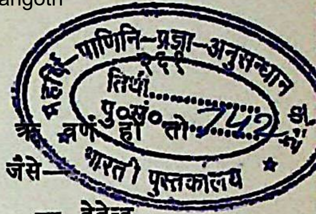
२. स्वर, हल् तथा विसर्ग तीन प्रकार की सन्धियाँ होती हैं।

स्वर सन्धि

३. दो सवर्ण[1] स्वरों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर होता है; जैसे—

अ	+	अ	=	आ	सुर	+	अरि	=	सुरारि
अ	+	आ	=	आ	हिम	+	आलय	=	हिमालय
आ	+	अ	=	आ	दया	+	अर्णव	=	दयार्णव
आ	+	आ	=	आ	विद्या	+	आलय	=	विद्यालय
इ	+	इ	=	ई	गिरि	+	इन्द्र	=	गिरीन्द्र
इ	+	ई	=	ई	क्षिति	+	ईश	=	क्षितीश
ई	+	इ	=	ई	सुधी	+	इन्द्र	=	सुधीन्द्र
ई	+	ई	=	ई	श्री	+	ईश	=	श्रीश
उ	+	उ	=	ऊ	गुरु	+	उपदेश	=	गुरूपदेश
उ	+	ऊ	=	ऊ	लघु	+	ऊर्मि	=	लघूर्मि
ऊ	+	उ	=	ऊ	वधू	+	उत्सव	=	वधूत्सव
ऊ	+	ऊ	=	ऊ	भ्रू	+	ऊर्ध्व	=	भ्रूर्ध्व
ऋ	+	ऋ	=	ॠ	पितृ	+	ऋण	=	पितॄण
ऋ	+	ॠ	=	ॠ					
ॠ	+	ऋ	=	ॠ					
ॠ	+	ॠ	=	ॠ					

[1] सवर्ण से तात्पर्य ऐसे स्वरों से होता है जिनका उच्चारण स्थान एक हो; जैसे—
अ—आ (सवर्ण कण्ठ्य), इ—ई (सवर्ण तालव्य),
उ—ऊ (सवर्ण ओष्ठ्य), ऋ—ॠ (सवर्ण मूर्धन्य)



४. यदि अ या आ स्वर के बाद इ या ई, उ या ऊ एवम् ऋ वर्ण हों तो दोनों को मिलाकर क्रमशः ए, ओ एवम् अर् होता है; जैसे—

अ	+	इ	=	ए	देव	+	इंद्र	=	देवेन्द्र
अ	+	ई	=	ए	सुर	+	ईश	=	सुरेश
अ	+	उ	=	ओ	चंद्र	+	उदय	=	चंद्रोदय
अ	+	ऊ	=	ओ	समुद्र	+	ऊर्मि	=	समुद्रोर्मि
अ	+	ऋ	=	अर्	सप्त	+	ऋषि	=	सप्तर्षि
आ	+	इ	=	ए	महा	+	इंद्र	=	महेन्द्र
आ	+	ई	=	ए	रमा	+	ईश	=	रमेश
आ	+	उ	=	ओ	महा	+	उत्सव	=	महोत्सव
आ	+	ऊ	=	ओ	महा	+	ऊरु	=	महोरु
आ	+	ऋ	=	अर्	महा	+	ऋषि	=	महर्षि

५. अ या आ स्वर के बाद ए या ऐ अथवा ओ या औ वर्ण हों तो दोनों को मिलाकर क्रमशः ऐ तथा औ होता है; जैसे—

अ	+	ए	=	ऐ	अद्य	+	एव	=	अद्यैव
अ	+	ऐ	=	ऐ	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
अ	+	ओ	=	औ	जल	+	ओघ	=	जलौघ
आ	+	ए	=	ऐ	सदा	+	एव	=	सदैव
आ	+	ऐ	=	ऐ	महा	+	ऐश्वर्य	=	महैश्वर्य
आ	+	ओ	=	औ	महा	+	ओषधि	=	महौषधि
आ	+	औ	=	औ	महा	+	औदार्य	=	महौदार्य

६. इ-ई तालव्य, उ-ऊ ओष्ठ्य एवम् ऋ मूर्धन्य स्वर क्रमशः य्, व् एवम् र् में परिवर्तित होते हैं यदि उनके परे कोई असवर्ण स्वर हो; जैसे—

इ	+	अ	=	य	यदि	+	अपि	=	यद्यपि
इ	+	आ	=	या	इति	+	आदि	=	इत्यादि
इ	+	उ	=	यु	प्रति	+	उपकार	=	प्रत्युपकार
इ	+	ऊ	=	यू	नि	+	ऊन	=	न्यून
इ	+	ए	=	ये	प्रति	+	एक	=	प्रत्येक
ई	+	अ	=	य	नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण
ई	+	आ	=	या	देवी	+	आगम	=	देव्यागम
ई	+	उ	=	यु	नदी	+	उदक	=	नद्युदक
ई	+	ऊ	=	यू	नदी	+	ऊर्मि	=	नद्यूर्मि
ई	+	ऐ	=	यै	देवी	+	ऐश्वर्य	=	देव्यैश्वर्य

उ + अ = व	मनु	+	अंतर	=	मनवंतर
उ + आ = वा	सु	+	आगत	=	स्वागत
उ + इ = वि	अनु	+	इत	=	अन्वित
उ + ए = वे	अनु	+	एषण	=	अन्वेषण
ऊ + आ = वा	वधू	+	आगम	=	वध्वागम
ऋ + अ = र	पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति
ऋ + आ = रा	मातृ	+	आनंद	=	मात्रानंद

७. ए का अय्, ऐ का आय्, ओ का अव् तथा औ का आव् होता है यदि उससे परे कोई भिन्न स्वर हो; जैसे—

ए + अ = अय् + अ;	ने	+	अन	=	नयन
ऐ + अ = आय् + अ;	गै	+	अन	=	गायन
ओ + ई = अव् + ई;	गो	+	ईश	=	गवीश
औ + इ = आव + इ;	नौ	+	इक	=	नाविक

८. यदि ए या ओ के आगे अ आए तो अ का लोप होता है और उसके स्थान पर लुप्ताकार (ऽ) लगाते हैं; जैसे—

ए + अ = एऽ;	ते	+	अपि	=	तेऽपि
ओ + अ = ओऽ;	यो	+	असि	=	योऽसि

९. अघोष अल्पप्राण क्, च्, ट्, त् तथा प् क्रमण: घोष अल्पप्राण ग्, ज्, ड्, द् तथा व् हो जाते हैं यदि उनसे परे कोई स्वर या नासिक्य से भिन्न कोई घोष व्यंजन हो; जैसे—

दिक्	+	अम्बर	=	दिगम्बर
वाक्	+	ईश	=	वागीश
जगत्	+	बंधु	=	जगद्बंधु
षट्	+	रिपु	=	षड्रिपु

१०. किसी वर्ग के प्रथम व्यंजन के बदले उसी वर्ग का नासिक्य व्यंजन आता है यदि उससे परे कोई नासिक्य व्यंजन हो; जैसे—

वाक्	+	मय	=	वाङ्मय
जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ
षट्	+	मास	=	षण्मास

११. त् का द् होता है यदि उसके परे कोई स्वर ग, घ, द, ध, ब, म, य, र अथवा व हो; जैसे—

सत्	+	आनंद	=	सदानंद
उत्	+	गम	=	उद्गम
सत्	+	धर्म	=	सद्धर्म
तत्	+	रूप	=	तद्रूप

१२. त् या द् का च् होता है यदि उससे परे च या छ हो, ज् होता है यदि परे ज या झ हो, ट् होता है यदि परे ट या ठ हो, ड् होता है यदि परे ड या ढ हो और ल् होता है यदि परे ल हो; जैसे—

उत्	+	चारण	=	उच्चारण
सत्	+	जन	=	सज्जन
तत्	+	लीन	=	तल्लीन

१३. त् या द् के परे ह् हो तो दोनों का द्ध् होता है; जैसे—

उत्	+	हार	=	उद्धार



१४. त् या द् के परे श् हो तो दोनों का च्छ् होता है; जैसे—

सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र

१५. छ् का च्छ् होता है यदि उसके पूर्व स्वर हो; जैसे—

परि	+	छेद	=	परिच्छेद
आ	+	छादन	=	आच्छादन

१६. म् अनुस्वार अथवा उस वर्ग के नासिक्य व्यंजन का रूप प्राप्त कर लेता है, जिस वर्ग का व्यंजन उससे परे आता है; जैसे—

सम्	+	कल्प	=	(i) संकल्प
				(ii) सङ्कल्प
सम्	+	गम	=	(i) संगम
				(ii) सङ्गम
किम्	+	चित	=	(i) किंचित
				(ii) किञ्चित
सम्	+	तोष्	=	(i) संतोष
				(ii) सन्तोष
सम्	+	पूर्ण	=	(i) संपूर्ण
				(ii) सम्पूर्ण

१७. म् का प्रायः अनुस्वार होता है यदि उससे परे य से ह तक का कोई वर्ग हो; जैसे—

सम्	+	योग	=	संयोग
किम्	+	वा	=	किंवा
सम्	+	हार	=	संहार

१८. न् का ण् होता है यदि उससे पूर्व ऋ, र् या ष् हो; जैसे—

तृष्	+	ना	=	तृष्णा
ऋ	+	न	=	ऋण

१९. न् का तब भी ण् होता है जबकि उससे परे स्थित ऋ, र्, य, ष के मध्य कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य या व हो; जैसे—

प्र	+	मान	=	प्रमाण
राम	+	अयन	=	रामायण

२०. स् का ष् होता है यदि उससे पूर्व इ से औ तक का कोई स्वर हो; जैसे—

अभि	+	सेक	=	अभिषेक
नि	+	सिद्ध	=	निषिद्ध
वि	+	सम	=	विषम

२१. स् के बाद ऋ या र् हो तो स् का ष् नहीं होता; जैसे—

वि	+	सर्ग	=	विसर्ग
अनु	+	सरण	=	अनुसरण

२२. समास पद के पूर्व पद के अन्त्य न् का लोप होता है; जैसे—

राजन्	+	आज्ञा	=	राजाज्ञा
प्राणिन्	+	मात्र	=	प्राणिमात्र

विसर्ग सन्धि

२३. विसर्ग का श् होता है यदि उससे परे च् या छ् हो; जैसे—

निः	+	चल	=	निश्चल
निः	+	छिद्र	=	निश्छिद्र

२४. विसर्ग का ष् होता है यदि उससे परे ट् या ठ् हो; जैसे—

धनुः	+	टंकार	=	धनुष्टंकार

२५. विसर्ग का स् होता है यदि उससे परे त् या थ् हो; जैसे—

मनः	+	ताप	=	मनस्ताप



